

## हित-अहित गीताञ्जली

(गद्य-पद्यमय)

- आचार्य कनकनन्दी

### पुण्य-स्मरण

सीपुर अतिशय क्षेत्र में 2016 के आदर्श चातुर्मास सह  
प्रायः 11.5 माह दीर्घ प्रवास .....

### स्वैच्छिक अर्थ सौजन्य (ज्ञानदानी)

- (1) धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान (बडौत, उ.प्र.)
- (2) धर्म दर्शन सेवा संस्थान (उदयपुर)

ग्रंथाङ्क - 272

संस्करण - प्रथम, 2017

प्रतियाँ - 500

मूल्य - 101/-

### प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क सूत्र

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

(1) धर्म दर्शन सेवा संस्थान  
द्वारा - श्री छोटूलालजी चित्तौड़ा  
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास  
उदयपुर (राज.) 313001 मो. 97832-16418

(2) धर्म दर्शन सेवा संस्थान  
सचिव - डॉ. नारायणलाल कछारा  
55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.) 313001  
फोन : (0294) 2491422, मो. 92144-60622  
E-mail : nlkachhara@yahoo.com

## जिनवाणी-सरस्वती स्तवन

- श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : वन्दे मातरम् ....)

वन्दे मातरम् ... जिनवाणी मातरम् ...

पूजनीया सरस्वती... भारती बहुभाषिणी ...

शारदा वरदा मातरम् ... वन्दे मातरम् ... (ध्रुवपद) ...

सर्वज्ञ सुता जगन्माता ... विदुषां माता वागीश्वरी ...

ब्रह्माणी ब्राह्मिणी ब्रह्मचारिणी... श्रुतदेवी वाणी कुमारी ... मातरम्...

वन्दे मातरम् ... (1)

अज्ञान तिमिरं हन्ति ... विद्या बहु विकासिनी ...

स्मित वदना चारु हास्यमयी ... दिव्य लोचना सुज्ञानमयी ... मातरम्

वन्दे मातरम् ... (2)

प्रतीक रूप तू मूर्तिमयी ... अमूर्त रूपे विज्ञानमयी ...

कमलासना हंसवाहिनी ... भव्य जीव को ज्ञानदायिनी ...

ग्रन्थधारिणी वीणावादिनी... जपमाला युत शोभिनी ...

माला मौलि कुण्डल धारिणी ... नुपूर श्वेत वसन धारिणी... मातरम्...

वन्दे मातरम् ... (3)

निर्लिप्तमय कमलासन... हंस प्रतीकमय भेद-विज्ञान...

श्रुतज्ञानमय ग्रन्थ रूप ... अनेकान्तमय वीणा रूप ...

ज्ञान-ध्यानमयी जपमाला ... मौलि भाल तव सर्वश्रेष्ठमय ...

बुद्धि ऋद्धिमय तव कुण्डल ... स्याद्वाद ध्वनिमय नुपूर ... मातरम्

वन्दे मातरम् ... (4)

सत्य-समता मय श्वेतवसन ... ज्ञानानन्दमय स्मितवदन ...

निष्कलङ्कमय चारु हास्य तव ... केवलज्ञानमय दिव्य लोचन ...

मूर्तिक रूपे अमूर्तिकमयी ... तव उपासक ऋषि-मुनि../(कनकसूरी) ...

ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो ... चरण वन्दे 'सुविज्ञ' मुनि... मातरम् ...

वन्दे मातरम् ... (5)

सीपुर, दि. 14-2-2017, रात्रि 9.52

(यह कविता 'सरस्वती नाम स्तोत्र' व आचार्य श्री कनकनन्दी कृत 'सीपुर वासिनी जिनवाणी - सरस्वती' स्तुति से प्रेरित होकर सृजित हुई।)

---

## आत्म-विकास हेतु आवश्यक प्राथमिक नैतिक प्रायोगिक ज्ञान

- काव्य रचना : आर्यिका सुवत्सलमति

(चाल : ऐ मेरे दिले नादाँ ....)

आत्म विकास हेतु आवश्यक है नैतिक ज्ञान।

सकारात्मक विचार हो, सभी जीवों के प्रति॥ (ध्रु.)

सत्त्वेषु मैत्री हो, अन्त्योदयी भावना हो SSS

गुणी जीवों के प्रति, प्रमोद भावना हो।

दूसरों से भिन्न, श्रेष्ठ करने की भावना हो॥ आत्मविकास... (1)

सभी जीव ज्ञानी बने, अतः ज्ञान-दान करूँ SSS

अहंकार न मन में धरूँ, स्व-पर उपकार (ही) करूँ।

ना मुफ्त में रायचन्द बनूँ, स्व-संबोधन ही करूँ ॥ आत्मविकास... (2)

संकीर्ण-पंथ-मत लोगों से मैं दूर रहूँ SSS

उदार सहिष्णु बनूँ, वैश्विक भाव धरूँ।

पर दुःख कातर बनूँ, निस्वार्थ सेवा करूँ ॥ आत्मविकास... (3)

कनकनंदी गुरु (वर) सम, निःश्चल/(निःश्छल) मेरी हँसी हो SSS

कैसी भी परिस्थिति हो, समता में (मैं) रह पाऊँ।

वात्सल्य मिले गुरु का, साधना में सफल होऊँ... SSS

संयम समाधि मैं कर पाऊँ ...॥ आत्मविकास... (4)

सीपुर, दि. 1-2-2017 रात्रि प्रायः 8.25

(न्यूज पेपर के लेख से प्रभावित होकर यह कविता है)

### गुरुवर श्री कनकनंदीजी की मुरतिया

- जसकार - ब्र. अजय

हिरदय में अपने बसा लइयो, गुरुवर की मुरतिया

हाँ हाँ रे SSS कनक-गुरु की मुरतिया

पापा कर्म की नाशक है, गुरुवर की मुरतिया

हाँ हाँ रे SSS कनक-गुरु की मुरतिया॥ (ध्रुव)

---

हिंसा का भारत में जोर मचा है SSS/(चला है SSS)  
दुर्गुणों / (असुरवृत्ति) का अतिशोर चला हैSSS/(मचा है SSS)  
बनकर के भारत में तुम आर... दुःखियों के खिवैया...  
हाँ हाँ जी भव्यों के खिवैया  
हृदय में अपने .... (1)

तुम गुरु का परताप मैंने जाना ....  
तुमरे पथ का अंजाम भी जाना ....  
दे दो साथ सभी गुरुवर का  
कट जायें विपत्तियाँ SSS  
हा हा रे बीत जाये विपत्तियाँ  
हिरदय में अपने .... (2)

‘अजय’ के हिरदय में गुरु आप बसे हो SSS  
यादों -इरादों में अजी आप बसे हो  
ध्यान तेरा अब कर कर के SSS  
पा जाउ सुगतियाँ  
हाँ हाँ जी पा जाऊँ सुगतियाँ  
हिरदय में अपने बसा लैयो, गुरुवर की मुरतिया  
हाँ हाँ रे SSS कनक-गुरु की मुरतिया .... (3)

सीपुर, दि. 19-2-2017 रविवार रात्रि 9.35

## तुम बिन गुरुवर अब कौन लगाये पार

बिनयांजली - ब्र. अजय

(चाल: बार-बार तुम्हें क्या समझायें )

जब-जब मैं तुम्हें अर्चू पूजूँ SSS (जब-जब मैं तुम्हें अर्चू पूजूँ SSS)  
कर लेना स्वीकार SSS  
तेरे बिन गुरुवर मेरा, कौन करे उद्धारSSS  
स्वर्ण-थाल में ले लेके अर्घ्य, गाऊँ नाचूँ मैं हरबार  
तेरे बिन स्वामी मुझे, कौन लगाये पारSSS।। (स्थायी)  
तेरी निश्रा छोड़ के, अब मैं जाऊँ कहाँ SSS

---

तुझ-सा गुरु अब ढूँढ के प्रभुवर लाऊँ कहाँ SSS  
गुरुवर तेरी शरण निराली SSS । (कनक गुरु की कीर्ति निराली SSS)  
छुड़ा दे सब संसार / (जंजाल)

तेरे बिन गुरुवर मेरा, कौन करे उद्धार (1)

तेरी ज्ञान किरणों से, जगमग सारा जहाँ SSS  
देखो कैसे कैसे बुधजन, आते यहाँ SSS  
मैं भी पा जाऊँ प्रवेश ऐसा SSS/ (मैं भी पा जाऊँ सुज्ञान ये तेराSSS)  
(पालूँ) / पाऊँ ज्ञान भण्डार SSS

तेरे बिन गुरुवर मेरा, कौन करे उद्धार ... (2)

‘मैं’ का ज्ञान कराके, भव्य - क्रान्ति तुम प्रगटाई SSS  
बाल से लेकर युवा - वृद्ध सब हर्षित गुरुराई SSS  
ऐसा ज्ञान तो पाकर गुरुजी । (ऐसे गुरुवर पाकर देखो SSS)  
‘अजय’ हो गया निहाल

तेरे बिन गुरुवर मेरा, कौन करे उद्धार (3)

जब-जब मैं तुम्हें अर्चू पूजूँ SSS

सीपुर, दि. 19-2-2017 रविवार रात्रि 8.05

## “ नवयौवन में महान लक्ष्य प्राप्त करो”

गीत रचनाकार - ‘समग्र-क्रांतिवीर’ आचार्य श्री कनकनंदाजी गुरुदेव  
(तर्ज : 1. चमचमाती दुनिया में ..... 2. सजती है यूँ ही महफिल .....)

हो SSS नवयौवन वसन्त ऋतु में, गुण सुमनों को खिलने दो  
प्रसिद्धि सुवास फैले, पुरुषार्थ पवन बहने दो ॥ (ध्रुव)

गत चंचल पत्तों को, अब गिर जाने दो ....2

धैर्य रूपी कोपलों को, विकसित होने दो ॥ नवयौवन ....(1)

सफलता के फल फलने दो, फल भार- सी नम्रता हो ....2

जीवन की देहरी पर, दानवता न चढने दो ॥ नवयौवन ....(2)

नर जन्म का सुवर्ण अवसर, नवयौवन में प्रगट हुआ ....2

कर्त्तव्य निष्ठा अपनी बढ़ा, सेवा पुण्य बढ़ने दो । नवयौवन ....(3)

तन-मन की पक्वता आई, बचपन की चंचलता गई ....2

---

दिल-दिमाग में उत्साह भारी, बड़े लक्ष्य बनने दो ॥ नवयौवन ....(4)

‘कनकनन्दी’ तुमको पुकारे / (कहे), आओ मेरे संग भाई ....2

आज मेरे भाव समझो, ‘क्रान्ति -ज्योत’ जलने दो ॥ नवयौवन ....(5)

**समीक्षा :-** प्रस्तुत काव्याञ्जली में कविवर ने, अखिल विश्व के समस्त युवा - युवतियों, साथ ही सभी आबाल- वृद्धों की यौवन-रूपी शक्ति को जागृत करने हेतु ‘क्रान्ति-रूपी ज्योति’ को प्रज्वलित करने के लिए वसन्त-ऋतु जिसमें सारी धरती पुष्पित व पल्लवित होती हुई अपनी सुरभि से समस्त प्राणियों (जीवों) के तन व मन में नवयौवनता का आह्लाद भर देती है, ऐसा ही आह्लाद व चिन्तन पाकर सभी जन-गण-जीवन के महान लक्ष्य की पृष्ठभूमि तैयार कर अपना पुरुषार्थ जानने, मानने व प्राप्त करने के प्रति सचेत करने हेतु अपने महान् भावों को प्रकट किया है।

कविश्रेष्ठ ने यौवन-बल का वास्तविक फल क्या होता है? इस सुफल पर विशेष प्रकाश डालते हुए लिखा कि जैसे वसन्त ऋतु के आगमन के साथ ही तरुणार्ई (यौवन) का सुखद रूप प्रतिभासित होता है, उसी प्रकार इस सुखद बल को यदि सकारात्मक-आध्यात्मिक-नैतिक पुरुषार्थ में परिवर्तित कर दिया जाए तो इसका सुफल बहुविध आयामों की प्राप्ति का साक्षी बन सकेगा जो महान् गुण-रूपी पुष्पों से आच्छादित होकर स्वयं अभ्युदय तथा निःश्रेयस रूपी सुगन्ध (सुवास) को प्राप्त करेगा।

इस कविता के माध्यम से गुरुदेव संदेश देना चाहते हैं कि- हे भव्यों! इस नवयौवन रूपी वसन्त में सद्गुण रूपी पुष्पों (सुमनों) को ही सतत खिलने दो। सद्गुण अर्थात् ज्ञान-रूपी गुणों को अपने जीवन में पुष्पित होने देने से ऐसी प्रसिद्धि रूपी सुवास फैलेगी, जो तुम्हें सर्वोच्च सिद्धि अर्थात् स्वात्मोपलब्धि-रूपी सिद्धि, जिसके पश्चात् अन्य सभी सिद्धियों जो सांसारिक (भौतिक) आदि आदि आनुषंगिक रूप में आपको सहज ही प्राप्त हो जावेगी। ऐसी अनुपम अद्वितीय आत्म-शक्ति जिसमें अनन्त ज्ञान-दर्शन -सुख-वीर्य (बल), जो सारे विश्व के प्राणियों को एक साथ मिलकर भी यह सुख अनन्त कालों में भी प्राप्त होना असम्भव है, इस महान् अचिन्त्य अनन्त चतुष्टय को प्रगट कर इसका आस्वादन प्रतिक्षण-प्रतिक्षण विलक्षण रूप से सदा-सर्वदा के लिए सतत मिलता रहेगा।

सुवासित स्वप्नदृष्ट आचार्य भगवन्त इस महान् स्वप्न को साकार करने हेतु लिखते/(प्रबोधित) हुए कहते हैं कि हे महानुभावों! इसके लिए तुम्हें पुरुषार्थ -रूपी पवन को इस नवयौवन रूपी वसन्त ऋतु में सतत प्रवाहित करते रहना

होगा, इस पुरुषार्थ रूपी पवन को हस्तगत करने के लिए अब विगत चंचलता रूपी दुर्गुणों के पत्तों को पतझड़ जैसे ही पृथक् करना होगा, संग ही जीवन में धैर्यता/ (दृढ़ता) रूपी कोपलों को विकसित होने देना होगा क्योंकि यही सद्गुण आपको जीवन में उपरोक्त सफलता रूपी फलों की प्राप्ति में सहायक होंगे, जैसे फलदार वृक्ष विनम्रता के साथ झुके हुए रहते हैं उसी प्रकार इन सफलता के फलों के फलने के पश्चात् आपमें ऐसी ही नम्रता का उद्भव सहज हो गया तो यह सफलता आपको आपके जीवन में सभी लोगों का प्रियदर्शी और अनुकरणीय ही बनाएगी, ऐसे सुरभित जीवन में हमें मानवता के ही सुमनों का पुष्पित करना है ताकि दानवता-रूपी दुर्गन्ध के लिए अवकाश ही ना हो।

नवयौवन, नर जन्म का सबसे स्वर्णिम-मोहक-बलशाली सुअवसर है, जिसके प्रगटते ही हमें सद्गुणी कर्तव्यों व जीवन मूल्यों में अपनी इच्छाशक्ति को निष्ठापूर्वक बढ़ाकर सेवा-परोपकारादि जैसे दिव्य-पुण्य कार्यों को निरन्तर अपने जीवन में पल्लवित होने देना होगा जो बचपन की चंचलता को समाप्त कर तन-मन को परिपक्व बनाकर दिलोदिमाग में उत्साह रूपी झंझावात को उत्पन्न कर सके, जिसके रहते उपरोक्त पुरुषार्थ को सुलक्षित किया जा सके, विभिन्न महान् लक्ष्यों को पाने का सत्साहस भी प्रबल हो सके। जिसका अह्वान करते हुए समग्र क्रांति-वीर, आध्यात्मिक पुरोध आचार्य भगवंत श्री कनकनंदीजी गुरुदेव कहते हैं कि हे पुरुषार्थियों! मेरे इन व्यक्त भावों को समझकर, मेरा साथ दें, मेरे संग कदम से कदम बढ़ाकर इस महान् क्रांति-ज्योत को अपने जीवन में प्रज्ज्वलित कर अपने इस नवयौवन को सार्थकता प्रदान कर अपना बहुमूल्य जीवन सुजलां सुफलाम् कर महान् लक्ष्यों को अपने पुरुषार्थ से सजीव कर सर्वजीव हिताय-सर्वजीवसुखाय के स्वप्न को साकार करें। अस्तु।

**मेरा (ब्र अजय संघस्थ आचार्य कनकनंदीजी भगवन्त) 'विपुल-अनुभव':-**

**(हृदयोद्गार) :-**

आज पौर्वाहिक बेला में पूज्य गुरुदेव की आहार चर्या सम्पन्न होने के पश्चात् मैं (ब्र. अजय) उन्हें छोड़ने उनके कक्ष में गया, वहाँ मैंने समस्त श्री संघ के मध्य ही गुरुदेव से सम्मुख होते हुए, यह भाव व्यक्त किये कि भगवन्! मैं आपके इस स्व- रचित सुमनाञ्जली (गीत) का अपने 'दीक्षा - महोत्सव' में उद्धरित

---

करके स्व-सुभावों को व्यक्त करना चाहूँगा। अपनी चिरपरिचित और सुप्रभावी - श्लाघनीय प्रोत्साहन पद्धति को त्वरित प्रेषित करते हुए गुरुश्रेष्ठ ने अपना भावभीना आशीष मुझे प्रदान किया और वहाँ उपस्थित श्रीसंघ ने भी मेरा उत्साह बढ़ाते हुए अनुमोदना व्यक्त की, इससे मेरे आध्यात्मिक उन्नति के सोपान हेतु अपूर्व प्रसन्नता सह नवयौवनी वसन्त का पुनरागमन प्रस्फुटित होने लगा। मेरे इस उत्साह की प्रबलता के लिए श्री गुरुदेव सबसे बड़े उत्प्रेरक के रूप में मेरी यादों में अमिट रूप से विद्यमान रहते हैं- और रहेंगे भी।

इसी महान् अतिशय क्षेत्र सीपुर से मैंने श्रीगुरु-कृपा को जाना-समझा, पिछले सम्पन्न चातुर्मास के दस-दिवसीय पर्यूषण पर्व में मैंने बड़े मनोयोग से यहाँ सानन्द दिन बिताये और उपलब्धि के स्वरूप ब्रह्मचर्य-अणुव्रत' रूपी सुफल को पाकर अपने गृह नागपुर (महाराष्ट्र) पहुँचा। परिवार के सभी सदस्यगण ये जानते ही दंग रह गये कि ये महाशय बिना हमसे सलाह-मशविरा किये जाने क्या निर्णय कर लिये। असमंजसता तो इस बात की कि ये विचित्र व्यक्तित्व आखिर सुझला तो कैसे सुलझा? क्योंकि सभी मेरे अनसुलझे पारिवारिक चिन्तनों से अच्छी तरह वाकिफ थे कि सारी दुनिया सुधर सकती है पर ये विचित्र जीव तो सुधरने से रहा?

चूँकि यौवनता के नशे में मैंने वे सारे अनपेक्षित कार्य किये, जिसका मुझे अब बेहद पश्चाताप होता रहता है। किंतु गुरुदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व से मैं जैसे -जैसे सुपरिचित होता गया और जिसमें श्रमण गुरुवर सुविज्ञसागरजी ने भी मेरा हाँसला बढ़ाया, जिससे इस वास्तविक तरुणाई ने मेरे जीवन का लक्ष्य ही बदल दिया और आध्यात्मिक सुलक्ष्य की ओर प्रयाण करने का मेरा सत्साहस उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। गुरुदेव रचित उपरोक्त गीत में व्यक्त भावों का सबसे अधिक लाभ लेने वाले पुण्यशालियों में मेरा भी शुमार (प्रवेश) होने लगा और मैं ही क्या? मेरे परिवार के हम सभी सदस्यों ने आजीवन ब्रह्मचर्य धारण कर अपने जीवन को कृतार्थ कर बदल डाला।

सांसारिक आपाधापियों से मुझे एवं ब्र. संगीता को बिमारियों द्वारा वृद्धता का अहसास होना शुरू हो गया था, क्योंकि शहरी जीवन और प्रदूषित वातावरण ने हमारे स्वास्थ्य पर ग्रहण लगाना बराबर जारी रखा, तथापि श्री गुरु-प्रसाद से हम दोनों ने आखिर जिंदगी की ये लड़ाई जीत ली। उसके लिए एकमात्र और एकमात्र श्री गुरु की संगति ही वरदान साबित हुई और सारी घरेलू बाधाओं को चीरकर हम दोनों अब

---

श्रीगुरु की सेवा सुश्रुषा और उनकी उदार कृपाभिलाषा के हमसफर बन गये।

गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आचरणों का सबसे महान् सुफल ये भी रहा कि हमने (मैं व ब्र. संगीता) अभूतपूर्व यौवनता का पुनः श्रीगणेश जीवन में पाया और इस बल को सुफलित करने के लिए अब कोई बाधा शेष न रही और प्रफुल्लित तन व मन से 'भगवती-दीक्षा' की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तरुणाई को ऐसी सुदृढ़ सुवासित दिशा प्रदान करने के लिए श्री गुरु चरणों में बारम्बार वंदन अभिनंदन और कोटिशः धन्यवाद। मेरे भव-भव के उपकारी, नवजीवन-प्रदाता, विश्व-वंदनीय, कलिकाल धर्म-धुरन्धर-महर्षि के चरण कमलों का नित-नित पुजारी ..... ब्र. अजय  
(सघंस्थ आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव)  
सीपुर, दि. 14-2-2017 रविवार रात्रि 10.47

## आत्म्याचे (मी) ज्ञान देणारे 'कनकनन्दी' गुरु

- श्रमणी सुवत्सलमती

(चाल :- ऐ दिल मुझे बता दे ....)

जय 'कनकनन्दी' गुरु, श्री कुन्थुसिंधु सुत ।

तूं जगत्बन्धु असशी, अवध्या जगाचा पिता॥ (ध्रुव)

परमागमाचे ज्ञाता, आगम ज्ञान दाता,  
ज्ञानामृताचे दान, सतत तुम्ही करता।  
विपरीत ज्ञानी जन, अज्ञान त्यांचे फार,  
बघुनी ही त्यांची स्थिति, पीडा (दुःख) होई मनात॥ (1)

भौतिक मी पणाला, देतात फार मान,  
धन-मान या सुखाचे, करतात अभिमान।  
'सोऽहं'/अहं भावाचा, नसे त्यांना स्वाभिमान,  
मी म्हणजे 'आत्मा', ह्याचे त्यांना न ज्ञान। (भान) (2)

विपरीत ही प्रवृत्ति, विपरीत त्यांची वृत्ति,  
ना भान आत्म्याचे, निंदे मध्ये प्रवृत्ति

---

कृपासिन्धु आहे गुरु, आत्म्याचे देती ज्ञान,  
अनन्त ज्ञानी आत्मा, जागृत करा शक्ति॥ (3)

भक्ति परम औषधि, जन्म-जरा मृत्यु रोगा,  
जड-मूल नष्ट होई, अनादिचे हे रोग।  
सुख-शान्ति नी समता, भक्ति मिळते  
कनक गुरुंच्या चरणी, वत्सल नमते माथा॥ (4)

सीपुर, दि. 11-2-2017 प्रातः 7.25

## आचार्य गुरुवर कनकनन्दी की आरती

- बा. ब्र पल्लवी

(चाल:- शायद मेरी, नाम तिहारा...., कुहू कुहू.....कोगिले.... (कन्नड राग)....)

ॐ श्री कनकनन्दीजी ... आरती करूँ तव चरणी.... 2  
मंगल भाव से ... करूँ तव गुण कीर्तन ..... 2

स्वर्ण थाल में , घृत भर दीपक, लेकर आया तुम्हारे द्वार।  
श्रद्धा भक्ति, भाव जगाके, आरती करूँ तुम्हारे पद।  
कनकनन्दीजी, आध्यात्मिक संत, निस्पृह वृत्ति, जग विख्यात।  
आरती करके, तव गुण गाके, हो जाऊँ मैं भव पार..... 2 ॥ ॐ श्री... (1)

बहुभाषी, सिद्धान्त चक्री, आचार्य रत्न की करूँ आरती।  
स्वाध्याय तपस्वी, अध्ययन प्रेमी, वात्सल्य मूर्ति कनक गुरु।  
सरल स्वभावी, समताधारी, बहुगुणों के हो भण्डारी।  
आगम परागामी की, आरती करके, हो जाऊँ मैं भव पार॥ ॐ श्री...(2)

कुन्थु गुरु के हीरा शिष्य हो, इस वसुधा में अद्वितीय।  
ज्ञानी-विज्ञानी, सत्य शोध के खान (है) जग में प्रसिद्ध।  
प्रतिक्षण स्व का, अनुभव ज्ञान, सर्व जीव में जिन दर्शन।  
आध्यात्म प्रिय, आत्मिक संत की आज ऊतारूँ आरती॥ ॐ श्री ...(3)

---

जब तक सूरज चांद रहेगा, कनक गुरु का नाम रहेगा।  
गंगा यमुना में पानी रहेगा, मेरे गुरु का नाम रहेगा।  
कनक गुरु की सन्निधि पाके, मेरा जीवन पल्लवित।  
आरती करके तव गुण गाके, हो जाऊँ मैं भव पार॥ ॐ श्री ...(4)

सीपुर, दि. 11-2-2017 सुबह-10.10 व मध्याह- 2.00

## मेरे अनन्त संसार परिभ्रमण की व्यथा

- श्रमणमुनिसुविज्ञसागर

(चाल:- चुपके चुपके रात दिन .... (गजल)...) )

संसार परिभ्रमण ... अनन्त काल मैं किया ....  
चतुर्गति में घूमकर ...पञ्च परिवर्तन किया...संसार ... (ध्रुव)

नित्य निगोद में रहा .... अनन्त काल दुःख सहा....  
छत्तीस बार इक श्वास में ...जन्मा-मरा व दुःख सहा...चतुर्गति...(1)

दुर्लभता से मिली मुझे ... पर्याय त्रस गति की ...  
एक द्वि त्रि चतुःअक्ष...पर्याय पञ्चेन्द्रिय की .. चतुर्गति....(2)

तिर्यञ्च नरक गति में ... संक्लेश बहुत पाया....  
बहु सागर ये दुःख सहा... संयोग से नरभव मिला ....चतुर्गति.....(3)

मनुष्य गति में महान् ... अब बोध श्री गुरु से मिला...  
श्रमण धर्म दुर्लभतम.... 'सुविज्ञ' श्रमण को मिला ...चतुर्गति....(4)

सीपुर, दि. 13-2-2017 रात्रि- 9.14

---

## कनकनन्दी श्री नाम चांगले (गुरु स्तुति)

- स्तुतिकार: आ. सुवत्सलमती

(चाल:- (1) कामदा (2) आदिनाथ जी नाम चांगले )

कनकनन्दी श्री नाम चांगले,

दृष्टि देखिता मनी रमले।

श्रेष्ठ तू असे दीन पालना,

हे! दयानिधे कुन्थुनन्दना॥ (1)

मुनिश्रेष्ठ तू मी अज्ञ बालक/(पामर)

विज्ञ तू करी मज तारक।

शोध-बोध तू नित्यची करी,

शिष्य भक्तांना सूज्ञ तू करी॥ (2)

सिद्धान्त आचार्य तुज म्हणती,

वैज्ञानिक असे सर्व जानती।

अनुभवी असे लोक मानती,

अलौकिक तू असे नच जाणती॥ (3)

महत भाग्य की सानिध्य लाभले,

ज्ञान प्राप्तिचे सौख्य मिळाले॥

पूर्व भवांचे पातक नाशले,

मानव जीवन हे सफल झाले॥(4)

मातृत्व हृदयी मात (आई) असे तू,

धीर गम्भीर तात असे तू।

अल्पज्ञ जनांना ज्ञान सूर्य तू,

भूमण्डळी असा अद्वितीय तू॥ (5)

हर्ष वाटतो आज मज प्रति,

वन्दितो तुला होय सद्गति।

हाथ जोडूनी प्रार्थना करी,

भावी जीवनी मिळो मुक्ति सुन्दरी॥ (6)

पायडा, दि. 26-3-2014 रात्रि- 9.00

---

## मेरा स्व-पश्चाताप एवं स्व-उपलब्धि

- बा.ब्र. पल्लवी

(चाल:- क्या करते थे ...)

अब तक किये जो दोषों को धोने का समय आया।

“क्षमा वीरस्य भूषणम्” समझने का समय आया।

पश्चाताप का क्षण आया

ओ...निजस्वभाव में रहने का पल।। (ध्रुव)

क्रोधादि कषाय को, त्यागने का समय आया।

जैन धर्म के तत्त्व को समझने का समय आया।

स्व (आत्मा, मैं) का ज्ञान समझ में ....

अद्भुत स्व (मैं, आत्मा) का ज्ञान, ओ...परम उपलब्धि का चिंतन (1)

अनादि काल से मैंने तन को ‘मैं’ माना।

तन की पुष्टि हेतु, स्व-स्वभाव भूला।।

अनन्त दुःख को सहा ...

भव-भव में भ्रमा, ओ...स्व-तत्त्व को भूला (2)

बहुपुण्य के फल से, मनुष्य जन्म पाया।

मनुष्य जन्म पाकर, उत्तम संस्कार पाया।

उच्च श्रेष्ठ मार्ग को पाया

“कनक गुरु” की शरण पाया, ओ... कनक गुरु को पाया (3)

निस्पृह सन्त की शरण में अनुभव पाया।

अनुभव ज्ञान का, स्व में प्रयोग किया।

स्व के हित को जाना....

भाव विशुद्धि में रमा, ओ...गुरु का आदर्श अपनाया।। (4)

धन्य भाग्य है मेरा, अनुभवी गुरु मिले।

कृतज्ञता है गुरु आपने मेरे भाव सुधारे।

अनन्त कर्मास्रव को रोका...

शुभ प्रवृत्ति बतायी, जीवन का सार बताया, ओ..‘मैं’ का स्वरूप समझाया

सीपुर, दि. 23-2-2017 प्रातः- 10.00

---

## विषयानुक्रमाणिका

क्र	विषय	पृष्ठ सं.
01.	जिनवाणी सरस्वती स्तवन	2
02.	आत्म -विकास हेतु आवश्यक प्राथमिक नैतिक प्रायोगिक ज्ञान	3
03.	गुरुवर श्री कनकनंदीजी की मूर्तिया	3
04.	तुम बिन गुरुवर अब कौन लगाये पार	4
05.	नवयौवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करो	5
06.	आत्म्याचे (मी) ज्ञान देणारे 'कनकनन्दी' गुरु	9
07.	आचार्य गुरुवर कनकनन्दी की आरती	10
08.	मेरे अनन्त संसार परिभ्रमण की व्यथा	11
09.	कनकनन्दी श्री नाम चांगले	12
10.	मेरा स्व-पश्चात्ताप एवं स्व-उपलब्धि	13

## हित-अहित गीताञ्जली

01.	मेरा लक्ष्य परमहित ग्रहण व अहित त्याग	16
02.	स्व शुद्धात्मा अनुभव ज्ञान ही सुज्ञान	23
03.	कितना प्यारा है भाव मेरा	39
04.	स्व-पर गुण-दोष से शिक्षा मैं लहूँ	44
05.	मानव यदि है तुझे प्रशंसा पाना... !	46
06.	हित सुख हेतु धर्ममय बनूँ	48
07.	वह विकास मुझे नहीं चाहिए....?	49
08.	मेरे अनुभव को अन्यलोग क्यों नहीं मानते व कब से मानते हैं! ?	60

---

09. वह धर्म मुझे नहीं चाहिए....!?	61
10. मेरे अनुभव अमृत : सर्व कार्य सम्पादक	70
11. अरिहंत -सिद्ध सम करूँ स्व-विकास	83
12. प्रसिद्धि हेतु न करूँ साधना: सिद्धि हेतु साधना करूँ	92
13. मुझे न चाहिए ऐसी श्रेष्ठता ...! ?	100
14. मुझे ऐसे तप-त्याग न चाहिए... ! ?	115
15. वह शिक्षा मुझे नहीं चाहिए...! ?	125
16. मुझे ऐसी सभ्यता नहीं चाहिए... ! ?	140
17. ऐसी प्रभावना मुझे नहीं चाहिए ! ?	159
18. वह पुण्य मुझे नहीं चाहिए जिस पुण्य से हो...! ?	169
19. मेरा परम रहस्य व प्राप्य 'मैं' स्वयं हूँ	188
20. आध्यात्मिकता की सर्वोच्चता ....	198
21. तीर्थंकर भगवान् V/S आधुनिक वैज्ञानिक....	211
22. स्व पर उपकारी बनूँ किन्तु ...! ?	216
23. मेरा दीर्घ अनुभव	218

---

## मेरा लक्ष्य : परमहित ग्रहण व अहित त्याग

(आत्महित ही परमहित, आत्मअहित ही परम अहित)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तेरे प्यार का आसरा ....)

- परमहितमय मैं होना चाहता हूँ, अहित से पूर्णतः रिक्त चाहता हूँ।  
इस हेतु विवेकपूर्ण यत्न करता हूँ, श्रद्धा-प्रज्ञा-चर्या से यत्न करता हूँ॥ (1)  
आत्मविकासपूर्ण महान् लक्ष्य से, सनम्र सत्यग्राही उदार भाव से।  
स्व पर विश्व हित हेतु साम्य भाव से, दूर रहता हूँ मैं अहित भाव से॥ (2)  
रागद्वेष मोह ईर्ष्या तृष्णा से, क्रोध मान माया लोभ घृणा से।  
संकीर्ण- कट्टर व अन्धविश्वास, आत्म -अहित के कारक विशेष॥ (3)  
इनके नाश हेतु करूँ मैं प्रयत्न, ख्याति पूजा लाभ से रहूँ विरक्त।  
आकर्षण-विकर्षण-द्वन्द्व परे, संकल्प-विकल्प-संक्लेश परे॥ (4)  
निस्पृह-निराडम्बर समता युक्त, ध्यान-अध्ययन-करूँ विशुद्धि युक्त।  
संयम-तप-त्याग-आत्महित सहित, वर्चस्व-प्रभुत्व व प्रसिद्धि रिक्त॥ (5)  
परनिन्दा-अपमान-हानि रहित, मैत्री-प्रमोद-कारुण्य -सौम्य युक्त।  
भेदभाव व पक्षपात रिक्त, भाव-व्यवहार करूँ आत्महित युक्त॥ (6)  
अन्यथा आत्महित न होना संभव, भले प्राप्त हो जावे राज्य वैभव।  
भोगोपभोग व फैशन-व्यसनों से, आत्महित न संभव ख्याति पूजा से॥ (7)  
आक्रमण युद्ध व दिग्विजय से, हित न होता बाह्य शत्रु नाश से।  
हिंसा झूठ चोरी कुशील काम से, आत्महित न संभव पर पीड़न से॥(8)  
शोषण मिलावट व ठगी काम से, अन्याय-अत्याचार-पापाचार से।  
उद्वण्ड-उत्श्रृंखल व मनमानी से, आत्महित न होता आतंकवाद से॥ (9)  
पढाई बढाई व चमडी-दमडी से, फेड़म-नेड़म व मनी गेड़न से।  
नहीं होता है आत्म का हित, जिससे (मैं) होता है संक्लेश/(मलीन) चित्त॥ (10)  
इत्यादि काम (भाव) से न होता आत्महित, इससे न मिले आत्मिक सुख।  
संतृष्टि-तृप्ति व शान्ति न मिलती, चिन्ता से ले आत्महत्या भी होती॥ (11)  
पावनभाव व पावनकाम से, तन-मन व आत्मस्वास्थ्य से।  
दानदयासेवा व परोपकार से, आत्महित होता है एकाग्रमन (शान्तचित्त)से॥ (12)

---

वैश्विक इतिहास इस के साक्ष्य, प्रत्यक्ष प्रमाण भी इसके साक्ष्य।

आत्महित हेतु त्यागे चक्री भी राज्य, इस में भी गर्भित सुख रहस्य॥ (13)

विभिन्न धर्म भी ऐसा मानते, महान् पुरुष भी ऐसा मानते।

विज्ञान ऐसा कर रहा है शोध, 'कनक' सूरी का ऐसा शोध -बोध॥ (14)

परमहितमय मैं तब ही बनूँगा, जब सम्पूर्ण कर्म रहित हूँगा।

यही मेरा है परम लक्ष्य, शुद्ध-बुद्धमय आत्मिकसुख॥ (15)

सीपुर, दि. 23-2-2017 प्रातः- 10.08 व प्रातः 7.02

संदर्भ -

जेण तच्चं विबुज्जेज्ज जेण चित्तं णि रूज्जदि।

जेण अत्ता विसुज्जेज्ज तं णाणं जिण सासणे ॥267॥

जिससे तत्व का बोध होता है जिससे मन का निरोध होता है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है जिन शासन में उसका नाम ज्ञान हैं।

जिसके द्वारा वस्तु का यथार्थ स्वरूप जाना जाता है, जिसके द्वारा मन का व्यापार रोका जाता है अर्थात् मन अपने वश में किया जाता है और जिसके द्वारा आत्मा शुद्ध हो जाती है, जीव वीतराग हो जाता है, वह ज्ञान जिनशासन में प्रमाण है, अर्थात् वही ज्ञान मोक्ष को प्राप्त कराने के लिए उपाय भूत हैं। वह ज्ञान संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय और अकिंचित्कर से रहित हैं।

जेण रागा विरज्जेज्ज जेण सेएसु रज्जदि।

जेण मित्तीं पभावेज्ज तं णाणं जिणसासणे ॥269॥

जिसके द्वारा जीव राग से विरक्त होता है, जिसके द्वारा मोक्ष में राग करता है, जिसके द्वारा मैत्री को भावित करता है जिन शासन में वह ज्ञान कहा गया है।

जिसके द्वारा जीव राग-स्नेह से और काम-क्रोध आदि से विरक्त होता है-पराङ्मुख होता है, और जिसके द्वारा मोक्ष में अनुरक्त होता है, जिसके द्वारा मैत्री भावना अर्थात् द्वेष का अभाव करता है, जिन शासन में वही ज्ञान है। तात्पर्य यह हुआ।

अतत्त्व में तत्व बुद्धि, अदेव में देवता का अभिप्राय, जो आगम नहीं है उनमें आगम की बुद्धि, अचारित्र में चारित्र की बुद्धि और अनेकान्त में एकान्त की बुद्धि जहाँ तक है वहाँ तक अज्ञान है।

---

णाणी गच्छदि णाणी वंचदि णाणी णवं च णदियदि।

णाणेय कुणदि चरणं तह्मा णाणे हवे विणओ॥588॥

ज्ञानी जानता है, ज्ञानी छोड़ता है और ज्ञानी नवीन कर्म को नहीं ग्रहण करता है, ज्ञान से चारित्र का पालन करता है इसलिये ज्ञान में विनय होवे।

यस्माज्ज्ञानी गच्छति मोक्षं जानाति वा गतेर्ज्ञानगमन प्राप्त्यर्थकत्वात्, यस्यमाच्च ज्ञानी वंचति परिहरति पापं यस्माच्च ज्ञानी नवं कर्म नाददाति न वध्यते कर्मभिरिति यस्माच्च ज्ञानेन करोति चरणं चारित्रं तस्माच्च ज्ञाने भवित विनयः कर्तव्य इति।

जिस हेतु से ज्ञानी मोक्ष को प्राप्त करता है अथवा जानता है। गति अर्थ वाले धातु ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ वाले होते हैं ऐसा व्याकरण का नियम है। अतः यहाँ गच्छति का जानना और प्राप्त करना अर्थ किया गया है। जिससे ज्ञानी पाप की वंचना परिहार करता है और नवीन कर्मों से नहीं बंधता है तथा ज्ञान से चारित्र को धारण करता है इसलिये ज्ञान में विनय करना चाहिए।

णाणं सिक्खदि णाणं गुणेदि णाणं परस्स उवदिसदि।

णाणेण कुणदि णाणं णाणं णाणविणीदो हवदि एसो ॥368॥ (मूलाचार)

ज्ञान शिक्षित करता है, ज्ञान गुणी बनाता है, ज्ञान पर को उपदेश देता है, ज्ञान से न्याय किया जाता है। इस प्रकार यह जो करता है वह ज्ञान से विनयी होता है।

ज्ञान विद्या को प्राप्त कराता है। ज्ञान अवगुण को गुण रूप से परिवर्तित करता है। ज्ञान पर को उपदेश का प्रतिपादन करता है। ज्ञान से न्याय-सत्प्रवृत्ति करता है जो ऐसा करता है वह ज्ञान विनीत होता है।

न हि सम्यग्व्यपदेशं चरित्रमज्ञान पूर्वकं लभते।

ज्ञानानन्तरमुक्तं चारित्राराधनं तस्मात् ॥38॥ (पुरुषार्थ सिद्धयुपाय)

अज्ञानपूर्वक चारित्र सम्यक चारित्र नहीं होता है। इसलिये सम्यग्ज्ञान के अनन्तर चारित्राराधना का कथन किया गया है।

“नाणम्मि असंतंमि चरित्तवि न विज्जए”

व्यवहार भाष्य 1/2 711

जहाँ ज्ञान नहीं, वहाँ चरित्र भी नहीं रहता।

“सव्व जगुज्जोयकरं नाणं, नाणेण नज्जए चरणं।”

व्यवहार भाष्य 7/2 1611

ज्ञान विश्व के समस्त रहस्यों को प्रकाशित करने वाला है। ज्ञान से ही मनुष्य

---

को कर्तव्य का बोध होता है।

“सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेई”

उत्तराध्ययन 29/59

ज्ञान की आराधना करने से आत्मा अज्ञान का नाश करती है।

विन्नाणेणं समागम्म धम्मसाहणमिच्छिउं।

उत्तराध्ययन 23/ 31

विज्ञान के द्वारा धर्म के साधनों का उचित निर्णय करना चाहिए।

पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सच्चसंजए।

अन्नाणी किं काही किंया वाहिइ छेय पवागं।।

दाशवैकालिक 4/10

पहल सम्यग्ज्ञान होना चाहिए उसके उपरान्त सम्यग्ज्ञान के अनुसार दया पालन करना चाहिए अर्थात् सम्यकचारित्र पालना करना चाहिए। इसी प्रकार चारित्र सम्पूर्ण संयमियों को आचरण करने योग्य है। अज्ञानी क्या कभी इस प्रकार श्रेय(आचरणीय) पापात्मक अश्रेय को जान सकता है अर्थात् बिना ज्ञान करणीय-अकरणीय का विवेक नहीं होने से अज्ञानी यथार्थ चारित्र पालन नहीं कर सकता है इसलिये कहा है-

“बिना जानते दोष गुणन को कैसे तजिये गहिये।”

सम्यग्ज्ञान की महानता का वर्णन करते हुए अमृत कलश में बताते हैं कि-

भेद विज्ञानतः सिद्धाः सिद्धा ये किल केचन।

तस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन ॥7॥

जो अनन्तान्त सिद्ध हुए हैं वे सब भेद विज्ञान से सिद्ध हुए हैं। जो बंधे हुए हैं वे भेद विज्ञान के अभाव के कारण बंधे हुए हैं। इसलिये कविवर दौलतराम जी ने छहढाला में कहा है-

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।

यह परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारण ॥चतुर्थढाल॥4॥

णादूण आसवणं असुचित्तं च विवरीय भावं च।

दुक्खस्स कारणं ति य तदो णियत्तिं कुणदि जीवो ॥77॥

(समयसार)

---

जब यह जीव आस्रवों के अशुचिपने को, जड़ता रूप विपरीतपने को और दुःख के कारणपने को जान लेता है तब अपने आप उनसे दूर रहता है ।

क्रोधादि आस्रवों के कलुषतारूप अशुचिपने को जड़तारूप विपरीतपने को जानकर उसके द्वारा स्वसंवेदन ज्ञान को प्राप्त होने के अनन्तर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र में एकाग्रता रूप परम सामायिक में स्थित होकर यह जीव क्रोधादिक आस्रवों की निवृत्ति करता है अर्थात् अपने आप दूर रहता है। इस प्रकार ज्ञान मात्र से ही बंध का निरोध सिद्ध हो जाता है। यहाँ सांख्यमत सरीखा ज्ञान मात्र से बंध का निरोध नहीं माना गया है। (किन्तु वैराग्यपूर्ण ज्ञान को ज्ञान कहा गया है और उससे बंध का निरोध होता है) किं च ? हम तुमसे पूछते हैं कि आत्मा और आस्रव सम्बन्धी जो भेदज्ञान है वह रागादि आस्रवों से निवृत्त है या नहीं ? यदि कहो कि निवृत्त है तब तो उसे भेद ज्ञान में पानक -पीने की वस्तु ठंडाई इत्यादि के समान अभेदनय से वीतराग चारित्र और वीतराग सम्यक्त्व भी है ही। इसी प्रकार सम्यग्ज्ञान से ही बंध का निरोध सिद्ध हो जाता है और यदि वह भेदज्ञान रागादि से निवृत्त नहीं है तो वह सम्यग्भेद ज्ञान ही नहीं है।

यहाँ पर आचार्यदेव ज्ञान शब्द से सम्यक्दर्शन, सम्यक् चारित्र का भी ग्रहण किये हैं। क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से विषय वासना से रहित संसार शरीर भोगों से विरक्त रूप वीतराग ज्ञान को ही ज्ञान रूप से स्वीकार किया गया है।

**हिताहित प्राप्ति परिहार समर्थ हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत्॥**

**“परीक्षामुख” ॥2॥**

जिससे हित की प्राप्ति अहित का परिहार होता है वह प्रमाण है जो कि सम्यग्ज्ञान स्वरूप है-

**‘अज्ञान निवृत्तिहानोपादानोपेक्षाश्च फलम्-(परीक्षामुख)’**

**सूत्र 1 अध्याय 5**

अज्ञान की निवृत्ति अहित का त्याग, हित की प्राप्ति, वीतराग स्वरूप निरपेक्षरूप समता भाव यह सम्यग्ज्ञान का फल है।

उपरोक्त सिद्धान्त से सिद्ध होता है कि केवल ज्ञान मोक्ष का कारण नहीं है और केवल अज्ञान बंध का कारण नहीं है। इस सत्य का प्रतिपादन करते हुए तार्किक चूडामणि महान् दार्शनिक संत आचार्य समन्तभद्रस्वामी “आत्ममीमांसा” में कहते हैं-

---

**अज्ञानाच्चेद्भ्रुवो बन्धो। ज्ञेयानन्त्यात्र केवली॥**

**ज्ञानस्तोकाद्विमोक्षश्चे।दज्ञानद्वहुतोऽन्था ॥१९६॥**

यदि एकान्ततः अज्ञानता से बंध होता है ऐसा मान लिया जाये तब ज्ञेय अनंत होने से छद्मस्थ ( 12वें गुणस्थान तक का असर्वज्ञ जीव ) जीव अनंत ज्ञेय को नहीं जान सकता है तब वह केवली या मुक्त नहीं हो सकता है इससे सिद्ध होता है कि केवल अज्ञानता ही बंध का कारण नहीं है। यदि अल्प ज्ञान से मोक्ष होता है मान लिया जाए तब अधिक अज्ञानी होने से शीघ्र मोक्ष हो जायेगा। इसलिए अज्ञानता भी मोक्ष के लिए कारण नहीं है। मोक्ष का समर्थ कारण क्या है? इसका प्रतिपादन आचार्य देव ने स्वयं निम्न प्रकार किया है-

**अज्ञानमोहनो बन्धो नाऽज्ञानाद्वीत मोहतः।**

**ज्ञानस्तोकाच्च मोक्षः स्यादमोहनमोहिनोऽन्यथा॥१९८॥ (देवागमवृत्ति)**

मोह सहित अज्ञानता से बंध होता है मोहरहित अज्ञानता से बंध नहीं होता है। मोह दर्शन मोहनीय एवम् चारित्र मोहनीय की अपेक्षा दो प्रकार का है। दर्शन मोहनीय एवं चारित्रमोहनीय सहित अज्ञान ( अल्पज्ञ ) से बंध होता है। परन्तु दर्शन मोहनीय एवं चारित्र मोहनीय रहित अज्ञानता से बंध नहीं हाता है। इससे सिद्ध हाता है कि मोहरहित कम ज्ञान से मोक्ष हो सकता है मोह सहित ज्ञान से अथवा विपुल ज्ञान से अथवा विपुल मिथ्याज्ञान से बंध होता है।

क्या यही मोक्ष का मार्ग है? उसका समाधान करते हैं-

**बंधाण च सहावं वियाणिटु अप्पणो सहावं च।**

**बंधेषु जो ण रज्जदि सो कम्मदिमोक्खण कुणदी ॥३१५॥ (समयसार)**

बंध के स्वभाव को और आत्मा के स्वभाव को जानकर के जो पुरुष विरक्त होता है वही कर्मों को काट सकता है।

भाव बंध मिथ्यात्व और रागादि स्वरूप है। इसके स्वभाव को जानकर अर्थात् हेय-उपादेय के विषय में जो विपरीत मान्यता है अर्थात् हेय को उपादेय और उपादेय को हेय समझना मिथ्यात्व कहलाता है तथा पंचन्द्रियों के विषय में इष्ट और अनिष्ट का विचार होना रागादिक का स्वभाव है उसे जानकर केवल बंध स्वभाव को ही नहीं परन्तु आत्मा के अनन्त ज्ञानादि स्वभाव को जानकर द्रव्य बंध के हेतुभूत मिथ्यात्व और रागादि रूप भाव बंध है उन में निर्विकल्प समाधि के बल से रंजायमान नहीं होता से वह कर्मों का नाश करता है।

---

सम्यक् श्रद्धा एवं सम्यक् चारित्र रहित विपुल मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञान से मोक्ष नहीं हो सकता है। इतना ही नहीं मोक्ष के साधक रूप श्रमण भी नहीं हो सकता है। इस बात का कुंदकुंद स्वामी ने भावप्राभृत मे सोदाहरण निम्न प्रकार से वर्णन किया है-

**अंगाई दस य दुण्णय चउदस पुव्वाइ सयल सुयणाणे।**

**पढिओ अभव्वसेणो ण भाव समणत्तणं पत्तो ॥52॥**

(भावप्राभृत)

द्वादशांग एवं चतुर्दश पूर्वात्मक सकल श्रुतज्ञान को पढकर भी भव्यसेन मुनि भावश्रमण नहीं हुए थे।

भव्यसेन मुनि ने सम्यग्दर्शन से रहित होने के कारण श्रुतज्ञान को केवल शब्द से एवं अर्थ से पढे थे किन्तु भावात्मक रूप से अनुभव नहीं किये थे। शब्द और अर्थ से भी पूर्ण द्वादशांग का अध्ययन नहीं किये थे किन्तु एकादश अंग का पठन किये थे। द्वादशांग तथा चतुर्दश पूर्व का अध्ययन अभव्य मिथ्यादृष्टि नहीं कर सकता है। सकल श्रुतज्ञान का अध्ययन करने वाला महामुनिश्वर, श्रुतकेवली गणधर या सौधर्मइन्द्र, सर्वार्थसिद्धि के देव आदि परीतसंसारी जीव हो सकते हैं।

आध्यात्मिक शब्द ज्ञान जीव को मोक्ष प्राप्त कराने के लिए अकिञ्चत्कर है। इस सिद्धान्त को जैन आध्यात्मिक साधक के साथ-साथ जैनैतर साधकों ने भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है-

**वीणाया रूप सौन्दर्य तन्त्रीवान सौष्ठम्।**

**प्रजारञ्जन मात्रं तन्न साम्राज्य कल्पते ॥59॥**

(विवेक चूडामणि)

**वाग्वैश्वरी शब्द झरी शास्त्र व्याख्यान कौशलम्।**

**वैदुष्यं विदुषां तद्वद्भुव्यते न तु मुक्तये ॥ 60॥**

जिस प्रकार वीणा का रूप लावण्य तथा तंत्री को बजाने का सुन्दर ढंग मनुष्यों के मनोरंजन का ही कारण होता है, उससे कुछ साम्राज्य की प्राप्ति नहीं हो जाती, उसी प्रकार विद्वानों की वाणी की कुशलता, शब्दों की धारावाहितकता, शास्त्र व्याख्यान की कुशलता और विद्वत्ता भोग ही का कारण हो सकती है, मोक्ष का नहीं

**अविज्ञाते परे तत्त्वे शास्त्राधीतिस्तु निष्फला।**

**विज्ञातेऽपि परे तत्त्वे शास्त्रधीतिस्तु निष्फला॥61॥**

---

परम तत्त्व को यदि न जाना तो शास्त्राध्ययन निष्फल (व्यर्थ) ही है, और यदि परम तत्त्व को जान लिया तो शास्त्राध्ययन निष्फल (अनावश्यक) ही है।

**शब्द जालं महारण्यं, चित्त भ्रमण कारणम् ।**

**अतः प्रयत्नज्ज्ञातव्यं तत्त्वज्ञातत्वमात्मनः ॥62॥**

शब्द जाल तो चित्त को भटकाने वाला एक महान् वन है, इसलिए किन्हीं तत्त्वज्ञानी महात्मा से प्रयत्नपूर्वक आत्म तत्त्व को जानना चाहिए।

## **स्व शुद्धात्मा अनुभव ज्ञान ही सुज्ञान**

(चाल : छोटी-छोटी गैया ....., सायोनारा)

आत्मज्ञान होता सम्पन्नज्ञान, आगम अनुसार अनुभव गम्य ज्ञान।

स्व-संविति पूर्ण है विशुद्ध ज्ञान, श्रद्धा-प्रज्ञा सहित चर्या सम्पन्न।।

आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र युक्त, रागद्वेष मोह विकार रिक्त।

अन्यून अतिरिक्त शंका रहित, विपरीत व विभ्रम रहित।। (1)

चतुर्थ गुणस्थान से होता प्रारंभ, श्रेणी आरोहण से होता विशुद्ध।

तरेहवे गुणस्थान में होता सम्पूर्ण, सिद्ध अवस्था में होता शाश्वत।।

इससे भिन्न होता मिथ्याज्ञान, कुमतिश्रुत अवधि कुज्ञान।

सुमति श्रुत अवधि मनः पर्यय, केवल होते हैं उत्तरोत्तर सुज्ञान।। (2)

आध्यात्मिक दृष्टि से वह होता सुज्ञान, जो शुद्धात्म ज्ञान सम्पन्न।

अन्यथा सभी ज्ञान होते कुज्ञान, लौकिक से ले धार्मिक। (आगम) ज्ञान।

ईकाई बिना यथा शून्य का मूल्य, नहीं होता है उसका स्वतंत्र मूल्य।

ईकाई पूर्वक होता उसका मूल्य, तथाहि सुज्ञान में आत्मा ईकाई तुल्य।। (3)

आत्म-अनुभव शून्य आगम। (धार्मिक) ज्ञान, तोता व टेप सम होता कुज्ञान।

मिश्रि खाये बिना न स्वाद संभव, आत्मानुभव बिना न सुज्ञान संभव।।

अमूर्तिक आत्मा न इन्द्रिय गम्य, भौतिक यंत्रादि से न होता आत्मानुभव।

अमूर्तिक चेतनामय होने से आत्मा, चेतना से अनुभव अतः है आत्मा।।(4)

इन्द्रियादि चेतना से होते सचित्त, चेतना रहित इन्द्रियादि होते अचित्त।

अचित्त होत है संवेदना रहित, वे न जानते हैं स्व पर तत्व।

यथा विद्युत यंत्र विद्युत चालित, विद्युत बिना वे न करते काम।

इन्द्रिय आदि चेतना से संचालित, चेतना बिना वे होते अचित्त।। (5)

जो चेतना जानती स्व को चेतनामय, वह चेतना ही होती सुज्ञानमय।  
 जो चेतना न जानती स्व को चेतनामय, वह चेतना ही होती कुज्ञानमय।।  
 शुद्ध चेतना है सच्चिदानन्दमय, अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय।  
 तन-मन-धन इन्द्रिय रहित -शुद्ध, जन्म -जरा-मरण रहित सिद्ध॥ (6)  
 ऐसा अनुभव ही है आत्मानुभव, इससे ही ज्ञान होता सुज्ञानमय।  
 तदनुकूल आचरण है शुद्धाचरण इससे ही मिलता है परिनिर्वाण।  
 इस हेतु ही होते सभी धर्मकर्म, अन्यथा वे सभी होते अधर्म,  
 यह है आध्यात्मिक परम ज्ञान, कनकनन्दी का स्व शुद्धात्मा ज्ञान॥

सीपुर, दि. 24-2-2017 मध्याह्न- 3.05

**प्रश्न :** समयसार क्या निश्चय से ग्रन्थ स्वरूप है?

**उत्तर :** महान आध्यात्मिक योगी पुरुष आध्यात्मिक क्रान्तिकारी एवं मूल आम्नाय के मुख्य स्तंभ स्वरूप आचार्य कुन्दकुन्द के उनके वाङ्मय में समयसार अनन्यतम कृति है। इस शास्त्र में आचार्यवर्य ने समयसार स्वरूप शुद्धात्म द्रव्य-सिद्ध भगवान् का वर्णन किया है।

समय पाहुडं प्राभृतं सम्यक् अयः बोधो यस्य भवति का समय आत्मा, अथवा समं एकीभावेनायनं गमनं समयः। प्राभृतं सारं सारः शुद्धावस्था समयस्यात्मनः प्राभृतं समय प्राभृत, अथवा समय एवं प्राभृत समय प्राभृतम् (स. सार जयसेनाचार्य त. वृ.गा 1)

समय प्राभृत ग्रन्थ का सम्यक् -समीचीन अर्थ बोध, ज्ञान है। जिसका वह समय अर्थात् आत्मा। अथवा समम् एकीभावेनायनम् गमनं “समयः” अर्थात् एकमेक रूप से जो गमन उसका नाम समयः प्राभृत अर्थात् सार शुद्धावस्था। इस प्रकार समय नाम आत्मा उसका प्राभृत अर्थात् शुद्धावस्था वही हुआ समय प्राभृत अथवा समय जो है वही प्राभृत सो समय प्राभृत।

स्वरूपादप्रच्यवनात् टंकोत्कीर्णचित्स्वभावो जीवो नाम पदार्थः समयः समयत एकत्वेन युगपज्जानाति। (स.सा. अमृचन्द्र आचार्य॥ गा.2)

स्व स्वरूप से च्युत न होने से टंकात्कीर्ण चित्स्वभाववाला जीव नाम पदार्थ है वही समयसार है, एक काल में ही जानना और परिणमन करना ये दो क्रियायें जिसमें हो वह समय है।

---

“स्वसमय एवं शुद्धात्मनः स्वरूप न पुनः पर समय”

(स.सा. अमृतचन्द्र आचार्य गा. 2)

स्वसमय ही शुद्धात्मा का स्वरूप है, पर समय शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं अर्थात् शुद्धात्मा सिद्ध परमेष्ठी ही स्वसमय है। अन्य समस्त संसारी जीव पर समय है।

**बहिरंतरण भेयं पर समयं भण्णियं जिणिंदेहिं।**

**परमणो समसमयं तब्भेय जाण गुण ठाणे।**

मिस्सोत्ति बहिरण्णा तरतमया तुरिय अंतरण जहण्णा संतोत्ति मज्झिमंतरखीणुत्तम परम जिण सिद्धा ॥ रयणसार। कुन्दकुन्दाचार्य गा. 148-149 ।

जिनेन्द्र भगवान द्वारा बहिरात्मा एवं अंतरात्मा को परसमय कहा गया है, परमात्मा स्वसमय है उसको गुणस्थान के अनुसार जान लेना चाहिए।

मित्र गुणस्थान पर्यन्त अर्थात् मिथ्यात्व, सासादन, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती जीव तारतम्य से बहिरात्मा है। चतुर्थ गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि जीव जघन्य अन्तरात्मा है। पाँचवे गुणस्थान अर्थात् देशव्रती श्रावक से लेकर ग्यारहवाँ उपशांत मोही क्षीणमोही महामुनि उत्तम अन्तरात्मा है। अरिहन्त भगवान् अयोग केवली भगवान एवं सिद्ध भगवान् परमात्मा है। जैसे पंडित दौलतरामजी ने भी छहढाला में कहा है।

**बहिरातम अन्तर आतम, परमातम जीव त्रिधा है।**

**देह जीव को एक गिनै बहिरातम तत्त्व मुधा है।**

**उत्तम-मध्यम, जघन त्रिविध के अन्तर आतम ज्ञानी।**

**द्विविध संग बिन शुद्ध उपयोगी मुनि उत्तम निज ध्यानी।।**

(पं. दौलतरामजी । छहढाला। ढा. 3-4)

**जीवो चरित्त दंसण णाणट्टियं तं हि ससमयं जाण ।**

**पुग्गल कम्मपदेसट्टियं च तं जाण परसमयं ॥**

(स. सा. गा. 2)

वह जीव जब चारित्र दर्शन ज्ञान में स्थित रहता है उस समय में उसे स्वसमय समझो। अर्थात् विशुद्ध ज्ञान दर्शन स्वभाव वाले निज परमात्मा में रूचि रूप सम्यग्दर्शन और उसमें रागादि रहित स्वसंवेदन का होना वह सम्यग्ज्ञान तथा निश्चल स्वानुभूति रूप वीतराग चारित्र इस प्रकार कहे गये लक्षण वाले निश्चय रत्नत्रय के द्वारा परिणत जीवपदार्थ को हे शिष्य! तू स्वसमय समझ। पुद्गल प्रदेश में

---

स्थित उसी जीव को तू परमसय समझ पूर्वोक्त रत्नत्रय न होने से उस काल में परसमय जानो।

अथः शुद्ध परमात्मतत्त्व प्रतिपादन मुख्यत्वेन विस्ताररूचिशिष्यप्रति बोधनार्थ श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव निर्मिते समयसार प्राभृतगन्थं। (स. सा. जयसेनाचार्य ता. वृ.गा.1)

अब शुद्ध परमात्म तत्त्व को मुख्य लेकर विस्तार में रूचि रखने वाले शिष्यों के प्रतिबोधन के लिए श्री कुन्दकुन्दाचार्य देव के द्वारा बनाया हुआ समय प्राभृत ग्रन्थ है। समयसार रूप शुद्धात्म तत्त्व का वर्णन कुन्दकुन्दाचार्य देव ने इस ग्रन्थ में विशेष रूप से प्रतिपादन करने से इस ग्रन्थ का यथार्थ नाम समयसार है।

### समयसार के लिए योग्य पात्र

समयसार ग्रन्थ में वर्णित जो आत्म तत्त्व है उस का प्रत्यक्ष अनुभव निर्विकल्प समाधिस्थित निश्चयनय अवलम्बन में स्थित महामुनि को ही होता है। क्योंकि समयसार में प्रतिपादित विषय उनके अनुभव एवं आचरण में होने के कारण समयसार ग्रन्थ भी महामुनि के लिए ही विशेष प्रयोजनवान् है वे ही अन्तः बाह्य चित्त चमत्काररूप समयसार को आत्मसात कर सकते हैं, जिसने अन्तरंग बहिरंग ग्रन्थ रूपी पर समय त्याग किया है, वह इसे हृदयंगम कर सकता है, आचरण में ला सकता है। परन्तु अन्तरंग बहिरंग ग्रन्थवान (परिग्रही) पर समयरत जीव है वह केवल इस ग्रन्थ को ग्रन्थ रूप से (परिग्रही) सिर पर धारण कर सकता है, परन्तु पूर्ण रूप से ग्रहण करके हृदय में ग्रहण नहीं कर सकता है, जैसे कि शेरनी (सिंहणी) का दूध जिस किसी पात्र में नहीं रहता उसे सुवर्ण पात्र ही चाहिए, अन्यथा पात्र छिन्न-भिन्न होता है, अतः उसे योग्य पात्र ही चाहिए। अतः संपूर्ण रूप से निर्मोह, निस्संग, विराग, मुनि ही उस समयसार को जानने समझने के व कथन करने के पात्र हैं अन्यथा अपात्र होने पर भी इस समयसार को धारण करने लगे तो जीवनरूपी पात्र छिन्न-भिन्न होगा, टुकड़े-टुकड़े होगा अर्थात् स्वच्छंद विषयी -कषायी होगा। जैसे भोजन को योग्य व्यक्ति, योग्य रीति से भोजन करके पचाने पर वह भोजन शक्तिवर्धक होता है। परन्तु अयोग्य व्यक्ति अयोग्य रीति से भोजन करने पर अपचन होकर शक्ति क्षीण होती है, रोगों का कारण बनता है। भोजन सिर पर रखने पर केवल वह भार स्वरूप होता है, परन्तु योग्य रीति से भोजन करने से शक्ति वर्धक होता है। उसी प्रकार शास्त्र को केवल सिर पर रखने

---

पर सिर का बोझा बढ़ता है परन्तु आत्मा को कोई लाभ नहीं मिलता है। इस समयसार में वर्णित शुद्धात्म तत्त्व का परिज्ञान एवं प्राप्ति किनको होती है? स्वयं जयसेनाचार्य ने प्रथम गाथा की टीका में कहा है-

**“निर्विकार स्वसम्बेदन ज्ञानेन शुद्धात्म परिज्ञानं प्राप्तिर्वा  
प्रयोजनमित्यभिप्रायः।”**

इस समयसार ग्रन्थ का प्रयोजन यह है कि निर्विकार स्वसम्बेदन ज्ञान के द्वारा शुद्धात्मा को जानना व प्राप्ति करना है।

सद्दृष्टि जनः पुनरभेदरत्नत्रय लक्षणनिर्विकल्प समाधिबलेन फलस्थानीय निश्चयनयमाश्रित्य शुद्धात्मामनुभवतीत्यर्थः। स. सा. जयसेनाचार्य ता. वृ.गा 11।

सम्यग्दृष्टि पुनः अभेद रत्नत्रय लक्षण निर्विकल्प समाधि बल से फल-स्थानीय निश्चयनय का आश्रय लेकर शुद्धात्मा का अनुभव करता है।

**निश्चयनय किसके लिये-**

**सुद्धो सुद्धोदेसो णायव्वो परमभाव दरिसीहिं।**

**ववहार देसिदो पुण जे दु अपरमेड्डिदाभावे।। (स.सा.गा. 12)**

शुद्ध निश्चयनय शुद्ध द्रव्य का कथन करने वाला है, वह परम शुद्धात्मा की भावना में लगे हुए पुरुषों के द्वारा अंगीकार करने योग्य है। परन्तु जो पुरुष अशुद्ध व नीचे की अवस्था में स्थित है, उनके लिए व्यवहार नय ही कार्यकारी है अर्थात् उपादेय है।

शुद्ध निश्चयनय शुद्ध द्रव्य का कथन करने वाला है। वह शुद्धता को प्राप्त हुए आत्मदर्शियों के द्वारा जानने-भावने अर्थात् अनुभव करने योग्य है। क्योंकि वह सोलहवानी सुवर्ण के समान अभेद रत्नत्रय स्वरूप समाधि काल में प्रयोजनवान् होता है। किन्तु व्यवहार अर्थात् विकल्प भेद, अथवा पर्याय के द्वारा कहा गया जो व्यवहार नय है वह पन्द्रह, चौदह आदि वानी के सुवर्ण लाभ के समान उन लोगों के लिए प्रयोजनवान् है जो लोग अशुद्ध रूप शुभोपयोग में जो कि असंयत सम्यग्दृष्टि अथवा श्रावक की अपेक्षा तो सराग सम्यग्दृष्टि लक्षणवाला है और प्रमत्त-अप्रमत्तसंयत की अपेक्षा भेद रत्नत्रय लक्षण वाला है। ऐसे शुभापयोग रूप जीव पदार्थों में स्थित है।

**व्यवहार नय त्यागने से हानि**

यद्यपि व्यवहार नय बहिर्द्रव्य का आलंबन लेने से अभूतार्थ है किन्तु रागादि

---

बहिर्द्रव्य के आलंबन से रहित और विशुद्ध ज्ञान, दर्शन स्वभाव के आलम्बन सहित ऐसे परमार्थ का प्रतिपादक होने से इसका भी कथन करना आवश्यक है क्योंकि यदि व्यवहार नय को सर्वथा भुला (छोड़) दिया जाय तो फिर शुद्ध निश्चय नय से तो त्रस स्थावर जीव है ही नहीं। अतः फिर लोग स्वच्छंद, निःशंक होकर उनके मर्दन में प्रवृत्ति करने लगेंगे ऐसी दशा में पुण्यरूप धर्म का अभाव हो जायेगा, एक दूषण तो यह आयेगा।

तथा शुद्ध निश्चयनय से तो जीव राग-द्वेष-मोह से रहित पहले से ही है अतः मुक्त ही है, ऐसा मानकर फिर मोक्ष के लिए भी अनुष्ठान कोई क्यों करेगा ? अतः मोक्ष का भी अभाव हो जायेगा। यह दूसरा दूषण आयेगा। इसलिये व्यवहार नय का व्याख्यान परम आवश्यक है, निरर्थक नहीं है।

(आचार्य ज्ञानसागर हिन्दी टीका से उद्धृत)

परमार्थनय तो जीव को शरीर और राग-द्वेष मोह से भिन्न कहता है यदि इसी का एकान्त किया जावे, तब शरीर तथा राग, द्वेष, मोह से भिन्न पुद्गलमय ठहरे और तब पुद्गल की बात से हिंसा नहीं हो सकती है और राग-द्वेष-मोह से बंध नहीं हो सकता है। इस प्रकार परमार्थ से संसार और मोक्ष दोनों का अभाव हो जायेगा ऐसा एकान्त रूप वस्तु का स्वरूप नहीं है। अवस्तु का श्रद्धान, ज्ञान और आचरण मिथ्या अवस्तु रूप ही है, इसलिये व्यवहार का उपदेश न्याय प्राप्त है। इसी प्रकार स्याद्वाद से दोनों नयों का विरोध रहित श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। (पं. जयचन्द्रजी कृत हिन्दी टीका)

## समयसार की दृष्टि में ज्ञानी व अज्ञानी

यद्यपि सम्यग्दर्शन होने के बाद आगम अपेक्षा सम्यग्दृष्टि जीव ज्ञानी है, परंतु आध्यात्मिक दृष्टि अर्थात् समयसार दृष्टि से सम्पूर्ण पंचेन्द्रिय जनित विषय भोगों से रहित सम्पूर्ण संकल्प -विकल्प से रहित अंतरंग बहिरंग परिग्रह से निर्विकल्प ध्यान स्थित महामुनि ही ज्ञान है। उसके अतिरिक्त उस अवस्था से नीचे-नीचे के गुणस्थानवर्ती जीव अज्ञानी है, क्योंकि शुद्धात्मानुभूति रूप निर्विकार स्वसंवेदन ज्ञान, अनुभूति रूप आत्मानंद का आस्वादन पूर्ण रूप से नहीं कर पाता है। यथायोग्य विषय कषाय एवं पर पदार्थ में अनुरंजित होने के कारण वह अज्ञानी है। समयसाररूपी बाह्य शास्त्रीय ज्ञान को किसी प्रकार का महत्त्व नहीं देता है अर्थात् ज्ञानी नहीं मानता है।

---

पंडिय-पंडिय-पंडिया कणु छोडि तुस ही खंडिया ।  
सद्दो अत्थेसि तुदुठोसि परमत्थु ण जाणहि मूढो सि ॥

(पाहुड दोहा मुनि रामासिंह)

हे शब्द -अर्थ ग्रन्थ से संतुष्ट को प्राप्त करने वाले पंडित। तू परमार्थ ज्ञान बिना केवल मूढ है, अज्ञानी है, मिथ्यादृष्टि है। जैसे कण रहित तुस को कूटने पर उससे विशेष लाभ नहीं होता उसी प्रकार तूने परमार्थ रहस्य को जाने बिना केवल शब्द में संतुष्ट होकर गाथाएँ रटकर लचकदार भाषा में भाषण करके, पर का मनोरंजन करके भी तू कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं कर पाया। कारण कि शब्द, ग्रन्थ में परमार्थ तत्त्व, धर्म अथवा आध्यात्मिक नहीं है वह केवल सूचना मात्र है। जैसे किसी रोगी के द्वारा औषधि का नाम लिखे हुए कागज को सेवन करने से वह रोग से दूर नहीं होता है। उसी प्रकार शास्त्र कण्ठस्थ करने से भवरोग दूर नहीं होता है। जैसे चित्रित कुएँ से जल प्राप्त नहीं होता है एवं प्यास भी नहीं बूझती है। चित्रित मिष्ठान व भोजन से जिह्वा को स्वाद नहीं मिलता है एवं पेट नहीं भरता है। जैसे माँ बेटे को हाथ की अंगुली से चन्द्र को संकेत करती है, दिखाती है, परन्तु चन्द्र अंगुली में नहीं है। इसी प्रकार शास्त्र में परम तत्त्व का संकेत है, परम तत्त्व को दिखाता है किन्तु ग्रन्थ में परम तत्त्व नहीं है । जैसे पानी के पात्र में सूर्य बिम्ब दिखाई देता है किन्तु पानी में सूर्यबिम्ब नहीं है किन्तु पानी से बहुत दूर में है। उसको प्राप्त करने के लिए तदनकूल क्रिया करना आवश्यक है। जैसे मानचित्र में देश-विदेश का चित्र है परन्तु हम उसमें ही देश-विदेशों को ढूँढेंगे तो उसमें देश-विदेश नहीं मिल सकता है। उसी प्रकार शास्त्र में तत्त्वों का मानचित्र है किन्तु यथार्थ तत्त्व उसमें नहीं है। उस संकेत के अनुसार हम सम्यक् क्रिया करेंगे तो उस तत्त्व को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे रोड (रास्ते) पर माईल स्टोन में नगरों का नाम एवं दूरी एवं दिग्सूचित रहता है परन्तु उस माईल स्टोन को पकड कर बैठने पर उन-उन नगरों में नहीं पहुँच सकते हैं । उस माइल स्टोल को छोडकर एवं गमन करने पर ही उन-उन नगरों को प्राप्त कर सकते हैं। उसी प्रकार शास्त्र में माक्षादि तत्त्वों का वर्णन है। उस वर्णन के अनुसार यदि सम्यक् आचरण करेंगे तब मोक्षादि तत्त्व की प्राप्ति हो सकती है। जैसे एक विद्यार्थी वाणिज्य विद्या (कॉमर्स) में स्नातकोत्तर (एम.काम.) होने के बाद भी वह कुशल व्यापारी नहीं हो सकता है। वाणिज्य विद्या का विद्यार्थी होने मात्र से वह सेठ नहीं बन सकता है। एक कुशल

---

निरक्षर व्यापारी व्यापार के माध्यम से सेठ बन सकता है परन्तु साक्षरी विद्या वाणिज्य विशारद भी उस निरक्षरी सेठ का नौकर कार्य कर सकता है।

अक्खरडेहिं जि गव्विया कारणु तेण मुणंति ।  
वंस विंहा था डोम जि परहत्थडा धुणंति ॥

(पाहुड दोहा मुनि रामसिंह)

कारण को नहीं जानने वाला अक्षरज्ञ मनुष्य का ज्ञान व्यर्थ है। उससे वह आत्मोन्नति नहीं कर सकता है। वह स्वावलंबी रूप आत्मावलंबी नहीं हो सकता है। जैसे डोम बांस से रहित होने के कारण अपना खेल दिखाने रूप कार्य नहीं कर सकता है। केवल हाथ धुनते रहता है। उसी प्रकार शास्त्र के रहस्य को हृदयगम नहीं करने वाला, आचरण में नहीं लाने वाला केवल हाथ मलते रहता है।

सत्थं णाणं ण हवदि जम्हा सत्थं ण याणदे किंचि।

तम्हा अण्णं णाणं अण्णं सत्थं जिणा वित्ति।।

सद्दो णाणं ण हवदि जम्हा सद्दो ण याणदे किंचि।

तम्हा अण्णं णाणं अण्णं सद्दं जिणा वित्ति।।

(स.सा. गा 414-415)

शास्त्र और ज्ञान एक नहीं है क्योंकि शास्त्र कुछ भी नहीं जानता है। वह तो जड़ है। इसलिये ज्ञान भिन्न वस्तु है और शास्त्र उससे भिन्न वस्तु है। ऐसा जिन भगवान् कहते हैं।

शब्द भी ज्ञान नहीं है क्योंकि शब्द कुछ नहीं जानता है। इसलिये ज्ञान अन्य है और शब्द अन्य है और शब्द उससे भिन्न वस्तु है ऐसा जिन भगवान् कहते हैं।

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।

उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥

जो विद्या कण्ठ में न रहकर पुस्तक में लिखी पड़ी है। जो धन अपने हाथ में न रहकर पराये हाथ में पड़ा है अतएव आवश्यकता पडने पर अपने काम नहीं आ सकती, अतः वह विद्या न विद्या है और न वह धन, धन ही है।

जैसे एक कृषि विद्या में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण होकर भी कृषि कार्य करने में अर्थात् हल चलाने में मिट्टी खोदने में, मिट्टी ढोने आदि में असमर्थ भी हो सकता है। परन्तु जो कृषक है जिसने कृषि विद्या संबंधी विशेष आक्षरिक अध्ययन भी नहीं किया वह कृषिकार्य को दक्ष होकर करता है। उसी प्रकार केवल शास्त्रज्ञ

आत्मतत्त्व से, आत्म भावना से, धर्म-कर्म से दान पूजादि कर्तव्यों के पालन करने में असमर्थ भी हो सकता है, और परामुख भी हो सकता है। उसी प्रकार अक्षरज्ञ पंडित के लिए वह शास्त्र विशेष कार्यकारी नहीं है परंतु जो विशेष शास्त्रज्ञ नहीं है किन्तु आचरण में धर्म को लाता है वह कृत्कार्य हो सकता है। जैसे कि प्रथमानुयोग में शिवभूति, भीमसेन जैसे अनेक अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ मोक्ष को प्राप्त करने वालों के दृष्टांत मिलते हैं। तथा ग्याहरह अंग पाठी भी अपने कुकृत्यों से अधोगति-दुर्गति को प्राप्त हुए। जैसे केवल भोजन करने मात्र से शक्ति वृद्धि नहीं होती है। भोजन के यर्थाथ पाचन से ही शक्ति प्राप्त होती है। उसी प्रकार शास्त्र को आत्मसात करके तदनुकूल आचरण करने से ही आत्मविशुद्धि होती है। जैसे भोजन नहीं पचने से उससे रोग ही बढ़ता है उसी प्रकार शास्त्र को भी नहीं पचाने पर अर्थात् आचरण में नहीं लाने पर वह भी अपाच्य आहार के समान अपथ्य का अर्थात् विष का कार्य करता है।

**यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।**

**लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणं किं करिष्यति।। (नीति वाक्य)**

जिसके विवेकरूपी प्रज्ञा चक्षु नहीं हैं। उसके लिए शास्त्र कोई कार्यकारी नहीं हैं। जैसे दृष्टि रहित अंधे के लिए दर्पण कोई कार्यकारी नहीं हैं। अर्थात् दृष्टि शक्ति बिना मनुष्य स्वच्छ दर्पण में भी अपना मुख नहीं देख पाता हैं। उसी प्रकार हिताहित विवेक रहित मनुष्य भी शास्त्र से अपने आत्मस्वरूप को प्राप्त नहीं कर पाता है।

**विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां परपीडनाय।**

**खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्ज्ञानाय दानायचरक्षणाय।।**

खल दुर्जन व्यक्ति विद्या प्राप्त करके विवाद करता है, धन प्राप्त करके मदोन्मत होता है, शक्ति प्राप्त करके दूसरो को पीडा देता है परन्तु साधु धर्मात्मा पुरूष विद्या प्राप्त करके हिताहित विवेक विद् ज्ञानी बनता है, धन प्राप्त करके दान देता है, एवं शक्ति प्राप्त करके दूसरों की रक्षा करता है। जैसे अग्नि के द्वारा भोजन तैयार करके उससे शरीर की पुष्टि कर सकते है और अग्नि को शरीर के ऊपर डालकर शरीर को नष्ट भी कर सकते हैं। उसी प्रकार शास्त्र के माध्यम से आत्म-विशुद्ध करने से शास्त्र, शास्त्र हैं अन्यथा वह शस्त्र है अर्थात् पाठक के लिए घातक भी हैं।

**“अज्ञानिनां निर्विकल्प समाधिभ्रष्टानां।”**

जो निर्विकल्प समाधि से भ्रष्ट है अर्थात् निर्विकल्प समाधि में स्थिर नहीं है

---

वह अज्ञानी है और जो निर्विकल्प समाधि में स्थित है वह ज्ञानी है।

निर्विकल्प समाधिरूप परिणाम से परिणत रहने वाला जो कारण समयसार है लक्षण जिसका उस भेदज्ञान के द्वारा सभी प्रकार के आरंभ से रहित होने के कारण ज्ञानी जीव का वह भाव शुद्धात्मा की ख्याति, प्रतीति, संवित्ति, उपलब्धि या अनुभूति रूप से ज्ञानमय ही होता है। किन्तु अज्ञानी जीव को पूर्वोक्त भेदज्ञान न होने से शुद्धात्मा की अनुभूति स्वरूप का अभाव होने से उसका वह भाव अज्ञानमय होता है।

जो आत्मा अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंतवीर्य रूप चतुष्टय को प्राप्त है वह कार्य समयसार कहलाता है, किन्तु जो अनंत चतुष्टय को प्राप्त न होकर उसकी प्राप्ति के लिए निर्विकल्प समाधि में लगता है वह उपर्युक्त कार्य समयसार का सम्पादक होने के कारण समयसार कहलाता है। जो सब प्रकार आरंभ-परिग्रह आदि से रहित होकर अपनी शुद्धात्मा की अनुभूति लिये हुए रहता है। अतः उसके राग-द्वेषादि रहित शुद्ध ज्ञानमय भाव ही होता है। किन्तु जो समाधि से च्युत होकर अशुद्ध होता है अतः उसका भाव उस समय अज्ञानमय होता है ऐसा आचार्य का कहना है। (स.सा. आचार्य ज्ञानसागर की हिन्दी टिकाविशेषार्थ। गा. 132)

**“आदा तावदु कत्ता से होदि णादव्वो तावत्कालं परमसमाधेरभावात्  
स चाज्ञानी जीवः कर्मणं कारको भवतीति ज्ञातव्यः।”**

तब तक परम समाधि के न होने से वह जीव अज्ञानी होता है जो कि कर्मों को करने वाला होता है, ऐसा समझना चाहिए।

निर्विकार स्वसंवेदन है लक्षण जिसका ऐसे भेद ज्ञान में निमग्न होकर भावना करनी चाहिए। इसी बात को फिर दृढ़ करते हैं कि जैसे कोई राजपुरुष भी राजा के शत्रुओं के साथ संसर्ग रखता है तो वह राजा का आराधक नहीं कहला सकता। उसी प्रकार परमात्मा की आराधना करने वाला पुरुष आत्मा के प्रतिपक्षभूत जो मिथ्यात्व व रागादि भाव है उन रूप परिणमन करने वाला होता है तब वह परमात्मा का आराधक नहीं हो सकता यह इसका निचोड़ (तात्पर्य) है। जिस प्रकार आत्मा से इतरपदार्थों में अहंकार रखने वाले को भी अप्रतिबद्ध बतलाया है, उसी प्रकार उन में ममकार रखने वाले को भी अप्रतिबद्ध बताते हुए उन सबसे दूर हटकर केवल निर्विकल्प समाधि में स्थित होने वाले जीव को ही अप्रतिबद्ध ज्ञान एवं सम्यग्दृष्टि कहा है। (आचार्य ज्ञानसागरजी की हिन्दी टीका से उद्धृत)।

---

निश्चयज्ञ कौन-

जो इन्द्रिये जिणित्ता णाणसहावधियं मुणादि आदं।

त खलु जिदिदियं ते भणंति जे णिच्छिदा साहू।।

(समयसार गा. में क्षेपक-कर्त्ताकर्माधिकार)

निश्चय में तत्पर वाले अर्थात् आत्म का अनुभव करने वाले साधु लोक उसे जितेन्द्रिय कहते हैं। जो इन्द्रियों को वश में करके अपने ज्ञानादि गुणों से परिपूर्ण अपनी आत्मा का ही अनुभव करता है।

यः कर्ता द्रव्येन्द्रिय-भावेन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय विषयान् जित्वा शुद्धज्ञान चेतना गुणेनाधिक परिपूर्ण शुद्धात्मानं मनुते ज्ञानात्यनुभवति संचेतयाति। तं पुरुषं खलु स्फुटं जितेन्द्रिय भणन्ति के साधवः के ते ? निश्चयज्ञा।

(स.सा. जयसेनाचार्य ता. गा. 36)

जो जीव द्रव्येन्द्रिय -भावेन्द्रिय रूप पंचेन्द्रियों के विषयों को जीतकर शुद्ध ज्ञान चेतना गुण से परिपूर्ण अपने शुद्धात्मा को मानता है, उस पुरुष को ही निश्चय नय से जानने वाले साधु लोग जितेन्द्रिय कहते हैं।

यः पुरुष उदयागतं मोहं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रिकाग्ररूप निर्विकल्प समाधिबलेन जित्वा शुद्धज्ञानगुणनाधिकं परिपूर्णमात्मानं मनुते जानाति भावयति। तं साधुं जित मोहं रहितमोहं परमार्थ विज्ञायाका ब्रुवन्ति कथयन्तीति।

(स. सा. जयसेनाआचार्य कृत . गा. 36)

जो पुरुष उदय में आये हुए मोह को सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र इन तीनों की एकाग्रता रूप निर्विकल्प समाधि के बल से जीतकर अर्थात् दबाकर शुद्धज्ञान गुण के द्वारा अधिक अर्थात् परिपूर्ण अपनी आत्मा को मानता है, जानता है, और अनुभव करता है उस साधु को परमार्थ के जानने वाले जित मोह अर्थात् मोह से रहित जिन, इस प्रकार कहते हैं। ( आचार्य ज्ञानसागर की हिन्दी टीका से उद्धृत )

उपरोक्त आगम प्रमाण से यह सिद्ध होता है कि केवल शास्त्र कण्ठस्थ करने से अध्ययन-अध्यापन करने से, उपदेश देने से, शास्त्रों की रचना एवं टीका करने से अथवा आत्म तत्त्व (निश्चय नय) का वर्णन करने से कोई निश्चय नहीं हो सकता। किन्तु जब भव्य सम्यग्दृष्टि जीव संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह को त्यागकर पंचेन्द्रिय विषय कषाय को जयकर परीषह उपसर्ग को सहन कर, कषायों का क्षय या उपशम करके, समस्त-विकल्प से दूर होकर, निर्विकल्प समाधि

के माध्यम से स्व शुद्धात्मा को जानता है, मानता है, भावना करता है वही निश्चय है अन्य नहीं। अर्थात् सातिशय सप्तम गुणस्थानवर्ती से ऊपर के गुणस्थानवर्ती जीव निश्चयज्ञ हैं उसके नीचे के गुणस्थानवर्ती जीव निश्चय नहीं है। पूर्ण निश्चयज्ञ तो केवलज्ञानी अरिहंत एवं सिद्ध ही है। परिग्रहादि धारण करके स्त्री विषय भोगकर, विषय कषायों में होते हुए अपने को निश्चयज्ञ मानता है वह स्वयं को ही पतित करता है। और उसी प्रकार गृहस्थ-श्रावक को पंडितों को भी अथवा निर्विकल्प समाधि से नीचे स्थितमुनियों को भी जो निश्चय मानता है, वह भी आगम के रहस्य को नहीं जानता है वह भी अंधकारमय में ही है।

### मुख्यरूप से समयसार किसके लिये-

“अत्र ग्रंथ वस्तुवृत्या वीतराग सम्यग्दृष्टिर्ग्रहण, वस्तु चतुर्थ गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टिस्तस्य गौणवृत्या ग्रहणं” (स.सा. ता. वृ 22 जयसेनाचार्य)

इस ग्रन्थ से वास्तविक वीतराग सम्यग्दृष्टि (ध्यानस्थ एवं श्रेणी स्थित मुनि) का ही ग्रहण है। परन्तु चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि का कथन यहाँ गौण है।

ध्यान स्थित मुनि समयसागर में वर्णित विषयों का अनुभव करता है, आचरण करता है, श्रद्धान करता है, मानता है, जानता है, इसलिये समयसार का विषय मुख्य रूप से मुनियों के लिए है। उसके नीचस्थ सम्यग्दृष्टि जैसे छठवाँ गुणस्थान स्थित मुनि, पाँचवे गुणस्थानवर्ती देशव्रती श्रावक एवं चतुर्थ गुणस्थानवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टि जीव समयसार का पूर्ण आचरण नहीं कर पाते हैं। चतुर्थगुणस्थानवर्ती जीव मुख्यता से श्रद्धान करता है किन्तु आचरण में नहीं ला पाता है, उसके लिए समयसार गौण है। सम्यग्दृष्टि जीव केवल तत्त्वों का श्रद्धान करता है परन्तु पंचेन्द्रियों के विषय से विरत नहीं हो पाता है, भोग-उपभोग को भोगता रहता है, धनोपार्जन के लिये व्यापार धन्धा करके त्रस और स्थावर का भी वध करता रहता है। मन सतत राग-द्वेष कामादि विषय वासना में रत रहता है, अत्यन्त स्थूल अणुव्रत भी धारण नहीं कर पाता है, अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह रहने के कारण उसका मन क्षुभित रहता है। मन और इन्द्रियों को वश करने में वह समर्थ नहीं हो पाता है जिससे वह स्थूल परिग्रह भी त्याग नहीं कर पाता है। जब वह उत्कृष्ट धर्मध्यान व पुण्यकर्म, शुभोपयोग भी नहीं कर पाता है तब वह कैसे अत्यन्त सूक्ष्म अन्तरंग परिग्रहों को त्याग करके मन को वशवर्ती करके निर्विकल्प ध्यान कर सकता है ? इसलिए समयसार के विषय को सम्यग्दृष्टि श्रद्धान करता है,

किन्तु आचरण नहीं कर पाता है, परन्तु उसके योग्य अन्य धार्मिक क्रियाओं को करते हुए जब आगे बढ़ते हुए अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह को छोड़ते हुए आर्तरौद्र ध्यान को नष्ट करते हुए शुभ ध्यान को ध्याते हुए मुनिरूप को धारण करते हुए निर्विकल्प समाधि में लीन होता है। तब समयसार को प्राप्त कर सकता है। जब तक इस अवस्था को प्राप्त नहीं हुआ है तब तक यथायोग्य दान-पूजा अभिषेक षट् आवश्यक, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान तीर्थयात्रा, देवदर्शन-जप-तप समायिक आदि शुभ क्रियायें करनी चाहिये, जो कि आत्म-विशुद्धि के लिए कारण है, पाप निर्जरा के लिये कारण, पुण्यबंध, का कारण एवं परंपरा से मोक्ष के लिए कारण है। यदि श्रावक अवस्था में रहते हुए यथायोग्य श्रावकों की क्रियाओं को नहीं करता है। वह इतोभ्रष्ट ततोभ्रष्ट उभयभ्रष्ट है इसी प्रकार मुनि भी जब तक निर्विकल्प समाधि को प्राप्त नहीं करता है तब तक 28 मूलगुण, देवदंदादि षट् आवश्यक क्रिया को निर्दोष पूर्वक पालन करना चाहिये। यदि इन शुभ क्रियाओं से पुण्यबंध होता है ऐसा मानकर त्यागकर देगा तो वह भी उभयभ्रष्ट है, क्योंकि घर-द्वार स्त्री कुटुम्बादि को छोड़कर इहलोक सुख से वंचित ही है तथा स्व मुनि योग्य कर्तव्य न करने से परलोक सुख से भी वंचित हो जाएगा। जो केवल सांसारिक सुख भोगते हुए परिग्रह को संचय करते हुए, स्त्री कुटुम्ब का सुख लेते हुए, भोग से योग मानते हुए, भक्ति से मुक्ति मानते हुए, संभोग से समाधि मानते हुए स्वयं को मोक्षगामी मुमुक्षु वीतरागी मानता है वह अपने को धोखा दे रहा है। क्योंकि उपरोक्त कार्य आत्मा से विपरीत होने के कारण उससे मोहनीयादि तीव्र पापबंध होते हैं जिससे केवल सांसारिक घोर दुःख ही दुःख मिलता है।

“दो मुख पंथी चले न पन्था दो मुख सुई सिये न कन्था।  
दोय बात नहिं होय सयाने, विषय भोग अरू मुक्ति प्रयाने”  
रागद्वेष के त्याग बिना यथार्थ पद नहीं।  
कोटि ग्रंथ पढो व्याख्या करो सब अकारज जाहि।।

**समयसार क्या ? उनके अनुभव कौन कर सकता है?**

कम्मं बद्धमबद्धं जीवे तु जाण णयपक्खं

णयपक्खतिक्कतो भण्णदि जो सो समयसारो।। (समयसार । गा. 150)

जीव में कर्म बन्धे हैं अथवा नहीं बन्धे हुए है इस प्रकार तो नय पक्ष जानो

---

और जो पक्ष से दूरवर्ती कहा जाता है, यह समयसार है, निर्विकल्प शुद्धात्म तत्त्व है।

“ततो य एव समस्तं नयपक्षमतिक्रामति स एव समस्तं विकल्पमतिक्रामति, य एव समस्त विकल्पमतिक्रामति स एव समयसार बिंदति।”

(श्रीमदमृतचन्द्राचार्यकृत आत्मख्याति)

इसलिये समस्त नय पक्षों को छोड़ता है, तथा वही समयसार का अनुभव कर सकता है।

शुद्धात्म तत्त्व के वास्तविक स्वरूप जो कि समयसार नाम से कहा जाता है वह है तो इन दोनों पक्षों से भिन्न प्रकार का ही है, क्योंकि व्यवहार नय के कहने के अनुसार जीव कर्मों से अबद्ध है वह भी नय का विकल्प है जो कि शुद्ध जीव का स्वरूप नहीं है। इसलिये निश्चय और व्यवहार के द्वारा जीव को बद्ध और अबद्ध कहना यह जीव मात्र का स्वरूप नहीं है। यह नय का विकल्प है। नय जितने भी होते हैं वह सब श्रुतज्ञान के विकल्प रूप होते हैं वह सिद्धान्त की बात है। और श्रुतज्ञान है सो क्षयोपशमिक है। वह क्षयोपशम ज्ञानवरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्रकट होने के कारण यद्यपि व्यवहारनय के द्वारा छद्मस्थ जीव की अपेक्षा से जीव का स्वरूप होता है तथापि केवलज्ञान की अपेक्षा से वह शुद्ध जीव का स्वरूप नहीं है। तब फिर जीव का स्वरूप क्या है? इस प्रश्न के होने पर आचार्य उत्तर देते हुए कहते हैं। नय के पक्षपात से रहित जो स्वयं संवदेन ज्ञानी जीव है उसके विचारानुसार जीव का स्वरूप बुद्धाबद्ध या मूढामूढ आदिनय के विकल्पों से रहित चिदानंद स्वरूप होता है।

णय एव मुक्ता नयपक्ष पातं स्वरूप गुप्ता निवसंति नित्यं।

विकल्प जाल च्युत शांत चित्तस्तएव साक्षादमृतं पिबंति॥ 68॥

जो लोग नय के पक्षपात को छोड़कर सदा अपने आप के स्वरूप में तल्लीन रहते हैं एवं सभी प्रकार के विकल्प जाल से रहित शांतचित्त वाले होते हैं वे लोग ही साक्षात् अमृत का, समयसार का पान करते हैं।

एकस्य बद्धो न तथा परस्य चितिद्वयोर्द्विवितिपक्षपातौ।

यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खुल चिच्चिदेव॥69॥

जीव व्यवहार नय की अपेक्षा से बद्ध होता है और निश्चय नय की अपेक्षा से वह बद्ध नहीं होता है। अतः इन दोनों नयों के विचार में अपना-अपना पक्षपात है। इसलिये पक्षपात रहित तत्त्ववेदी पुरुष के ज्ञान में चेतन-चेतन ही है।

---

आगम के व्याख्यान के समय मनुष्य की बुद्धि निश्चय और व्यवहार इन दोनों नयों को लेकर चलती है। किन्तु तत्त्व को जान लेने के बाद स्वस्थ हो जाने पर उहापोहात्मक बुद्धि दूर हो जाती है। निश्चय और व्यवहार इन दोनों नयों के द्वारा हेय और उपादेय तत्त्व का निर्णय कर लेने पर हेय का त्याग करके उपादेय तत्त्व में लगे रहना साधु-संतों को अभीष्ट है।

**आह्वान -**

**जिस करणी से हम हुए अरहंत सिद्ध महान्।**

**उस करणी तुम करो हम तुम दोनों समान ॥**

समयसार वस्तुतः शास्त्र नहीं है, जो कि कुछ स्वर व्यंजनात्मक वाक्य से लिपिबद्ध है। वह तो एक परमोत्कृष्ट, अलौकिक, अभौतिक, अतीन्द्रिय, शब्दातीत, वचनातीत, अनाकार, मनातीत, परमतत्त्व है। यह परमतत्त्व वचन के अगोचर, शब्द से अवर्णनीय, शास्त्र की सीमा से परे है कोई भी उसको हाथ में लेकर देख नहीं सकता है। सूक्ष्म अणुवीक्षण, दूरदर्शक यंत्र से भी देख नहीं सकता है, भौतिक विज्ञान शाला का अविषय है। वचन के अगोचर होते हुए भी जिसका कथन सतत आध्यात्मिक विशारद करते हैं शास्त्र की सीमा से परे होते हुए भी जिसका वर्णन समस्त आध्यात्मिक शास्त्र करता है, जिसका प्रदर्शन करवाना असंभव होते हुए भी समस्त आध्यात्मिक प्रशिक्षक जिसका ही प्रदर्शन कराते हैं, वही परमोत्कृष्ट स्वतत्त्व समयसार है। जिसका दर्शन चक्षु आदि इन्द्रियों से, सूक्ष्म शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शक दूरदर्शक यंत्र से, तर्क, व्याकरण, छन्द, साहित्य, काव्य, नाटक, न्याय दर्शन, आगम, आध्यात्मिक शास्त्र से भी नहीं हो सकता है। उसका दर्शन निःशंक, निरालम्बी, अकिंचन, महामुनि, सहज स्वभावी निर्विकल्प परमसमाधि के माध्यम से करते हैं। जो तर्क, वितर्क, कुतर्क, सुतर्क के अगम्य वाद विवाद कुवाद सुवाद से परे होते हुए भी जो सहज सरल महामुनि को वेद गम्य हैं। जो परममुनियों का परमध्यान का विषय होते हुए भी स्वयं ध्यानातीत, जो निश्चय-व्यवहार, द्रव्य-पर्यायात्मक नय का विषय होते हुए भी स्वयं सर्व नयातीत है, जो निक्षेपों के विषय होते हुए भी स्वयं सर्व नयातीत है, जो निक्षेपों के विषय होते हुए भी स्वयं निक्षेपातीत है, जो सर्वज्ञेय पदार्थ को जानते हुए भी स्वयं अन्य ज्ञेय स्वरूप नहीं है जो सर्वद्रव्य संयोग सहित होते हुए भी स्वयं असंग स्वरूप है वह है अतिविचित्र, अतिगूढ, शुद्ध स्वात्मतत्त्व जो अमूल्य होकर भी त्रिलोक के मूल्य से भी खरीदा नहीं जा सकता, जो गुरुता से (भारीपना) रहित होकर भी त्रिलोक का गुरु है, जो

सूक्ष्म होकर भी लोकालोक से भी अनन्त गुणा (ज्ञानापेक्षा, बड़ा है) वह है महान् तत्त्व स्वशुद्धात्म तत्त्व। जो अगुरुलघु (न भारी, न हल्का) होते हुए भी जिसको चलायमान कराने में त्रिलाक की शक्ति असमर्थ, जो दूसरों को प्रतिरोध (अव्याबाध) नहीं करते हुए भी जिसे कोई बाधा नहीं पहुँचा सकता, जो मन वचन काय बल से रहित हाकर भी अनंतवीर्य है, वह स्वयं सर्वशक्तिमान समयसार तत्त्व स्वशुद्धात्म तत्त्व है। जो समस्त चराचर का दर्शक होते हुए भी स्वयं चर्मदृष्टि के अगोचर, सर्व का दर्शन होते हुए भी जो स्वयं अनन्त क्षायिक सम्यग्दृष्टि है वह शुद्ध बुद्ध सुदर्शन रूप आत्मतत्त्व समयसार स्वशुद्ध तत्त्व है। (जो मिथ्या देवादियों का दर्शन करता है वह मिथ्यादृष्टि परंतु शुद्धात्मा अनंतदर्शन में सबका दर्शन करते हुए भी क्षायिक अनन्त सम्यक्त्व वाला है। जो सुख से (काम-भोग इन्द्रिय जनित सुख से) रहित होकर भी जो त्रिकाल वर्ती-नर-नरेन्द्र, देव-देवेन्द्र, असुर असुरेन्द्रादियों के सुख से भी अनन्त गुणित अतीन्द्रिय, अव्याबाध, निराकांक्षी, आत्मोत्थ, निराकुल, ज्ञानानंद रूप, अमित सुख का अनुभव करता है, वह अनंत शान्ति, सुखी, आत्मोपयोगी, महेन्द्र, विष्णु, शंकर, शुद्ध-बुद्ध-प्रबुद्ध परम अभौतिक चिज्ज्योतिस्वरूप, आनंद स्वरूप त्रैकाली ध्रुवतत्त्व स्वशुद्ध आत्मतत्त्व निश्चय से समयसार है। जो दूसरों का तो कभी स्मरण नहीं करता है परन्तु जिनका स्मरण मुनीन्द्र, देवेन्द्र, नरेन्द्रादि करते हैं वह परमेश्वर, प्रभु-विभु अर्हन्, विष्णु पूज्यपाद, परमाराध्य त्रिलोक पूज्य स्वशुद्ध तत्त्व, उत्कृष्ट, परमोपादेय समयसार है।

## धर्म की परीक्षा

यथा सुवर्ण परिपक्ष्यते घर्षणं छेदनं ताप ताडनैः॥

धर्मो विदुषाः परीपक्ष्यन्ते श्रुतेन शीलेन तपदयागुणैः॥

जैसे सुवर्ण को घर्षण, छेदन, अग्नि में तपना एवं ताडना से परीक्षा करके शुद्ध सुवर्ण ग्रहण किया जाता है, उसी प्रकार ज्ञानी धर्म को शास्त्र से, शील से, तप से एवं दया गुण से परीक्षा करके शुद्ध धर्म को ग्रहण करता है अर्थात् जिस धर्म में अविरोध शास्त्र है, शील है, तपश्चर्या है, दया धर्म है वही धर्म सत्य धर्म है अन्य धर्म कुधर्म है। अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि, बुद्धिहीन, जन दयादिहीन धर्म को स्वीकार करते हैं, ज्ञानी सम्यग्दृष्टि बुद्धिमान जन नहीं।

---

## ‘‘कितना प्यारा है भाव मेरा’’

(चाल:- इसे देश में गाँधी ...2 सायोनारा.....)

कितना प्यारा भाव मेरा, सब जीवों का हित चाहने वाला।  
उदार-पावन-वैश्विक वाला, सत्य-समता-आत्मिक वाला ॥  
राग द्वेष को न चाहने वाला, ईर्ष्या-तृष्णा -घृणा रहित वाला।  
पर निंदा अपमान न चाहने वाला, मैत्री -प्रमोद-कारुण्य वाला॥  
शोध -बोध को करने वाला, प्रयोग-अनुभव करने वाला ।  
गुणग्रहण को करने वाल, परदोष से भी सीखने वाला ॥  
अहंकार -ममकार न चाहने वाला, स्वभिमान सोऽहं अहं लक्ष्य वाला।  
भेदभाव पर भेद-विज्ञानी वाला, मत पंथ परे अनेकान्त वाला ॥  
पर गुण प्रशंसा करने वाला , प्रशंसनीय गुण चाहने वाला।  
संकीर्ण स्वार्थ से रहित वाला , आध्यात्मिक स्वार्थ चाहने वाला॥  
हितमित प्रिय बोलने वाला, स्व पर हित में प्रसन्न वाला ।  
आत्मानुशासन धैर्य सहित वाला, निर्भय निशंक चाहने वाला॥  
स्व-दोष परिमार्जन करने वाला , आत्मिक गुण विकास वाला।  
संकल्प-विकल्प-संकलेश रिक्त, कनक का लक्ष्य परम हित (सुख)॥

सीपुर, दि. 18-2-2017 अपराह्न - 5.27

यह कविता कुछ लेख, लक्ष्य पुस्तक (ब्रायन ट्रेसी) मुनि सुविज्ञसागर व ब्र.अजय से प्रेरित

## क्या आप भी रोती हैं फिल्में देखकर ?

प्लीज मुझे एक टिश्यु दो.... मैं इस सीन को देखकर खुद को काबू में नहीं रख पा रही हूँ.... आपके साथ भी मूवी देखते हुए ऐसा होता है क्या ? अगर आप मूवी देखते समय किसी भावनात्मक दृश्य पर रोने लगती है तो यकीन मानिए कि आप अंदर से काफी मजबूत व्यक्ति है।

कुछ लोग इस बात को स्वीकार करते है कि वे फिल्में देखते हुए कई बार भावनात्मक दृश्यों को देखकर रोने लगते हैं। यह सब आपके हार्मोन्स के स्तर पर निर्भर करता है। अकेले मूवी देखते हुए कुछ लोगों के साथ ऐसा होता है। कुछ लोग ऐसे भी होते है जो मूवी के किसी दृश्य पर सहज बने रहते है।

---

## सहानुभूति है आपमें

जो लोग भावुक होकर रोने लगते हैं, उनके अन्दर सहानुभूति का गुण होता है। व्यक्ति के अन्दर सहानुभूति का गुण तभी हो सकता है, जब वह कुछ स्पेशल हो। ज्यादातर लोग बिना सहानुभूति लिए पैदा होते हैं। उन्हें पता ही नहीं होता है कि दूसरों के दर्द या भावनाओं को किस तरह से समझा जाए। सहानुभूति का अभाव जीवन को नीरस बना देता है। जब आप दूसरों को समझने का प्रयास करते हैं तो और मजबूत बन जाते हैं।

## धड़कता है दिल

आपका दिमाग इस तरह का होता है कि आप मूवी में दिखाए जाने वाले कैरेक्टर से संबंध स्थापित कर लेती हैं और उसकी परवाह करने लगती हैं। यहां तक कि रोने भी लगती हैं। इसके असल मायने हैं कि आपका दिल दूसरों के लिए धड़कता है। अक्सर दिल दूसरों के लिए अपने आप टूटता भी है।

## रोना कमजोरी नहीं

मूवी के दौरान रोने का एक कारण यह भी है कि आप फिल्म के चरित्र के साथ अपनी पुरानी यादों का संबंध स्थापित कर लेती हैं। कई बार फिल्म में किसी बात या चरित्र को इतनी खूबसूरती से पेश किया जाता है कि आपकी आंखों से बरबस ही आंसू निकलने लगते हैं। रोना किसी इंसान की कमजोरी नहीं हो सकता। रोते हुए आप सबसे निर्मल होती हैं। आपके मन में छुपी हुई फीलिंग्स आसानी से बाहर निकल जाती हैं।

## हम क्यों रोते हैं और कुछ लोग क्यों नहीं रोते?

न्योरोलॉजिस्ट माइकेल टिम्बल का बीबीसी रेडियो शो के लिए इंटरव्यू शुरू होने वाला था तब एक सहायक ने उनसे विचित्र प्रश्न पूछ लिया- पूछा लोग क्यों नहीं रोते हैं? सहायक ने बताया, उनके एक सहयोगी का कहना है वह कभी नहीं रोये हैं। दुनिया के जाने-माने रूदन विशेषज्ञ टिम्बल हैरान रह गए। मानव के रोने का अध्ययन कर रहे टिम्बल और अन्य वैज्ञानिकों की रिसर्च आंसू भरी आंखों पर केन्द्रित है। आंसूविहीन आंखों से उनका कोई सरोकार नहीं है। इसलिए प्रसारण शुरू होने से पहले उन्होंने एक ई-मेल एडेस जारी किया। उन्होंने प्रसारण के दौरान

---

श्रोताओं से कहा जो लोग कभी नहीं रोए हैं, वे संपर्क करें। कुछ घंटों के अंदर टिम्बल को सैकड़ों मैसेज मिल गए।

टिम्बल अब कहते हैं, हमें नहीं मालूम कि लोग क्यों नहीं रोते हैं। वैसे, बहुत सारे वैज्ञानिक यह भी नहीं जानते कि लोग रोते क्यों हैं। चार्ल्स डार्विन ने एक बार कहा था, भावनात्मक आंसुओं का कोई अर्थ नहीं है। इसके लगभग 150 वर्ष बाद भी भावनात्मक रूदन मानव शरीर के सबसे पेचीदा रहस्यों में एक है। सैकड़ों वर्षों से माना जाता है, आंसुओं से आंखों को नमी मिलती है। वैज्ञानिकों की धारणा रही है, रोने का मनावैज्ञानिक के अलावा कोई अन्य फायदा नहीं है।

शोधकर्ताओं ने रोने से जुड़ी शारीरिक प्रक्रियाओं की बजाया अपना ध्यान भावनाओं पर अधिक केन्द्रित रखा है विश्व के जाने माने रूदन विशेषज्ञ और टिलबर्ग यूनिवर्सिटी, नीदरलैंड के प्रोफेसर ए. विंगरहोएट्स अपनी पुस्तक -केवल मनुष्य ही क्यों रोते हैं - में लिखते हैं, शरीर की हलचल में वैज्ञानिक की रूचि नहीं है। उनका ध्यान तो भावनाओं पर है। विंगरहोएट्स एवं अन्य विशेषज्ञ मानते हैं, रोना दुख के लक्षण से अधिक बड़ी चीज है। सहानुभूति, आश्चर्य, गुस्सा, शोक जैसी भावनाओं से रोना आता है।

रूलाई के संबंध में कुछ नए और विश्ववसनीय सिद्धान्त सामने आए हैं एक अनुमान है, आंसू सामाजिक जुड़ाव और मानवीय संबंधों का रास्ता खोलते हैं। दक्षिण फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान के प्रोफेसर जोनाथन रोटेनबर्ग बताते हैं रोने से आपको और दूसरे लोगों को सकेत मिलता है कि आपके साथ ऐसी समस्या है जिसके सामने आप असहाय हैं। नई रसर्च से पता लगा है, आंसुओं से दूसरे लोगो की सहानुभूति मिलती है।

वैज्ञानिकों ने यह भी पाया है, भावनात्मक आंसू रासायनिक रूप से प्याज काटते समय निकले आंसुओं से अलग रहते हैं। आंसुओं में एंजाइम्स लिपिडस, मेटाबोलाइट्स और इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं उसके साथ भावुक आंसुओं में अधिक प्रोटीन रहता है। प्रोटीन के कारण भावनात्मक त्वचा से मजबूती से चिपकते हैं और चेहरे पर धीरे-धीरे लुढ़कते हैं। शोधकर्ता मानते हैं, जिस तरह बच्चे अपनी जरूरत पूरी कराने के लिए आंसुओं को औजार बनाते हैं, वैसे ही व्ययस्क भी करते हैं। रोटेनबर्ग कहते हैं, हम कम आयु में समझ जाते हैं कि रोने

से दूसरे लोगों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। वे दूसरों का गुस्सा भी दूर करते हैं। वीजमान साइंस इंस्टीट्यूट, इजरायल में न्यूरोबॉयोलॉजी के प्रोफेसर नोएम सोबेल सोचते हैं, रोने से आक्रामकता कम होती है।

शोधकर्ता अब इस सवाल पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं कि कुछ लोग क्यों नहीं रोते हैं। यदि मानवीय संबंधों के लिए आँसू इतने ही महत्वपूर्ण हैं तो क्या उन लोगों के सामाजिक संपर्क कम होंगे जो नहीं रोते हैं प्रारंभिक रिसर्च के निष्कर्ष इसे सही बताते हैं। केसेल यूनिवर्सिटी, जर्मनी में मनोविज्ञान के प्रोफेसर कोर्ड बेनेके का कहना है, ऐसे लोगों का दूसरों से नजदीकी जुड़ाव नहीं था। आँसूविहीन लोगों ने रोने वालों की तुलना में गुस्सा अंततः और झुंझलाने जैसी नकारात्मक और आक्रामक भावनाएं अधिक महसूस कीं। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और अधिक रिसर्च की जरूरत है कि जो लोग नहीं रोते हैं, क्या वे सच में दूसरों से अलग हैं।

## लोग कितनी बार रोते हैं?

महिलाएं एक माह में दो से पांच बार रोती हैं। पुरुष दो माह में एक बार रोते हैं।

52 प्रतिशत व्यक्तियों ने बताया, रोने के बाद उन्होंने अच्छा महसूस किया। 38 प्रतिशत लोगों ने कहा उनकी स्थिति पहले जैसी रही। दस प्रतिशत लोगों ने कहा, उन्हें बहुत खराब लगा।

## रोने के सामान्य कारण

महिलाएं	पुरुष
1 त्रासद घटनाएं	1 अंतिम संस्कार
2 अंतिम संस्कार	2 संबंध विच्छेद
3 संबंध विच्छेद	3 त्रासद घटनाएं
4 दुखद फिल्मों और टीवी शो	4 हंसते हुए
5 हताशा	5 दुखद फिल्मों और टीवी शो

## सिसकियों की कहानियाँ

37 देशों में पांच हजार से अधिक लोगों की स्टडी में रूलाई के संबंध में कई रोचक जानकारियाँ सामने आई हैं।

---

## लोग किस समय रोते हैं?

सबसे अधिक लोग शाम सात से रात दस बजे के बीच रोए।

35 प्रतिशत लोग अकेले रोए। 30 प्रतिशत एक व्यक्ति और 35 प्रतिशत दो व्यक्तियों की मौजूदगी में रोए

स्रोत :- रोने पर अंतराष्ट्रीय स्टडी

## अच्छी सेहत के लिए हंसना ही नहीं रोना भी है फायदेमंद

जिस प्रकार हंसना सेहत के लिए फायदेमंद है उसी तरह रोना भी कम फायदेमंद नहीं। हाल ही में येल यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक शोध में पाया कि रोना सेहत के लिए लाभदायक होता है। शोध के अनुसार अगर कष्टप्रद स्थिति में भी आंख से आंसू नहीं आते हैं तो तुरंत चिकित्सक को दिखाना चाहिए क्योंकि यह एक असामान्य स्थिति है। यह भी ध्यान रखें कि रोना कमजोरी की निशानी नहीं है बल्कि स्वास्थ्य संबंधी कई परेशानियों से बचने का उपाय है। अध्ययन में पाया गया कि रोने के बाद त्वचा की संवेदनशीलता बढ़ जाती है और रोने वाले की सांसें गहरी चलने लगती हैं। यह दोनों बातें सेहत की दृष्टि से अच्छी मानी जाती हैं।

## क्यों आते हैं आंसू

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार हमारी आँसूबाल (नेत्र गाह्यलक) और पलकों के बीच लेक्रिमल ग्लैंड अश्रु ग्रन्थि है, जहाँ से आँसू निकलते हैं। जब हम पलकों झपकाते हैं तो प्ल्यूड हमारी आँखों पर फैल जाता है और फिर अश्रु ग्रन्थि से निकलने लगता है। जब आँसू ओवरफ्लो होते हैं तो गालों से लुढ़कने लगते हैं और नाक भी बहने लगती है।

## आँखों के लुब्रिकेंट

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार आँसू तीन तरह के होते हैं। एक बहुत कम मात्रा 24 घंटे में लगभग एक ग्राम निकलते हैं और हमें पता भी नहीं चलता, ये हिडन आँसू हमारी आँखों के लिए लुब्रिकेशन और संरक्षण का काम करते हैं। आँसूओ की दूसरी किस्म है आँखों में धूल या धुआँ लगने या प्याज काटने पर निकलने वाले आँसू। ये जलन के विरुद्ध आँखों की सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया है, जिसका भावनाओं से कोई लेना-देना नहीं होता। चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि हम असल में तब रोते हैं, जब सुखी या दुखी होते हैं या तनाव में होते हैं।

---

## तनाव करते हैं हल्का

हमारे ब्रेन में भावनाओं को नियंत्रित करने वाले सिस्टम को लिम्बिक कहते हैं। यह वायर के मजबूत नेटवर्क से ऑटोनोमिक नर्व्स प्रणाली से जुड़ा हुआ है। भावनाओं की तरह इस पर हमारे कोई नियन्त्रण नहीं है। भावनाएं हमारे ऑटोनोमिक नर्व्स सिस्टम को और यह सिस्टम हमारी अश्रु ग्रंथि को सदेश भेजता है और आँसू निकलने लगते हैं। कभी-कभी रोने से शरीर में जिसोजाइम लिक्विड स्रावित होता है जो शरीर से बैक्टीरिया दूर करता है। रोने को कुछ कमजोरी बताते हैं पर सही मायनों में यह तनाव घटाता है, दिल हल्का करता है।

## स्व-पर गुण-दोष से शिक्षा मैं लहूँ

(चाल:- 1 तुम दिल की ...2 सायोनारा..... 3 आत्मशक्ति...)

स्व-पर गुण-दोषों से शिक्षा मैं लहूँ , गुण बढ़ाऊँ -दोष त्यागूँ विकास करूँ।

स्व-पर दोष जान दोष मैं त्यागूँ, स्व -पर गुण जान गुण बढ़ाऊँ॥ (1)

हिताहित विकेक रूपी ज्ञानी मैं बनूँ, हितग्रहण अहित त्याग से गुणी मैं बनूँ।

स्व-गुणदोष जानने हेतु परगुणदोष (मैं) जानूँ, परगुणग्रहण दोष हरण से गुणी (मैं) बनूँ॥(2)

गुण से लाभ दोष से हानि जाना (मैं) करूँ, लाभ बढ़ाने व हानि घटाने का प्रयत्न करूँ।

ऐसा ही हर महापुरूष करते सदा, उनका अनुकरण भी (मैं) करूँगा (करता) सदा॥(3)

पूर्ण निर्दोषी बनने हेतु (मैं) प्रयत्न करूँ, इस हेतु ज्ञान-ध्यान-तप मैं करूँ।

सनम्र सत्याग्रही उदार मैं बनूँ, समताधारी शान्त व सहिष्णु बनूँ॥ (4)

उत्तमक्षमामार्दव आर्जव धरूँ, सत्य शौच संयम त्याग मैं पालूँ।

आत्मानुशासी धैर्यशाली गंभीर बनूँ, एकान्त मौन में साधना मैं करूँ॥ (5)

इस हेतु निस्पृह निराडम्बर (मैं) बनूँ, दीन-हीन-अहंकार-दंभ मैं त्यागूँ।

‘स्वाभिमान’ ‘सोऽहंभाव’ अहं को ध्याऊँ, वीतरागी आत्मानुभवी वैरागी बनूँ॥

इस से ही पापकर्मों का आस्रव रूकता, सातिशय पुण्य कर्मों का बन्ध (भी) होता।

तन-मन-आत्मा भी स्वस्थ सबल होते, आनन्द-उत्साह व वीर्य बढ़ते॥

जिससे मन भी होता सुस्थिर, ध्यान-अध्ययन भी होते प्रचुर।

शोध-बोध-अनुभव (भी) बढ़ते जाते, गुण बढ़ने से दुर्गुण विनाश होते॥ (8)

---

स्व-पर के उपर अच्छा प्रभाव होता, प्रेम -संगठन-सहयोग बढ़ते।

आदर-सत्कार बहुमान बढ़ते, महान् लक्ष्य सम्पादन सरल होते।।

संवर व निर्जरा भी तीव्र हो जाते, रत्नत्रय भी पावन सुदृढ होते।

इसी से कर्मक्षय से मोक्ष मिलता, इस हेतु 'कनक' सदा गुण बढ़ाते।।

सीपुर, दि. 22-2-2017 प्रातः - 7.12

## आतंकी होने के शक में 3 माह के बच्चे को समन

लंदन क्या आप जानते हैं कि आव्रजन फॉर्म से एक गलती आपको कितना नुकसान पहुँचा सकती है। ऐसी ही एक गलती ब्रिटेन के चेशायर के पॉयटन के पॉल केनयोन से हुई जो 3 माह के बच्चे के लिए भारी पडी।

कनयोन परिवार के साथ फ्लोरिडा के ऑरलेडो जाने की तैयारी में थे। गलती के कारण लंदन स्थित अमेरिकी दूतावास ने 3 माह के हार्वे को आतंकी होने के शक में पूछताछ के लिए समन भेजा है। चौकाने वाली बात यह है कि बच्चे पर आतंक फैलाने का आरोप है।

### कॉलम में पूछा- क्या आप आतंकी है? गलती से 'हा' लिखा

62 वर्षीय पॉल केनयोन परिवार के साथ फ्लोरिडा जाने की तैयारी में थे। उनके साथ पत्नी कैथी (57) बेटी फाया (27), दामाद जॉन करेरेंस (31), नाती इवा (3) और 3 माह के हार्वे को भी जाना था। पॉल आव्रजन फॉर्म भर रहे थे, तभी मामूली गलती हो गई। फॉर्म में कॉलम था कि क्या आप आतंकी है या आतंकी गतिविधियों में शामिल रहे हैं? पॉल ने 3 माह के नाती का फॉर्म भरते वक्त कॉलम में हां का ऑप्शन सलेक्ट कर दिया। गलती बच्चे सहित पूरे परिवार पर भारी पड गई।

हालांकि इसके बाद भी अमरीकी दूतावास ने बच्चे के टिकट को मान्यता नहीं दी। केनयोन को दोबारा से टिकट खरीदने को कहा। इस तरह केनयोन की गलती के चलते पूरे परिवार को तीन हजार डॉलर (2.44 लाख रुपए) का नुकसान उठाना पडा।

### पूछताछ के दौरान एक बार भी नहीं रोया हार्वे....

समन के बाद पूरे परिवार का 10 किमी की यात्रा कर लंदन स्थित अमरीकी दूतावास में पहुंचना पडा। हालांकि यहां पहुंचने के बाद पॉल केनयोन ने फॉर्म भरने

---

में हुए गलती को स्वीकार लिया। दूतावास ने भी मान लिया कि तीन महीने का बच्चा आतंकी गतिविधियों में नहीं शामिल रह सकता है। केनयोन ने बताया कि पूछताछ के दौरान हार्वे एक बार भी नहीं रोया।

## मानव यदि है तुझे प्रशंसा पाना.....

(चाल : परदेसियों से ....)

मानव यदि तुझे प्रशंसा पाना, प्रशंसनीय गुणों को तुम अपनाना।

परनिन्दा अपमान हानि न करना, दयादान सेवा परोपकार करना॥ (ध्रुव)

दिखावा आडम्बर दंभ न करना, सरल-सहज व विनम्र होना।

दीन हीन-गरीबों का सम्मान करना, बाल वृद्ध महिलाओं का मान रखना॥(1)

उदार सहिष्णु क्षमाशील बनना, पर दुःख कातर व दयालु बनना।

वाद-विवाद व कलह न करना, हितमित प्रिय सौम्य बोलना॥ (2)

शान्त प्रसन्न व शालीन बनना, अन्याय अत्याचार शोषण न करना।

संकीर्ण स्वार्थी मायाचारी न बनना, ईर्ष्या घृणा व द्वेष न करना॥ (3)

कर्तव्यनिष्ठ व प्रामाणिक बनना, मार्यादा अनुसार सद् व्यवहार करना।

अच्छे काम में बाधा न बनना, धैर्यशाली व संयमी बनना॥ (4)

अनावश्यक रायचन्द न बनना, मंथरा शकुनी सम काम न करना।

अन्य की स्वतंत्रता का उल्लंघन न करना, दीन-हीन व कायर न बनना॥ (5)

फैशन व्यसन व पाप न करना, ख्याति पूजा लाभ हेतु काम न करना।

पवित्र भाव व व्यवहार करना, उच्चविचार सादा जीवन जीना॥ (6)

दबाव प्रलोभन व वर्चस्व बिना, सद्कर्म करो कामना बिना।

सुर्य के समान बनोगे स्वप्रकाशी, सुगन्धित पुष्प सम फैलेगी सुगन्धी॥ (7)

महान् लक्ष्य हेतु साधना करना, परहित हेतु प्रोत्साहन करना।

स्व-पर प्रकाशी दीपक बनना, 'कनक' स्वगुणों से (मानव) प्रशंसा पाना॥ (8)

सीपुर, दि. 18-2-2017 रात्रि - 11.23 व 12.10

---

तीक्षणा नारूंतुदा बुद्धिः कर्म शान्तं प्रतापवत्।

नोपतापि मनः सोष्म वागेका वाग्मिनः सतः॥

सत्पुरुष की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, परन्तु मर्मभेदी नहीं, कर्म तेजस्वी होता है परन्तु शांत भी, मन उष्ण होता है पर ताप देने वाला नहीं और वाग्मी सत्पुरुष एकवाक् होता है। - माघ शिशुपालवध 2/109

## इम्यून सिस्टम बताता है कि हमें क्या पसंद है

यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया हेल्थ सिस्टम ने अपने शोध में कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। इस खोज में पता चला है कि हमारा प्रतिरोधी तंत्र (इम्यून सिस्टम) सिर्फ बीमारियों से लड़कर शरीर की हिफाजत ही नहीं करता है बल्कि वो हमारे सामाजिक व्यवहार को भी तय करता है। हमारी पसन्द और नापसंद का चयन करता है।

यूनिवर्सिटी के न्यूरोसाइंस विभाग के प्रमुख जोनाथन किपनिस कहते हैं 'अब तक माना जाता था कि मस्तिष्क और प्रतिरोधी तंत्र अलग-अलग हैं, दिमाग में होने वाली इम्यून एक्टिविटी को पैथोलॉजी माना जाता था। लेकिन अब हमने अपने खोज में पाया है कि ये दोनों एक-दूसरे के साथ काम करते हैं। इतना ही नहीं क्रमिक विकास के दौरान हुए बदलावों का असर भी हमारे व्यवहार में दिखता है और इम्यून सिस्टम इसके प्रति रिस्पॉन्ड भी करता है। ये हैरान करने वाला है, लेकिन शायद हमारे भीतर बेहद सूक्ष्म स्तर पर दो पैराणिक ताकतें लड़ रही हैं। ये हैं पैथोजीन्स और इम्यून सिस्टम। हमारे व्यक्तित्व के एक हिस्से को इम्यून सिस्टम निर्देश देता है। इम्यून मॉलीक्यूल असल में तय करते हैं कि हमारा दिमाग कैसे काम करेगा। वैज्ञानिकों का दावा है कि रिसर्च में देखने को मिला कि हम अपने जैसे लोगो की ओर आकर्षित होते हैं। एक प्रयोग में लोगो को कुछ तस्वीरे दिखाई गईं और पूछा गया कि कौन सबसे आकर्षक है...? इनमें एक तस्वीर उनकी खुद की भी थी, जिसे एडिट कर दिया गया था। ज्यादातर लोगो ने एडिट तस्वीर को ही चुना। दरअसल इम्यून सिस्टम को जब खतरा महसूस होता है तो वह सामाजिक व्यवहार पर असर डालता है, ताकि जान बचाई जा सके। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस खोज की मदद से तनाव अवसाद और ऑटिज्म जैसे रोगों का इलाज किया जा सकेगा।

---

## पुरुषों को लाल रंग सबसे ज्यादा आकर्षित करता है...

रिसर्च से पता चला कि जो लोग हमें पैरेंटस की याद दिलाते हैं, हम उनसे ज्यादा आकर्षित होते हैं। इसी तरह ज्यादा उम्र के पैरेंटस की संताने ज्यादा उम्र वालों की और आकर्षित होते हैं।

- नशे में लोग ज्यादा आकर्षित होते हैं। जितनी ज्यादा आप पिएंगे, सामने वाला आपको उतना ज्यादा आकर्षित करेगा।
- हैलो बोलने के बजाय दिलचस्प बातचीत करके आप सामने वाले को ज्यादा आकर्षित कर सकते हैं।
- हम किसी की और उसकी गंध आवाज, और स्वाद जानकर भी आकर्षित होते हैं।
- एक्सरसाइज के दौरान जब हम किसी से मिलते हैं तो उसकी और आकर्षित होने की संभावना ज्यादा होती है, क्योंकि दिमाग समझता है कि धड़कने सामने वाले को देखकर बड़ी है।
- महिलाएं किस तरह के पुरुषों की और आकर्षित होंगी, यह उनके माहवारी के दिनों पर भी निर्भर कर सकता है।
- पुरुषों पर रंगों का असर काफी होता है। उन्हें लाल रंग पहने हुए महिलाएँ ज्यादा आकर्षित कर सकती हैं।

## हित सुख हेतु धर्ममय बनूँ

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल : छोटी छोटी गैया..., सायोनारा...)

धर्म का अर्थ है धारण करना, अतः मैं धर्म को धारण करूँ।

वस्तु स्वरूप धर्म होने से, धर्ममय ही मैं (स्वयं) बन जाऊँ।।

उत्तम क्षमादि हैं दशविध धर्म, दशविध धर्म को मैं प्राप्त करूँ।

धर्म सर्व सुखाकरों हितकर है, अतः मैं हित सुख ही बन जाऊँ।।

बीज में यथा वृक्ष निहित है, मुझ में ही मेरा धर्म समाहित।

मृदादि से यथा वृक्ष बने बीज, तथाहि साधना से मैं धर्म बनूँ।।(1)

---

पानी यथा स्वयं बने बर्फ व वाष्प, यथायोग्य तापमान को पाकर।  
 तथाहि मैं बनूँ हितसुखमय, सुद्रव्यक्षेत्रादि को पाकर।  
 मन वचन काय कृत कारित व, अनुमोदना के माध्यम से।  
 प्रायोगिक व अनुभव द्वारा, धर्ममय बनूँ अभिन्नषट्कारक से॥(2)  
 कर्ता-कर्म-करण-संप्रदान व, अपादान व सम्बन्ध-अधिकरण।  
 सम्बोधन आदि में स्वयं ही बनूँ, स्वयं ही स्वयं परिणमन।  
 रूढि-परम्परा या दिखावा हेतु, ख्याति पूजा लाभ वर्चस्व हेतु।  
 कट्टर संकीर्ण व अन्ध श्रद्धा से, धर्म न करूँ अन्य का नीचा दिखाने हेतु॥(3)  
 केवल धर्म को न पढ़ूँ-पढाऊँ, वाद -विवाद से न धर्म करूँ।  
 परोपदेशी न धार्मिक बनूँ, आत्मविशुद्धि बिन धर्म न करूँ।  
 मिश्रि का स्वाद न आता खाये बिना, धर्म न होता तन्मय बिना।  
 सत्य-समता व शान्ति बिना, हितसुख न मिले अनुभव बिना॥(4)  
 प्रयोग से मैं अनुभव करूँ, अनुभव से आगे बढ़ता चलूँ।  
 सर्वज्ञ देव ने सत्य ही कहा, 'कनक' अनुभव से सत्य ही पाया॥(5)

सीपुर-19.02.2017 प्रातः- 9.35

## वह विकास मुझे नहीं चाहिए... ?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- इस देश में गाँधी..., हर देश में तू...)

वह विकास मुझे नहीं चाहिए, जिस से हो मेरा आत्मविनाश।  
 समता-शान्ति विनाश होवे, परम्परा से मुझे न मिले मोक्ष॥ (ध्रुव)  
 आत्मविकास से सर्वोदय हो, तन-मन-आत्मा भी स्वस्थ हो।  
 बुद्धि परे संवेदना-विवेक हो, स्व-पर-विश्वकल्याण हो।  
 भौतिकता परे भी आध्यात्मिक हो, इह-परलोक में शान्ति हो॥(1) वह...  
 इससे जो परे जो होता विकास, केवल भौतिक व बौद्धिक।  
 सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि डिग्री, राजनीति से लेकर वर्चस्व।

---

इससे न होता है सर्वोदय, अन्त्योदय से ले आत्मिक सुख।।(2) वह...  
इस विकास से होती अनके समस्यायें , दोहन से अधिक होता शोषण।  
गरीब दुर्बल असहाय रोगीओं का, पशुपक्षी से प्रकृति तक का।  
मिलावट शोषण-भ्रष्टाचार होते, विभिन्न प्रदूषण मारक भी होते।।(3) वह...  
सह अस्तित्व समन्वय न होते, परोपकार -सेवा-दानादि न होते।  
फैशन-व्यसन-आडम्बर होते, अन्याय-अत्याचार पापाचार होते।  
भोग-विलास व आलस्य होते, संकीर्ण कट्टर-स्वार्थी-क्रूर होते।।(4)  
जीवन में समता -शान्ति न होती, उदारता-शुचिता-दया न होती।  
मानव जीवन हो जाता दानव सम, क्रूर-बर्बर-असभ्य सम।  
जीवन जीते भी रोबोट के सम, ऐसा विकास 'कनक' को न मान्य।।(5)

सीपुर-17.02.2017 मध्याह्न- 2.25

## कम साधनों से क्रिएटिविटी को बढ़ावा और तनाव से बचाव

अधिकतर लोगों से सफलता की व्याख्या करने के लिए कहें तो उनका जवाब होगा-वे चीजें खरीदने के लिए अधिक पैसा, काम के लिए अधिक समय और जानकारी प्राप्त करने के लिए अधिक ज्ञान चाहते हैं। यह रास्ता आकर्षक है पर ताजा रिसर्च ने इस पर प्रश्न उठाए हैं। जब हमारा ध्यान अधिक पाने पर केन्द्रित रहता है तो हम उस चीज का मूल्य कम समझते हैं जो हमारे पास पहले से है। हम अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जरूरी कदम उठाने की बजाय संसाधन जुटाने जैसी गलत बातों पर जोर देते हैं। समय बीतने के साथ अधिक हासिल करने की सोच हमें कम संतुष्ट बनाती है।

सफलता पाने का एक अन्य तरीका है। लचीलेपन का विज्ञान अधिक पाने की जरूरत के बिना हमें उत्साहित करने वाला प्रभावी और अधिक संतुष्टि देने वाला विकल्प पेश करता है। रिसर्च से पता लगा है कि क्यों कुछ लोग थोड़े में बहुत हासिल कर लेते हैं जबकि दूसरे बहुत ज्यादा भी गंवा देते हैं। लचीलेपन में व्यावहारिक तकनीक और औजार शामिल हैं जिन्हें कोई भी अपना सकता है।

---

हम पूरा जोर लगाने के साथ अपने संसाधन जुटाते हैं। सीमाओं की चिंता किए बिना उनकी क्षमता देखते हैं। इससे हमारे हाथ में जो कुछ है- चाहे वह पैसा, समय, सामान या रिश्ते हों- वह बड़ी संभावनाओं के दरवाजे खोलने में सहायता करता है। लचीलापन हमें संसाधनों के अनुरूप परिवर्तन करने में सहायक है। अचानक मुसिबत आ जाती है तब परिवर्तन और लचीलेपन की आदत हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयारी रखती है। बहुत ज्यादा संसाधन होने से ध्यान बंटता है। डॉटकॉम का गुब्बारा फूटने या संपत्ति बाजार के धाराशायी होने पर विचार कीजिए।

लचीलेपन की शुरूआत करने के लिए एक साधारण प्रश्न पूछिए : मेरे पास जो साधन हैं, उनसे मैं क्या कर सकता हूँ। इससे आप बेहतर करने के लिए अधिक साधन पाने के जाल से बच निकलेंगे। दूसरों की तुलना में साधन कम होने की स्थिति में लचीलापन तनाव से बचाता है। मनोवैज्ञानिकों ने पाया है, यदि आप लगातार दूसरों से तुलना करेंगे तो अच्छे नतीजे देना और संतुष्ट होना कठिन है। कम साधन होने पर हम अधिक क्रिएटिव हो जाते हैं। बाधाएं हमें समस्याओं और उनके समाधान को नई रोशनी में देखने का अवसर देती हैं।

कम साधनों की शक्ति कलाकारों से लेकर बड़े अधिकारियों तक को बेहतर करने की क्षमता देती है। कम होने के कारण हम चीजों को परंपरागत ढंग से नहीं करते हैं। इसलिए रिसर्च ने दर्शाया है, संसार की कुछ सबसे पेचीदा समस्याएं उन लोगो ने सुलझाई है जिनके पास समस्या का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था। आप स्वयं अड़चन खड़ी कर इस ताकत का दोहन कर सकते हैं। काम की अंतिम समय सीमा को पीछे करें या बजट में कटौती कर सकते हैं। आप पाएंगे पाबंदियों से लक्ष्य पूरा करना संभव है।

**एक अन्य तकनीक :** स्वयं को अलग परिस्थितियों में रखें। प्रतिदिन के रूटिन से चिपके रहने की बजाए चीजों को अलग तरीके से करें। अलग विश्वसों और धारणाओं वाले लोगों से बात करें। कार्यस्थल पर अपनी टीम को अधिक विविध बनाएं। रिसर्च बताती है, बाहरी अनुभव से आप ज्ञान जैसे संसाधनो का अधिक प्रभावशाली ढंग से उपयोग कर सकेंगे। हर छोटी चीज की योजना बनाने की बजाय काम प्रारंभ करें। त्वरित और सहज कार्रवाई हमें सीखने और लक्ष्य पूरे करने के लिए परिवर्तन की स्वतंत्रता देती है।

(सोनेनशीन राइस यूनिवर्सिटी में मैनेजमेंट के प्रोफेसर हैं।)

---

## इन मामलों में जरूरत से ज्यादा करने से बचा जाए

- आपको कुछ मामलों में जरूरत से ज्यादा करने की प्रवृत्ति के प्रति सावधान रहना चाहिए। समय: किसी प्रोजेक्ट में स्वयं को पूरी तरह झोंकना अच्छी बात है पर क्रिएटिविटी बढ़ाने के लिए हमें उससे थोड़ा अलग हटकर आराम करना चाहिए।
- **फेसबुक** : मित्रों की संख्या बढ़ाने की बजाय ऐसे लोगो से संबंध जोड़े जो सहायता करें।
- **पैरेंटिंग** : बच्चों को स्वतंत्रता से काम करने दे। वे गलतियों से सीखेंगे और आगे बढ़ेंगे।
- **एक्सरसाइज** : बहुत अधिक पैदल चलने की बजाय किसी साधारण एक्सरसाइज से ज्यादा फायदा है।
- **घर बनाना** : लंबा चौड़ा घर बनाने पर जोर न दें। अपनी सामर्थ्य के अनुसार घर बनाएं।

## लोगो की लंबी उम्र के लिए मशहूर हैं ये देश

**नॉलेज** : कई देश ऐसे हैं, जहां लोगों की औसत उम्र अधिक है। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका वातावरण और जीवनशैली की होती है। उसमें व्यायाम जरूरी बताया गया है। ऐसे लोग, जो कठोर परिश्रम करते हैं, उनके संबंध में माना गया है कि वे ज्यादा जिंदगी जीते हैं। पर्यावरण का भी उम्र से सीधा संबंध है। जानिए-

**जापान** : यह देश सबसे अधिक उम्र वाले लोगों के लिए जाना जाता है। यहाँ के लोगों की औसत उम्र 60 है जबकि ऐस लोगों की संख्या ज्यादा है, जो 86 वर्ष तक जीते हैं। अच्छी खुराक, सक्रिय जीवनशैली और पारिवारिक मूल्य व संस्कृति लंबी उम्र का कारण है।

**सिंगापुर** : जापान के साथ-साथ सिंगापुर में भी लोगों को कठोर परिश्रम वाला माना गया है। यहां औसत उम्र 60 बताई गई है, इसके अतिरिक्त लोग अपनी जीवनशैली में व्यायाम को भी महत्व देते हैं। संभवतः यही कारण है कि उनकी औसत उम्र अन्य देशों की तुलना में अधिक पाई गई है।

---

**स्पेन** : इस देश में भूमध्यसागरीय संस्कृति वाली डाइट को संस्कृति के साथ जोड़ा गया है। लोगों की जीवनशैली भी पर्यावरण से जुड़ी है पारिवारिक सभ्यता और उसके मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया जाता है, समझा जाता है कि इन्हीं कारणों से यहाँ के लोग औसत रूप से 60 से 85 वर्ष तक जीते हैं।

**फ्रांस** : दक्षिणी यूरोप में ज्यादा उम्र जीने वाले लोगों की श्रेणी में फ्रांस का भी दूसरा स्थान है। यहाँ बुजुर्गों की औसत आयु 60 से 85 वर्ष तक मानी गई है। विशेषज्ञों ने इसका कारण खुली हवा में जीने वाली संस्कृति और तनावमुक्त जीवनशैली को प्रमुख माना है।

**इटली** : यहाँ के लोगों की दिनचर्या खुशनुमा होती है। इसमें भी डाइट और जलवायु का विशेष महत्त्व है। इसके अतिरिक्त बाहरी गतिविधियाँ लोगों को स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होती हैं। यहाँ बुजुर्गों की सेहत अन्य देशों की तुलना में ज्यादा अच्छी होती है।

**न्यूजीलैंड** : यहाँ का हैल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर अच्छा माना गया है। शोध के अनुसार यहाँ लोग बाहरी गतिविधियों को प्राथमिकता देते हैं। परिवहन के लिए साइकिल को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे पर्यावरण के साथ-साथ लोगों के स्वास्थ्य पर अच्छा असर होता है।

## गुम होती जैव विविधता

### 70 प्रतिशत जीवों की प्रजातियाँ है खतरे में

- प्रति 20 मिनट में : 01 प्रजाति जीवों की हो रही लुप्त
- 3500 से अधिक लोग ले रहे जन्म
- 20 प्रतिशत प्रजातियाँ 30 वर्षों में हुई है लुप्त
- 75 प्रतिशत फसलों की जिनेटिक विविधता हो रही खत्म

### विलुप्त होने की कगार पर

- 4 में से 1 उभयचर जीवों की प्रजाति
- 4 में से 1 पक्षियों की प्रजाति
- 4 में से 1 स्तनपायी जीव की प्रजाति
- 6 में से 1 समुद्री कछुओं की प्रजाति

---

## 2 करोड़ से ज्यादा लोग मानव तस्करी के जाल में

### 2.10 करोड़ लोग

- इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक अलग अलग कामों के लिए मानव तस्करी के शिकार है दुनिया भर में लोग, इनमें से 50 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं और बच्चे हैं, पीड़ित सिर्फ बच्चे - 25 प्रतिशत
- अकेले अमरीका में पिछले 10 साल में 32 हजार मानव तस्करी के केस नेशनल ह्यूमन ट्रेफिकिंग हॉटलाइन पर रिपोर्ट हुए
- एशिया प्रशांत में सबसे ज्यादा सामने आए जबरन मजदूरी के मामले
- मानव तस्करी का गोरख धंधा लगभग 9 लाख करोड़ रुपए का है
- 106 देशों में दर्ज हुए हैं मानव तस्करी के मामले
- 2030 तक यूएन ने रखा है मानव तस्करी खत्म करने का लक्ष्य

### इसके लिए होती है तस्करी

- वेश्यावृत्ति - जबरन मजदूरी - भीख
- अपराध - घरेलू नौकरी - जबरन विवाह
- अंग तस्करी

वर्षों तक अगर किताबों को खोलकर न देखा जाए, तो उनमें दीमक लग जाती है। दिमाग भी उसी तरह है, जितना ज्यादा इस्तेमाल करेंगे उतना चलेगा, नहीं तो दिमाग में भी जंग लग सकती है।

### दिमाग भी बोल सकता है

1 दिमाग भी मशीन है : दिमाग भी मशीन की तरह ही काम करता है। जिस चीज का जितना ज्यादा और बेहतर तरीके से इस्तेमाल होगा, उतनी ही उसकी क्षमता बढ़ेगी। चूंकि तकनीक के कारण दिमाग का कम से कम इस्तेमाल हो रहा है इसलिए कॉग्निटिव स्किल भी धीरे-धीरे कम हुई है। इसका असर उम्र बढ़ने के साथ समझ में आता है। भूलने की बीमारी जैसे डिमेंशिया आदि का एक

---

कारण यह भी है अगर शारीरिक मेहनत करेंगे, तो शरीर चलता रहेगा। उसी तरह दिमाग का इस्तेमाल करते रहेंगे, तो दिमाग भी चलता रहेगा। लगातार दिमाग का इस्तेमाल करने से इसके अंदर रक्त प्रवाह सुचारू रूप से चलता रहता है। इसके साथ ही दिमाग का मेटाबॉलिज्म भी बढ़ जाता है।

**2. ज्ञान पर भी पड़ रहा असर :** हर चीज के लिए अगर तकनीक पर निर्भर रहेंगे, तो उसका असर ज्ञान पर भी पड़ने लगता है। जिन शब्दों के अर्थ हमें पता है अगर उनके अर्थ भी खोजना पड़े, तो धीरे-धीरे दिमाग का शब्द भण्डार घटने लगता है इसी तरह अगर सामान्य सी गणनाओं और जानकारियों के लिए दूसरो पर या तकनीक पर निर्भर होंगे, तो वह चीजे भी भूलने लगते हैं, जो पहले हमें पता थी। याद कीजिए, क्या स्कूल के वक्त आपको जुबानी गणनाएं करने में या 17 या 19 का पहाड़ा बोलने में कोई कठिनाई होती थी?

**3. क्या-क्या कर सकते हैं :** दिमाग की कसरत के लिए नियमित तौर पर वर्गपहेली भरने के साथ, सुडोकू हल कर सकते हैं। इसके अलावा रूबिक क्यूब, बच्चों के माइंड गेम्स, वीडियो गेम्स, गणिक की पहेलियां भी सुलझा सकते हैं। नियमित तौर पर किताबें-पत्रिकाएं पढ़ने के साथ कुछ लिखना, रंग भरने वाली किताब या शीट में रंग भरना भी दिमाग के लिए व्यायाम है। इसके लिए रोजाना आधा घंटा जरूर निकालना चाहिए। चित्र बनाने की गतिविधि में हम दिमाग के अलग-अलग हिस्सों का इस्तेमाल करते हैं। हर आयुवर्ग के व्यक्ति अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार इसे कर सकते हैं।

**4. प्रबंधन भी सिखाते हैं :** दिमाग के ये व्यायाम जीवन प्रबंधन में भी मदद करते हैं जैसे सुडोकू भरते समय व्यर्थ लिखे हुए अंको को हटाना बार-बार प्रयास करना, धैर्य रखते हुए अंक भरना, हर बार सफलता न मिलने के बावजूद प्रयास करते रहना। यह सब सुडोकू और वर्गपहेली भरते समय सीखते हैं।

दिन भर के कामों में इंटरनेट व अन्य तकनीक पर हमारी निर्भरता इस कदर बढ़ गई है कि छोटे-से काम के लिए भी इनको सहारा बना लिया है। बहुत सामान्य से शब्दों के लिए हम गूगल पर सर्च करने लगते हैं चाहे उनके अर्थ हमें बचपन से पता हों। तकनीकी निर्भरता के चलते आत्मविश्वास में भी कमी आई है।

---

147 साल की लड़ाई के बाद मिली कामयाबी, संसद ने पास किया  
प्रस्ताव, अधिकार के अलावा जिम्मेदारियां भी तय  
दुनिया में पहली बार न्यूजीलैंड की नदी को मिले इंसानो जैसे  
कानूनी अधिकार, दो लोगों को बनाया गया उसका प्रतिनिधि

न्यूजीलैंड की व्हांगनुई नदी दुनिया की ऐसी पहली नदी बन गई है, जिसे  
इंसानो जैसे अधिकार दिए गए हैं। संसद ने इससे जुड़ा प्रस्ताव पास कर दिया है।  
इसमें उसके अधिकारों के साथ-साथ वैल्यूज का भी जिक्र किया गया है।

व्हांगनुई या ते अवा तुपुआ, न्यूजीलैंड की तीसरी सबसे बड़ी नदी है।  
इसका आध्यात्मिक महत्त्व भी है। वहां का माओरी समुदाय इस नदी के अलावा  
पहाड़ और समुद्र की वैसी ही पूजा-अर्चना करता है, जैसे हम गंगा की करते हैं,  
साल 1870 से ही अलग-अलग ग्रुप इस नदी और मनुष्यों के संबंधों को  
औपचारिक रूप देने की मांग करते रहे हैं। उनकी यह लड़ाई अब पूरी हो गई है।  
हालाकि, उसे यह कानूनी लड़ाई जीतने में 147 साल लग गए।

न्यूजीलैंड की संसद ने हाल ही में इससे जुड़ा बिल पास किया। इसने  
व्हांगनुई को एक व्यक्ति के तौर पर अपना प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दे दिया  
है। इसके दो प्रतिनिधि होंगे। पहला प्रतिनिधि माओरी समुदाय द्वारा नियुक्त किया  
जाएगा, जिसे इवी कहा जाएगा। दूसरा प्रतिनिधि सरकार तय करेगी।

इस बिल को बनाने और इस पर सरकार को राजी करने के लिए माओरी  
समुदाय के क्रिस फिनालिसन ने निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने कहा, 'व्हांगनुई  
की अब अपनी कानूनी पहचान होगी। उसके अब एक नागरिक जैसे ही अधिकार,  
कर्तव्य और जिम्मेदारियां होंगी। मुझे पता है कि कुछ लोग कहेंगे कि प्राकृतिक  
संसाधन को कानूनी अधिकार देना अजीब है। पर यह पारिवारिक ट्रस्ट या कंपनी  
या कारपोरेट सोसाइटी से अलग नहीं है। व्हांगनुई नदी, उत्तरी द्वीप पर है। इसकी  
कुल लंबाई 290 किलोमीटर है।

विकास के लिए 524 करोड़ रुपए की मदद : संसद ने नदी के लिए  
524 करोड़ रुपए का बजट दिया है। इससे नदी पर विकास के काम किए जाएंगे।  
इसके अलावा 197 करोड़ रुपए का अलग फंड बनाया जाएगा। इसका इस्तेमाल  
नदी के रखरखाव पर खर्च होगा।

---

सुप्रीम कोर्ट ने एक अप्रैल से बीएस-3 वाहनों की बिक्री व  
रजिस्ट्रेशन पर रोक लगाई  
देश में 12 हजार करोड़ के 8.24 लाख वाहनों की  
बिक्री अटकी

कंपनियां बोली-स्टॉक बेचने दें, सुप्रीम कोर्ट ने कहा- जनता की  
सेहत खतरे में नहीं डाल सकते

सुप्रीम कोर्ट ने लोगों की सेहत का हवाला देकर देशभर में बीएस-3 गाड़ियां बेचने और उनके रजिस्ट्रेशन पर रोक लगा दी है। एक अप्रैल के बाद सिर्फ बीएस-4 उत्सर्जन मानको वाली गाड़ियां ही बेची और रिजस्टर्ड हो सकेगी। कंपनियों के स्टॉक में बीएस-3 की करीब 8.24 लाख गाड़ियां हैं। करीब 12 हजार करोड़ रुपए के नुकसान की दुहाई देते हुए उन्होंने यह स्टॉक बेचने की मंजूरी मांगी थी। लेकिन जस्टिस एमबी लोकर और जस्टिस दीपक गुप्ता की बेंच ने मांग खारिज कर दी। कहा, कंपनियों के फायदे के लिए लोगों का स्वास्थ्य खतरे में नहीं डाल सकते। कंपनियां जानती थी कि 1 अप्रैल 2017 से सिर्फ बीएस-4 गाड़ियां ही बिकेगी। फिर भी स्टॉक क्यों बढ़ाते रहे? सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स सियाम एवं अन्य ने स्टॉक निकालने की इजाजत मांगी थी।

दलील दी कि बीएस-4 गाड़ियों की तकनीक और उत्पादन पर काफी निवेश किया है। केन्द्र ने भी ऑटो कंपनियों का समर्थन करते हुए कहा कि 1 अप्रैल के बाद बीएस-3 वाहन के उत्पादन पर रोक है, बिक्री व रजिस्ट्रेशन पर नहीं। अब केन्द्र पुनर्विचार याचिका दायर कर सकता है। बीएस यानी भारत स्टेज। इसके तहत गाड़ियों में ईंधन से होने वाला प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए मानक तय किए जाते हैं। इन्हें उत्सर्जन मानक कहते हैं।

### राजस्थान में 20 हजार चौपहिया, 80 हजार दुपहिया अटके

- 1600 करोड़ रू. की कीमत (आठ लाख रू. औसत मूल्य के हिसाब से) 20,000 चार पहिया कारें, कामर्शियल वाहन आदि
- 400 करोड़ रू. कीमत 50,000 रू औसत मूल्य के हिसाब से 80,000 दुपहिया वाहनों की

(स्रोत : ऑथोराइज्ड मोटर व्हीकल डीलर्स एसो. राजस्थान)

---

## देश में.....

- 6,71,308 मोटरसाइकिल,
- 16,198 कार, 40408 थ्री व्हीलर
- 96,724 कॉमर्शियल वाहन बीएस-3 का स्टॉक है अभी

(स्रोत : सियाम)

## अजमेर आरटीओ का फरमान मार्च तक ही बीएस-3 वाहनों का रजिस्ट्रेशन

31 मार्च तक खरीदे वाहनों के इस अवधि के बाद भी रजिस्ट्रेशन पर सुप्रीम कोर्ट की रोक नहीं है जबकि अजमेर आरटीओ ने आदेश जारी कर बिक्री व रजिस्ट्रेशन की अवधि 31 मार्च तय की है। ऑथोराइज्ड मोटर व्हीलर डीलर्स एसो. के स्रक्रेटरी साईं गिरधर के अनुसार यह आदेश सुप्रीम कोर्ट के आदेश के विपरीत है।

## बच्चों में अस्थमा का खतरा बढ़ेगा

संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक पृथ्वी का तापमान और कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से पराग कणों की मात्रा में इजाफा हो रहा है जिससे बच्चों में अस्थमा होने का खतरा और बढ़ सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वाहनों उद्योग धंधे और निर्माण के काम के कारण उड़ने वाले धूल की वजह से पैदा होने वाले वायु प्रदूषण से बच्चों में पहले से ही अस्थमा की शिकायत आ रही है। यूएन और विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि हर साल पांच साल से कम उम्र के सत्रह लाख बच्चे पर्यावरण समस्याओं के कारण मौत का शिकार हो रहे हैं।

## तनाव देने वाले पहुंचाते हैं मस्तिष्क को नुकसान

कई शोधों से यह बात पता चली है कि लगातार स्ट्रेस का मस्तिष्क पर नकारात्मक असर होता है। इससे तर्कशक्ति और याददाश्त कमजोर हो सकती है। जब तनाव नियंत्रण से बाहर हो जाता है तो ब्रेन की क्रियाशीलता घट जाती है। दिमाग पर तनाव का गहरा असर होता है। और यह काम करने की क्षमता को घटा देता है।

हाल ही में जर्मनी की फ्रेडरिक शिलर यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध में पता चला कि जब आप अजीब और डिफिकल्ट लोगों के संपर्क में लगातार रहते हैं तो

---

दिमाग पर इसी तरह का निगेटिव असर होता है। असल में नकारात्मक विचार आपके जीवन पर ज्यादा जल्दी असर करते हैं। सकारात्मक विचारों को व्यक्ति देर से स्वीकार करता है। जब नकारात्मक व्यक्ति या विचारों से सामना होता है तो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना और शांत संतुलित बने रहना मुश्किल हो जाता है। दिमाग उलझ जाता है। इसलिए ऐसे लोगों की मैनेज करना जरूरी हो जाता है। असल में इन्हें संभालने के लिए इन्हें पहचानना और इनकी बातों से निकालना जरूरी होता है इसके लिए कुछ तरीके अपनाये जा सकते हैं। जैसे - निगेटिव लोग हमेशा लगातार शिकायत करते हैं। उनकी बातें नकारात्मक होती हैं और वे हमेशा तर्क-कुर्तक के जरिए इन्हें आगे बढ़ाते रहते हैं। इनसे एक तय दूरी बनाकर रखना जरूरी होता है।

दूसरा तरीका है उनकी नकारात्मकता को दूसरी दिशा में मोड़ देना। जैसे ही ऐसे लोग कोई शिकायत सामने लाएं तो उनसे ही पूछा जा सकता है कि इसका समाधान भी आपको बताना चाहिए। असल में निगेटिव लोग सिर्फ शिकायत करते हैं। समाधान अगर उनसे ही पूछा जाए तो वे खामोश हो जाते हैं या बात का रूख खुद ही किसी दूसरी ओर मोड़ देते हैं।

निगेटिव लोगों की एक और बात अजीब होती है कि वे हमेशा तर्क के खिलाफ बात करते हैं। लेकिन उनकी इन बातों से सामने वाला इमोशनल हो जाता है। इस इमोशनल ट्रैस से बचना जरूरी होता है। असल में वे ऐसा सोच समझकर आपको फंसाने के लिए ही करते हैं। उनकी कोशिश होती है कि किसी भी तरह लोगों का उकसाया जाए फिर उनसे बहस की जाए। लेकिन सफल लोग जानते हैं कि यह बहस किसी और दिन की जा सकती है। वे ऐसे उकसावे के मौको को टाल जाते हैं और उनसे बचकर निकल जाते हैं। यह भी इस स्थिति से निकलने का बेहतर तरीका है। साथ में काम करने वाले नकारात्मक लोग काम को टालने की प्रवृत्ति वाले होते हैं। वे साथी के लिए भी ऐसी ही परिस्थिति बनाना चाहते हैं। लेकिन किसी भी तरह के तनाव से बचने और बाहर निकलने के लिए अपनी क्षमताओं को पहचानना सबसे ज्यादा जरूरी है। अपने पास उतना ही काम लेना चाहिए, जितना कि आप आसानी से पूरा कर सके। नकारात्मकता से बाहर निकलने के लिए कार्य के प्रति, जीवन के प्रति आशावादी रूख अपनाना जरूरी है। इससे जीवन के कठिन से कठिन क्षणों में भी विजय मिल सकती है।

---

## मेरे अनुभव को अन्य लोग क्यों नहीं मानते व कब से मानते हैं?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- छोटी-छोटी गैया....)

मेरे अनुभवों को वे न समझ पाते जो होते हैं रागी द्वेषी मोही।  
कामी क्रोधी व इर्ष्यालु तृष्णावान् जो होते हैं मूढ अज्ञानी॥  
संकीर्ण स्वार्थी व रूढि परम्परावारदी हिताहित विवेक शून्य।  
कर्मसिद्धान्त व मनोविज्ञान व स्वास्थ्य विज्ञान से शून्य।  
आत्मा परमात्मा को जो न जानते जो जानते स्वयं को शरीरमय।  
संसार-शरीर भोग में आसक्त स्वयं को मानते इन्द्रिय मनमय॥(1)  
पावन भाव-व्यवहार को न जानते न जानते उसके सुफल।  
मलीन भाव -व्यवहार में लीन न जानते उसके भी कुफल।  
क्रोधमानमाया के जो होते दास जो होते संयम-धैर्य रहित।  
आत्मानुशासन व समता रहित दूरदृष्टि व स्व-हित रहित॥(2)  
यथास्थितिवादी-आलसी-प्रमादी विकास रहित ढोंगी-पाखण्डी।  
दया करूणा व परोपकार रहित जो होते हैं दीन-हीन व अहंवादी।  
किन्तु जब उन्हें बार-बार दुःख संकट व रोग संताप होते।  
पापकर्म के मन्द होने पर व पुण्य उदय से मेरे अनुभव भाते॥(3)  
मेरे अनुभव के अनुसार जब वे भाव व व्यवहार उत्तम करते।  
आहार-विहार-विचार-उच्चार उत्तम करके वे सुखी बनते।  
उसके अनन्तर तो मेरे अनुभव को नहीं समझ पाने पर भी सही मानते।  
यथायोग्य अनुकरण करके तन-मन-आत्मा से स्वस्थ बनते॥(4)  
अनादि काल से हर जीव ही कर्म परतंत्रता से स्वहित न जानते।  
सर्वज्ञ तीर्थंकर हितोपदेश के भी कथन को नहीं मानते।  
निकट भव्य ही पुण्योदय से हित चाहते व अहित त्यागते।  
सम्यग्दृष्टि से लेकर श्रमण बनकर कर्म नाशकर अनन्त सुखी बनते॥(5)  
ये सब मैंने पढा ग्रन्थों से अनुभव भी कर रहा हूँ अधिक  
इसलिए मैं समता में रहता हूँ स्वपरहित 'कनक' का लक्ष्य॥(6)

सीपुर-21.02.2017 प्रातः- 7.17

---

## वह धर्म मुझे नहीं चाहिए... ?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- जिस देश में गाँधी ...2 हर देश में तू...3 छूलन दो...)

वह धर्म मुझे नहीं चाहिए, जिस धर्म से (में) हो रागद्वेष मोह।  
संकीर्ण-कट्टर व आडम्बर, क्रूरता वर्चस्व-मिथ्या दंभ॥ (ध्रुव)  
वह धर्म मुझे भी चाहिए, जिसमें/से हो सत्य-समता शान्ति,  
उदार-पावन व सत्यनिष्ठा, स्व-पर-विश्व की उन्नति।  
इह-परलोक में हो विकास, अन्त्योदय से सर्वोदय तक॥(1)  
आत्मा की विशुद्धि होता है धर्म, वस्तु स्वरूप होता है धर्म,  
सर्व सुखाकर होता है धर्म, स्वर्ग-मोक्षदायक होता (है) धर्म।  
क्षमा मार्दव आर्जव शौच संयम, दयादान परोपकार (है) धर्म॥(2)  
इससे विपरीत जो होता धर्म, वह धर्म नहीं होता अधर्म,  
राग द्वेष मोह ईर्ष्या घृणा युक्त, वर्चस्व-शोषण दंभ युक्त।  
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि हेतु, दिखावा आडम्बर ढोंग हेतु॥(3)  
इससे प्रेरित जो धर्म होता, उससे स्व-पर अहित होता,  
निन्दा-कलह -अपमान होते, आक्रमण युद्ध विनाश होते।  
आतंकवाद से ले गृहयुद्ध होते, इहपरलोक में दुःख पाते॥(4)  
स्व-अधर्म को भी श्रेष्ठ सिद्ध हेतु, अन्य को मानते नीच-पापी,  
दुनिया में रहना उन्हें न योग्य मानते, उनकी हत्या को मानते स्वधर्म।  
देश विदेशों के इतिहास-वर्तमान, इस हेतु है ज्वलन्त उदाहरण॥(5)  
ऐसा धर्म मुझे नहीं चाहिए, जिस में हो अन्धश्रद्धा व अतिवाद,  
कट्टरता से ले जीव बलि तक, सत्य-तथ्य रहित अविवेकता।  
इस से परे चाहिए मुझे आत्मधर्म, 'कनक' का लक्ष्य स्व-उपलब्धि धर्म॥

सीपुर-13.02.2017 रात्रि- 8.18

संदर्भ -

आदहिदं कादव्वं यदि चेत् परहिदं कादव्वं,  
आदहिदं परहिदादं आदहिदं सुट्ठू कादव्वं॥  
उत्तमा स्वात्मचितास्यान्मोहचिन्ता च मध्यमा,

---

## अधमा कामचिन्तास्यात् परचिन्ताऽधमाधमा।।

अर्थात् जिस प्रकार दीपक स्वयं पहले प्रकाशित होकर दूसरों को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार तुम स्वयं स्व उपकार करते हुए परोपकार करो। इसके बिना अन्य समस्त प्रपंच, ढोंग-पाखण्ड, संक्लेश त्याग करो।

### सिद्धि एवं श्रेय मार्ग

कुबोध रागादि विचेष्टितैः फलं, त्वयाऽपि भूयोजननादि लक्षणम्।  
प्रतीहि भव्य प्रतिलोम वर्तिभि, ध्रुवं फलं प्राप्यसि तद्विलक्षणम्।। (106)  
(आत्मानुशासनम्)

हे भव्य! तू न बार-बार मिथ्यात्व, अज्ञान एवं राग द्वेषादि जनित प्रवृत्तियों से जो जन्म-मरणादि रूप फल प्राप्त किया है उसके विरुद्ध प्रवृत्तियों सम्यग्ज्ञान एवं वैराग्य जनित आचरणों के द्वारा तू निश्चय से उसके विपरीत फल अजर-अमर पद को प्राप्त करेगा, ऐसा निश्चय कर।

दयादमत्याग समाधि संततेः पथि प्रयाहि प्रगुणं प्रयत्नवान् ।

नयत्यवश्यं वचसामनगोचर, विकल्पदूरं परमं किमप्यसौ।। 10

हे भव्य! तू प्रयत्न करके सरल भाव से दया, इंद्रिय दमन, दान और ध्यान की परंपरा के मार्ग में प्रवृत्त हो जा वह मार्ग निश्चय से किसी ऐसे उत्कृष्ट पद को प्राप्त कराता है जो वचन से अनिर्वचनीय एवं समस्त विकल्पों से रहित है।

दया धर्म-त्याग-समाधिनिष्ठम् नय प्रमाण प्रकृतडःसाऽर्थम्।

अधत्यमन्यैरखिलैः प्रवादैः जिन। त्वदियं मतद्वितीयम् ।। 6 युक्त्यानुशासनम्

हे वीर जिन! आपका यह अनेकान्त रूप शासन अद्वितीय है। इसमें दया, दम त्याग और समाधि में तपाता है। नयो एवं प्रमाणों द्वारा इसमें द्रव्य, पर्याय स्वरूप जीवादिक तत्वों का अविरोध रूप से, सुनिश्चित असंभव बोधरूप से निर्णय किया गया है एवं इसमें समस्त एकान्त प्रवादो दर्शनमोहनीय के उदय से सर्वथा एकान्तवादियों की कल्पित मान्यताओं द्वारा किसी भी प्रकार बाधा नहीं आ सकती है।

हे आत्मन्! मोक्ष प्राप्ति का पूर्ण अद्वितीय मार्ग रत्नत्रय ही है। अनन्त अनंतदर्शियों ने इस मार्ग पर चलते हुए मोक्ष को प्राप्त किया है। वे अनंतज्ञान को प्राप्त करके पूर्णरूपेण प्रत्यक्ष से अनुभव करके रत्नत्रयात्मक मार्ग का ही यथार्थ मार्ग

---

और इससे अतिरिक्त कुमार्ग, दुःख का मार्ग एवं संसार का मार्ग कहा है। आचार्य प्रवर समंतभद्र स्वामी ने कहा भी है:-

**सदृष्टिज्ञान वृत्तानि धर्म धर्मेश्वरा विदुः।**

**यदिय प्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धतिः॥ 3**

सद्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चरित्र ही धर्म है, मोक्ष का मार्ग है, इससे विपरीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान एवं कुचारित्र ही कुधर्म है, दुःख का मार्ग है, संसार का मार्ग है, ऐसा धर्म के ज्ञाता धर्म के प्रभु ने बताया है। आचार्य उमास्वामी भी मोक्ष प्रतिपादक शास्त्र का प्रतिपादन करते हुए प्रथम पंक्ति में बताते हैं कि :-

**सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणिमोक्षमार्गः ॥ “तत्त्वार्थ सूत्र”**

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चरित्र इन तीनों का सम्यक् संयोग रूप त्रयात्मक मोक्ष का मार्ग है

Right belief, Right knowledge, Right conduct, these (Together contribute) the path to liberation.

Self reverence, self knowledge and self control, these three alone lead life to sovereign power.”

## **निर्विकार से विकास तो विकार से पतन**

**मुक्तिमिच्छसि चेत्तातः विषयान् विषवत्यज।**

**क्षमार्जवदयातोषं सत्यं पियूषवद् भज । सू.2 अष्टावक्रगीता**

हे प्रिय! यदि तू मुक्ति चाहता है तो विषयों को विष के समान छोड़ दे और क्षमा, आर्जव, दया, संतोष और सत्य को अमृत के समान सेवन कर।

**एको विशुद्ध बोधव्योऽहमिति निश्चयवह्निना**

**प्रज्वालयाज्ञानगहनं वीतशोकः सुखी भव ॥ सूत्र 9**

मैं एक विशुद्ध बोध हूँ, ऐसी निश्चयरूपी अग्नि से गहन अज्ञान को जलाकर तू शोक रहित हुआ सुखी हो।

**निरपेक्षो निर्विकारो निर्भरः शीलताशयः ।**

**अगाधबुद्धिरब्धो भव चिन्मात्रवासनः॥ सूत्र 17**

“तू निरपेक्ष है, निर्विकार है, स्वनिर्भर है, शान्ति और मुक्ति का स्थान है, अगाध बुद्धिरूप है, क्षोभ-शून्य है। अतः चैतन्य मात्र में निष्ठा वाला हो।”

---

**समदुःखसुखपूर्ण आशानैराश्यौः समः।**

**समजीवित मृत्युः सन्नेमेव लयं ब्रज।। सूत्र 4**

दुःख और सुख जिसके लिए समान है, जो पूर्ण है, जो आशा और निराशा में समान है, जीवन और मृत्यु में समान है, ऐसा होकर तू मोक्ष को प्राप्त हो।''-

सारस्वरूप से हे आत्मन् संसारिक सुख-दुःख, मान-अपमानादि तेरा शुद्ध स्वरूप नहीं होने के कारण इससे प्रभावित होने पर दुःखदायी कर्म संचय होते हैं। तथा आत्मज्ञान, आत्मध्यान, समता, आत्म-लीनता, क्षमादि भाव तेरा शुद्ध स्वरूप होने से इसके कर्म नष्ट होते हैं, जिससे अक्षय सुख शान्ति मिलती है।

**णाणं दोसे णासिदि णरस्य इंदियकसायविजयेण**

**आउहरणं पहरणं णासेदि अरिं ससत्तस्स।। 1331**

जैसे सत्वशालिका आयु को हरने वाला शस्त्र शत्रु को नष्ट करता है वैसे ही ही इन्द्रिय और कषाय को जीतने से ज्ञान मनुष्य के दोषों को नष्ट करता है।

**णाणांपि कुणदि दोसे णरस्य इन्दियकसायदोसेण।**

**आहारो वि हु णाणों णरस्य विससंदुदो हर दि।। 1332**

इन्द्रिय और कषायरूप परिणामों के दोष से ज्ञान भी मनुष्य में दोष उत्पन्न करता है। दूसरे के संसर्ग से उपकारी भी अनुपकारी हो जाता है। जैसे आहार प्राण धारण में निमित्त है किन्तु विष से मिला आहार प्राणों का घातक होता है।

**णाणं करेदि पुरिसस्स गुणे इंदियकसायविजयेण।**

**बलरूववण्णमाऊ करेहि जुत्तो जधाहारो। 1333**

और इन्द्रिय कषायों को जीतने से ज्ञान पुरुष में गुण उत्पन्न करता है। जैसे विष से रहित आहार बल, रूप, तेज और आयु को बढ़ाता है।

**णाणं पि गुणे णासेदि णरस्य इंदियकसायदोसेण।**

**अप्पवधाए सत्यं होदि हु कापुरिसहत्थागयं ।। 1334**

इन्द्रिय और कषाय रूप परिणामों के दोष से ज्ञान भी पुरुष के गुणों को नष्ट करता है। जैसे कायर पुरुष के हाथ में गया शस्त्र उसके ही वध में निमित्त होता है।

**सबहुस्सुदो वि अवमणिज्जादि इंदियकसायदोसेण-**

**णरमाऊधहत्थंपित हु मदयं गिद्धा परिभवन्ति । 1335**

इन्द्रिय और कषायों के दोष से अच्छे प्रकार से बहुत से शास्त्रों का ज्ञाता

---

भी, विद्वान् भी अपमान का पात्र होता है। जैसे शस्त्र हाथ में होते हुए भी मरे मुनष्यों को गिद्ध खा जाते हैं।

**इच्छियकसायवसगो बहुस्सुदो वि चरणे ण उज्जमदि।**

**पक्खीव छिण्णपक्खो ण उप्पडि इच्छामाणो ॥ 1336**

इंद्रिय और कषाय के वश में हुआ बहुश्रुत विद्वान भी चारित्र में उद्योग नहीं करता। जैसे जिसका पर कट गया है ऐसा पक्षी इच्छा करते हुए भी नहीं उड़ सकता।

इंद्रिय कषाय के योग से बहुत भी ज्ञान स्वयं नष्ट हो जाता है जैसे शक्कर के साथ कड़ा हुआ दूध विष के मिलने से नष्ट हो जाता है अर्थात् अपने स्वभाव को छोड़ देता है। यहाँ शक्कर के साथ कड़ाया हुआ कहने से मिठास के कारण दूध की सातिशयता बतलायी है। ऐसा दूध भी विष के मेल से हानिकारक होता है।

जिसका ज्ञान होता है उसी का उपकारी होता है। यह बात प्रसिद्ध है । किन्तु इन्द्रिय और कषाय से मलिन ज्ञान, जिसका होता है, उसका उपकार नहीं करता है। जैसे गधे पर लदा चंदन दूसरों को उपकार करता है।

इन्द्रिय और कषायों का निग्रह करने में जो अपना उपयोग नहीं लगाता अर्थात् इन्द्रिय और कषाय से प्रभावित है, उसका ज्ञान वस्तुस्वरूप का प्रकाशक नहीं होता। जैसे जिसने आँखे मूँदी है उसके लिए तीव्रता से जलता हुआ दीपक पदार्थ का प्रकाश नहीं करता।

जिसका परिणाम इन्द्रिय और कषाय से मलिन होता है ऐसा कोई साधु बाह्य गमन आगमन आदि क्रियाओं के द्वारा अपने भोग के लिए विषयों को ग्रहण करता है जैसे निश्चल बैठा पक्षी अपनी चोंच से अपने शिकार को ग्रहण करता है।

जैसे घोड़े की लीद ऊपर से चिकनी और अन्दर से खुरदरी होती है वैसे ही किसी का बाह्य आचरण तो समीचीन होता है किन्तु अभ्यन्तर परिणाम शुद्ध नहीं होते। उसे घोड़े की लीद के समान कहा है। जिसके अभ्यन्तर परिणाम शुद्ध नहीं होते। उसकी बाह्य क्रिया क्या करेगी? अर्थात् इन्द्रिय और कषाय रूप अशुभ परिणाम के द्वारा अभ्यन्तर तपोवृत्ति जिसकी नष्ट हो चुकी है वह बाह्य अनशन आदि तक करे भी तो क्या लाभ है। वह तो नदी के तट पर निश्चल बैठे हुए बगुले की तरह है।

---

**बाहिकरणविसुद्धी अब्भंतरणसोधणत्थाए।**

**ण हु कुंडयस्य सोधी सक्कासतुसस्स कादुं जो ॥ 1342**

अभ्यन्तर क्रिया विनय आदि की शुद्धि के लिए बाह्य क्रिया की विशुद्धि कही है। शीघ्र ही बहुत से कर्मों की निर्जरा में समर्थ अभ्यन्तर तपों की वृद्धि के लिए बाह्य अनशन आदि तप सुने जाते हैं इसलिए उनका बाह्य नाम सार्थक है। जो जिसके लिए होता है वह प्रधान होता है इसलिए अभ्यन्तर तप की प्रधानता है। वह अभ्यन्तर तप शुभ और शुद्ध परिणाम रूप होता है। उनके बिना बाह्य तप निर्जरा में समर्थ नहीं होता है। कहा भी है 'भगवान्! आपने आध्यात्मिक तप की वृद्धि के लिए अत्यन्त कठोर बाह्य तप किया।' ठीक ही है, क्योंकि छिलके के रहते हुए धान्य की अन्तः शुद्धि सम्भव नहीं है।

**अब्भंतरसोधीए सुद्धं णियमेण बाहिरं करणं।**

**अब्भंतरदोसेण हु कुणदि णरो बाहिरं दोसं ॥ 1343**

नियम से अभ्यन्तर शुद्धि के होने से ही बाह्य शुद्धि होती है। इन्द्रिय कषाय परिणाम आदि अन्तरंग परिणाम दोष से ही मनुष्य वचन और काय सम्बन्धी बाह्य दोषों को दूर करता है।

**लिंगं च होदि अब्भंतरस सोधीए बाहिरा सोधी।**

**भिउडीकरणं लिंगं अंतोजाद कोधस्य ॥ 1334**

अनशन आदि तप विषयक बाह्य शुद्धि अभ्यन्तर परिणामों की विशुद्धि का चिन्ह है। जैसे क्रोध उत्पन्न होने का चिन्ह भ्रुकुटी चढाना होता है इस प्रकार बाह्य और अभ्यन्तर की अग्नि और धूम की तरह परस्पर में अविनाभाविता हैं। जैसे आग के होने पर ही धूम होता है। अतः जहाँ धूम होता है वहाँ आग अवश्य होती है। इसी को अविनाभाविता कहते हैं। धूम लिंग है आग लिंगी है। इसकी प्रकार बाह्य कार्य के साथ अभ्यन्तर कारण का लिंग लिंगी का भाव सम्बन्ध जानना। संक्षिप्ततः हे आत्मन्! संसार दुःख के कारणभूत कर्मासाव एवं बंध जीव के वैभाविक योग तथा उपयोग से होता है। दुःख क्षय के लिए संवर निर्जरा, मोक्ष के कारण भूत, वैभाविक योग (विषय, कषाय) त्याग करना केवल आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

---

## धर्माचरण की प्रेरणा

पापद् दुःख धर्मसुखमिति सर्वजन सुप्रसिद्धमिदम्।

तस्माद्विहाय पापं चरतु सुखार्थी सदा धर्मम् । (8) आत्मा

अर्थ :- “पाप से दुःख होता है और धर्म से सुख होता है”- यह कथन समस्त लोक में प्रसिद्ध है। सभी ऐसा मानते हैं और कहते हैं। इसलिए जिसे सुख चाहिए है उसे पाप को छोड़कर सदाकाल धर्म का आचरण करना चाहिए।

संसार के सभी प्राणियों का धर्म करने का उपदेश

सुखितस्य दुःखितस्य च संसारे धर्मएव तव कार्यः।

सुखितस्य तदभिवृद्धयै दुःखभुजस्तदुपघाताय (18) आत्मा

अर्थ :- (हे जीव!) तू संसार में सुखी हो या दुःखी तुझे धर्म ही करना योग्य है। जो सुखी है, उसे सुख बढ़ाने के लिए और जो दुःखी है उसे दुःख का नाश करने के लिए धर्म ही करना चाहिए।

विषय सुख भोगते हुए भी धर्म की रक्षा करने के प्रेरणा

धर्मारामतरूणां फलानि सर्वेन्द्रियार्थ सौख्यानि।

संरक्ष्य तांस्ततस्तान्युच्चिनु यैस्तैरूपायैस्त्वम् । (19) आत्मा

अर्थ :- समस्त इन्द्रिय विषयों के सुख धर्मरूपी बाग के सम्यक् और संयमादिक वृक्षों के फल हैं। इसलिए तू किसी भी उपाय से उन वृक्षों को सुरक्षित रखकर उनके फल को ग्रहण कर।

धर्माचरण से सुख भंग होने के भय का निराकरण

धर्म : सुखस्य हतुर्हेतुर्न विराधकः स्वकार्यस्य।

तस्मात् सुखभंगधिया मा धर्मस्य विमुखस्त्वम् (20) आत्मा

अर्थ :- धर्म सुख का कारण है और जो सुख का कारण होता है, वह अपने कार्य का विरोधी नहीं होता, इसलिए तू सुख-भंग होने का भय करके धर्म से विमुख मत हो।

कृषक के उदाहरण से धर्म रक्षा की प्रेरणा

धर्मादवाप्तविभवो धर्म प्रतिपाल्य भोगमनुभवतु ।

बीजादवाप्तधान्यः कृषीवलस्तस्य बीजमिव। (21) आत्मा।

---

**अर्थ :-** जिस प्रकार बीज से अन्न प्राप्त करने वाला किसान उस अन्न के बीज को सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार जिस जीव ने धर्म से सुख-सम्पत्ति रूप वैभव प्राप्त किया है, उसे धर्म का पालन करते हुए भोग भोगना चाहिए।

## **धर्म का फल बिना माँगे ही प्राप्त होता है**

**संकल्प्यं कल्पवृक्षस्य चिन्त्यं चिन्तामणेरपि।**

**असंकल्प्यमसंचिन्त्यं फलं धर्मादवाप्यते। (22) आत्मा।**

**अर्थ :-** कल्पवृक्ष का फल तो संकल्प योग्य वचनो से याचन करने पर मिलता है और चिन्तामणि का फल भी चिन्तनवन योग्य मन द्वारा याचना करने पर मिलता है, परन्तु धर्म से ऐसा अद्भुत फल मिलता है, जो संकल्प और चिन्तन योग्य नहीं, अर्थात् उसकी प्राप्ति के लिए संकल्प या चिन्तन की आवश्यकता नहीं है।

## **आत्मा के परिणामों से ही पुण्य और पाप की उत्पत्ति**

**परिणाममेव कारणमाहुः खलुः पुण्यपापयोप्राज्ञाः।**

**तस्मात् पापापचयः पुण्योपचयश्च सुविधेयः । (23)**

**अर्थ :-** बुद्धिमान पुरुष निश्चय से आत्मा के परिणाम (भावों) को ही पुण्य-पाप का कारण कहते हैं, इसलिए भले प्रकार से पाप का नाश और पुण्य का संचय करना चाहिए।

## **धर्म संचय न करने वालों की निन्दा**

**कृत्वा धर्मविघातं विषयसुखान्यनुभवन्ति ये मोहात्।**

**आच्छिद्य तरुन्मूलात् फलानि गृहन्ति ते पापाः। (24)**

**अर्थ :-** जो जीव मोह या भ्रम के कारण धर्म का घात करते हुए विषय सुख को भोगते हैं, वे पापी वृक्ष को मूल से उखाड़ कर फलों को ग्रहण करते हैं।

## **जब ईर्ष्या असुरक्षा की भावना और बढ़ा दे**

ईर्ष्या तब पैदा होती है जब किसी महत्वपूर्ण रिश्ते को किसी दूसरे व्यक्ति से खतरा महसूस हो। ईर्ष्या काम की जगह शिक्षा, संपन्नता जैसी स्पर्द्धात्मक स्थितियों में भी पैदा हो सकती है। खोने के भय और असुरक्षा से ईर्ष्या पैदा होती है और फिर इन्हें और बढ़ाती है।

---

## शरीर के प्रभावित हिस्से पर ध्यान केंद्रित करें

1. ईर्ष्या भय या क्रोध से निर्मित होती है। अगर पेट की मांसपेशियाँ सिकुडती महसूस हो तो उसका कारण भय है और गर्दन जबड़े और कंधों में कड़ापन या जलन महसूस हो तो इसका कारण क्रोध है। इस पर गौर करने से आप ईर्ष्या पर काबू पा सकते हैं।
2. जब ईर्ष्या महसूस हो जो खूब गहरी सांस ले और छोड़ें। सांस छोड़ते समय कल्पना करें कि नकारात्मक भावनाएं धुएं के रूप में आपकी पीठ से बाहर निकल रही हैं।
3. अपनी उपलब्धियों और लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करें। इससे असुरक्षा की भावना दूर होती है, जो आमतौर पर ईर्ष्या की जनक होती है।

## दूसरों से अपनी तुलना करना बंद करें

1. दुनिया में छह अरब लोगों में हमसे ज्यादा स्मार्ट, सुंदर, बुद्धिमान, धनी, भाग्यवान कोई तो होगा, लेकिन किसी की जिंदगी परफैक्ट नहीं होती और हर व्यक्ति में गुण-दोष होता है, इसलिए दूसरो से तुलना बेकार है।
2. बचपन में कुछ भी पाने के लिए रोना ही काफी होता था। लेकिन बड़े होने के बाद कुछ चाहिए तो लक्ष्य के लिए त्याग करने, अनुशासित होने और जोखिम लेने को तैयार रहें, वरना ईर्ष्या पैदा होती रहेगी।
3. इच्छाओं के साथ लगाव परेशानियां पैदा करता है। चीजों, व्यक्तियों और जगहों से अनुचित लगाव उन्हें खोने का भय पैदा करता है और यह ईर्ष्या के लिए आदर्श स्थिति है।

## अपने भीतर मौजूद प्रेम व्यक्त करना शुरू करें

1. हम मूलतः प्रेमपूर्ण हैं, लेकिन अहंकार के कारण प्रेम व्यक्त नहीं कर पाते। दूसरों की उपलब्धियों की प्रशंसा करें वरना यह भावना अंततः ईर्ष्या का रूप ले लेगी।
2. जो अपने पास नहीं है, वह यदि किसी और के पास हो, तो ईर्ष्या का पैदा होना स्वाभाविक है। इस ऊर्जा का वह चीज प्राप्त करने के सकारात्मक लक्ष्य पर लगाएं।
3. ध्यान के जरिये अपने व्यक्तित्व के उस शाश्वत, अमर हिस्से संपर्क

---

बनाइए, जो आपकी उपलब्धियों और विफलता से परे है। इससे बाहरी मान्यता की ख्वाहिश कम होगी, जो आत्मा की गहनतम आकांक्षा को पूरा करने में हमेशा ही अपूर्ण होती है।

अधिक धार्मिक संस्कृति वाले देश ....

## गणित और विज्ञान में अच्छा नहीं करते

शोध में छात्रों की ओर से धार्मिक गतिविधियों और शैक्षिक गतिविधियों के बीच स्पष्ट रूप से नकारात्मक संबंध देखा गया।

एक नए वैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि धार्मिक समाजों में पले-बढ़े बच्चे, नास्तिक या अज्ञेयवादी बच्चों की तुलना में गणित व विज्ञान में खराब प्रदर्शन करते हैं। यह नतीजा ब्रिटेन की लीड्स बेकेट यूनिवर्सिटी और कोलंबिया की मिसौरी यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिकों के संयुक्त शोध में सामने आया है। अध्ययन में छात्रों की ओर से धार्मिक गतिविधियों में दिए गए समय और उनकी शिक्षा पर दिए गए समय के बीच स्पष्ट रूप से नकारात्मक संबंध देखा गया। अध्ययन के सहलेखक डॉ गिजबर्ट स्टोएट ने कहा कि आधुनिक समाजों के लिए विज्ञान व गणित की शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। हमारा शोध बताता है कि एक मजबूत धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से शिक्षा को काफी लाभ हो सकता है। इसके नतीजे डिसप्लेसमेंट हाइपोथिसिस के विचार को समर्थन देते हैं कि जब बच्चे धार्मिक मामले में अपना अधिक समय बिताते हैं, तो वह दूसरी चीजों पर कम ध्यान दे पाते हैं। शून्य से 10 के पैमाने का उपयोग करते हुए शोधकर्ताओं की टीम ने 82 देशों को धार्मिकता स्कोर दिया। इन देशों में सबसे कम धार्मिकता वाले देश चेक रिपब्लिक, जापान, एस्टोनिया, स्वीडन और नॉर्वे के बच्चे इन विषयों में तेज थे तो सबसे अधिक धार्मिक कट्टर देश कतर, इंडोनेशिया, मिश्र, यमन व जॉर्डन के बच्चे सबसे कमजोर। इस सूची में ब्रिटेन का 14 वां स्थान और अमेरिका का 51 वां स्थान है।

## मेरे अनुभव अमृत : सर्व कार्य सम्पादक

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- पायोजी मैंने राम रतन...)

पायोजी मैंने अनुभव अमृत पायो SS पायोजी मैंने अनुभव महामंत्र पायोSS(स्थायी या/ वह अमृत है समतामृत, हर रोग दूर हो जाय SS)

वह महामंत्र है समतामंत्र, हर कार्य सम्पादन हो जाय ॥  
 वह कल्पवृक्ष है समतावृक्ष, हर कल्पना सुफल देय ॥  
 वह कामधेनु है समताधेनु, हर कामना पूर्ण हो जाय ॥  
 वह चिन्तामणि है समतामणि, हर चिन्तन सफल हो जाय ॥  
 वह परमशक्ति है समता शक्ति, हर समस्या समाधान हो जाय ॥  
 वह परम है साम्य चुम्बक, हर सुगुण आकर्षित हो जाय ॥  
 वह सुख है समता सुख, सब सुख समाहित हो जाय ॥  
 वह धर्म है समता धर्म, सब धर्म समाहित हो जाय ॥  
 इस (समता ) हेतु चाहिए, आत्मविश्वासज्ञान चारित्र।  
 क्रोध मान माया लोभ (विवर्जित), अहंकार ममकार रिक्त ॥(1)  
 परनिन्दा अपमान हानि परे, मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ।  
 सम्मान सहयोग आदर स्नेह, दान दया परोपकार युक्त ॥(2)  
 दबाव प्रलोभन वर्चस्व रिक्त, वात्सल्य त्याग सहित।  
 भेदभाव व पक्षपात रिक्त, सर्वजीव हित से सहित ॥(3)  
 भय प्रताड़ना व लब्ध-फन्द रिक्त, सरल-सहजता सहित।  
 कुतर्क पूर्वाग्रह हठाग्रह से रहित, सनम्र सत्याग्रह सहित ॥(4)  
 सौम्य शान्ति व मधुरता युक्त, परगुण प्रशंसा सहित।  
 पर प्रगति हेतु प्रोत्साहन युक्त, पर प्रगति से प्रफुल्लित ॥(5)  
 उदार सहिष्णु क्षमाभाव युक्त, धैर्य संयम सहित।  
 ढोंग-पाखण्ड व आडम्बर रिक्त, पारदर्शी सत्य सहित ॥(6)  
 महान् लक्ष्य व आत्मनिष्ठ युक्त, प्रामाणिक शान्ति सहित।  
 प्रेम संगठन निर्वैर सहित, समन्वय व निस्वार्थ युक्त ॥(7)  
 आत्मविशुद्धि युक्त विश्व कल्याण। (मंगल),सहित जो होते भाव व्यवहार  
 वह ही समतामृत हितमितप्रियवच, सर्व कार्य सम्पादन कर ॥ (8)  
 इसके अतिरिक्त कोई भी अमृत (मंत्र), नहीं परम उपादेय।  
 पढा हूँ ग्रन्थों में पाया हूँ महापुरुषों में, 'कनक' के अनुभव गम्य ॥ (9)

सीपुर - 19.2.2017 रात्रि - 8.43

(यह कविता ब्र. पल्लवि ब्र. संगीता के कारण बनी)

---

**संदर्भ :-**

क्रोध, मान, माया, लोभ को जो जीतता है और सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र से पूर्ण होकर आत्मा में ही संयमित हो जाता है वह संयमी है। अंतरआत्मा में संयमित होने के कारण बाह्य प्रकृति से संयमित होना अनिवार्य है। जब तक बाह्य संयम नहीं होता है तब तक अंतरंग संयम भी नहीं हो सकता है। इसलिये गाथा में पंच समिति पंचेन्द्रियरोध आदि बाह्य संयम का भी प्रतिपादन किया है और तीन गुप्ति, कषाय निग्रह, रत्नत्रय की पूर्णता रूप अंतरंग संयम का भी वर्णन किया है। जो अंतरंग में संयमित होगा वह बहिरंग में भी संयमित होगा। जो अंतरंग-बहिरंग में संयमित होगा वह कर्मों पर विजय प्राप्त करके अरहंत सिद्ध बन जाता है। इसलिये उत्तराध्ययन में कहा है जो आत्मविजयी है वह उभयलोक में सुख प्राप्त करता है और वही विश्व विजयी है। यथा-

**अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पाहु खलु दुहमो।**

**अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।। (5) उत्तराध्ययन पृ. 6**

स्वयं पर विजय प्राप्त करना चाहिए। स्वयं पर विजय प्राप्त करना ही कठिन है। आत्मा विजेता ही इहलोक और परलोक में सुखी होता है।

**वर में अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य।**

**माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य।।**

शिष्य विचार करे- “अच्छा है कि मैं स्वयं ही संयम और तप के द्वारा स्वयं पर विजय प्राप्त करूँ। बंधन और वध के द्वारा दूसरों से मैं दमित प्रताड़ित किया जाऊँ यह अच्छा नहीं है।

महात्मा बुद्ध ने भी संयम को बहुत महत्त्व दिया है और संयमी को ही धर्मधर कहा है। यथा-

**न तावता धम्मधरो यावता बहु भासति।**

**यो च अप्पम्मि सुत्वान धम्मं कायेन पस्सति।**

**स वे धम्मधरोहोति यो धम्मं नप्पमज्जति।। (4) धम्मपद पृ 82**

बहुत बोलने से (कोई) धर्मधर नहीं होता, प्रत्युत जो थोड़ा भी सुनकर धर्म का (नाम) काय से साक्षात् करता है और जो धर्म से प्रमाद नहीं करता वही धर्मधर है।

---

यम्हि सच्चञ्च धम्मो च अहिंसा सञ्चमो दमो।  
स वे वन्तमलो धीरो थेरोति पवुच्चति।।(6)

जिसमें सत्य, धर्म अहिंसा, संयम और दम है वही विगतमल, धीर स्थविर कहा जाता है।

यो च समेति पापानि अणुं थूलानि सब्बसो।  
समितत्ता ही पापनं समणो ति पवुच्चति।। (10)

जो छोटे-बड़े पापों को सर्वथा शमन करने वाला है, पाप को शामिल होने के कारण वह श्रमण कहा जाता है।

योध पुञ्जञ्च पापञ्च बाहित्वा ब्रह्मचरिय वा।  
संखाय लोके चरति स वे भिक्खू ति वुच्चति।।

जो यहाँ पुण्य और पाप को छोड़ ब्रह्मचारी बन ज्ञान के साथ लोक में विचरता है, वह भिक्षु कहा जाता है। नारायण श्री कृष्ण ने भी संयमी को ही प्रज्ञावान्, स्थितप्रज्ञ, स्थिर बुद्धि वाला कहा है। यथा-

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्यार्थ मनोगतान्।  
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।। (55) गीता पृ. 36

पार्थ जब मनुष्य मन में उठती हुई समस्त कामनाओं का त्याग करता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा से संतुष्ट रहता है तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

दुःखेष्वनुद्विगमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।  
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।। (56)

दुःख से जो दुःखी न हो, सुख की इच्छा न रखे और जो राग, भय और क्रोध से रहित हो वह स्थिर बुद्धि मुनि कहलाता है।

य सर्वत्रानभिस्त्रेहस्तत्तत्प्रप्य शुभाशुभम्।  
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। (57)

सर्वत्र रागरहित, होकर जो पुरुष शुभ या अशुभ की प्राप्ति में न हर्षित होता है न शोक करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गनीव सर्वशः।  
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। (58)

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है तैसे जब यह पुरुष इन्द्रियों

---

को उनके विषय में से समेट लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

**विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।**

**रसवर्ज रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।। (59)**

देहधारी निराहारी रहता है तब उसके विषय मंद पड जाते हैं। परंतु रस नहीं जाता। वह रस तो ईश्वर का साक्षात्कार होने से निवृत्त होता है।

**तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।**

**वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। (61)**

इन सब इन्द्रियों को वश में रखकर योगी को मुझमें तन्मय हो रहना चाहिए, क्योंकि अपनी इन्द्रियाँ जिसके वश में है उसकी बुद्धि स्थिर है।

**नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।**

**च चाभावायतः शांतिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।(66)**

जिसे समत्व नहीं, उसे विवेक नहीं, उसके भक्ति नहीं और जिसे भक्ति नहीं उसे शांति नहीं है और जहाँ शांति नहीं, वहाँ सुख कहाँ से हो सकता है?

**इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।**

**तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।। (67)**

विषयों में भटकने वाली इन्द्रियों के पीछे जिसका मन दौडता है, उनका मन वायु जैसे नौका को जल से खींच ले जाता है वैसे ही उसकी बुद्धि को जहाँ चाहे खींच ले जाता है।

**सदा सर्व में साम्यभाव रखने वाला श्रमण है**

**समसत्तुबंधुवग्गो समसुहदुक्खो पसंसणिदसमो।**

**समलोडुकं चणो पुण जीविदमरणे समा समणे।। (241) प्र. सार**

Enemies and the members of the family, happiness and misery, praise and censure, a cold of earth and (A lump of gold, and even life and death are alike to the Sramana).

आगे आगम का ज्ञान, तत्त्वार्थ श्रद्धान, संयमीपना इन तीन विकल्परूप लक्षण से एक साथ युक्त तथा निर्विकल्प आत्मज्ञान से युक्त जो कोई संयमी होता है उसका क्या लक्षण है ऐसा उपदेश करते हैं यहाँ “इति उपदेश करते हैं” इसका यह भाव लेना कि शिष्य के प्रश्न का उत्तर देते हैं इस तरह प्रश्नोत्तर को दिखाने के लिए कहीं-कहीं यथासंभव इतिशब्द का अर्थ लेना योग्य है- (समसत्तुबंधुवग्गो)

---

जो शत्रु व मित्र समुदाय में समान बुद्धि का धारी है, (समसुहदुखो) जो सुख-दुःख में समान भाव रखता है, (पसंसणिंदसमो) जो अपनी प्रशंसा व निंदा से समता भाव करता है, (समलोडकंचणो) जो कंकड और सुवर्ण को समान समझता है, (पुण) तथा (जीविदमरणे समो) जो जीवन तथा मरण को एक सा जानता है, वही (समणो) श्रमण या साधु है।

शत्रु, बंधु, सुख, दुःख, निन्दा, प्रशंसा, लोष्ट, कंचन तथा जीवन-मरण मे समता की भावना में परिणमन करते हुए अपने ही शुद्धात्मा का सम्यक्श्रद्धान, ज्ञान तथा आचरण रूप जो निर्विकल्प समाधि उससे उत्पन्न निर्विकार परम आह्लाद रूप एक लक्षण धारी सुख रूपी अमृत में परिणमन स्वरूप जो परम समता भाव सो ही उस तपस्वी का लक्षण है जो परमागम का ज्ञान, तत्त्वार्थ का श्रद्धान संयमपना इन तीनों को एक साथ रखता हुआ निर्विकल्प आत्मज्ञान में परिणमन कर रहा है ऐसा जानना चाहिए।

संयम सम्यग्दर्शन ज्ञानपूर्वक चारित्र है, चारित्र धर्म है, धर्म साम्य है, साम्य मोह क्षोभ रहित आत्म परिणाम है। इसलिए संयत का साम्य लक्षण है।

वहाँ, (1) शत्रु-बंध वर्ग में, (2) सुख-दुःख में, (3) प्रशंसा-निंदा में, (4) कंकड़ और सोने में, (5) जीवन-मरण में एक ही साथ, (1) यह मेरा पर(शत्रु है), यह स्व (स्वजन है), (2) यह आह्लाद है यह परिताप है, (3) यह मेरा उत्कर्ष बढवारी है यह अपकर्षण घटती है, (4) यह मुझे अंकित्कर है, यह उपकारक है, (5) यह मेरा स्थायित्व है, यह अत्यंत विनाश है, इस प्रकार मोह के अभाव के कारण सर्वत्र जिसके रागद्वेष का द्वैत प्रगट नहीं होता, जो सतत् विशुद्ध दर्शन ज्ञान स्वभाव आत्मा का अनुभव करता है और (इस प्रकार) शत्रु-बंधु, प्रशंसा और निंदा लोष्टकांचन और जीवन-मरण को, निर्विशेषतया ही (बिना अंतर के) ज्ञेयरूप से जानकार ज्ञानात्मक आत्मा में जिसकी परिणति अचलित हुई है, उस पुरुष को वास्तव में जो सर्वतः साम्य है सो साम्य संयत का लक्षण समझना चाहिए उस संयत के आगमज्ञान-तत्त्वार्थश्रद्धान-संयतत्व की युगपत्ता के साथआत्मज्ञान की युगपत्ता है।

**समीक्षा-** यह गाथा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस गाथा में समता की परिभाषा तथा श्रमण की परिभाषा दी गई है। जो समताधारी होगा वह श्रमण होगा, जो श्रमण होगा वह समताधारी होगा। समता जीव का स्व-शुद्ध स्वरूप होने के

कारण यह समता ही चारित्र है, रत्नत्रय है, धर्म है, मोक्षमार्ग है तथा मोक्ष भी है। क्योंकि जीव की साम्यावस्था ही समता है, सामयिक है और वह अवस्था संकल्प-विकल्प, आकर्षण-विकर्षण, मोह-क्षोभ, राग-द्वेष, इन्द्रिय जनित सुख-दुःख से रहित परम समरसी भाव स्वरूप हैं मिथ्यात्व अवस्था में पूर्ण वैभाविक भाव होने के कारण साम्य भाव हो ही नहीं सकता है। भले मंद कषाय के कारण शुभ लेश्या के कारण मिथ्यादृष्टि दिगम्बर मुनि बनकर घोर-उपसर्ग परिषेह को झेलता हो। इससे भले ही वह नौ ग्रैवेयेक में उत्पन्न हो जाए। सम्यग्दर्शन होने पर मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधी के चतुष्क के यथायोग्य उपशम, क्षय, क्षयोपशम से जितने अंश में आत्मा में निर्मलता आती है, संकल्प-विकल्प दूर होता है, राग-द्वेष दूर होता है उतने अंश में समता अवश्य आती है परन्तु यह करणानुयोग की अपेक्षा है परन्तु चरणानुयोग की अपेक्षा चतुर्थ गुणस्थान में चारित्र न होने के कारण वहाँ समता या सामयिक को स्वीकार नहीं किया गया है। पंचम गुणस्थान के शिक्षाव्रत में सामयिक को स्वीकार किया गया है। श्रावक सामयिक में समस्त आरंभ-परिग्रह त्याग करता हुआ यथायोग्य शीत-उष्ण, सुख-दुःख को समता भाव से सहन करता हुआ पंच परमेष्ठी का ध्यान या आत्म भावना करता है। समतभद्र स्वामी ने ऐसे श्रावक को वस्त्रों से वेष्टित मुनि के समान कहा है। यथा-

**एकान्ते सामयिकं निर्व्याक्षेपे वनेषु वास्तुषु च।**

**चैत्यालयेषु वापि च परिचेतव्यं प्रसन्नधिया ॥ (9) पृ. 182, र.श्रा.**

वह सामयिक निर्मल बुद्धि के धारक श्रावक के द्वारा स्त्री, पुरुष तथा नपुंसको से रहित प्रदेश में चित्त में चंचलता उत्पन्न करने वाले कारणों से रहित स्थान में, वनों में मकानों में अथवा मंदिरों में भी बढ़ाने के योग्य है।

**व्यापार वैमनस्याद्विनिर्वृत्यामन्तरात्मविनिवृत्याम्।**

**सामायिकं बधीयादुपवासे चैकभुक्ते वा ॥ (10)**

शारीरादिक की चेष्टा और मन की व्यग्रता अथवा कलुषता से निवृत्ति होने पर मानसिक विकल्पों की विशिष्ट निवृत्तिपूर्वक उपवास के दिन अथवा एकाशन के दिन और अन्य समय भी सामयिक करना चाहिए।

**सामायिकं प्रतिदिवसं यथावदप्यनलसेन चेतव्यं।**

**व्रतपंचकपरिपूरणकारणमवधानयुक्तेन ॥ (11)**

आलस्य से रहित और चित्त की एकाग्रता से युक्त पुष्प के द्वारा हिंसा त्याग

---

आदि पाँच व्रतो की पूर्ति का कारण सामायिक प्रतिदिन भी योग्यता के अनुसार बढ़ाने के योग्य है।

**सामायिके सारम्भाः परिग्रह नैव सन्ति सर्वेऽपि।**

**चेलोपसृष्टमुनिरिव गृही तदा याति यतिभावं।। (12)**

क्योंकि सामायिक के काल में आरंभ सहित सभी परिग्रह नहीं ही है इसलिए इस समय गृहस्थ उपसर्ग के कारण वस्त्र से वेष्टित मुनि के समान मुनिपने को प्राप्त होता है।

**शीतोष्णदंशमशकपरीषहमुपसर्गमपि च मौनधराः।**

**सामायिकं प्रतिपन्ना अधिकुर्वीरत्रचलयोगाः।। (13)**

सामायिक को स्वीकृत करने वाले गृहस्थ स्थिर समाधि अथवा ग्रहित अनुष्ठान को न छोड़ते हुए मौनधारी होकर शीत, उष्ण तथा दंशमशक परिषह को और उपसर्ग को भी सहन करें।

वह सामायिक संपूर्ण मूलगुण और उत्तरगुण को बढ़ाने वाला है, आत्मा को परिशुद्ध करने वाला है, कषायों, संकल्प-विकल्प, तनाव को दूर करने वाला होता है। इसलिए अधिक से अधिक श्रावकों को भी सामायिक करने की प्रेरणा दी है। आधुनिक शोध के अनुसार भी सिद्ध हो गया है कि तनाव से, विषमता से अधिकांश मानसिक रोग होता है। जिससे अधिकांश शारीरिक रोग भी होते हैं। इसलिए तनाव को दूर करने के लिए शारीरिक शिथिलीकरण के साथ मानसिक शिथिलीकरण, पवित्रता, भाव परिस्कार, योग, ध्यान आदि को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे शारीरिक मानसिक रोग होने के साथ-साथ आध्यात्मिक रोग स्वरूप द्रव्य कर्म, भाव कर्म नष्ट हो जाते हैं। जिससे जीव को परम स्वास्थ्य रूप मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है। इसका विशेष वर्णन मैंने मेरी “धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान” में किया है। विशेष जिज्ञासु वहाँ से अवलोकन करें।

श्रावक अवस्था में श्रावक समता का अभ्यास करता-करता जब राग - द्वेष-मोह को अधिक शिथिलीकरण कर लेता है तब वह श्रमण बन जाता है। श्रमण का साम्यभाव ही साम्य है, समता भाव है। जब मुमुक्षु श्रमण बनता है तब समस्त सावद्य का परित्याग स्वरूप सामायिक चारित्र को स्वीकार करता है। जब इसमें स्थिरता नहीं रहती है तब छदोपस्थापना चारित्र या विकल्प स्वरूप 28 मूलगुणों को धारण, पालन करता है। यह सामायिक चारित्र ही बढ़ता-बढ़ता परमयथाख्यात

---

चारित्र रूप में परिणमन करता है।

श्रावक तो तीन संध्या में सामायिक का अभ्यास करता है परन्तु श्रमण सतत सामायिक रूप में रहता है। जो साधु के लिए तीन संध्या में सामायिक का विधान है वह सामायिक को और वृद्धि करने के लिए तथा आत्मा में स्थिरता धारण करने के लिए है। यदि साधु तीन समय में सामायिक करता है और अन्य समय में समता भाव में नहीं रहता है तब वस्तुतः वह साधु श्रमण नहीं है। क्योंकि “समो समणो” या संयतस्य “साम्य लक्षण” अर्थात् साम्य ही श्रमण है तथा संयत का लक्षण साम्य भाव है। कुंदकुंद देव ने नियमसार में कहा भी है-

**संजमणियतवेण दु, धम्मज्झाणेण सुक्कझाणेण।**

**जो झायड अप्पाणं, परमसमाही वे तस्स।। (123) पृ. 343**

संयम, नियम और तप से तथा धर्मध्यान और शुक्लध्यान से जो आत्मा को ध्याता है, उस साधु की परम समाधि होती है।

**किं काहदि वणवासो, कायकिलेसो विचित्र उववासो।**

**अज्झयणमौणपहुदी, समदाररहिस्स समणस्स।। (124)**

वन में निवास, काया को क्लेश, अनेक विविध उपवास तथा अध्ययन, मौन आदि कार्य, समता से रहित श्रमण के लिए क्या करेंगे?

**विरदो सव्वसावज्जे, तिगुत्तो पहिदिदिओ।**

**तस्स सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे। (125)**

जो संपूर्ण सावद्य रोग से विरत, तीन गुप्ति से सहित, और इन्द्रियों को संवृत्त करने वाले है, उनके स्थायी सामायिक है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

**जो समो सव्वभूदेसु, थावरेसु तसेसु वा।**

**तस्य समाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे। 7 (126)**

जो स्थावर और त्रस जीवों के प्रति, समस्वभावी है, उसके सामायिक स्थायी है ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

**जस्स सण्णिहिदो अप्पा, संजमें णियमे तवे।**

**तस्य सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे।। (127)**

जिसकी आत्मा संयम में, नियम में और तप में निकट है उसके सामायिक

---

व्रत स्थायी है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

**जस्स रागो दु दोसो दु, विगडिं ण जणेई दु।**

**तस्स सामाङ्गं ठाई इदि केवलिसासणे।। (128)**

जिनके राग और द्वेष विकृति को उत्पन्न नहीं करते हैं उनके सामायिक व्रत स्थायी है, ऐसा भगवान् केवली के शासन में कहा है।

**जो दु अट्टं च रुद्धं च, झाणं वज्जेदि णिच्चसा।**

**तस्स सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे।। (129)**

जो आर्त तथा रौद्र ध्यान को नित्य ही छोड़ देते हैं, उनके सामायिक स्थायी है। ऐसा भगवान् केवली के शासन में कहा है।

**जो दुहस्सं रई सोगं, अरदिं वज्जेदि णिच्चसा**

**तस्स सामङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे।। (131)**

**जो दुगंछा भयं वेदं, सव्वं वज्जेदि णिच्चसा।**

**तस्स सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे।। (132)**

जो हास्य, रति शोक और अरति को नित्य ही छोड़ देता है, उसके सामायिक स्थायी होता है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है। जो जुगुस्सा, भय और सभी वेद को नित्य ही छोड़ देता है उसके सामायिक व्रत स्थायी है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

**जो दु धम्मं सुक्कं च, झाणं झाएदि णिच्चसा।**

**तस्स सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे।। (133)**

जो साधु धर्म और शुक्ल ध्यान को नित्य ही ध्याता है उसके सामायिक स्थायी होता है, ऐसा भगवान् केवली के शासन में कहा गया है।

जब सम्यक् दर्शन की उपलब्धि हो जाती है तब वस्तु स्वरूप का ज्ञान हो जाता है तथा जब राग-द्वेष क्षीण होता जाता है जब विषमता भी क्षीण होती जाती है। जब अंतरंग में इस प्रकार निर्मल समरसी भाव आ जाता है तब उसका प्रभाव बाह्य जगत् में भी पड़ता है इसलिए वह बाह्य द्रव्यों से प्रभावित नहीं होता है। अतः उसके लिए न कोई शत्रु रहता है और न ही कोई मित्र होता है न कोई अपना रहता है न कोई पराया रहता है। उसके लिए न तो कोई बाह्य लाभ स्वरूप है और न ही कोई बाह्य हानि स्वरूप है। वह तो समस्त विषयों से तटस्थ, प्रज्ञ, औदासीन्य, वीतरागी-वीतद्वेषी, साम्यभावी बन जाता है। जिस प्रकार नदी के तीर में बैठा हुआ

---

व्यक्ति नदी के स्रोत से न बहता है न ही नदी के जलचर हिंस्र पशु उसे क्षति भी पहुँचा सकते हैं। पूज्यपाद स्वामी ने कहा भी है-

**क्षीयन्तेऽत्रैव रागाद्यास्तत्त्वो मां प्रपाश्यतः।**

**बोधात्मानं ततः कश्चिन्न मे शत्रुर्न च प्रियः॥ (25) स.त.पृ. 34**

जब तक यह जीव अपने निजानन्दमयी स्वाभाविक निराकुल रूप सुधामृत का पान नहीं करता तब तक ही वह बाह्य पदार्थों को भ्रम से इष्ट अनिष्ट मानकर उनके संयोग-वियोग के लिए सदा चिंतित रहता है। जो उस संयोग-वियोग के साधक होते हैं उन्हें अपना शत्रु-मित्र मान लेता है, किन्तु जब आत्मा प्रबुद्ध होकर यथार्थ वस्तुस्थिति का अनुभव करने लगता है तब रागद्वेषादिरूप विभाव परिणति मिट जाती है और इसलिए बाह्य सामग्री के साधक-बाधक कारणों में उसके शत्रु-मित्र का भाव नहीं रहता तो उस समय अपने ज्ञानानन्दस्वरूप में मग्न रहना ही सर्वोपरि समझता है।

**मामपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः।**

**मां प्रपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः॥ (26)**

आत्मज्ञानी विचारता है कि शत्रु-मित्र को कल्पना परिचित व्यक्ति में ही होती है अपरिचित व्यक्ति में नहीं। ये संसार के बेचारे अज्ञप्राणी जो मुझे देखते जानते ही नहीं मेरा आत्मस्वरूप जिनके चर्मचक्षुओं के अगोचर हैं वे मेरे विषय में शत्रु-मित्र की कल्पना कैसे कर सकते हैं और जो मेरे स्वरूप को जानते हैं-वे मेरे शुद्धात्म स्वरूप का साक्षात् अनुभव करते हैं वे मेरे शत्रु व मित्र कैसे बन सकते हैं? इस प्रकार अज्ञ व विज्ञ दोनों ही प्रकार के जीव मेरे शत्रु या मित्र नहीं हैं।

**अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यंचेतनं ततः।**

**क्लरुष्यामि तुष्यामि मध्यस्थोऽह भवाम्यतः॥**

अंतरात्मा को अपने अनाद्यन्त अविद्यारूप भ्रान्त संस्कारों पर विजय प्राप्त करने के लिए सदा ही यह विचार करते रहना चाहिए कि जिन पदार्थों का मैं इन्द्रियों के द्वारा देख सकता हूँ वे सब जो जड़ हैं चेतना से रहित हैं उन पर रोष करना व्यर्थ है - वे उसे कुछ समझ नहीं सकते और जो चैतन्य पदार्थ हैं वे दिखाई नहीं पड़ते व मेरे रोषतोष का विषय हो ही नहीं सकते। अतः मुझे किसी से राग-द्वेष न रखकर मध्यस्थ भाव का ही अवलम्बन कर लेना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने भी समता का वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

---

सेलो यथा एकघनो वातेन न समीरति।

एवं निंदापसंसासु न सामिज्जन्ति पण्डिताः॥ (6) धम्मपद पृ 27

जैसे ठोस हवा से नहीं डिगता वैसे ही पंडित निंदा और प्रशंसा से नहीं डिगते।

सब्वत्थ वे सप्पुरिसा चजन्ति न काम कामा लपयन्ति सन्तो।

सुखेन पुट्ठा अथवा दुखेन न अच्चावचं पंडितं दस्सयंति॥ (8)

सत्पुरुष सभी (छंद-राग आदि) को त्याग देते हैं वे काम-भोगों के लिए बात नहीं चलाते। सुख मिले या दुःख विकार नहीं प्रदर्शन करते।

मा पियोह समागच्छि अप्पियेहि कुदाचनं।

पियानं अदस्सनं दुख्खं अप्पिनानंच दस्सनं ॥ (2) पृ. 68

प्रियो का संग न करे और न कभी अप्रियो का, प्रियों को न देखना दुःखद है और अप्रियों का देखना।

वाहितपापोति ब्रह्मणो समचरिया समणोति बुच्चति।

पब्बाजयमत्तनो मलं तस्मा पब्बोजित्तोति वुच्चति॥ (6) पृ. 122

जिसन पाप को धोकर बहा दिया है वह ब्राह्मण है जो समता का आचरण करता है वह श्रमण है, (चूँकि) उसने अपने (चित्त) मलों को हटा दिया इसलिए वह प्रब्रजित कहा जाता है।

समता को हर तीर्थंकर ने अधिक महत्व दिया है। इसलिए तो बीच के 22 तीर्थंकरों ने मात्र सामायिक चारित्र का ही शिष्यों के लिए प्रतिपादन किया था। क्योंकि सामायिक में ही समस्त मूलगुण-उत्तरगुण चारित्र रत्नत्रय, दसलक्षण, धर्म बाईस परिषह जय गर्भित है। इस सामायिक से ही तत्त्व की उपलब्धि, बोधि लाभ, मोक्ष लाभ होता है। इसलिए अमृतचंद्र सूरि ने श्रावकों के लिए भी सामायिक अधिक से अधिक करने के लिए प्रेरित किया है। यथा-

रागद्वेषत्यागाग्निखिलद्रव्येषु साम्यमवलम्ब्य।

तत्त्वोपलब्धिमूल बहुशः सामयिक कार्यं॥ (48) (पु.सि.पृ. 176)

समस्त सोना-चाँदी और तृणादिक तथा शत्रु, मित्र महल, श्मशान आदि द्रव्यों में राग-द्वेष का त्याग कर देने से समताभाव धारण करके तत्त्व प्राप्ति का मूल कारणभूत सामायिक अधिक रूप से करना चाहिए।

सम् उपसर्ग पूर्वक गति (जाना) अर्थ वाली इण धातु से समय बनता है। सम का अर्थ एकीभाव है, अय का अर्थ गमन है, जो एकीभाव रूप से गमन किया जाये उसे समय कहते हैं उसका जो भाव है उसे सामायिक कहते हैं। अर्थात् जो आत्मा को समस्त मन, वचन, काय की इतर वृत्तियों से रोककर निश्चित एक ध्येय की ओर लगा दिया जाता है वही सामायिक कहलाता है।

विपरीत परिस्थिति में, समस्या में, परीक्षा की घड़ी में जो विचलित हो जाता है वह प्रगति नहीं कर सकता है। उसमें दृढ़ता नहीं आ सकती है, अनुभव नहीं कर सकता है, ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता है। जिस प्रकार जो अशुद्ध सुवर्ण को अग्नि से तपाने पर उसकी अशुद्धता निकल जाती है उसी प्रकार जो सुख-दुःख अनुकूल-प्रतिकूल, लाभ-अलाभ रूपी अग्नि से तपता है तब वह शुद्ध हो जाता है परिपक्व हो जाता है। इसलिए विषमता से भयभीत नहीं होना चाहिए, पलायन नहीं करना चाहिए। उस समय अधिक से अधिक समता रखना चाहिए आत्मा का ध्यान रखना चाहिए। कहा भी है-

**अदुःखभावितं ज्ञानं क्षीयते दुःखसन्निधौ।**

**तस्माद्यथाबलं दुःखैरात्मानं भावयेन्मुनिः॥ (102) स.पृ. 112**

जो भेद विज्ञान दुःखों की भावना से रहित है- उपार्जन के लिए कुछ कष्ट उठाए बिना ही सहज सुकुमार उपाय द्वारा बन जाता है वह परिषह उपसर्गादिक दुःखों के उपस्थित होने पर नष्ट हो जाता है। इसलिए अंतर आत्मा योगी को अपनी शक्ति के अनुसार दुःखों के साथ आत्मा की शरीरादि से भिन्न भावना करनी चाहिए।

उत्तराध्ययन में समता का सविस्तार वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

**चत्तरपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्सभिक्खुणो।**

**पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए ॥ (15) पृ 75**

पुत्र और पत्नी और ग्रह व्यापार से मुक्त भिक्षु के लिए न कोई वस्तु प्रिय होती है न कोई अप्रिय-

**पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।**

**सब्भन्तर-बहिरओ तवोकम्मंसि उज्जुओ॥ (88) पृ 198**

पंच महाव्रतों से युक्त, पाँच समितियों से समित, तीन गुप्तियों से गुप्त, आभ्यंतर और बाह्य तप में उद्यत-

---

निम्ममोनिरहंकारोनिस्संगोचत्तगारवो।

समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।। (89)

ममत्वरहित, अहंकार रहित, संगरहित, गौरव का त्यागी, त्रस तथा स्थावर सभी जीवों में समदृष्टि-

लाभालाभेसुहेदुक्खेजीविएमरणेतहा।

समो निन्दा पसंसासु तहा माणावमाणओ ।। (90)

लाभ में, अलाभ में, सुख में, दुःख में, जीवन में, मरण में, निन्दा में, प्रशंसा में और मान अपमान में समत्व का साधक-

**अरिहंत-सिद्ध सम करूँ स्व-विकास**

**दोषी की न निन्दा-गुणी से न घृणा, स्वगुण वृद्धि से विकास**

**आचार्य कनकनन्दी**

(चाल :- 1. मन रे । तू काहे न धीर 2. सायोनारा...)

जिया रे! स्व-उपलब्धियों का (सद्) उपयोग कर SS

दीन-हीन व अंह त्यागकर, सतत विकास तू कर SS (ध्रुव)

तेरा आदर्श तो अरिहंत-सिद्ध, उस रूप बनना है तुम्हारा लक्ष्य SS

उनके अनुसार करो तू भाव, यथायोग्य अनुकरण SS

अन्य सभी संकल्प/विकल्प त्यागSS...जियारे....(1)

अन्य कोई क्या करता क्या जानता, क्या है भाव क्या मानताSS

उनसे तू रहो अप्रभावित सदा, मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ सदाSS

सद्गुण/शिक्षा लहो सदा सर्वदाSS...जियारे ...(2)

अयोग्य की भी तू न करो (है) निन्दा, उनके कारण स्वयं को न मानो ऊँचाSS

योग्य से भी तू न करो है घृणा, उनके कारण स्व को न मानो नीचाSS

दोनों से भी सही ले लो शिक्षाSS...जियारे...(3)

स्वगुणों से ही तू सच्चा-अच्छा बनोगे, परनिन्दा-घृणा से न उच्च बनोगेSS

स्वरेखा को तू सदा बढ़ाता जाओ, स्वदीपक तू सदा जलाता जाओSS

पररेखा-दीप को न मिटाओSS....जियारे.....(4)

पररेखा-दीप को मिटाने हेतु, जो भाव काम होवे वे पतन हेतुSS

स्वविकास-विनाश स्वयं से होते, प्रयत्न करो अतः स्व-विकास हेतुSS

स्वयं में ही निहित तेरे विकास हेतु SS... जियारे...(5)

---

अरिहंत-सिद्ध भी ऐसे ही बने, स्व-विकास से अनन्त गुणी वे बनेऽऽ  
(तो भी) किसी से न करते वे राग द्वेष घृणा, परनिन्दा अपमान व हानी-हिंसाऽऽ  
ऐसा ही 'कनक' बनो तू सदा सर्वथा ऽऽ...जियारे....(6)

**सीपुर- 18.2.2017 मध्याह्न- 11.40**

'अपने अहं को एक तरफ रख दें, ईमानदारी प्रतिक्रिया और आलोचना का आग्रह करें। (किताब 'लक्ष्य' लेखक-ब्रायन ट्रेसी)

**संदर्भ :-** जैसा भावै सो तैसा हो जावै। अविनाशी अनंत अतींद्रिय सुख का निरंतर लाभ आत्मा को शुद्ध अवस्था में होता है। उस अवस्था की प्राप्ति का उपाय यद्यपि साक्षात् शुद्धोपयोग में तन्मय होकर निर्विकल्प समाधि में वर्तन करना है। तथापि परम्परा से उसका उपाय अरंहत और सिद्ध आदि परमेष्ठी उनको नमस्कार करना, पूजन करना, स्तुति करना आदि है।

## **जो अरिहंत के माध्यम से स्वयं को जानता है उसका मोह नाश होता है**

**जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।**

**सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।। (80)**

He, who knows the Arihanta with respect to substantiality, quality, and modification, realizes himself, and his delusion in fact, dwindles into destruction.

शुद्धोपयोग के बिना मोह आदि का नाश नहीं होता है और मोहादि के नाश के बिना शुद्धात्मा का लाभ नहीं होता है, उस ही शुद्धात्मा के लिए अब उपाय बताते हैं।

(जो) जो कोई (अरहंत) अरहंत भगवान् को (दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं) द्रव्यपने, गुणपने, तथा पर्यायपने से (जाणादि) जानता है (सो) वह पुरुष (अप्पाणं जाणदि) अर्हंतके ज्ञान के पीछे अपने आत्मा को जानता है। उस आत्मा ज्ञान के प्रताप से (तस्समोहा) उस पुरुष का दर्शन मोह (खलु लयं जादि) निश्चय क्षय हो जाता है।

इसका विस्तार यह है कि अर्हंत आत्मा के केवल ज्ञान आदि विशेषगुण हैं। अस्तित्व आदि सामान्य गुण हैं परम औदारिक शरीर के आकार जो आत्मा के

प्रदेशों का होना सो व्यंजन पर्याय है। अगुरुलघु गुण द्वारा षट् प्रकार वृद्धि हानि से वर्तन करने वाली अर्थपर्याय है। इस तरह लक्षणधारी गुण और पर्यायों के आधाररूप, अमूर्तिक, असंख्यात प्रदेशी, शुद्ध चैतन्यमई अन्वयरूप अर्थात् नित्यस्वरूप अरहंत द्रव्य है। इस तरह द्रव्य गुण पर्याय स्वरूप अरहंत परमात्मा को पहले जानकर फिर निश्चयन से उसी द्रव्यगुण पर्याय को आगम का सारभूत जो आध्यात्मिक भाषा है उसके द्वारा शुद्ध आत्मा की भावना के सम्मुख होकर अर्थात् विकल्प सहित स्वसंवेदन ज्ञान में परिणमन करते हुए तैसे ही आगम की भाषा से अधःकरण अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण नाम के परिणामविशेषों के बल से जो विशेष भाव दर्शन मोह के अभाव करने में समर्थ है, अपने आत्मा से जोड़ता है। उसके बाद निर्विकल्प स्वरूप की प्राप्ति के लिए जैसे पर्याय रूप से मोती के दाने, गुण रूप से सफेदी आदि अभेद नय से एक हार रूप ही मालूम होते हैं तैसे ही पूर्व में कहे हुए द्रव्यगुण पर्याय अभेद-नय से आत्मा ही है, इस तरह भावना करते करते दर्शन मोह का अन्धकार नष्ट हो जाता है।

जो वास्तव में अरहंत को द्रव्य रूप से गुण रूप से और पर्याय रूप से जानता है वह वास्तव में अपने आत्मा को जानता है क्योंकि दोनों (अरहंत और अपनी आत्मा) में निश्चय से अन्तर नहीं है। अरहंत का रूप भी अंतिम ताप को प्राप्त सोने के स्वरूप की भांति परिस्पष्ट (शुद्ध) आत्मा का रूप ही हैं, इसके कारण से उनका (अरहंत का) ज्ञान होने पर सर्व आत्मा का ज्ञान होता है। वहाँ (अरहंत में) अन्वय रूप द्रव्य है, अन्वय का विशेषगुण है, और अन्वय के व्यतिरेक (भिन्न-भिन्न, क्रम से होने वाली) पर्यायें हैं। वहाँ सर्वतः विशुद्ध भगवान् अरहन्त में (जीव) तीनों प्रकार युक्त समय को भी (द्रव्य गुण पर्याय मय निज आत्मा को भी) अपने मन से देख लेता है। जो यह चेतन है, यह अन्वय है, वह द्रव्य है, जो अन्वय के आश्रय रहने वाला चैतन्य है, यह विशेषण है, वह गुण है, और जो एक समय मात्र मर्यादित काल परिमाण के कारण से परम्पर भिन्न-भिन्न अन्वय के व्यतिरेक हैं वे पर्यायें हैं- जो कि चिद्विवर्तन की (आत्मा के परिणमन की) ग्रन्थियाँ (गांठें) हैं। इस प्रकार अरहंत के द्रव्य गुण पर्याय का स्वरूप है।

अब (1) इस प्रकार त्रैकालिक को भी (त्तिकाल इसी स्वभाव को धारण करने वाली अपनी आत्मा को भी) एक काल में समझ लेने वाले, (2) झूलते हुए हार में मोतियों की तरह (जैसे मोतियों को झूलते हुए हार में अन्तर्गत माना जाता है

उसी प्रकार चिद्विवर्तो को (चैतन्य पर्यायों को)चेतन में ही अन्तर्गत करके तथा विशेषण विशेष्यता की वासना का अन्तर्धान होने से, हार में सफेदी की तरह(जैसे सफेदी की तरह हार में अन्तर्हित किया जाता है, उसी प्रकार) (जैसे मोती व सफेदी आदि के विकल्प को छोड़कर मात्र हार को जानता है, उसी प्रकार) केवल आत्मा को जानने वाले, (3) उसके उत्तर क्षण में कर्ता-कर्म-क्रिया का विभाग नाश को प्राप्त हो जाने से निष्क्रिय चिन्मात्र भाव को प्राप्त होने वाले, (4) उत्तम मणि की भांति अकम्परूप से प्रवर्त रहा है निर्मल प्रकाश जिसका, ऐस उस जीव के अवश्य ही निराश्रयता के कारण से मोहांधकार नष्ट हो जाता है । यदि ऐसा है तो मेरे द्वारा मोह की सेना को जीनते के लिये उपाय प्राप्त कर लिया गया

**समीक्षा** - जीव एक द्रव्य है। जीव द्रव्य होने के कारण उसमें गुण भी है और पर्याय भी है। शुद्ध जीव का स्वरूप एक समान होते हुए भी संसारी जीव की अवस्थायें कर्म सापेक्ष होने से विभिन्न प्रकार की हैं। गुणस्थान की अपेक्षा मध्यम प्रतिपत्ति से इसके 14 भेद हैं। संक्षिप्त रूप से अन्य प्रकार से देखने पर इसके 3 भेद भी है यथा-

**बहिरन्तः परश्चेति त्रिधात्मा सर्वदेहिषु।**

**उपेयात्तत्र परमं मध्योपायाद् बहिस्त्यजेत् ॥ (14) समाधि, त. पृ. 9**

सर्वप्राणियों में बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा इस तरह तीन प्रकार है। परमात्मा के उन तीन भेदों में से अन्तरात्मा के उपाय द्वारा परमात्मा को अंगीकार करें अपनावे और बहिरात्मा को छोड़े।

छहढाला मे भी कहा है-

बहिरातम अन्तरआतम परमातम जीव त्रिधा है।  
 देह जीव को एक गिनै बहिरातम तत्त्व मुधा है॥  
 उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तरआतमज्ञानी।  
 द्विविध संग बिन शुध-उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी॥  
 मध्यम अन्तर आतम हैं, जे, देशव्रती अनगारी।  
 जघन कहे अविरत समदृष्टि तीनो शिवमगचारी॥  
 सकल निकल परमातम द्वैविध, तिन में घाति निवारी।  
 श्री अरिहन्त सकल परमातम, लोकालोक-निहारी॥  
 ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महन्ता।

---

ते हैं किनल अमल परमात्म, भोगै शर्म अनन्ता।।  
बहिरात्मता हेय जानि तजि, अन्तर आत्म हूजै।  
परमात्म को ध्याय निरन्तर, जयो नित आनंद पूजै।।

अरिहंत भगवान् भी चैतन्य द्रव्य है उनके अनंत ज्ञानादि अनंत गुण हैं एवं 13वें गुणस्थानवर्ती शुद्धावस्थारूप पर्याय भी है। जो व्यक्ति अरिहंत भगवान् को द्रव्यदृष्टि, गुणदृष्टि एवं पर्यायदृष्टि से अवलोकन करते हुए स्वयं के स्वरूप का अवलोकन करता है वह स्व स्वरूप को भी जान लेता है। इसीलिए आर्चाय स्वामी पूज्यपाद न कहा है-

**‘श्री मुखावलोकन देव श्री मुखावलोकन भवेत्’**

अर्थात् जो भगवान् के श्री मुख का दर्शन करता है वह श्री अर्थात् मोक्ष लक्ष्मी का दर्शन करता है। इसलिए जिन दर्शन निज दर्शन है।

भक्त जब भगवान् के पास जाता है तब भगवान् के स्वरूप दर्पण से अपने स्वरूप का दर्शन करता है। जब वह दिव्य दृष्टि से स्वयं को एवं भगवान् को देखता है तब दोनों में कोई अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता है क्योंकि पूज्य भी जीव द्रव्य है तथा पूजक भी जीव द्रव्य है। गुण दृष्टि से भी कोई विशेष अन्तर परिलक्षित नहीं होता है किन्तु जब पर्याय दृष्टि से अवलोकन करता है तब दोनों में महान् अन्तर परिलक्षित होता है क्योंकि भगवान् पर्याय दृष्टि से अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुखवीर्य के अक्षय भण्डार हैं एवं पूजक स्वयं अनन्त अज्ञान, दुःखादि को भोगने वाला है। अंग्रेजी में एक नीति वाक्य है-

**There is no difference between God and us.**

**But there is so difference between God and us.**

अर्थात् दिव्य दृष्टि से भगवान् और हमारे में कोई अन्तर नहीं है किन्तु अवस्था दृष्टि (पर्याय दृष्टि) से भगवान् और हमारे में महान् अन्तर है। भक्त भगवान् के पास एक आलौकिक उपादेय प्रशस्त स्वार्थ को लेकर जाता है। उसका स्वार्थ यह है कि मेरा स्वरूप भगवान् स्वरूप होते हुए भी मैं अभी दीन-हीन भिखारी के समान हूँ। मैं भगवान् के पास से उनमें वहीं शिक्षा प्राप्त करूँ जिस मार्ग पर चलते हुए भगवान् ने इस परमात्कृष्ट नित्यानन्द अवस्था को प्राप्त किया है। इसीलिए भक्त की आद्यन्त भावना एवं परिणति निम्न प्रकार की होती है-

**दसोऽहं रटता प्रभो। आया जब तुम पास।**

---

‘द’ दर्शत हट गयो, सोऽहं रहो प्रकाश।।  
सोऽहं सोऽहं ध्यावतो रह न सको सकार।  
दीप ‘अहं’ मय हो गयो अविनाशी अविकार।।

जब भक्त भगवान् के पास आता है तब वह स्वयं को दास (पूजक) एवं भगवान् को प्रभु (पूज्य) मानता है। जब भगवान् का दर्शन करके भगवान् का स्वरूप एवं स्वस्वरूप का तुलनात्मक विश्लेषण करता है तदनन्तर जब वह पूज्य के गुणों को अनुकरण करके आध्यात्मिक साधना करता है तो उस साधना के फलस्वरूप निर्विकल्प अवस्था को प्राप्त कर लेता है। यही पूजा का परमोत्कृष्ट फल है। आचार्य प्रवर उमास्वामी ने कहा है- ‘वंदे तद्गुण लब्ध्ये’ अर्थात् मैं वीतराग, सर्वज्ञ, हितोपदेशी भगवान् को उनके गुणों की प्राप्ति के लिए वन्दना करता हूँ।

वीरसेन स्वामी ने कहा है कि जो अरहंत की प्रतिमा के भी दर्शन करता है उनका मोहनीय कर्म क्षय होता है जिससे जिनबिंब दर्शन से सम्यग्दर्शन की उपलब्धि कहा है। जैसे - अंकुर की मूल पर्याय बीज है और भविष्यत् पर्याय वृक्ष है। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि की भूत पर्याय मिथ्यात्वावस्था है और भविष्यत् पर्याय भगवान् अवस्था है। भव्यभावी भगवान् है तो भगवान् भूत भव्य है जैसे- बालक भावी प्रौढ़ मानव है और प्रौढ़ मानव भूत बालक है। इसलिए जो आत्मा है वही परमात्मा है। समाधितंत्र में पूज्यपाद स्वामी ने कहा भी है-

**यः परमात्मा स एवाहं याऽहं स परमस्ततः।**

**अहमेव मयापास्यो नान्यः कश्चिदिति स्थितिः।। (31) पृ. 49**

अन्तरात्मा विचारता है कि जो परमशुद्ध परमात्मा है वह ही मैं हूँ तथा जो मैं हूँ वह परमात्मा है, इसके कारण मेरे द्वारा मुझसे मैं ही उपासना ध्यान करने योग्य हूँ, कोई अन्य पदार्थ उपासना करने योग्य नहीं है ऐसी परिस्थिति -व्यवस्था है।

**भिन्नात्मानमुपास्यात्मा परो भवति तादृशः।**

**वत्तिर्दीपं यथापास्य भिन्ना भवति तादृशी।। (97)**

अपने आत्मा से भिन्न अरहंत, सिद्ध भगवान् की उपासना अराधना करके आत्मा उनके समान परमात्मा बन जाता है। जैसे- दीपक से भिन्न बत्ती दीपक की उपासना करके यानी साथ रहकर दीपक के समान प्रकाशमान बन जाती हैं।

---

उपास्यात्मानमेवात्मा जायते परमाऽथवा।

मथित्वात्मानमात्ममैव जायतेऽग्रिर्यथा तरुः॥ (98)

अथवा अपना आत्मा अपने आत्मस्वरूप को ही आराधना-चिन्तन करके परमात्मा हो जाता है जैसे अपने आप को ही रगडकर बांस का पेड़ स्वयं ही अग्नि हो जाता है।

जेहउ णिम्मलु णाणमउ सिद्धिहिं णिवसइ देउ।

तेहउ णिवसइ बंभु परू देहहं मं करि भेउ॥ (26) प.प्र.पृ. 30 अ. 1

जैसा केवलज्ञानादि प्रगट स्वरूप कार्यसमयसार उपाधि रहित भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्मरूप मल से रहित केवल ज्ञानादि अनंत गुणरूप सिद्धपरमेष्ठी देवधिदेव परम परमात्मा, उत्कृष्ट शुद्ध द्रव्यार्थिक नयकर शक्तिरूप परमात्मा शरीर में तिष्ठता है, इसलिए- हे प्रभाकर भट्ट, तू सिद्ध भगवान् में और अपने में भेद मत कर।

जं दिट्ठं तुट्ठंति लहु कम्मइं पुव्व कियाइं ।

सो परू जाणाहि जोइया देहि वसंतु ण काइं॥ (27)

जिस आत्मा को सदा आनंद रूप वीतराग निर्विकल्प समाधिस्वरूप निर्मल नेत्रों का देखने से शीघ्र ही निर्वाण हो रोकने वाले पूर्व जीवोपार्जित कर्म चूर्ण हो जाते हैं अर्थात् सम्यग्ज्ञान के अभाव से जो पहले शुभ अशुभ कर्म कमाये थे वे निजस्वरूप के देखने से ही नाश हो जाते हैं, उस सदानन्दरूप परमात्मा को देह में बसते हुए भी हे योगी। तू क्यों नहीं जानता।

देंहादेवलि जो वसइ देउ अणाइ-अणंतु।

केवल-णाण-फुरंत-तणु लो परमणु णिभंतु॥ (33)

जो व्यवहारनयकर देवालय में बसता है, निश्चयनयकर देह से भिन्न है, देह की तरह मूर्तिक तथा अशुचिमय नहीं है, महापवित्र है, आराधने योग्य है, पूज्य है, देह आराधने योग्य नहीं है, जो परमात्मा आप शुद्ध द्रव्यार्थिकनयकर अनादि आदि अनंत है, तथा देह आदि अंतकर सहित है, जो आत्मा निश्चयनयकर लोक अलोक को प्रकाशने वाले केवल ज्ञान स्वरूप है, अर्थात् केवल ज्ञान ही प्रकाशरूप शरीर है और देह जड़ है, वही परमात्मा निःसंदेह है, उसमें कुछ संशय नहीं समझना।

बुज्झंतहं परमत्थु जिय गुरु लहु अत्थि ण कोई।

जीवा सयल वि बंभु परू जेण वियाणइ सोइ॥ 94 अ.2पृ. 213

---

है जीव, परमार्थ को समझने वालों के कोई जीव बड़ा छोटा नहीं है, सभी जीव परमब्रह्म स्वरूप है, क्योंकि निश्चयनय से वह सम्यग्दृष्टि एक भी जीव सबको जानता है।

**जो भक्तउ-रयण-त्तयह तसु मुणि लक्खणु एउ।**

**अच्छउ कहिँ वि कुडिल्लियइ सो तसु करइ ण भेउ।। (95)**

जो मुनि रत्नत्रय की आराधना करने वाला है, उसके यह लक्षण जानना कि किसी शरीर में जीव रहे, वह ज्ञानी उस जीव का भेद नहीं करता अर्थात् देह के भेद से गुरुता लघुता का भेद करता है, परन्तु ज्ञान दृष्टि से सबको समान देखता है।

**जीवहँ तिहुयण संठियहँ मूढा भेउ करंति।**

**केवल-णाणिं णाणि फुडु सयलु वि एक्कु मुणंति।। (96)**

तीन भुवन में रहने वाले जीवों का मूर्ख ही भेद करते हैं, और ज्ञानी जीव केवल ज्ञान से प्रकट सब जीवों को समान जानते हैं।

**जीवा सयल वि णाण-मय जम्मण-मरण विमुक्क।**

**जीव-पएसहिँ सयल सम सयल वि सगुणहिँ एक्क।। (97)**

सभी जीव ज्ञानमयी है, और अपने-अपने प्रदेशों से सब समान हैं, सब जीव अपने केवल ज्ञानादि गुणों से समान हैं।

**जीवहँ लक्खणु जिणवरहि भासिउ दंसण-णाणु।**

**तेपा ण किज्जई भेउ तहँ जइ जड मणि जाउ विहाणु।। (98)**

जीवों का लक्षण जिनेन्द्रदेव ने दर्शन और ज्ञान कहा है, इसीलिए उन जीवों में भेद मत कर, अगर तेरे मन में ज्ञानरूपी सूर्य का उदय हो गया है, अर्थात् हे शिष्य! तू सबको समान जान।

**बंभहँ भुवणि बसंताहँ जे णवि भेउ करंति।**

**ते परमण्य-पयासयर जोइय विमलु मुणंति।। (99)**

इस लोक में रहने वाले जीवों का भेद नहीं करते हैं, वे परमात्मा के प्रकाश करने वाले योगी, अपने निर्मल आत्मा को जानते हैं।

**देह-विभेयहँ जो कुणइ जीवइँ भेउ विचित्तु।**

**सो णवि लक्खणु मुणइ तहँ दंसणु णाणु चरित्तु।। (102)**

जो शरीरों के भेद से जीवों का नानारूप भेद करता है, वह उन जीवों का दर्शन

---

ज्ञान चरित्र लक्षण नहीं जानता, अर्थात् उसको गुणों की परीक्षा पहचान नहीं है।

जेण सरूविं झाइयइ अप्पा एहु अणंतु।

तेण सरूविं परिणवइ जह-पलिहउ-मणि मंतु॥ (173)

यह प्रत्यक्षरूप अविनाशी आत्मा जिस स्वरूप से ध्याया जाता है, उसी स्वरूप परिणमता है, जैसे एक स्फटिक मणि और गरूड़ी मंत्र है।

एहु जु अप्पा सा परमप्पा कम्म-विसेसँ जायउ जप्पा।

जामइँ जाणइ अप्पे अप्पा तामइँ सो जि देउ परमप्पा॥ (174)

यह प्रत्यक्षीभूत स्वसंवेदन ज्ञान कर प्रत्यक्ष जो आत्मा वही शुद्धनिश्चयनकर अनंत चतुष्टस्वरूप क्षुधादि अठारह दोष रहित निर्दोष परमात्मा है, वह व्यवहारनयनकर आदि कर्मबंध के विशेष से पराधीन हुआ दूसरे का जाप करता है, परन्तु जिस समय वीतराग निर्विकल्प स्वसंवेदन ज्ञान कर अपने को जानता है, उस समय यह आत्मा ही परमात्मा देव है।

जो परमप्पा णाणमउ सो हउँ देउ अणंतु।

जो हउँ सो परम्पु परू एहउ भावि णिभंतु॥ (175)

जो परमात्मा ज्ञानस्वरूप है, वह मैं ही हूँ, जो कि अविनाशी देवस्वरूप हूँ जो मैं वही उत्कृष्ट परमात्मा है। निस्सन्देह तू भावना कर।

जो जिणु सो अप्पा मुणहु इहु सिद्धंतहँ सारू।

इउ जाणेविण जोइयहो छंडहु मायाचारू॥ (21) पृ. 363 योगसार

जो जिन भगवान् है वही आत्मा है-यहीं सिद्धान्त का सार समझो, इसे समझकर हे योगीजनो! मायाचार को छोड़ो।

जो परम्प्या सो जि हउँ जा हउँ सो पमप्पु।

इउ जाणेविणु जोइया अणु म करहु वियप्पु॥ (22)

जो परमात्मा है वही मैं हूँ तथा जो मैं हूँ वही परमात्मा है, यह समझकर हे योगिन! अन्य कुछ भी विकल्प मत करो।

जो तइलायहँ झेउ जिणु अप्पा णिरू वुत्तु।

णिच्छय-णइँ एमइ भणिउ एहउ जाणि विभंतु ॥ (28)

जो तीन लोको के ध्येय भगवान् हैं, निश्चय से उन्हें ही आत्मा कहा है- यह कथन निश्चयनय से है। इसमें भ्रान्ति न करनी चाहिए।

---

जं वडमज्झहं बीउ फुडु बीयहं वडु वि हु जाणु।  
तं देहहं देउ वि मुणहि, जो तइलोय पहाणु।। (74)

जैसे बड़ के वृक्ष में बीज स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, वैसे ही बीज में भी बड़ वृक्ष रहता है। इसी तरह देह में भी उसे देव को विराजमान समझो, जो तीनों लोकों में मुख्य है।

जो जिण सो हउं सो जि हउं एहए भाउ णिभंतु।  
मोक्खहं कारण जोइया अण्णु ण तंतु ण मंतु।। (75)

जो जिनदेव है वह मैं हूँ-इसकी भ्रान्ति रहित होकर भावना कर। हे योगिन! मोक्ष का कारण कोई अन्य मंत्र तंत्र नहीं है।

**प्रसिद्धि हेतु न करूँ साधना: सिद्धि हेतु साधना करूँ**  
**(स्व-गुण प्रशंसा से गुणों में वृद्धि करूँ)**

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- छोटी-छोटी गैया...)

साधना से ही सिद्धि मिलती, बिना साधना न मिलती सिद्धि।  
सिद्धि हेतु ही मैं साधना करूँ, प्रसिद्धि हेतु न साधना करूँ।।  
वृक्ष होने से (स्वतः) होती है छाया, वृक्ष अनुकूल आनुसंगिक छाया।  
साधना-अनुकूल मिलती सिद्धि, सिद्धि आनुसंगिक मिले प्रसिद्धि।।(1)  
यह तो होना सहज स्वभाव, कार्यकारण व निमित्त उपादान।  
इससे न होती सिद्धि में बाधा, प्रसिद्धि की इच्छा सिद्धि में बाधा।।  
साधना (व) साधक के जो होते भक्त, वे तो अवश्य होते प्रभावित।  
भक्ति से करते पूजा व प्रशंसा, वन्दे तद्गुणलब्धये की अभिलाषा।।(2)  
इससे उनके बढ़ते हैं गुण, पाप की निर्जरा व (होता) पुण्य बंधन।  
आध्यात्मिक गुणों का होता विकास, परम्परा से मिलते स्वर्ग व मोक्ष ।।  
गुण-गुणी प्रशंसा ही यर्थाथ पूजा, आरती पूजा व गुणकीर्तन वंदना।  
स्तुति भजन व महामंडल विधान, इस हेतु ही तीर्थयात्रा मंदिर निर्माण।।(3)  
ये सब तो भक्त-शिष्यों का काम, मेरा तो काम केवल ध्यान-अध्ययन।  
समता-शांति व निस्पृहता मौन, वीतरागता की साधना व आत्मा में लीन।।

(यथा) अरिहंत सिद्ध की होती प्रसिद्धि, पूजा-आराधना वदना-स्तुति।  
 इससे उन्हें न लगते हैं दोष, भक्त-पूजकों को मिले लाभ-विशेष॥(4)  
 तथाहि मैं ख्याति पूजा लाभ से रिक्त, स्व-आत्मसाधना में रहूँ सतत।  
 कोई करे प्रशंसा तो न बनूँ आसक्त, शिक्षा व प्रेरणा से बनूँ विरक्त॥  
 जिस गुणों की मेरी होती प्रशंसा, उसे बढ़ाने की करूँ साधना।  
 न करूँ अहंकार ममकार ईर्ष्या, कुगुणी तक की भी न करूँ निंदा॥(5)  
 स्व आध्यात्मिक विकास हेतु साधना, इस हेतु आत्मिक गुणों की करूँ आराधना।  
 ध्यान अध्ययन व (करूँ) स्मरण-कथन, लेखन प्रवचन व अनुसन्धान॥  
 यह तो मेरी आध्यात्मिक साधना, अज्ञानी मोही न जाने इसकी महिमा।  
 इसे तो वे अहंकारपूर्ण मानते, स्व-अहंकार-ममकार को नहीं जानते॥ (6)  
 तन-मन- इंद्रियो को 'मैं' मानते, धन-जन-मान का मेरा मानते।  
 बगुला व गोमुख व्याघ्र सम वे होते, मद्यपी के समान विभ्रम होते॥  
 उनसे रखूँ मैं माध्यस्थभाव, पर चिन्ता होता अधमाधमा भाव।  
 आत्मचिन्तन होता है उत्तम भाव, 'कनक' का लक्ष्य स्व-आत्मस्वभाव॥ (7)

सीपुर- 17.2.2017 रात्रि- 8. 52

संदर्भ -

अधीत्य सकलं श्रुतं चिरमुपास्य घोरं तपो।  
 यदीच्छसि फलं तयोरिह हि लाभपूजादिकम्॥

समस्त आगम का अभ्यास और चिरकाल तक घोर तपश्चरण करके भी यदि उन दोनों का फल तू यहां सम्पत्ति आदि का लाभ और प्रतिष्ठा आदि चाहता है तो समझना चाहिये कि तू विवेकहीन होकर उस उत्कृष्ट तपरूप वृक्ष के फूलों को ही नष्ट करता है। फिर ऐसी अवस्था में तू उसके सुन्दर व सुस्वादु पके हुए रसीले फल को कैसे प्राप्त कर सकेगा? नहीं कर सकेगा॥ विशेषार्थ- जिस प्रकार कोई मनुष्य वृक्ष को लगाता है जलसिंचन आदि से उसे बढ़ाता है, और आपत्तियों से उसका रक्षण भी करता है। परन्तु समयानुसार जब उसमें फूल आते हैं तब वह उन्हें तोड़ लेता है और इसी में संतोष का अनुभव करता है। इस प्रकार वह मनुष्य भविष्य में आने वाले उसके फलों से वंचित ही रहता है। कारण यह कि फलों की उत्पत्ति के कारण तो वे फूल ही थे जिन्हें कि उसने तोड़कर नष्ट कर दिया है। ठीक इसी प्रकार से जो प्राणी आगम का अभ्यास करता है और घोर तपश्चरण भी करता

है परन्तु यदि वह उनके फलस्वरूप प्राप्त हुई ऋद्धियों एवं पूजा-प्रतिष्ठा आदि में ही सन्तुष्ट हो जाता है तो उसको उस तप का जो यथार्थ फल स्वर्ग-मोक्ष का लाभ था वह कदापि नहीं प्राप्त हो सकता है। अतएव तपरूप वृक्ष के रक्षण एवं संवर्धन का परिश्रम उसका व्यर्थ हो जाता है। अभिप्राय यह हुआ कि यदि तप से ऋद्धि आदि को प्राप्ति रूप लौकिक लाभ होता है तो इससे साधु को न तो उसमें अनुरक्त होना चाहिये और न किसी प्रकार का अभिमान भी करना चाहिये। इस प्रकार से उसे उसके वास्तविक फलस्वरूप उत्तम मोक्ष सुख की प्राप्ति अवश्य होगी ॥189॥ है भव्यजीव! तू लोकपंक्ति के बिना अर्थात् प्रतिष्ठा आदि की अपेक्षा न करके निष्कपट रूप से यहाँ इस प्रकार से निरन्तर शास्त्र का अध्ययन कर तथा प्रसिद्ध कायक्लेशादि तपों के द्वारा शरीर को भी इस प्रकार से सुखा कि जिससे तू दुर्जय कषाय एवं विषयरूप शत्रुओं को जीत सके। कारण कि मुनिजन राग-द्वेषादिकी शान्ति को ही तप और शास्त्राभ्यास का फल बतलाते हैं। विशेषार्थ - अभिप्राय इतना ही है कि प्राप्त हुए विशिष्ट आगमज्ञान एवं तपके निमित्त से किसी प्रकार के अभिमान आदि को न प्राप्त होकर जो राग-द्वेष एवं विषयवांछा आदि परमार्थ सुख की प्राप्ति में बाधक हैं उन्हें ही नष्ट करना चाहिये। यही उस आगमज्ञान एवं तपका फल है ॥ 190॥ हे भव्य! तू विषयी जनको देखकर स्वयं विषय की अभिलाषा को क्यों प्राप्त होता है? कारण कि थोड़ी सी भी वह विषयाभिलाषा तेरे अधिक अनर्थ (अहित) को उत्पन्न करती है। ठीक ही है- जिस प्रकार कि तेल आदि स्निग्ध पदार्थों का सेवन करने वाले रोगी मनुष्य के लिये दोष जनक होने से उनका सेवन करना निषिद्ध नहीं है उस प्रकार वह दूसरे के लिये नहीं है। विशेषार्थ जो विषयों से विरक्त होकर तप में प्रवृत्त हुआ है वह यदि स्त्रीजन आदि को देखकर फिर से विषय की इच्छा करता है तो इससे उनका बहुत अधिक अहित होने वाला है। जैसे कि कोई रोगी यदि तेल-घी आदि अपथ्य वस्तुओं का सेवना करता है तो इससे उसका रोग अधिक ही बढ़ता है और तब वह इससे भी अधिक कष्ट में पड़ता है परन्तु जो स्वस्थ है उसके लिये उन घी-तेल आदि पदार्थों का सेवन निषिद्ध नहीं है। कारण कि वह उनको पचा सकता है। इसी प्रकार यदि कोई गृहस्थ स्त्री आदि को देखकर विषयसुख की इच्छा करता है तो इससे उसका कुछ विशेष अहित होने वाला नहीं है। कारण यह कि वह गृहस्थ अवस्था में स्थित है अभी वह उनका परित्याग नहीं कर सका है। परन्तु जो साधु अवस्था में स्थित है और जो उनका परित्याग कर चुका है वह यदि फिर से उनमें

अनुरक्त होता है तो यह उसके लिये लज्जाजनक तो है ही, साथ ही इससे उसकी परलोक में भी बहुत अधिक हानि होने वाली है ॥ 191॥ अहितकारक विषयों में अनुराग करने वाला यह अज्ञानी मनुष्य भी यदि एक बार भी दुराचरण को सुनता है तो अतिशय प्यारी स्त्री को भी शीघ्र छोड़ देता है। फिर हे भव्य! तू विद्वान एवं आत्महित में लीन हो करके प्रत्यक्ष में अनेक भवों में विषयों के दोष को देखता हुआ भी उन विषयों रूप विषमिश्रित ग्रास का बार-बार कैसे सेवन करता है? ॥ विशेषार्थ- जो मनुष्य हिताहित के विवेक से रहित होकर विषयों में अनुरक्त रहता है वह भी यदि कभी अपनी प्यारी स्त्री के विषय में कुछ दुराचरण आदि को सुनता है तो उस स्त्री का परित्याग कर देता है। परन्तु आश्चर्य है कि जो विद्वान आत्महित में तत्पर है तथा जिसने एक भव में ही नहीं, बल्कि अनेक भावों में विषयों से उत्पन्न होने वाले दोषों का प्रत्यक्ष में अनुभव भी कर लिया है, वह विष के समान अनिष्ट उन विषयों को नहीं छोड़ता है। इससे अधिक लज्जा की बात भला और क्या हो सकती है ॥ 192॥ हे आत्मन! तू आत्मस्वरूप को नष्ट करने वाले अपने आचरणों के द्वारा चिर काल से दुरात्मा अर्थात् बहिरात्मा रहा है अब तू आत्म का हित करने वाले ऐसे अपने समस्त आचरणों को अपनाकर उनके द्वारा उत्तम आत्मा अर्थात् अन्तरात्मा हो जा। इससे तू अपने आपके द्वार प्राप्त करने योग्य परमात्मा अवस्था को प्राप्त हो करके केवलज्ञानस्वरूप से संयुक्त, विषयादि की अपेक्षा न करके केवल अपनी आत्मा के आश्रय से ही उत्पन्न हुए आत्मीक सुख का अनुभव करनेवाला और अपनी आत्माद्वारा प्राप्त किये गये निज स्वरूप से सुशोभित होकर सुखी हो सकता है ॥ विशेषार्थ - अभिप्राय यह है कि यह प्राणी अनादि काल से बहिरात्मा-आत्म अनात्मके विवेक से रहित रहा है। इसीलिये उस समय उसका समस्त आचरण आत्मस्वरूप का घातक - हेय-उपादेय के विचार से रहित होकर राग-द्वेषादि से परिपूर्ण रहा है। जब इसको सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाता है तब उसके आत्म पर विवेक उत्पन्न हो जाता है। इसलिये उसके आचरण में भी परिवर्तन हो जाता है। तब वह ऐसी ही क्रियाओं को करता है जिनसे कि आत्मा का हित होने वाला है। यद्यपि चारित्रमोहनीय का उदय विद्यमान रहने से वह जब तब विषयोपभोगम में भी प्रवृत्त होता है, फिर भी वह उसे हेय ही समझता है-उपादेय नहीं समझता और न आसक्ति के साथ भी वह उन विषयों में प्रवृत्त होता है। तब उसकी अन्तरात्मा संज्ञा हो जाती है। यही अन्तरात्मा जब संसार के कारणभूत विषयों से पूर्णतया विरक्त होकर तप संयम को स्वीकार करता है तब

वह उनके द्वारा संवर और निर्जरा को प्राप्त होता हुआ चार घातिया कर्मों का क्षय करके आर्हन्त्य अवस्था का प्राप्त करता है। उस समय वह सकल परमात्मा कहा जाता है। तत्पश्चात् वह शेष चार घातिया कर्मों को भी नष्ट करके निकल परमात्मा (सिद्ध) हो जाता है। इस समय जो निराकुल सुख उसे प्राप्त होता है वह आत्मा के द्वारा आत्मा में ही उत्पन्न किया गया आत्मीक सुख है जो शाश्वतिक (अविनश्वर) है। इस प्रकार यहां यह उपदेश दिया गया है कि हे आत्मन्। तू अनादि काल से बहिरात्मा (मिथ्यादृष्टि) रहा है। उस समय तू न्याय-अन्याय का विचार न करके जो मनमाना आचरण किया है उसके कारण अनेक दुःखों को सहा है। इसलिये अब तू सम्यग्दर्शन को प्राप्त करके अन्तरात्मा बन जा और जो व्रत-संयम आदि आत्मा के हितकारक हैं उनमें प्रवृत्त होकर परमात्मा बनने का प्रयत्न कर। ऐसा करने पर ही तुझे वास्तविक सुख प्राप्त हो सकेगा॥193॥

**भावार्थ** - अन्तरात्मा विचार करता है कि जीव में स्त्री पुरुष आदि का व्यवहार केवल शरीर को लेकर होता है, इसी प्रकार एक दो और बहुवचन का व्यवहार भी शरीराश्रित है अथवा गुण-गुणी की भेद कल्पना के कारण होता है; जब शरीर मेरा रूप ही नहीं है और मेरा शुद्धस्वरूप निर्विकल्प है तब मुझ में लिंग भेद और वचनभेद कैसे बन सकता है? ये स्त्रीत्वादिधर्म ता कर्मजनित अवस्थाएँ हैं, मेरा निजरूप नहीं है-मेरा शुद्ध चैतन्य स्वरूप इन सबसे परे है ॥23॥

**यदभावे सुषुप्तोऽहं यद्भावे व्युत्थितः पुनः।**

**अतीन्द्रियमनिर्देश्यं तत्स्वसंवेद्यमस्यहम॥ 24॥**

**भावार्थ** - जब तक इस जीव को शुद्ध चैतन्यरूप अपने निजस्वरूप की प्राप्ति नहीं होती तब तक ही यह जीव मोहरूपी गाढ़निद्रा में पड़ा हुआ सोता रहता है, किन्तु जब अज्ञानभावरूप निद्रा का विनाश हो जाता है और शुद्धस्वरूप की प्राप्ति हो जाती है उसी समय से यह जागरित कहलाता है। संसार के रागी जीव व्यवहार में जागते हैं किन्तु अपने आत्मस्वरूप में सोते हैं, परन्तु आत्मज्ञानी संयमी पुरुष व्यवहार में सोते हैं और आत्मस्वरूप में सदा सावधान एवं जाग्रत रहते हैं ॥ 24॥

**क्षीयन्तेऽत्रैव रागाद्यास्तत्त्वतो माँ प्रपश्यतः।**

**बोधात्मानं ततः कश्चिन्न में शत्रुर्न च प्रियः॥25॥**

---

जो सुत्तो ववहारे सो जोई जग्गए सकज्जम्मि।  
जो जग्गदि ववहारे सो सुत्तो अप्पणे कज्जे।।

-मोक्ष प्राभृते, कुन्दकुन्दः

या निशा सर्व भूतानां तस्यां जाग्रति संयमी।  
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

-गीता 2.69

**भावार्थ** - जब तक यह जीव अपने निजानन्दमयी स्वाभाविक निराकुलतारूप सुधामृत का पान नहीं करता तब तक ही वह बाह्य पदार्थों को भ्रम से इष्ट-अनिष्ट मानकर उनके संयोग वियोग के लिये सदा चिन्तित रहता है और जो उस संयोग-वियोग में साधक होते हैं उन्हें अपना शत्रु-मित्र मान लेता है, किन्तु जब आत्म प्रबुद्ध होकर यथार्थ वस्तुस्थिति का अनुभव करने लगता है तब उसकी रागद्वेषादिरूप विभाव परिणति मिट जाती है और इसलिये बाह्य सामग्री के साधक-बाधक कारणों में उसके शत्रु मित्रता का भाव नहीं रहता। वह तो उस समय अपने ज्ञानानन्दस्वरूप में मग्न रहना ही सर्वोपरि समझता है।। 25।।

**मामपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः।**

**मां प्रपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥ 26।।**

**भावार्थ** - आत्मज्ञानी विचारता है कि शत्रु-मित्र की कल्पना परिचित व्यक्ति में ही होती है-अपरिचित व्यक्ति में नहीं। ये संसार के बेचारे अज्ञप्राणी जो मुझे देखते जानते ही नहीं-मेरा आत्मस्वरूप जिनके चर्म-चक्षुओं के अगोचर है-वे मेरे विषय में शत्रु-मित्र की कल्पना कैसे कर सकते हैं? और जो मेरे स्वरूप को जानते हैं- मेरे शुद्धात्मस्वरूप साक्षात् अनुभव करते हैं- उनके रागद्वेष का अभाव हो जाने से शत्रु-मित्रता के भाव की उत्पत्ति नहीं बनती, फिर वे मेरे शत्रु व मित्र कैसे बन सकते हैं? इस तरह अज्ञ और विज्ञ दोनों ही प्रकार के जीव मेरे शत्रु या मित्र नहीं हैं ॥26॥

**त्यक्त्वैवं बहिरात्मानमन्तरात्मव्यवस्थितः ।**

**भावयेत्परमात्मानं सर्वसंकल्पवर्जितम् (तः) ॥27॥**

**भावार्थ**- बहिरात्मावस्था को अत्यंत हेय (त्यागने योग्य) समझकर छोड़ देना चाहिये और आत्मस्वरूप का ज्ञायक अन्तरात्मा होकर जगत् के दंद-फंद चिंता आदि से मुक्त हुआ आत्मोत्थ स्वाधीन सुख की प्राप्ति के लिये परमात्मा के चिंतन

---

आराधना पूर्वक तद्रूप बनने की भावना करनी चाहिये ॥27॥

**सोऽहमित्यात्तसंस्कारस्तस्मिन् भावनया पुनः।**

**तत्रैव दृढसंस्काराल्लभते ह्यात्मनि स्थितिम् ॥ 28॥**

**भावार्थ-** जब 'सोऽहम्' की दृढ़ भावना द्वारा परमात्मपद के साथ जीवात्मा की एकत्व बुद्धि हो जाती है तभी इस जीव को अपनी अनन्तचतुष्टयरूप निधि का परिज्ञान हो जाता है और वह अपने को वीतरागी परमआनन्दस्वरूप मानने लगता है। उस समय काल्पनिक क्षणिक सांसारिक सुख के कारण बाह्य पदार्थों में उसका ममत्व छूट जाता है, रागद्वेष की मंदता हो जाती है और अभेदबुद्धि से परमात्मस्वरूप का चिंतवन करते-करते आत्मा अपने आत्मस्वरूप में स्थिर हो जाता है। इसी को आत्मलाभ कहते हैं, जिसके फलस्वरूप आत्मा अनन्तकाल तक निराकुल अनुपम स्वाधीन सुख का भोक्ता होता है। अतः 'सोऽहम्' की यह भावना बड़ी ही उपयोगी है, उसके द्वारा अपने आत्मा में परमात्म पदके संस्कार डालने चाहिये ॥28॥

**मूढात्मा यत्र विश्वस्तस्ततो नान्यद्भयास्पदम्।**

**यतो भीतस्ततो नान्यदभयस्थानमात्मनः ॥ 29॥**

**भावार्थ-** जैसे सर्प से डसा हुआ मनुष्य कडुवा नीम भी रूचि से चबाता है उसी प्रकार विषय-कषायों में संलग्न हुए जीव का दुःखदाई शरीरादिक बाह्य पदार्थ भी मनोहर एवं सुखदाई मालूम होते हैं और पित्तज्वर वाले रोगी को जिस प्रकार मधुर दुग्ध कडुवा मालूम होता है उसी प्रकार बहिरात्मा अज्ञानी जीव को सुखदाई परमात्मस्वरूप की भावना भी कष्टप्रद मालूम पड़ती है और इसी विपरीत बुद्धि के कारण यह जीव अनादिकाल से दुःखी हो रहा है। वास्तव में इस जीव के लिए परमात्मस्वरूप की भावना भी कष्टप्रद मालूम पड़ती है और इसी विपरीत बुद्धि के कारण यह जीव अनादिकाल से दुःखी हो रहा है। वास्तव में इस जीव के लिए परमात्मस्वरूप के अनुभव के समान और कोई भी सुखदाई पदार्थ संसार में नहीं है और न शरीर के समान दुःखदाई कोई दूसरा पदार्थ ही है ॥29॥

**सर्वेन्द्रियाणि संयम्य स्तिमितेनान्तरात्मना।**

**यत्क्षणं पश्यतो भाति तत्तत्त्वं परमात्मनः ॥ 30॥**

**भावार्थ -** परमात्मा का अनुभव प्राप्त करने के लिए स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन पाँचों इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों में यथेष्ट प्रवृत्ति करने से रोककर मन को स्थिर करना चाहिये। अर्थात् उसे अन्तर्जल्पादिरूप संकल्प

---

विकल्प से मुक्त करना चाहिये। ऐसा होने पर जो अन्तरंगावलोकन किया जावेगा उसी से शुद्ध चैतन्यमय परमात्मस्वरूप का अनुभव हो सकेगा। इन्द्रियों द्वारा ज्ञेयपदार्थों में भ्रमती हुई चित्तवृत्ति रोके बिना कुछ भी नहीं बनता। अतः आत्मानुभव के लिए उसे रोकने का सबसे पहले प्रयत्न होना चाहिये॥ 30॥

**यः परात्मा स एवाऽहं योऽहं स परमस्ततः।**

**अहमेव मयोपास्यो नान्यः केश्चिदिति स्थितिः ॥31॥**

**भावार्थ** - जब यह अन्तरात्मा अपने को सिद्ध समान शुद्ध, बुद्ध ज्ञाता, दृष्टा, अनुभव करता हुआ अभेद-भावना के बल पर शुद्ध आत्म स्वरूप में तन्मय हो जाता है तभी वह कर्मबन्धन को नष्ट करके परमात्मा बन जाता है। अतएव सांसारिक दुःखों से छूटने अथवा दृढ़-बंधन से मुक्त होने के लिए अपना शुद्धात्मस्वरूप ही उपासना किये जाने के योग्य है ॥31॥

**प्रच्याव्य विषयेभ्योऽहं मां मयैव मयि स्थितम्।**

**बोधात्मानं प्रपन्नोऽस्मि परमानन्दनिर्वृतम् ॥ 32॥**

**भावार्थ** - जिस परमात्मपद के प्राप्त करने की अभिलाषा है वह शक्ति रूप से इस आत्मा में ही मौजूद है, किन्तु उसकी व्यक्ति अथवा प्राप्ति इन्द्रिय विषयों से विरक्त होकर ज्ञान और वैराग्य का सुदृढ़ अभ्यास करने से होती है। इसलिए हमें चाहिए कि हम जीवन्मुक्त परमात्मा के दिव्य उपदेश का मनन करके उसके नक्शेकदम पर चलें और उन जैसी वीतराग ध्यानमयी शांत-मुद्रा बनकर चैतन्य जिनप्रतिमा बनने की कोशिश करें तथा उनकी सौम्याकृतिरूप प्रतिबिम्ब का चित्र अपने हृदय पटल पर अंकित करें। इस तरह आत्मस्वरूप के साधक कारणों को उपयोग में लेकर स्वयं ही परमात्मपद प्राप्त करें और निजानन्द रस का पान करते हुए अनन्तकाल तक अनन्त सुख में मग्न रहें॥ 32॥

**यो न वेत्ति परं देहादेवमात्मानमव्ययम्।**

**लभते स न निर्वाणं तप्त्वाऽपि परमं तपः ॥ 33॥**

**भावार्थ** - संसार में दुःख का मूल कारण आत्म ज्ञान का अभाव है। जब तक यह अज्ञान बना रहता है तब तक दुःखों से छुटकारा नहीं मिलता। इसी कारण जो पुरुष आत्मा के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानता-विनश्वर पुद्गल पिण्डमय शरीर को ही आत्म जानता है- वह कितना ही घोर तपश्चरण क्यों न करे, मुक्ति को नहीं पा सकता है, क्योंकि मुक्ति के लिए जिससे मुक्त होना है और

---

जिसको मुक्त होना है दोनों का भेदज्ञान आवश्यक है । जब मूल में ही भूल हो तब तपश्चरण क्या सहयता पहुँचा सकता है ऐसे ही लोगों की मुक्ति उपासना बहुधा अन्य बाह्य पदार्थों की तरह सांसारिक विषय सुख का ही साधन बन जाती है और इसीलिए घोरतिघोर पश्चरण द्वारा शरीर को अनेक प्रकार से कष्ट देते और सुखाते हुए भी वे कर्मबन्धन से छूट नहीं पाते, प्रत्युत अपने उस बाल तपश्चरण के कारण संसार में ही परिभ्रमण करते रहते हैं। अतः आत्मज्ञानपूर्वक तपश्चरण करना ही सार्थक और सिद्धि का कारण है। किसी कवि ने ठीक कहा-

चेतन चित परिचय बिना, जप तप सबै निरत्थ।

कण बिन तुष जिम फटकतैं, कछु न आवे हत्थ॥ 33॥

## मुझे न चाहिए ऐसी श्रेष्ठता...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. इस देश में गांधी... 2. हर देश में तू... 3. छू लेने दो...)

मुझे न चाहिए ऐसी श्रेष्ठता, जिसमें (से) हो ईर्ष्या घृणा तृष्णा।

अन्य को मान दीन-हीन-नीच, इससे परे मैं चाहूँ मैं श्रेष्ठता॥ (धु.)

मेरी श्रेष्ठता (है) मेरी आत्मविशुद्धि, समता-शान्ति व उदारवृत्ति।

दीन-हीन-अंहकार निवृत्ति, स्वाभिमान-सोऽहं-अहं प्रवृत्ति॥

राग द्वेष मोह मद घृणा रिक्त, अंत्योदय सर्वोदय भाव सहित॥(1)

आध्यात्मिक उच्चता मेरी श्रेष्ठता, संकीर्ण भाव -व्यवहार से रिक्तता।

'सर्व्वेसुद्धा हु सुद्धणया' दृष्टि, किसे भी न देखना दीन-हीन दृष्टि।

उदार पावन-भाव-व्यवहार उच्चता, आत्म-पवित्रता है मेरी श्रेष्ठता॥ (2)

सत्ता-सम्पत्ति व प्रसिद्धि-डिग्री, वर्चस्व-प्रभुत्व अंहकार वृत्ति।

अन्य का अपमान निंदा प्रवृत्ति, दिखावा आडम्बर व ढोंग प्रवृत्ति।

इससे नहीं होती (मेरी) श्रेष्ठता सिद्धि, इससे होती यथार्थ से नीचता सिद्धि॥ (3)

---

सरलता सहजता व नम्र प्रवृत्ति, गुण ग्रहण व दोषहरण वृत्ति।  
क्षमा धारण व क्षमादान प्रवृत्ति, छोटों से प्यार बड़ों से विनयवृत्ति।  
मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थवृत्ति, ये सभी मेरी श्रेष्ठता की प्रवृत्ति॥ (4)

श्रेष्ठता हेतु परपीड़न (तो) नीच प्रवृत्ति, धर्म से ले राजनीति में होती।  
धर्म प्रचार से राज्य विस्तार तक, वर्चस्व/(श्रेष्ठता) हेतु करने नीचता तक।  
ऐसी श्रेष्ठता को मानूँ मेरी नीचता, 'कनक' का लक्ष्य आध्यात्मिक श्रेष्ठता॥ (5)

सीपुर- 13.2.2017 रात्रि 10.18

## आजादी तो मिली, पता नहीं उसका करना क्या है?

इस समय मुझे अपने विद्यार्थी जीवन की एक घटना याद आ रही हैं। मैं अपने परिवार के साथ गर्मियों की छुट्टियां मनाने रावलपिंडी से कश्मीर जा रहा था। पिछली रात भारी बारिश होने के कारण से रास्ते में पहाड़ का एक हिस्सा टूटकर गिर गया था, जिसके कारण सड़क बन्द हो गई थी। पीडब्ल्यूडी के कर्मचारी जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे। फिर भी ड्राइवर और यात्री हर समय उनके पीछे पड़े रहते, उन्हें सुस्त और निकम्मा कह कहकर कोसते रहते। आखिरकार एक दिन रास्ता खुलने का ऐलान हुआ। तब तक अजीब-सी बात हुई। कोई भी ड्राइवर पहले अपनी गाड़ी बढ़ाने को तैयार ही नहीं था। रास्ता कच्चा था और खतरनाक भी। एक तरफ पहाड़ था और दूसरी तरफ खाई व हिलोरे मारता झेलम दरिया। ये वही लोग थे जो कल तक पीडब्ल्यूडी के कर्मचारियों को आलस और अकर्मण्यता के लिए कोस रहे थे। इतने में पीछे से एक छोटी-सी हल्के रंग की स्पोर्ट्स कार आती दिखाई दी। एक अंग्रेज उसे चला रहा था। मैं कोट-पतलून पहले जरा बन-ठनकर खड़ा था। उसने मुझसे पूछा 'क्या हुआ है?' मैंने उसे सारी बात बताई, तो वह जोर से हंसा और उसी क्षण हार्न बजता हुआ, बिना किसी डर के आगे बढ़ गया।

अभिनेता बलराज साहनी ने यह कालजयी भाषण 1972 में जेएनयू के दीक्षांत समारोह में दिया था। अपने विचारों के कारण यह भाषण वर्षों तक चर्चित रहा। जेएनयू स्टूडेंट यूनियन इसके पर्चे प्रकाशित कर बांटती रही।

---

यह भाषण आज भी उतना ही प्रासंगिक और सामयिक है, जितना कि उस दौर में था...

उसके बाद तो नजारा और भी देखने लायक था। कहां तो कोई माई का लाल गाड़ी स्टार्ट करने के लिए तैयार नहीं था, और अब वे हार्न पर हॉर्न बजाते हुए एक साथ वह हिस्सा पार करने लगे। तब मैंने प्रत्यक्ष देखा कि एक आजाद देश में पले-बढ़े आदमी और एक गुलाम देश में पले-बढ़े आदमी में क्या फर्क होता है। आजाद आदमी के अन्दर कुछ सोचने, फैसला करने और अपने फैसले पर अमल करने की दिलेरी होती है। (तहलका से)

सुरक्षा परिषद की चर्चा में बाकी परमाणु ताकतों ने भी नहीं लिया हिस्सा...

## दुनिया से परमाणु हथियार मिटाने की मुहिम में शामिल नहीं हुआ भारत

संयुक्त राष्ट्र - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों ने परमाणु हथियारों पर वैश्विक प्रतिबंध लगाने से जुड़ी चर्चा का बहिष्कार किया। भारत ने भी इस चर्चा में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। यह फैसला नई दिल्ली में हुई एक उच्च स्तरीय बैठक में लिया गया। यूएन स्थित भारतीय मिशन इस चर्चा में होने वाली प्रगति पर बारीकी से नज़र रखे हुए है।

गत वर्ष इस बैठक को बुलाने के लिए महासभा में हुई वोटिंग से भारत अनुपस्थित था। अमरीका, ब्रिटेन समेत करीब 40 देश नई संधि पर चर्चा को लेकर बुलाई गई संयुक्त राष्ट्र की बैठक में शामिल नहीं हुए। वही 120 से अधिक देशों ने परमाणु प्रतिबंध पर कानूनन रोक लगाने की योजना का समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र में अमरीका की राजदूत निकी हेली का कहना है कि परमाणु हथियारों पर विश्वव्यापी प्रतिबंध यथार्थवादी कदम नहीं है। हेली ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए परमाणु हथियार जरूरी हैं। 'बुरे तत्वों' पर एतबार नहीं किया जा सकता है। मैं परिवार के लिए हथियार विहीन दुनिया से ज्यादा कुछ नहीं चाहूंगी लेकिन हमें यथार्थवादी होना पड़ेगा।

### एनपीटी पर भारत नहीं करेगा हस्ताक्षर

तत्कालिक विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर ने सितंबर 2009 में स्पष्ट किया था कि भारत अंतरराष्ट्रीय परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं करेगा क्योंकि यह

भेदभावपूर्ण हैं। थरूर ने कहा, हमारी ये नीति रही है कि पूरी दुनिया से परमाणु हथियार खत्म किए जाएं लेकिन हम ऐसी कोई संधि स्वीकार नहीं कर सकते जिसके तहत कुछ देशों को ऐसे हथियार रखने की इजाजत मिले। विकसित देशों ने पहले ही परमाणु हथियारों का भंडार बना लिया है और शेष देशों पर अप्रसार संधि थोप रहे हैं। भारत पहले भी कई बार कह चुका है कि वह ऐसे किसी नियम या मापदंड को स्वीकार नहीं करेगा जो उसके राष्ट्रीय हितों के खिलाफ हो या संप्रभुता का उल्लंघन करते हों। वह एनपीटी में गैर परमाणु हथियार सम्पन्न देश के रूप में शामिल नहीं हो सकता है हालांकि उसने परमाणु परीक्षण नहीं करने और पहले हथियार का प्रयोग नहीं करने पर जोर दिया।

**120 से अधिक देशों ने प्रतिबंध लगाने का कानूनन समर्थन किया है। इन देशों के पास परमाणु हथियारों की संख्या :**

रूस	- 8000
अमरीका	- 7300
फ्रांस	- 300
चीन	- 250
ब्रिटेन	- 225
पाकिस्तान	- 100-120
भारत	- 90 - 110
उत्तर कोरिया	- 08

दुनिया के नौ देशों के पास 16300 परमाणु बम हैं। जो पूरी दुनिया को खत्म करने के लिए काफी हैं। रूस इस रेस में सबसे आगे हैं।

**सुप्रीम कोर्ट में सरकार ने दी जानकारी**

**हर साल आत्महत्या कर रहे 12,000 अन्नदाता**

नई दिल्ली, हमारे देश में किसानों की आत्महत्याएं कितना संगीन मामला बन चुकी है, यह सरकार की तरफ से सुप्रीम कोर्ट को दिए गए आंकड़ों से साफ होता है। सरकार ने बताया है कि हर साल 12 हजार किसान आत्महत्या कर रहे हैं। सरकार 2013 से किसानों की आत्महत्या के आँकड़े जुटा कर रही है।

---

इसके मुताबिक, हर साल 12 हजार किसान अपनी जिंदगी खत्म कर रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश जेएस खेहर और जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और संजय किशन कौल की पीठ को सरकार ने यह जानकारी दी।

सरकार के अनुसार 2015 में कृषि क्षेत्र से जुड़े कुल 12602 लोगों ने आत्महत्या की। इनमें 8007 किसान-उत्पादक थे जबकि 4,595 लोग कृषि संबंधी श्रमिक के तौर पर काम कर रहे थे। 2015 में भारत में कुल 1,33,623 आत्महत्याओं में से अपनी जान लेने वाले 9.4 प्रतिशत किसान थे।

**4,291 किसानों ने 2015 में महाराष्ट्र में आत्महत्या की। इस मामले में महाराष्ट्र देश में सबसे आगे है।**

**मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ में भी जाने दे रहे किसान**

2015 में सबसे ज्यादा 4,291 किसानों ने महाराष्ट्र में आत्महत्या की जबकि 1569 आत्महत्याओं के साथ कर्नाटक दूसरे स्थान पर है। इसके बाद तेलंगाना 1400, मध्यप्रदेश 1290, छत्तीसगढ़ 954, आंध्रप्रदेश 916 और तमिलनाडु 606 का स्थान आता है। 2014 में 12,360 और 2013 में 11,772 किसानों ने खुदकुशी की थी।

संदर्भ -

**“तृष्णारूपी अग्नि में जलने पर शान्ति की भ्रान्ति”**

धनरन्धनसंभारं प्रक्षिप्याशाहुताशने।

ज्वलन्तं मन्यते भ्रान्तः शान्तं संधुक्षणक्षणे॥ (85)

यह जीव भ्रम सहित होने से आशारूपी अग्नि में धनरूपी ईंधन के समूह को डालकर उसकी वृद्धिरूप संधुक्षण के समय जलते हुए अपने आत्मा को शान्त और सुखी हुआ मानता है।

**“ उत्तरोत्तर उत्कृष्ट त्याग के उदाहरण”**

अर्थिभ्यस्तृणविद्विचिन्त्य विषयान् कश्चिच्छियं दत्तवान्,

पापां तामवितर्पिणीं विगणयन्नादात् परस्त्यक्तवान् ।

प्रागेवाकुशलां विमृश्य सुभगोऽप्यन्यो न पर्यग्रहीत,

एते ते विदितोत्तरवराः सर्वोत्तमास्त्यागिनः॥ (102)

कुछ त्यागीकरण विषयों को तृण के समान अकार्यकारी जानकर पुत्रादिक को या अन्य याचको को लक्ष्मी का दाने करते हैं। कुछ त्यागीगण लक्ष्मी को पापरूप और तृप्ति न करने वाली मानकर किसी को दिए बिना ऐसे छोड़ देते हैं और अन्य कोई सौभाग्यशाली त्यागीगण पहले से ही अंकल्याणकारी जानकर ग्रहण नहीं करते-इस प्रकार तीनों सर्वोत्कृष्ट (सम्पूर्ण) त्यागियों को उत्तरोत्तर उत्कृष्ट जानो।

## विरक्ति होने पर सम्पत्ति के त्याग में क्या आश्चर्य ?

विरज्य सम्पदः सन्तस्त्यजन्ति किमिहाद्भुतम्।

मा वमीत् किं जुगुप्सावान् सुभुक्तमपि भोजनम्॥(103)

सत्यपुरुष विरक्त होकर सम्पत्ति का त्याग कर देते हैं- अरे ! इसमें क्या आश्चर्य है? क्या पुरुष ग्लानि होने पर अच्छी तरह भक्षण किए हुए भोजन का वमन नहीं करते? अपितु अवश्य ही करते हैं।

## ‘ लक्ष्मी का त्याग करने में विभिन्न परिणाम वाले त्यागी’

श्रियं त्यजन् जडः शोकं विस्मयं सात्त्विक स ताम्।

करोति तत्त्वविचित्रं न शोकं न च विस्मयम्॥ (104)

पराक्रम रहित मूर्ख पुरुष लक्ष्मी का त्याग करने पर शोक करते हैं और सच्चे पराक्रमी पुरुष गर्व करते हैं, परन्तु तत्त्वज्ञानी पुरुष उस लक्ष्मी का त्याग करने पर न शोक करते हैं और न गर्व करते हैं- यह बड़े आश्चर्य की बात है।

धनादिको त्याग करने पर संसारी जीवों के दो प्रकार के भाव होते हैं। पराक्रम रहित व्यक्ति को यदि किसी कारण से धनादिक का त्याग (वियोग) हो जाय तो उसे बहुत शोक होता है तथा “ऐसा कैसे हो गया” इस प्रकार का अंतरंग में बहुत खेद होता है। पराक्रमी पुरुष का यदि किसी कारण से धनादि का वियोग हो जाए या वह स्वयं उत्साह से धन का त्याग करे तो उसे गर्व होता है कि मैंने ऐसा कार्य किया इस प्रकार उसे अहं हो जाता है। लेकिन यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि तत्त्वज्ञानी पुरुषों का धनादि का त्याग करने पर शोक और गर्व दोनों नहीं होते, क्योंकि ज्ञानी धनादिक को परद्रव्य जानते हैं और परद्रव्य का त्याग होने पर खेद और गर्व नहीं होना चाहिए, इसलिए ज्ञानी शोक और गर्व रहित होते हुए परद्रव्य का त्याग करते हैं।

---

## भेद -ज्ञान और वीतरागता की प्रेरणा”

विज्ञाननिहतमोहं कुटीप्रवेशो विशुद्धकायमिव।

त्यागः परिग्रहणामवश्यजरामरं कुरुते ॥ (108)

जिस प्रकार पवन साधन में कुटी प्रवेश करने से (कुम्भक प्रक्रिया द्वारा वायु रोकने से) शरीर निर्मल होता है, उसी प्रकार जो भेद विज्ञान द्वारा मोह नष्ट करता है, उसे परिग्रह का त्याग अवश्य ही अजर-अमर कर देता है।

## “ बाल-ब्रह्मचारियों की प्रशंसा”

अभुक्त्वापि परित्यागात् स्वोच्छिष्टं विश्वमासितम्॥

येन चित्रं, नमस्तस्मै कौमारब्रह्मचारिणे ॥ (109)

उस कुमार-ब्रह्मचारी का हमारा नमस्कार हो, जिसने भोगे बिना ही विषयों का त्याग करके समस्त विषयों को अपनी जूठन बना दिया है- यह आश्चर्यकारी कार्य है।

## परमात्मा बनने का रहस्य

अकिञ्चनोऽहमित्यास्व त्रेलोक्याधिपतिर्भवेः।

योगिगम्यं तव प्रोक्तं रहस्यं परमात्मनः ॥ (110)

“मैं अकिञ्चन हूँ मेरा कुछ भी नहीं है” - ऐसी भावना करके तू बैठ जा ! इससे तू शीघ्र तीन लोक का स्वामी हो जाएगा। योगीश्वरों द्वारा गम्य परमात्मा बनने का यही रहस्य हमने तुझे कहा है।

## “ज्ञानियों में श्रेष्ठ कौन ?”

त्यक्तहेत्वन्तरापेक्षौ गुणदोषनिबन्धनौ।

यस्यादानपरित्यागौ स एव विदुषां वरः ॥ (145)

अन्य कारणों की अपेक्षा छोड़कर जो जीव गुणों और दोषों के कारण ही ग्रहण और त्याग करते हैं, वे ही ज्ञानियों में श्रेष्ठ हैं।

जीवों में किसी को ग्रहण करने की और किसी को छोड़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है। जिनसे सम्यग्दर्शनादि गुण प्रगट हों, उनका ग्रहण करना चाहिए और जिनसे मिथ्यादर्शनादि दोष उत्पन्न हों, उनका त्याग करना चाहिए। इस प्रकार जो गुणों और दोषों के कारण ग्रहण-त्याग करते हैं तथा जिनका अन्य कोई विषय-

---

कषायादि का प्रयोजन नहीं पाया जाता, वे जीव उत्कृष्ट ज्ञानी जानना चाहिए, क्योंकि वे अपना हित साधते हैं और अपना हित साधना ही बुद्धिमानों का कर्तव्य है।

**“ अहित का त्याग और हित में प्रवर्तन करने की प्रेरणा”**

**हितं हित्वाऽहिते स्थित्वा दुर्धीदुःखायसे भृशम् ।**

**विपर्यये तयोरेधि त्वं सुखायिष्यसे सुधीः॥ (146)**

है जीव! तू दुर्बुद्धि होता हुआ हित को छोड़कर अहित में स्थित रहकर अपने को अत्यन्त दुःखी करता है इसलिए अब इसका उल्टा कर । अर्थात् सुबुद्धि होता हुआ अहित को छोड़कर हित में स्थित रहते हुए उसी की वृद्धि कर! इससे तू अपने स्वाभाविक सुख को प्राप्त करेगा।

**निर्धनत्वं धनं येषां मृत्युरेवहि जीवितम्।**

**किं करोति विधिस्तेषां सतां ज्ञानैकचक्षुषाम् ॥ (162)**

निर्धनता ही जिसका धन है और मरण ही जिनका जीवन है और जो ज्ञान ही जिनका नेत्र है- ऐसे सन्त पुरुषों को विधाता अर्थात् कर्म क्या कर सकते हैं? अर्थात् कुछ नहीं कर सकते!

जो महामुनि ज्ञान नेत्रों से पदार्थों का अवलोकन करते हैं उनके लिए धनादि रहित निर्ग्रन्थपना ही धन है, क्योंकि जैसे अन्य जीव धन से सुखी होते हैं, वैसे ये मुनि निर्ग्रन्थपने से सुखी हैं । उनके लिए मरण ही जीवन है, क्योंकि जैसे अन्य जीव प्राण धारण करने से सुखी होते हैं, वैसे ये मुनि इन्द्रियादि प्राण छूटने पर सुख मानते हैं। ऐस महामुनियों का कर्म क्या कर सकते हैं? क्योंकि उन कर्मों का बल तो इतना ही है कि वे निर्धनता या मरण आदिरूप अनिष्ट कर सकते हैं, परन्तु मुनिराज इससे तो दुःखी नहीं होते, इसलिए कर्म इनका कुछ भी नहीं कर सकते।

**‘आशा को निराश करने वालों का कर्म कुछ नहीं बिगाड़ सकते ’**

**जीवेताशा धनाशा च येषां तेषां विधिर्विधिः ।**

**किं करोति विधिस्तेषां येषामाशा निराशता ॥ (163)**

जिन्हें जीने की और धन पाने की आशा है, विधाता (कर्म) उनके ही विधाता है, परन्तु जिनकी आशा नष्ट हो गई है, विधाता उनका क्या कर सकते हैं। अर्थात् कुछ भी नहीं कर सकते।

यहाँ कर्म को विधाता कहा गया है। जो अज्ञानी जीव प्राप्त पर्यायरूप जीवन और धन को चाहते हैं, उनमें कर्म अपना कार्य उत्पन्न करने में समर्थ होने से कर्मपना धारण करते हैं और वे ही जीव कर्म से डरते हैं। हमारा मरण न हो जाये या हम निर्धन न हो जायें- ऐसी आशा होने से ही कर्म उन्हें दुःखी करते हैं। लेकिन जिनकी आशा नष्ट होने से जिन्होंने धनादिक को छोड़ दिया है और जो मरण के कारणों से सम्मुख हुए हैं उनका कर्म कुछ नहीं कर सकते।- ऐसे मुनिराज कर्मों से नहीं डरते, मरण हो तो हो, उन्हें पर्याय छोड़ने का भय नहीं है और निर्धनता को निराकुलता का कारण जानकर उन्होंने स्वेच्छा से ही धनादि को छोड़ा है-इस प्रकार जिन्होंने आशा का अभाव कर दिया है, उन्हें कर्म कैसे दुःखी करेंगे? मोह हीन होने पर कर्म का उदय भी हीन होता है और वह आत्मा को दुःखी करने रूप कार्य का कर्ता नहीं होता।

### “ आत्मा का शाश्वतिक ज्ञान”

**ज्ञान स्वभावः स्यादात्मा स्वभावाप्तिरच्युतिः ।**

**तस्मादच्युतिमांकांक्षन् भावयेज्ज्ञान-भावनाम् ॥ (174)**

ज्ञान आत्मा का असाधारण स्वभाव है और स्वभाव की प्राप्ति विनाश रहित है, इसलिए अविनाशी अवस्था को चाहने वाले विवेकियों को ज्ञान-भावना भाना चाहिए।

पूर्व सूत्रों में कहे गये नित्य-अनित्यादि धर्म सभी वस्तुओं में समान रूप से होते हैं, अर्थात् वे साधारण धर्म हैं, परन्तु ज्ञान अर्थात् जानना आत्मा में ही पाया जाता है, इसलिये यह आत्मा का असाधारणतया स्वभाव है। इसी लक्षण से पर द्रव्यों से भिन्न आत्मा के अस्तित्व का निर्णय होता है। यह नियम है कि वस्तु का अस्तित्व रहते हुये उसके स्वभाव का कभी अभाव नहीं होता, क्योंकि लक्षण का नाश होने पर लक्ष्य का अस्तित्व कैसे रहेगा?

जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने ही धन का स्वामी होकर प्रवर्तगा तो उसकी स्थिति एक सी रहेगी, उसी प्रकार आत्मा का स्वभाव ज्ञान-समयसार है, इसलिये उसे अपने ज्ञान का ही स्वामी होकर प्रवर्तना चाहिये। ये पदार्थ जैसे परिणमते हैं वैसे परिणमं, मैं तो इन्हें जानने वाला ही हूँ ऐसी भावना रखने वाले की अवस्था अविनाशी (स्वरूप) होती है, क्योंकि ज्ञान तो जीव का स्वभाव है, उसका कभी अभाव नहीं होता। तथा जीव, ज्ञान से भिन्न अन्य असारभूत भावों का स्वामी नहीं

---

होता इसलिये उसकी अवस्था भी नहीं पलटती (एकरूप रहती है।)

जो जीव परद्रव्यों के स्वभाव का स्वामी होकर प्रवर्तता है, अपने स्वभावरूप परिणामने वाले शरीर, स्त्री, पुत्र धनादि को अपना जानता है; उसकी अविनाशी अवस्था नहीं रहती, क्योंकि शरीरादि की अवस्था ही एकरूप नहीं रहती, इसलिये यह उनकी अवस्था पलटने पर अपनी अवस्था पलटी ऐसा मानता है अतः अविनाशीपना नहीं रहता। इसलिये जो विवेकी अविनाशी अवस्था को चाहते हैं; उन्हें एक ज्ञान भावना ही भाना चाहिये।

### ज्ञान का फल अविनाशी सुख

ज्ञानमेव फलं ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनक्षरम् ।

अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते ॥ 175॥

निश्चय से ज्ञान का फल ज्ञान ही है, वह सर्वथा प्रशंसनीय और अविनाशी है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उससे लोग अन्य कुछ और फल चाहते हैं इसे मोह की ही महिमा जानना चाहिये।

श्रुतज्ञान द्वारा पदार्थों को यथार्थ जानने का तात्कालिक फल तो उन पदार्थों का जानपना ही है और परम्परा फल केवलज्ञान है, वहाँ सर्व पदार्थों का जानपना होता है। इस प्रकार ज्ञान का फल ज्ञान ही है, जो सर्व प्रकार से प्रशंसनीय है, क्योंकि यथार्थ ज्ञान होने पर पदार्थ जैसे हैं, वैसे भासित होने से निराकुलता होती है। निराकुलता सुख का लक्षण है और सभी जीव सुख चाहते हैं। इस सुख में पराधीनता आदि कोई दोष नहीं है। अन्य लोग उससे विषय-सामग्री रूप फल को चाहते हैं- यह मोह की महिमा है। जिस प्रकार खाज रोग होने पर रोगी को खुजाने की सामग्री अच्छी लगती है, उसी प्रकार मोह के कारण आत्मा में काम क्रोधादि भाव उत्पन्न होने पर इस जीव को स्त्री पुत्रादि सामग्री अच्छी लगती है, यह उन्हें चाहता है। इस जीव को ज्ञान के सिवाय अन्य फल की चाह होती देखकर ज्ञानियों को बड़ा आश्चर्य होता है। जैसे- भूत लगे हुये व्यक्ति की चेष्टा देखकर आश्चर्य होता है वैसे मोही जीव की चेष्टा देखकर ज्ञानी को आश्चर्य होता है।

“यह लोक-परलोक में कौन सुखी और कौन दुःखी ?”

सुखी सुरवामिहान्यत्र दुःखी दुःखं समश्नुते।

सुखं सकलसन्यासी दुःखं तस्य विपर्ययः ॥ (187)

---

जो इस लोक में सुखी हैं वे परलोक में भी सुख पाते हैं और जो इस लोक में दुःखी हैं व परलोक में भी दुःख पाते हैं। वस्तु का सर्व प्रकार से त्याग सुख है और इसके विपरीत परवस्तु का ग्रहण दुःख है।

जो जीव मोह घटने से वर्तमान में सुखी होते हैं, वे ही भविष्य में सुख पाते हैं और जो मोह बढ़ने से वर्तमान में दुःखी होते हैं, वे भविष्य में भी दुःख ही पाते हैं। शास्त्रों में भी दुःख शोक आदि से असाता का बन्ध होना कहा है और असाता का उदय आने पर दुःख ही होता है। इसलिए दुःख का फल सुख है-ऐसे भ्रम से परलोक में सुख के उपाय से परोन्मुख मत हो।

यहाँ जो विषय-सुख छोड़ा जाता है, वह ता जैसे मिश्री मिलने पर गुड़ का स्वाद बुरा लगता है, वैसे शान्त रस का अनुभव होने पर जीव को विषय सुख नीरस भासित होते हैं, इसलिए वह विषय सुख भोगता नहीं है, विषय सुख छोड़ने से उसे दुःख नहीं होता, अतः विषय सुख छोड़ने का भय मत कर। सच्चे धर्म साधन से वर्तमान में भी सुख होता है और भविष्य में भी सुख होता है इसलिए ऐसा ही कार्य करना चाहिए।

## “अज्ञानियों द्वारा शरीर-पोषण का प्रयोजन”

शरीरमपि पुष्णान्ति सेवन्ते विषयानपि ।

नास्त्यहो दुष्करं नृणां विषाद्वाञ्छन्ति जीवितुम् ॥ (196)

अहो ! मूर्ख जीव क्या-क्या नहीं करता? शरीर का पोषण करता है और विषयों का सेवन करता है। मूर्खों को कुछ विवेक नहीं है, वे विष से जीना चाहते हैं। अविवेकियों को पाप का भय नहीं है और विचार नहीं है, वे बिना विचारे न करने योग्य कार्य करते हैं।

जो पण्डित अर्थात् विवेकी है, वे शरीर से अधिक प्रेम नहीं करते, अनेक प्रकार की सामग्री से इसका पोषण नहीं करते। विषयों का सेवन नहीं करते और अकार्य से डरते हैं। मूढ़ लोग शरीर का अधक पोषण करते हैं, विषयों का सेवन करते हैं और अयोग्य कार्य करने में शंका नहीं करते। जो विषयों का सेवन करते हैं, वे विष खाकर जीना चाहते हैं।

---

## खुशहाली में पाकिस्तानी हमसे आगे; भारत 4 स्थान गिरकर 122 वें पर पहुँचा, 3 साल से अक्वल रहे डेनमार्क को पछाड़ नॉर्वे सबसे खुशहाल

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र ने 2017 के लिए वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट जारी की है। इसके मुताबिक खुशहाली के मामले में पाकिस्तान लगातार दूसरे साल हमसे आगे है। 155 देशों की सूची में भारत 4 पायदान फिसलकर 122 वें स्थान पर पहुंच गया है। पाकिस्तान ने 12 स्थान की छलांग लगाई है। 3 साल से अक्वल रहे डेनमार्क को पछाड़ नॉर्वे दुनिया का सबसे खुशहाल देश बनकर उभरा है। सोशल सपोर्ट और भ्रष्टाचार में कमी के कारण नॉर्वे को सबसे ज्यादा स्कोर मिला है। यह पिछले साल चौथे स्थान पर था। रिपोर्ट में सभी देशों को अपने यहां आपसी भरोसा व मदद, समानता और लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए काम करने की सलाह दी गई है।

### सोशल सपोर्ट और भ्रष्टाचार में कमी से नॉर्वे में बढ़ी खुशहाली इन पैमानों के आधार पर हुई रैंकिंग

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता, सामाजिक समर्थन और सरकार या व्यापार में भ्रष्टाचार की स्थिति। इन पैमानों के आधार पर देशों को शून्य से लेकर 10 तक अंक दिए गए।

ये सबसे खुश		ये सबसे दुखी	
रैंक	देश	रैंक	देश
1	नॉर्वे	155	मध्य अफ्रीका
2	डेनमार्क	154	बुरुंडी
3	आइसलैंड	153	तंजानिया
4	स्विट्जरलैंड	152	सीरिया
5	फिनलैंड	151	खांडा

### पाक ने भूटान तक को पछाड़

भूटान के हैप्पीनेस इंडेक्स को दुनिया अपना रही है। पर वह इस बार पाकिस्तान से भी पीछे है। भारत व पड़ोसी देशों में सिर्फ चीन पाकिस्तान से 1

---

स्थान ऊपर है। नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका भी भारत से आगे है।

### खुशहाली में पड़सियों से पिछड़े

चीन	79	पाकिस्तान	80
भूटान	97	नेपाल	99
बांग्लादेश	110	श्रीलंका	120
भारत	122		

### ट्रंप की नीतियों से अमेरिका में हालात बिगड़े-रिपोर्ट

अमेरिका की जीडीपी तो बढ़ी है, लेकिन हैप्पीनेस के मामले में यह एक पायदान गिरकर 14वें स्थान पर आ गया है। रिपोर्ट में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बारे में कहा गया है कि ट्रंप की नीतियों की वजह से हालात और खराब हुई हैं। अमेरिका में असमानता, अविश्वास और भ्रष्टाचार की वजह खुशहाली घटी है। हालांकि अमेरिका बड़े देशों में ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस से आगे है।

देश	रैंक
अमेरिका	14
जर्मनी	16
ब्रिटेन	19
भारत	31

### एक दिन में हम 137 करोड़ का खाना बर्बाद करते हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आम लोगों से हफ्ते में एक दिन पेट्रोल-डीजल इस्तेमाल न करने की अपील की है। साथ ही खाने की बर्बादी रोकने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि 'न्यू इंडिया' का सपना सवा सौ करोड़ लोगों के संकल्प से ही पूरा होगा।

रेडिया कार्यक्रम 'मन की बात' के 30 वें संस्करण में मोदी ने कहा कि सब कुछ बजट या सरकारी धन से नहीं जुड़ा है। हर नागरिक अगर अपनी जिम्मेदारी और दायित्व निभाने का संकल्प ले, तो न्यू इंडिया का सपना आसानी से पूरा होगा। उन्होंने कैश टांजेक्शन की जगह डिजिटल भुगतान पर भी जोर दिया।

---

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अवसादग्रस्त लोग शर्म के मारे अपना अनुभव नहीं बताते। हमें यह स्थिति बदलनी है। उन्हें खुलकर बोलने, तकलीफ बांटने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। उन्होंने कहा कि अवसाद लाइलाज बीमारी नहीं है। सही मनोवैज्ञानिक माहौल से पीड़ित को इससे बाहर निकाला जा सकता है।

## जिद करो, दुनिया बदलो

### एक जिद भोजन-पानी की बर्बादी रोकने के लिए

1. हम परिवार संग होटल रेस्त्रां जाते हैं। रोटी, दाल, चावल बच जाते हैं। हम वहीं छोड़ आते हैं। वे फेंक देते हैं।
2. घर में अक्सर खाना बच जाता है। हम फेंक देते हैं। मेहमानों को पानी देते हैं, वो आधा पीकर रख देते हैं, हम फेंक देते हैं। शादी-पार्टियों में खाना प्लेट में छोड़ आते हैं। और ये वहां हो रहा है जहां अन्न को देवता माना गया है। हमारा देश उत्सवधर्मी है। तीज त्यौहार, शादी-ब्याह होते ही रहते हैं। सबसे ज्यादा अन्न की बर्बादी इन्हीं मौकों पर होती है। एक सर्वे का दावा है कि अकेले बेंगलुरु में एक साल में होने वाली शादियों में 943 टन पका खाना फेंक दिया जाता है। इससे ढाई करोड़ लोगों को एक समय का खाना दिया जा सकता है। हम हर साल 670 लाख टन खाना बर्बाद कर देते हैं। हर साल दुनिया में 1300 करोड़ क्विंटल खाना बर्बाद हो जाता है। एक और चौंकाने वाले आंकड़े पर गौर करें तो जो भोजन हमारे देश में बर्बाद होता है, उसे उत्पन्न करने में 230 क्यूसेक पानी लगता है। इस पानी से 10 करोड़ लोगों की प्यास बुझाई जा सकती है। फिर क्यों न हम आज से ही एक जिद करें- जितना होगा, खाने की बर्बादी रोकेंगे। न सिर्फ हम, बल्कि अपने बच्चों, रिश्तेदारों, मित्रों को भी प्रेरित करेंगे। इससे हमारी आने वाली पीढ़ी को ही सबसे ज्यादा फायदा होगा।
- 1- होटल में क्यों न हम वेटर से कहें कि आप हमें आधी कटोरी दाल दीजिए। चावल भी आधे दीजिए। जरूरत होगी तो और मांग लेंगे। इससे अन्न बचेगा। अगर फिर भी खाना बच जाए तो उसे पैक करवा लीजिए।

---

इस रास्ते, सड़क किनारे, झुगियों में बैठे बच्चों, उनके घरवालों का बांट सकते हैं।

2. **घरों में :** घर आए मेहमानों को आधा गिलास पानी ऑफर करें। पीं ले, तो और दें। किचन में भी उतना ही खाना पकाएं जितनी जरूरत हो। फिर भी खाना बचे तो फेंकने की बजाए फ्रिज में रखें, अगले दिन इस्तेमाल करें या बस्तियों में बंटवा दें। बच्चों के लंचबॉक्स में भी उतना ही खाना दें जितना बच्चा खा सके।

### **खाद्यान्न बर्बादी में हम दुनिया में 7वें नंबर पर, हर साल 670 लाख टन खाना बर्बाद**

- 50,000 करोड़ रू. का खाद्यान्न हर साल भंडारण के अभाव में नष्ट हो जाता है।
- यह देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन का करीब 40 प्रतिशत है
- 6000 बच्चे भारत में रोज कुपोषण के शिकार होते हैं।
- भारत में हर साल 23 करोड़ टन दाल, 12 करोड़ टन फल और 21 करोड़ टन सब्जियां खराब हो जाती है। वहीं केन्द्र के मुताबिक ब्रिटेन के सालाना अनाज उत्पादन के बराबर का अनाज हम बर्बाद कर देते हैं।

### **1 दिन पेट्रोल न बिके तो बचें 4224 करोड़**

देश में सिर्फ पेट्रोल की रोजाना खपत 59.38 करोड़ लीटर है। यानी एक दिन पेट्रोल न खरीदें तो जनता 4224 करोड़ रुपए की बचत कर सकेंगी।

रैंक	देश	रोजाना खपत
1	अमेरिका	19,530,000
2	चीन	11,120,000
3	जापान	4,120,000
4	भारत	37,35,000
5	रूस	3,693,000

---

## मुझे ऐसे तप-त्याग न चाहिए...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. छू लेने दो... 2. इस देश में तू .... )

मुझे ऐसे तप-त्याग न चाहिए, जिससे न हो भाव निर्मल।

/ (जिससे हो भाव मलीन)

राग द्वेष मोह ईर्ष्या हो उत्पन्न, ख्याति पूजा लाभ दंभ उत्पन्न॥ (ध्रु.)

इच्छा निरोध होता है तप, 'अहंकार' ममकार छोड़ना त्याग ।

समता-शान्ति संतुष्टी प्राप्ति, ध्यान-अध्ययन-विशुद्धि प्राप्ति ।

संकल्प-विकल्प-संक्लेश त्याग, होते हैं यथार्थ से तप-त्याग ॥ (1)

इसे हेतु होते है तप-त्याग, अंतरंग-बहिरंग बारह तप ।

अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह त्याग, दश बहिरंग चौदह अन्तरंग।

अठ्ठाबीस साधु के मूलगुण, आचार्य उपाध्याय के मूलगुण ॥ (2)

बहिरंग जिस तप त्याग द्वारा, समता शान्ति (आदि) न होते उत्पन्न।

किन्तु होते है मलीन भाव, ख्याति पूजा लाभ दंभ उत्पन्न।

उससे न होती आत्म-विशुद्धि, ऐसे तप -त्याग से आत्म-पतन॥ (3)

विषधर सर्प यथा त्यागते कांचली, किंतु मारक विष नहीं त्यागते।

अन्य को दंशकर मरण देते, स्पिटिंग कोबरा तो विष फेंकते।

मलीन भव-व्यवहार त्याग बिना, बहिरंग तप-त्याग तथाहि होते॥ (4)

बहिरंग तप-त्याग करूँ यथाशक्ति, जिससे हो आत्म विशुद्धि शान्ति।

बगुला सम न करूँ बाह्य प्रवृत्ति, दिखावा ढोंग-दंभ नकलची।

अंतरंग तप-त्याग करूँ विशेषतः, जिससे हो संवर-निर्जरा-मोक्ष ॥ (5)

निदान वर्चस्व रिक्त करूँ तप त्याग, धन-जन-प्रसिद्धि रहित भाव।

आध्यात्मिक विकास अनुभव हेतु, मौन एकान्त में करूँ आत्महित।

द्रव्यक्षेत्र काल भाव के अनुकूल, 'कनक' शुद्ध स्वरूप तो आकिंचन्य॥ (6)

सीपुर - 15.02.2017 मध्याह्न - 2.03

---

## संदर्भ -

श्रावक अवस्था में श्रावक समता का अभ्यास करता-करता जब राग-द्वेष-मोह को अधिक शिथिलीकरण कर लेता है तब वह श्रमण बन जाता है। श्रमण का स्वभाव ही साम्य है, समता भाव है। जब मुमुक्षु श्रमण बनता है तब समस्त सावद्य का परित्याग स्वरूप सामायिक चारित्र को स्वीकार करता है। जब इसमें स्थिरता नहीं आती है तब छेदोपस्थापना चारित्र या विकल्प स्वरूप 28 मूलगुणों को धारण, पालन करता है। यह सामायिक चारित्र ही बढ़ता-बढ़ता परमयथाख्यात चारित्र रूप में परिणमन करता है।

श्रावक तो तीन संध्या में सामायिक का अभ्यास करता है परन्तु श्रमण सतत सामायिक रूप में रहता है, जो साधु के लिए तीन संध्या में सामायिक का विधान है वह सामायिक को और वृद्धि करने के लिए तथा आत्मा में स्थिरता धारण करने के लिए है। यदि साधु तीन समय में सामायिक करता है और अन्य समय में समता भाव में नहीं रहता है तब वस्तुतः वह साधु श्रमण नहीं है। क्योंकि “समा समणो” या संयतस्य “साम्य लक्षण” अर्थात् साम्य ही श्रमण है तथा संयत का लक्षण साम्य भाव हो कुदकुंद देव नियमसार में कहा भी है-

**संजमणियमतवेण दु, धम्मज्झाणेण सुक्कझाणेण ।**

**जो ज्ञायइ अप्पाणं, परमसमाही हवे तस्स ॥ (123) पृ. 343**

संयम, नियम और तप से तथा धर्मध्यान और शुक्लध्यान से जो आत्मा को ध्याता है, उस साधु की परम समाधि होती है।

**किं काहदि वणवासो, कायकिलेसो विचित्र उववासो।**

**अज्झयणमौणपहुदी, समदाररहियस्स समणस्स ॥ (124)**

वन में निवास, काया का क्लेश, अनेक विविध उपवास तथा अध्ययन, मौन आदि कार्य समता से रहित श्रमण के लिए क्या करेंगे?

**विरदो सव्वसावज्जे, तिगुत्तो पिहिदिंदिओ ।**

**तस्स सामाइगं ठाई, इदि केवलिसासणे ॥ (125)**

जो संपूर्ण सावद्य योग से विरत, तीन गुप्ति से सहित, और इन्द्रियों को संवृत करने वाले है, उनके स्थायी सामायिक है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

---

जो समो सव्वभेदेसु, थावरेसु तसेसु वा ।

तस्य सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे ॥ (126)

जो स्थावर और त्रस जीवों के प्रति, समस्वभावी है, उसके सामायिक स्थायी है ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

जस्स सणिणहिदो अप्पा, संजमें णियमे तवे।

तस्स सामाङ्गं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ (127)

जिसकी आत्मा संयम में, नियम में और तप में निकट है उसके सामायिक व्रत स्थायी है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

जस्स रागो दु दोसा दु , विगडि ण जणेइ दु।

तस्स सामाङ्गं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ (128)

जिनके राग और द्वेष विकृति को उत्पन्न नहीं करते हैं उनके सामायिक व्रत स्थायी है, ऐसा भगवान् केवली के शासन में कहा है।

जो दु अट्टं च रूढं च, ज्ञाणं वज्जेदि णिच्चसा ।

तस्स समाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे ॥ (129)

जो आर्त तथा रौद्र ध्यान को नित्य ही छोड़ देते हैं, उनके सामायिक स्थायी है ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

जो दु हस्सं रई सोगं, अरदिं वज्जेदि णिच्चसा ।

तस्स सामाङ्गं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ (131)

जो दुगंछा भयं वेदं, सव्वं वज्जेदि णिच्चसा ।

तस्स समाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे ॥ (132)

जो हास्य, रति, शोक और अरति को नित्य ही छोड़ देता है, उसके सामायिक स्थायी होता है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है। जो जुगुप्सा, भय और सभी वेद को नित्य ही छोड़ देता है, उसके सामायिक व्रत स्थायी है, ऐसा केवली भगवान् के शासन में कहा है।

जो दु धम्मं च सुक्कं च, ज्ञाणं ज्ञाएदि णिच्चसा ।

तस्स सामाङ्गं ठाई, इदि केवलिसासणे ॥ (133)

जो साधु धर्म और शुक्ल ध्यान को नित्य ही ध्याता है उसके सामायिक स्थायी होता है, ऐसा भगवान् केवली के शासन में कहा गया है।

जब सम्यक् दर्शन की उपलब्धि हो जाती है तब वस्तु स्वरूप का ज्ञान हो जाता है तथा जब राग-द्वेष क्षीण होता जाता है जब विषमता भी क्षीण हो जाती है। जब अंतरंग में इस प्रकार निर्मल समरसी भाव आ जाता है तब उसका प्रभाव बाह्य जगत् में भी पड़ता है इसलिए वह बाह्य द्रव्यों से प्रभावित नहीं होता है। अतः उसके लिए न कोई शत्रु रहता है और न ही कोई मित्र होता है न कोई अपना रहता है न कोई पराया रहता है। उसके लिए न तो कोई बाह्य लाभ स्वरूप है और न ही कोई बाह्य हानि स्वरूप है। वह तो समस्त विषयों से तटस्थ प्रज्ञ, औदासीन्य, वीतरागी-वीतद्वेषी साम्यभावी बन जाता है। जिस प्रकार नदी के तीर में बैठा हुआ व्यक्ति नदी के स्रोत से न बहता है न ही नदी के जलचर हिंस्र पशु उसे क्षति भी पहुँचा सकते हैं। पूज्यपाद स्वामी ने कहा भी है-

**क्षीयन्तेऽनैव रागाद्यास्तत्त्वतो मां प्रपाश्यतः।**

**बोधात्मानं ततः कश्चित् में शत्रुर्न च प्रियः ॥ (25)**

जब तक यह जीव अपने निजानन्दमयी स्वाभाविक निराकुलता रूप सुधामृत का पान नहीं करता तब तक ही वह बाह्य पदार्थों को भ्रम से इष्ट अनिष्ट मानकर उनके संयोग-वियोग के लिए सदा चिंतित रहता है। जो उस संयोग-वियोग के साधक होते हैं उन्हें अपना शत्रु मित्र मान लेता है, किन्तु जब आत्मा प्रबुद्ध होकर यथार्थ वस्तुस्थिति का अनुभव करने लगता है तब रागद्वेषादिरूप विभाव परिणति मिट जाती है और इसलिए बाह्य सामग्री के साधक बाधक कारणों में उसके शत्रु-मित्र का भाव नहीं रहता तो उस समय अपने ज्ञानानन्दस्वरूप में मग्न रहना ही सर्वोपरि समझता है।

**मामपश्यन्नयं लोको न में शत्रुर्न च प्रियः।**

**मां प्रपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥ (26)**

आत्मज्ञानी विचारता है कि शत्रु-मित्र की कल्पना परिचित व्यक्ति में ही होती है अपरिचित व्यक्ति में नहीं। ये संसार के बेचारे अज्ञप्राणी जो मुझे देखते जानते ही नहीं मेरा आत्मस्वरूप जिनके चर्मचक्षुओं के अगोचर है वे मेरे विषय में शत्रु-मित्र की कल्पना कैसे कर सकते हैं और जो मेरे स्वरूप को जानते हैं वे मेरे शुद्धात्म स्वरूप का साक्षात् अनुभव करते हैं वे मेरे शत्रु व मित्र कैसे बन सकते हैं? इस प्रकार अज्ञ व विज्ञ दोनों ही प्रकार के जीव मेरे शत्रु या मित्र नहीं हैं।

---

अचेतनमिदं दृश्यमयदृश्यमचेतनं ततः ।

कृष्यामि तुष्यामि मध्यस्थोऽह भावम्यतः ॥

अंतरआत्मा को अपने अनाद्यन्त अवद्यरूप भ्रान्त संस्कारों पर विजय प्राप्त करने के लिए सदा ही यह विचार करते रहना चाहिए कि न पदार्थों को मैं इन्द्रियों के द्वारा देख सकता हूँ वे सब जो जड़ है, चैतन्य पदार्थ से रहित है उन पर रोष करना व्यर्थ है वे उसे कुछ समझ नहीं सकते, जो चैतन्य पदार्थ है वे दिखायी नहीं पड़ते वे मेरे रोषतोष का विषय हो ही नहीं सकते। अतः मुझे किसी से राग-द्वेष न रखकर माध्यस्थ भाव को ही अवलम्बन कर लेना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने भी समता का वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

सेलो यथा एकघनो वातेन न समीरति ।

एवं निंदापसंसासु न सामिञ्जन्ति पण्डिता ॥ (6)

जैसे ठोस पहाड़ हवा से नहीं डिगता वैसे ही पंडित निंदा और प्रशंसा से नहीं डिगते।

सब्वत्थ वे सप्पुरिसा त्यजन्ति न काम कामा लपयन्ति सन्तो।

सुखेन पुट्टा अथवा दुखेन न अच्चावचं पंडित दस्सयंति ॥ (8)

सत्यपुरुष सभी (द्वंद्व-राग आदि) को त्याग देते हैं, वे काम-भोगों के लिए बात नहीं चलाते। सुख मिले या दुःख विकार नहीं प्रदर्शन करते।

मा पियोहि समागच्छि अप्पियेहि कुदाचनं।

पियानं अदस्सन दुख्खं अप्पिनानंच दस्सनं ॥ (2)

प्रियो का संग न करे और न कभी अप्रियो का, प्रियो को न देखना दुःखद है और अप्रियो का देखना।

वाहितपापोति ब्रह्मणो समचरिया समणोति बुच्चति।

पब्बाजयमत्तनो मलं तस्मा पब्बोजित्तोति वुच्चति ॥ (6)

जिसने पाप को धोकर बहा दिया है वह ब्राह्मण है जो समता का आचरण करता है वह श्रमण है, (चूँकि) उसने अपने (चित्त) मलों को हटा दिया इसलिए वह प्रब्रजित कहा जाता है।

समता को हर तीर्थकर ने अधिक महत्व दिया है। इसलिए तो बीच के 22 तीर्थकरो ने मात्र सामायिक चारित्र का ही शिष्यों के लिए प्रतिपादन किया था।

---

क्योंकि सामायिक में ही समस्त मूलगुण-उत्तरगुण चारित्र रत्नत्रय, दशलक्षणधर्म, बाईस परीषह जय गर्भित हैं। इसलिए अमृतचंद्र सूरि ने श्रावकों के लिए भी सामायिक अधिक से अधिक करने के लिए प्रेरित किया है। यथा-

**रागद्वेषत्यागन्निखिलद्रव्येषु साम्यवलम्ब्य ।**

**तत्त्वोपलब्धिमूल बहुशः सामयिकं कार्यं ॥ (48) (पु.सि.पृ. 176)**

समस्त सोना-चाँदी और तृणादिक तथा शत्रु मित्र महल श्मशान आदि द्रव्यों में राग-द्वेष का त्याग कर देने से समताभाव धारण करके तत्त्व प्राप्ति का मूल कारणभूत सामायिक अधिक रूप से करना चाहिए।

सम् उपसर्ग पूर्वक गति (जाना) अर्थ वाली इण् धातु से समय बनता है। सम् का अर्थ एकीभाव है, अय का अर्थ गमन है, जो एकीभाव रूप से गमन किया जायें उसे समय कहते हैं उसका जो भाव है उसे सामायिक कहते हैं। अर्थात् जो आत्मा को समस्त मन, वचन, काय की इतर वृत्तियों से रोकर निश्चित एक ध्येय की ओर लगा दिया जाता है वही सामायिक कहलाता है।

विपरीत परिस्थिति में, समस्या में, परीक्षा की घड़ी में जो विचलित हो जाता है वह प्रगति नहीं कर सकता है, ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता है। उसमें दृढ़ता नहीं आ सकती है, अनुभव नहीं कर सकता है, ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकता है। जिस प्रकार अशुद्ध सुवर्ण को अग्नि से तपाने पर उसकी अशुद्धता निकल जाती है उसी प्रकार जो सुख-दुःख, अनुकूल प्रतिकूल, लाभ-अलाभ रूपी अग्नि से तपता है तब वह शुद्ध हो जाता है परिपक्व हो जाता है। इसलिए विषमता से भयभीत नहीं होना चाहिए, पलायन नहीं करना चाहिए। उस समय अधिक से अधिक समता रखना चाहिए आत्मा का ध्यान रखना चाहिए। कहा भी है-

**अदुःखभावितं ज्ञानं क्षीयते दुःखसन्निधौ ।**

**तस्माद्यथाबलं दुःखैरात्मनं भावयेन्मुनिः ॥ (102) स.पृ 112**

जो भेद विज्ञान दुःखों की भावना से रहित है-उपार्जन के लिए कुछ कष्ट उठाए बिना ही सहज सुकुमार उपाय द्वारा बन जाता है वह परीषह उपसर्गादिक दुःखों के उपस्थित होने पर नष्ट हो जाता है। इसलिए अंतरआत्मा योगी को अपनी शक्ति के अनुसार दुःखों के साथ आत्मा की शरीरादि से भिन्न भावना करनी चाहिए।

---

उत्तराध्ययन में समता का सविस्तार वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

**चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्सभिक्षुणो।**

**पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए ॥ (15) पृ 75**

पुत्र और पत्नी और गृह व्यापार से मुक्त भिक्षु के लिए न कोई वस्तु प्रिय होती है और न कोई अप्रिय-

**पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य।**

**सब्धिन्तर-बहिरओ तवोकम्मसि उज्जुओ ॥ (88) पृ 198**

पंच महाव्रतों से युक्त, पाँच समितियों से सहित, तीन गुप्तियों से गुप्त, आभ्यंतर और बाह्य तप में उद्यत-

**निम्ममोनिरहंकारोनिस्संगोचत्तगारवो।**

**समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥ (89)**

ममत्वरहित, अहंकार रहित, संगरहित, गौरव का त्यागी, त्रस तथा स्थावर सभी जीवों में समदृष्टि-

**लाभालाभेसुहेदुक्खेजीवविएमरणेतहा।**

**समो निन्दा पसंसासु तहा माणावमाणओ।। (90)**

लाभ में, अलाभ में, सुख में, दुःख में, मरण में, निन्दा में, प्रशंसा में और मान अपमान में समत्व का साधक-द्रव्य संग्रह में कहा है-

**वदसमिदीगुत्तीओं धम्माणुपेहा परीसहजओ य।**

**चारित्तं बहुभेया णायव्वा भावसंवरविसेसा ॥ (35)**

पाँच व्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति, दश धर्म, बारह अनुप्रेक्षा, बाईस परीषहों का जय तथा अनेक प्रकार का चारित्र इस प्रकार ये सब भाव संवर के भेद जानने चाहिये।

## **निर्जरा और संवर का कारण**

**तपसा निर्जरा च। (3)**

By penance (austerity) dissociation also.

By austerities is caused shedding of karmic matter and (also stoppage of inflow)

---

## तप से संवर और निर्जरा होती है।

यद्यपि तप दस धर्मों में अंतर्भूत है फिर भी विशेष रूप से निर्जरा का कारण बताने के लिए अर्थात् तप भी निर्जरा का कारण है, इस बात को निरूपित करने के लिए तप का पृथक् ग्रहण किया गया है।

अथवा, सर्व संवर के हेतुओं में तप ही प्रधान हेतु है इसका ज्ञान कराने के लिए तप को पृथक् ग्रहण किया गया है।

संवर निमित्त के समुच्चय के लिए 'च' शब्द का प्रयोग किया है। 'च' शब्द तप संवर का हेतु भी होता है। इस संवरहेतुता का समुच्चय करता है, क्योंकि तप के द्वारा नूतन कर्मबंध रुककर पूर्वोपार्जित कर्मों का क्षय भी होता है। अतः तप अविपाक निर्जरा का कारण है। अर्थात् तप से अविपाक निर्जरा होती है इस प्रकार तप के जातीयत्व होने से ध्यानों के भी निर्जरा का कारणत्व प्रसिद्ध है।

**प्रश्न** - तप निर्जरा का कारण नहीं है, क्योंकि तप को तो देवेन्द्रादि के अभ्युदय स्थान की प्राप्ति का कारण कहा है?

**उत्तर** - ऐसा कहना उचित नहीं है क्योंकि एक ही कारण से अनेक कार्य होते हैं अर्थात् एक ही कारण से अनेक कार्यों का आरम्भ-प्रारंभ देखा जाता है। जैसे एक ही अग्नि पाक, विक्लेदन और भस्म करना आदि अनेक कार्य करती है वैसे ही तप अभ्युदय का विधान और कर्मों का क्षय करता है, इसमें क्या विरोध है? अर्थात् तप से सांसारिक अभ्युदय और मुक्ति दोनों प्राप्त होते हैं, इसमें कोई विरोध नहीं है।

किसान की खेती के समान गौण और प्रधानता से फल की प्राप्ति होती है अथवा जैसे किसान मुख्य रूप से धान्य के लिए खेती करता है, गौण रूप पलाल (घास) तो उसे अनायास प्राप्त हो जाता है। उसी प्रकार मुनिराज की तपक्रिया में प्रधान फल मोक्ष है। अर्थात् गौणता से तप का फल किसान के घास की प्राप्ति के समान है। द्रव्य संग्रह में कहा भी है-

**जह कालेण तवेण य भुत्तरसं कम्मपुग्गलं जेण।**

**भावेण सडदि पोया तस्सडणं चेदि णिज्जरा दुविहा।। (36)**

जिस आत्मा के परिणाम रूप भाव से कर्मरूपी पुद्गल फल देकर नष्ट होते हैं वह तो भाव निर्जरा है और सविपाक निर्जरा की अपेक्षा से यथाकाल अर्थात्

---

काललब्धि रूप काल से तथा अविपाक निर्जरा की अपेक्षा से तप से जो कर्मरूप पुद्गलों का नष्ट होना है सो द्रव्य निर्जरा है।

पंचास्तिकाय प्राभृत में कहा गया है-

**संवरजोगहिं जुदो तवेहिं जो चिट्टदे बहुविदेहिं।**

**कम्माण णिज्जरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं ॥ (144)**

निर्मल आत्मा के अनुभव के बल से शुभ तथा अशुभ भावों का रुकना संवर है। निर्विकल्प लक्षणमयी ध्यान शब्द से कहने योग्य जो शुद्धोपयोग है सो योग है। शुद्धात्मानुभव के सहकारी कारण बाह्य छः प्रकार के तप-अनशन अवमौदर्य वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्तशय्यासन व कायक्लेश हैं तथा प्रायश्चित्त, विनय, वैय्यावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान ये छः तप स्वाभाविक शुद्ध अपने आत्मा के स्वरूप में तपने रूप अभ्यंतर तप हैं। जो साधु संवर और योग से युक्त हो बारह प्रकार तप का अभ्यास करता है वह बहुत से कर्मों की निर्जरा अवश्य कर देता है। यहाँ यह भाव है कि बारह प्रकार तप के द्वारा वृद्धि को प्राप्त जो वीतराग परमानंदमयी एक शुद्धोपयोग सो भाव निर्जरा है। यही भाव द्रव्यकर्मों को जड़मूल से उखाड़ने में समर्थ है। इस शुद्धोपयोग के बल से पूर्व में बाँधे हुए कर्म पुद्गलों का रस रहित होकर संवर पूर्वक एक देश झड़ जाना सो द्रव्य निर्जरा है।

**जो संवरेण जुत्तो अप्पट्टपसाधगो हि अप्पाणं ।**

**मुणिरुण झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्मरयं ॥(145)**

जो कोई शुभ व अशुभ रागादि रूप आस्रव भावों को रोकता हुआ संवर भाव से युक्त है तथा त्यागने योग्य व ग्रहण करने योग्य तत्त्व को समझकर अन्य प्रयोजनों से अपने को हटाकर शुद्धात्मानुभव रूप केवल अपने कार्य को साधने वाला है व जो सर्व आत्मा के प्रदेशों निर्विकार नित्य, आनंदमयी एक आकार में परिणमन करते हुए आत्मा को रागादि विभाव भावों से रहित स्वसंवेदन ज्ञान के द्वारा जानकर निश्चल आत्मा की प्राप्ति रूप निर्विकल्प रूप ध्यान से निश्चय से गुण-गुणी के अभेद से विशेष भेदज्ञान में परिणमन स्वरूप ज्ञानमई आत्मा को ध्याता है सो परमात्म ध्यान को ध्याने वाला कर्मरूप रज की निर्जरा करता है। वास्तव में ध्यान ही निर्जरा का कारण है ऐसा इस सूत्र में व्याख्यान किया गया है यह तात्पर्य है।

---

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व जोगपरिकम्मो ।

तस्स सुहासुहडहणो झाणमओ जायए अगणी ॥ (146)

शुद्ध स्वरूप में अविचलित चैतन्य परिणति सो यथार्थ ध्यान है। इस ध्यान के प्रगट होने की विधि अब कही जाती है-

जब वास्तव में योगी, दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय का विपाक पुद्गल कर्म होने से उस विपाक को (अपने से भिन्न ऐसे अचेतन) कर्मों से संकुचित करे, तदनुसार परिणति से उपयोग को व्यावृत्त करके (उस विपाक के अनुरूप परिणमन में से उपयोग का निवर्तन करके) मोही, रागी और द्वेषी न होने वाले ऐसे उस उपयोग को अत्यन्त शुद्ध आत्मा में ही निष्कंप रूप से लीन करता है, तब उस योगी को जो कि अपने निष्क्रिय चैतन्य रूप स्वरूप में विश्रांत है, वचन-मन-काय को नहीं भाता (अनुभव करता) और स्वकर्मों में व्यापार नहीं करता उस-सकल शुभाशुभ कर्मरूप ईंधन को जलाने में समर्थ होने से अग्नि समान ऐसा, परम पुरुषार्थ की सिद्धि का उपाय भूत ध्यान प्रगट होता है।

## गुप्ति का लक्षण

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः। (4)

Curbing activity well is control. गुप्ति Prevention is proper control nigrahaover mind मन speech वचन and body काय।

योगों का सम्यक् प्रकार निग्रह करना गुप्ति है।

उस मन-वचन, काय को यथेच्छ विचरण से रोका जाता है, उसको निग्रह कहा जाता है। मन वचन-काय रूप योग का निग्रह योग निग्रह कहा जाता है।

इसका 'सम्यक्' यह विशेषण सत्कार, लोकपंक्ति आदि आकांक्षाओं की निवृत्ति के लिये है। पूजा पुरस्सर क्रिया सत्कार कहलाती है, 'यह संयत महान् है' ऐसी लोक प्रसिद्धि लोकपंक्ति है। इस प्रकार और भी इहलौकिक फल की आकांक्षा आदि का उद्देश्य न लेकर तथा पारलौकिक सुख की आकांक्षा न करके किया गया योगों का निग्रह गुप्ति कहलाता है। उसका ज्ञान कराने के लिये सम्यक् विशेषण दिया गया है।

---

इसलिये कायादि के निरोध होने से तत् निमित्तक कर्मों के रुक जाने से गुप्ति आदि में संवर की प्रसिद्धि है ही अर्थात् सम्यग्विशेषण विशिष्ट, संक्लेश परिणामों के प्रादुर्भाव से रहित कायादियोगों का सम्यक् प्रकार निरोध हो जाने पर काय-वचन-मन रूप योग के निमित्त से होने वाले, आने वाले कर्मों का आस्रव रुक जाना ही संवर है, कर्मों का आना रुक जाना ही संवर है, ऐसा जानना चाहिये। गुप्ति तीन प्रकार की है- मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति।

## वह शिक्षा मुझे नहीं चाहिए...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. इस देश में गांधी... 2. इस देश में तू .... 3. छू लेने दो... )

वह शिक्षा मुझे नहीं चाहिए, जिस शिक्षा से न मिले सर्वोदय ।  
तोता स्टंट नकलची शिक्षा, जिससे न होता ज्ञानोदय ॥ (धु.)

वह शिक्षा ही मुझे चाहिए, जिससे हो तन-मन-आत्मा स्वस्थ ।  
बौद्धिक विकास के ही साथ-साथ दृढता, धैर्य का हो विकास॥  
भौतिकता से परे नैतिक वृद्धि, दीन-हीन-दंभ परे 'सोऽहं अहं प्राप्ति॥ (1)

अन्यथा शिक्षा न होती सही उपकारी, एकांगी शिक्षा होती अहितकारी।  
दोनों पैर जब न होते एक समान, चलना आदि में न होता सन्तुलन ।  
एकांगी शिक्षा होती असन्तुलित, जीवन होता है अव्यवस्थित ॥ (2)

ऐसी शिक्षा से ने मिले आत्मानुशासन, संयम दृढता धैर्य व आत्मज्ञान ।  
दयादान सेवा व परोपकार त्याग, संवेदनशीलता व क्षमादि भाव ।  
उदार सहिष्णुता व आत्मानुभव, स्व-पर विश्वहितकर पावन भाव ॥ (3)

जिससे लक्ष्य होता संकीर्ण स्वार्थपूर्ण, फैशन-व्यसन आलस्य लेते जन्म।  
दीन-हीन-अहंकार भी होते उत्पन्न, शोषण मिलावट भ्रष्टाचार उत्पन्न।

---

हिताहित विवेक शून्य दंभपूर्ण ज्ञान, नैतिक-आत्मिक शून्य भौतिक ज्ञान ॥ (4)

इससे न मिले सत्य-साम्य-सुख, प्रेम-संगठन-सहयोग-सौम्य ।

अन्त्योदय-सर्वोदय अतः न संभव, तनाव-विषमता होते उत्पन्न।

अतः ऐसी शिक्षा मुझे न चाहिए, 'कनक' को सर्वोदय शिक्षा ही चाहिए ॥ (5)

सीपुर - 14.02.2017 रात्रि - 10.42

“ हमारा कर्तव्य है कि हम सभी को अपने उच्च विचारों से जीने के संघर्ष में प्रोत्साहित करें और कोशिश करें वह विचार सत्य के अधिक नजदीक हो।”

-स्वामी विवेकानन्द

## तंबाकू का कहर ....

### धूम्रपान न करने के विज्ञापन नजर अंदाज करते हैं युवा

स्वास्थ्य मंत्रालय और सलाम बॉम्बे फाउंडेशन के हालिया अध्ययन से पता चला है कि फिल्म और टीवी में तंबाकू निषेध संबंधी विज्ञापन दिखाने का असर बेहद कम होता है।

- 2012 में फिल्म शुरू होने से पहले तंबाकू निषेध संबंधी विज्ञापन दिखाने का नियम बना था
- 35 प्रतिशत युवा किसी न किसी तरह के तंबाकू उत्पाद का उपयोग करते हैं देश में।
- 15 और इससे अधिक की उम्र के युवाओं पर किया गया अध्ययन
- 60 प्रतिशत युवा धूम्रपान निषेध का विज्ञापन नहीं देखते गौर से
- 72 प्रतिशत युवा ऐसे विज्ञापनों के वक्त करते रहते हैं बातचीत
- 40 प्रतिशत युवा विज्ञापन की बातों को नहीं लेते गंभीरता से
- 20 करोड़ से ज्यादा भारतीय धूम्रपान के अलावा अन्य तरह के तंबाकू उत्पाद का उपयोग करते हैं।

---

## एशिया - प्रशांत में सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार को लेकर ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट

घूस देने में हम पाकिस्तान, कंबोडिया समेत 16 देशों से आगे,  
जापान में सबसे कम भ्रष्टाचार

सरकारी दफ्तरों में काम करवाने के लिए रिश्वत देने में भारत के लोग एशिया में सबसे आगे हैं। यहाँ लोगों को किसी न किसी रूप में रिश्वत देनी ही पड़ती है। यह जानकारी भ्रष्टाचार पर काम करने वाले ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की मंगलवार को जारी रिपोर्ट में सामने आई है, इसके मुताबिक एशिया प्रशांत क्षेत्र में रिश्वत के मामले में भारत शीर्ष पर है, जबकि जापान सबसे कम भ्रष्ट है। 69 प्रतिशत भारतीयों ने माना है कि काम करवाने के लिए उन्हें सरकारी दफ्तरों में रिश्वत देनी पड़ी। एशिया प्रशांत में 16 देशों के 90 करोड़ लोगो ने इस बात को माना है कि उन्हें कम से कम एक बार रिश्वत देनी ही पड़ी है। जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग और ऑस्ट्रेलिया में घूसखोरी के मामले सबसे कम रहे। सर्वे में लोगों से पूछा गया था कि उन्होंने कितनी बार रिश्वत दी, किस रूप में दी, किसे दी और क्यों रिश्वत दी।

रिश्वतखोरी में भारत एशिया में अक्वल, पिछले साल 10 में से 7 लोगों को देनी पड़ी घूस, पुलिस सबसे भ्रष्ट रिश्वतखोरी खाना छीनती है, शिक्षा स्वास्थ्य सुविधा रोकती हैं और जान भी ले सकती है

रिश्वत देने में हम सबसे आगे

भारत में पिछले साल 69 प्रतिशत लोगों को अपना काम करवाने के लिए अफसरों को घूस खिलानी पड़ी। इस मामले में हम पाकिस्तान, श्रीलंका, जापान जैसे देशों से भी आगे हैं। पाकिस्तान में सिर्फ 40 प्रतिशत लोगों ने रिश्वत देने की बात मानी है।

देश

रिश्वत दी

भारत

69 प्रतिशत

---

वियतनाम	65 प्रतिशत
थाईलैण्ड	41 प्रतिशत
पाकिस्तान	40 प्रतिशत
इंडोनेशिया	32 प्रतिशत

### भारत में पुलिस ज्यादा, जज कम भ्रष्ट

सर्वे में शामिल 85 प्रतिशत भारतीयों ने पुलिस को सबसे ज्यादा भ्रष्ट बताया है। इन लोगों ने कहा कि पुलिस में कुछ अथवा सभी भ्रष्ट है। इसके बाद अन्य सरकारी अधिकारी, कारोबारी, स्थानीय पार्षद, सांसद और टैक्स अधिकारी भी इसमें शामिल हैं। 10 में से करीब 7 लोगों ने जज या मजिस्ट्रेट को भ्रष्ट बताया है।

विभाग या पद	भ्रष्ट मानने वाले
पुलिस	85 प्रतिशत
अन्य अधिकारी	84 प्रतिशत
कारोबारी	79 प्रतिशत
पार्षद	78 प्रतिशत
सांसद	76 प्रतिशत
टैक्स अधिकारी	74 प्रतिशत
धार्मिक नेता	71 प्रतिशत
जज	66 प्रतिशत

### 41 प्रतिशत ने कहा देश में भ्रष्टाचार बढ़ा

सर्वे में शामिल 10 में से 4 भारतीयों ने कहा कि पिछले एक साल में देश में भ्रष्टाचार बढ़ा है। चौकाने वाली बात यह है कि पाकिस्तान इस मामले में हमसे पीछे हैं। वहां 35 प्रतिशत लोगों ने भ्रष्टाचार बढ़ने की बात मानी है। इस मामले में चीन सबसे ऊपर है। वहां 73 प्रतिशत लोगो ने भ्रष्टाचार बढ़ने की बात कही है। 53 प्रतिशत भारतीयों ने यह भी कहा कि सरकार भ्रष्टाचार से बेहतर तरीके से निपट रही है।

वहाँ भ्रष्टाचार बढ़ा		यहाँ भ्रष्टाचार कम	
देश	लोग	देश	लोग
चीन	73 प्रतिशत	थाईलैंड	14 प्रतिशत
इंडोनेशिया	65 प्रतिशत	श्रीलंका	21 प्रतिशत
मलेशिया	59 प्रतिशत	म्यांमार	22 प्रतिशत
वियतनाम	56 प्रतिशत	ताइवान	26 प्रतिशत
द. कोरिया	50 प्रतिशत	जापान	28 प्रतिशत

- 63 प्रतिशत भारतीयों ने माना कि सामान्य व्यक्ति भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई से महत्वपूर्ण अंतर ला सकता है।
- 55 प्रतिशत भारतीयों ने कहा कि वे भ्रष्टाचार का सबूत देने के लिए दिन भर कोर्ट में खड़े रह सकते हैं।
- 38 प्रतिशत लोगों ने (गरीब तबके के) कहा कि उन्हें रिश्तत देनी पड़ी। यह किसी भी आय वर्ग में सबसे ज्यादा है।

संदर्भ :-

जेण त्वां बिबुज्जेज्ज जेण चितं गिरूज्जादि ?

जेण अता विसुज्जेज्ज तं णाणं जिण सासणे ॥ 267॥ (मूलाचार)

जिससे तत्त्व का बोध होता है जिससे मन का निरोध होता है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है। जिसके द्वारा वस्तु का यथार्थ स्वरूप जाना जाता है जिसके द्वारा मन का व्यापार रोका जाता है अर्थात् मन अपने वश में किया जाता है, जिसके द्वारा आत्मा शुद्ध हो जाती है, जीव वीतराग हो जाता है वह ज्ञान जिनशासन में प्रमाण अर्थात् विपर्यय, अनध्यवसाय और अकिंचित्कर से रहित है।

जेण रागा विरज्जेज्ज णेण सेएसु रज्जदि।

जेण मित्तीं पभावेज्ज तं णाणं जिणसासने ॥ 269॥ (मूलाचार)

जिसके द्वार जीव राग से विरक्त होता है, जिसके द्वारा मोक्ष में राग करता है, जिसके द्वारा मैत्री को भावित करता है जिन शासन में वह ज्ञान कहा गया है।

जिसके द्वारा जीव राग-स्नेह से और काम-क्रोध आदि से विरक्त होता है-

---

पहाड़मुख होता है और जिसके द्वारा मोक्ष में अनुरक्त होता है, जिसके द्वारा मैत्री भावना अर्थात् द्वेष का अभाव करता है जिन शासन में वही ज्ञान है। तात्पर्य यह हुआ।

अतत्त्व में तत्त्व बुद्धि, अदेव में देवता अभिप्राय, जो आगम नहीं है उनमें आगम की बुद्धि, अचारित्र में चारित्र की बुद्धि और अनेकान्त में एकान्त की बुद्धि यह ज्ञान अज्ञान है।

**णाणी गच्छदि णाणी वंचदि णाणी णवं च णादियदि।**

**णाणेण कुणदि चरणं तद्वा णाणे हवे विणओ ॥ 580 ॥ (मूलाचार)**

ज्ञानी जानता है, ज्ञानी छोड़ता है और ज्ञानी नवीन कर्म को नहीं ग्रहण करता है। ज्ञान से चारित्र का पालन करता है इसलिये ज्ञान में विनय होवे।

यस्माज्ज्ञानी गच्छति मोक्षं जानाति वा गतेज्ञानगमन प्राप्त्यर्थकत्वात् यस्माच्च ज्ञानी वंचति, परिहरति पापं यसस्याच्च ज्ञानी नव कर्म न ददाति न बध्यते कर्माभिरिति यस्माच्च ज्ञानेन करोति चरणं चारित्रं तस्माच्च ज्ञान भवति विनय कर्तव्य इति।

जिस हेतु से ज्ञानी मोक्ष प्राप्त करता है अथवा जानता है गति अर्थ वाले धातु ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ वाले होते हैं, ऐसा व्याकरण का नियम है। अतः यहाँ गच्छति का जानना और प्राप्त करना अर्थ किया है। जिससे ज्ञानी पाप की वंचना-परिहार करता है और नवीन कर्मों से नहीं बंधता है तथा ज्ञान से चारित्र को धारण करता है इसीलिये ज्ञान में विनय करना चाहिए।

**णाणं सिक्खदि णाणं गुणेदि णाणं परस्स उवदिसदि ।**

**णाणेण कुणदि णाणं णाणं विणीदो हवदि एस्सो ॥ 368 ॥ (मूलाचार)**

ज्ञान शिक्षित करता है, ज्ञान गुणी बनाता है, ज्ञान पर को उपदेश देता है ज्ञान से न्याय किया जाता है। इस प्रकार यह जो करता है वह ज्ञान से विनम्र होता है।

ज्ञान विद्या को प्राप्त कराता है। ज्ञान अवगुण को गुण रूप से परिवर्तित करता है। ज्ञान पर को उपदेश का प्रतिपादन करता है। ज्ञान न्याय-सत्यवृत्ति करता है जो ऐसा करता है वह ज्ञान विनीत होता है।

**न हि सम्यग्व्यपदेशं चारित्रमज्ञान पूर्वकं लभते ।**

**ज्ञानान्तरमुक्तं चारित्राराधनं तस्मात् ॥35॥ पुरुषार्थ।**

अज्ञानपूर्वक चारित्र सम्यक् चारित्र नहीं होता है। इसीलिये सम्यक्ज्ञान के

---

अनन्तर-चारित्राराधना का कथन किया गया है।

‘नाणम्मि असंतमि चरित्रं वि न विज्जए।’

व्यवहार भाष्य 1-2-7

जहाँ ज्ञान नहीं, वहाँ चारित्र भी नहीं रहता।

सव्व जगुज्जोयकरं णाणं, णाणेण णज्जए चरणं।।

व्यवहार भाष्य 7-2-6

ज्ञान विश्व के समस्त रहस्यों का प्रकाशित करने वाला है। ज्ञान से ही मनुष्य को कर्तव्य का बोध होता है।

“सुयस्स आराहणपाए णं अन्नाणं खवेई वदे।”

उत्तराध्ययन 29-99

ज्ञान की आराधना करने से आत्मा अज्ञान का नाश करता है।

विणाणेणं समागम्म धम्मसाहणमिच्छिउं।

उत्तराध्ययन 23-3

विज्ञान के द्वारा धर्म के साधनों का उचित निर्णय करना चाहिए।

पढमं नाणं तओ दया एवं चिद्वई सव्वसंजए ।

अज्जत्राणी किं काही किंवा वाहिइ छेय पावठाँ।।

दर्शवैकालिक 4-10

पहले सम्यग्ज्ञान होना चाहिए उसके उपरांत सम्यग्ज्ञान के अनुसार दया पालन करना चाहिए अर्थात् सम्यक्चारित्र पालन करना चाहिए। इसी प्रकार चारित्र सम्पूर्ण संयमियों का आचरण करने योग्य है। अज्ञानी कभी इस प्रकार श्रेय (आचरणीय) पापात्मक अश्रेय को नहीं जान सकता है अर्थात् बिना ज्ञान करणीय-अकरणीय का विवेक नहीं होने से अज्ञानी यथार्थ चारित्र पालन नहीं कर सकता है। इसलिये कहा है-

“बिन जाने ते दोष गुणन को कैसे तजिये गहिये।”

सम्यग्ज्ञान की महानता का वर्णन करते हुए अमृत कलश में बताते हैं कि-

भेद विज्ञानतः सिद्धा सिद्ध ये किल केचन-

तस्यैवाभावतो बद्धा-बद्धा ये किल केचन ॥7॥

जो अनन्तानंत सिद्ध हुए हैं वे सब भेद विज्ञान से सिद्ध हुए हैं। जो बंधे

---

हुए हैं वे भेद विज्ञान के अभाव के कारण बंधे हुए हैं। इसलिये कविवर दौलतरामजी ने छहढाला में कहा है-

ज्ञान समान न आज जगत् में सुख को कारण।  
इह परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारण।। चतुर्थढाल  
आत्म हित के लिए सम्यग्ज्ञान की उपासना  
इत्याश्रित-सम्यक्त्वैः सम्यग्ज्ञानं निरूप्य यत्नेन।  
आम्नाय युक्ति-योगैः समुपास्यं नित्यमात्महितैः॥३१॥

सम्यक्त्व का ज्ञान करके यहाँ पर ज्ञान स्वरूप का व्याख्यान कर रहे हैं। पुनः आत्मा के हित के लिए आत्महिताकाक्षियो को सदैव सम्यग्ज्ञान का सम्यक् रूप से सेवन करना चाहिए। प्रयत्न रूप से अष्टांग लक्षण सहित सम्यक्त्व से युक्त होकर आत्महित के लिए आम्नाय अर्थात् सर्वज्ञ के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त की परम्परा तथा युक्ति से सहित होकर सम्यग्ज्ञान की सेवा अर्थात् प्राप्ति करनी चाहिए।

न्याय ग्रन्थ के रचयिता आचार्य श्री माणिक्य नंदी ने इसी सत्य को ज्ञान रूप से उजागर किया है।

हिताहित प्राप्ति परिहार समर्थ हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत्।

जिससे हित की प्राप्ति, अहित का परिहार होता है वह प्रमाण है जो कि सम्यग्ज्ञान स्वरूप है।

“अज्ञान निवृत्तिनोपादानोपेक्षाश्च फलम्” (परीक्षामुख)

अज्ञान की निवृत्ति, अहित का त्याग, हित की प्राप्ति, वीतराग स्वरूप निरपेक्षरूप समता भाव, यह सम्यग्ज्ञान का फल है।

**दर्शन और ज्ञान में भेद**

पृथगाराधनमिष्टं, दर्शन-सहभाविनोऽपि बोधस्य।

लक्षण-भेदेन यतो, नानात्वं संभावत्यनयोः ॥३२॥

सम्यक्दर्शन सहभावि अर्थात् सह-उत्पादन ज्ञान होते हुए भी ज्ञान की आराधना अर्थात् सेवन पृथक् से करना इष्ट है। जब सम्यक्दर्शन होता है तभी सम्यक्ज्ञान होता है। अतः व्यवहार अपेक्षा से लक्षण भेद से दोनों सम्यक्दर्शन तथा सम्यक्ज्ञान में भिन्नत्व संभव होता है, सम्यक्दर्शन एवं सम्यक्ज्ञान के लक्षण में भिन्नता पाई जाती है। इसलिए सम्यक्दर्शन एवं सम्यक्ज्ञान दोनों भिन्न हैं।

---

दोनो में कार्य-कारण का भाव

सम्यग्ज्ञान कार्य, सम्यक्त्वकारण वदन्ति जिनाः।

ज्ञानाराधनमिष्टं सम्यक्त्वानन्तरं तस्मात् ॥33॥

सर्वज्ञ भगवान् ने बताया है कि सम्यक्त्व कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है क्योंकि पूर्व भावि कारण है पश्चात् भावि कार्य है। इसलिए सम्यक्दर्शन को कारण कहा गया है तथा सम्यक्ज्ञान को कार्य कहा गया है। अतएव सम्यक्त्व के बाद ज्ञान की आराधना वांछनीय है। इस रहस्य को प्रकट करने के लिये यहाँ पर कार्य कारण सिद्धान्त का कथन किया गया है।

समकाल में होने वाले कार्य-कारण का दृष्टान्त

कारण-कार्य-विधानं, समकालं जायमानयोरपि हि।

दीप प्रकाशयोरिव सम्यक्त्व ज्ञानयोः सुघटम् ॥ 34॥

निश्चय से एक ही काल में एक साथ उत्पन्न होन पर भी सम्यक्दर्शन एवं सम्यक् ज्ञान परस्पर कार्य कारण रूप में उत्पन्न होते हैं। उसी को ही दृष्टान्त के द्वारा दृढ करते हैं। जिस प्रकार दीपक को प्रज्वलित करते ही प्रकाश फैलता है एवं अन्धकार दूर होता है। प्रकाश होना एवं अन्धकार दूर होना एक साथ होते हुए भी प्रकाश कारण है एवं अंधकार दूर होना कार्य है, उसी प्रकार सम्यक्दर्शन के कारण ज्ञान सम्यक्ज्ञान होता है। इसलिए सम्यक्दर्शन कारण है एवं सम्यक्ज्ञान कार्य है।

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

कर्तव्योऽध्यवसायः सदनेकान्तात्मकेषु तत्त्वेषु।

संशय -विपर्ययानध्यवसाय विविक्तमात्मरूपं तत् ॥35॥

सम्यक्दृष्टि भव्यों के द्वारा जीवादि तत्त्वों या पदार्थ में अध्यवसाय करना चाहिए। अर्थात् जीवादि पदार्थों का परिज्ञान करना चाहिए- यह परिणाम प्रसिद्ध आत्मा का स्वभाव है। अनेकान्तात्मक अर्थात् अनित्य, नित्य आदि विरोधात्मक अनन्त गुण से युक्त (वस्तु का) परिज्ञान करना चाहिए। इस वस्तु तत्त्व की कथन प्रणाली सप्तभंगी है। आत्मा स्वरूप संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय से रहित है। यह खम्भा है या मनुष्य है इस प्रकार का दुरात्मक ज्ञान संशय है। पदार्थ का विपरीत जानना विपर्यय है। जैसे सीप को चाँदी के रूप में जानना। सम्यक् विचार से रहित

---

अनध्यावसाय ज्ञान है। जैसे-चलते हुए पथिक के पैर में कुछ स्पर्श हुआ। उसे निश्चित ज्ञान नहीं हुआ कि यह स्पर्श घास का हुआ या पत्थर का। इस ज्ञान को अनध्यावसाय ज्ञान कहते हैं। इन तीनों ज्ञान से रहित अनकेान्तात्मक यथार्थ ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं।

सदियों से मानव जाति पारस मणि की तलाश में है जो किसी धातु को सोने में बदल दे। उतने ही समय से तलाश है 'सक्सेस' के बीज मंत्र की।

इसी बीज मन्त्र की तलाश में सन 1912 में मिला आई क्यू...

**ई. क्यू. से आगे हमें ग्रिट की जरूरत**

**क्यों पड़ती है?...**

सदियों से मानव जाति उस पारसमणि की तलाश में है जो किसी धातु को सोने में बदल दे। उतने ही समय से तलाश है 'सक्सेस' के बीज मंत्र की। इसी बीज मंत्र की तलाश में 1912 में मिला आई. क्यू. जो व्यक्ति के इंटेलिजेन्स कोशेंट को जांचता है। यानि यदि व्यक्ति का आई क्यू अधिक है तब वह अधिक 'सक्सेस' पाने के काबिल होता है। इस पर बहुत कुछ लिखा गया, कई संस्थानों ने अपने यहां नौकरी पर एंप्लायी लेने के लिए आई क्यू के टेस्ट लेना शुरू कर दिए। मगर समय के साथ यह पाया गया कि आई क्यू के पैमाने पर खरे उतरने के बावजूद व्यक्ति का वर्क परफोरमेंस ठीक नहीं था। फिर 1980-90 के दशक के आते-आते बात ई क्यू की तरफ मुड़ गई। लेकिन हाल ही में हुए शोध के अनुसार सिर्फ आई क्यू और ई क्यू होना ही काफी नहीं है। शोधकर्ताओं के अनुसार ग्रिट (GRIT) भी जरूरी है। इस शब्दों का हम हिन्दी में अनुवाद करें तो यह दो शब्दों का समावेश है, दृढ़ता और धैर्यता।

बड़े अचीवर्स को हम ले तो पाएंगे कि उन सभी में 'दृढ़ता और 'धैर्यता' यानी ग्रिट एक कॉमन फैक्टर है। यह बड़े नेता जैसे कि महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला से लेकर बड़े खिलाड़ी, बड़े बड़े बिजनेस एम्पायर बनाने वालों जैसे कि स्टीव जॉब्स, सब पर खरा आता है। जेके रोव्लिंग जो कि आर्थिक तंगी और मुश्किल दौर से गुजर रहीं थी उनकी पहली हैरी पॉटर किताब 12 पब्लिशर्स ने रिजेक्ट की थी। आज वह दुनिया की अमीर महिलाओं में से एक हैं। यह सब ग्रिट ही तो है।

---

यह तो तय हुआ कि ग्रिट जरूरी है तो क्या इस ग्रिट को पैदा किया जा सकता है? बिल्कुल किया जा सकता है। शुरूआत करें किसी अच्छी आदत से हर दिन बिना किसी बहाने के एक महीने तक एक्सरसाइज करना। भारत में जो व्रत रखने की परंपरा रही है यह ग्रिट ही तो सिखाती हैं। तो बस आदतों को बदलें, खुद पर विश्वास रखते हुए आगे बढ़ें तो सफलता मिलेगी।

### **प्रयास से लाया जा सकता GRIT**

शोधकर्ता के अनुसार प्रयास करने से हम अपनी मानसिकता और व्यक्तित्व में ग्रिट ला सकते हैं। डकवर्त के अनुसार जैसे हम या हमारा कोई करीबी, प्रयास करते हुए यदि विफल हो जाता है तो अक्सर हम अपने आप को या अपने करीबी को यह कहते हैं, ठीक है, हमने तो अपना बेस्ट दिया था ना'। परंतु इसकी बजाए हमें यह कहना चाहिए हां अबकी बार बात नहीं बनी, चलो देखते हैं कि हमने क्या किया और इसको कैसे बेहतर बनाया जाए जिससे की हम आगे सफल हो।

### **मार्शमेलो टेस्ट**

1960 के दशक में स्टेनपोर्ट साइकॉलाजिस्ट वॉल्टर मिस्वेल ने एक एक्सपरीमेंट किया था जिसका नाम था 'मार्शमेलो टेस्ट' इस टेस्ट ने 4 साल के बच्चों की धैर्य रखने की क्षमता का टेस्ट किया। उनके सामने मार्शमेलो का बाउल रखकर कहा कि यदि आप अभी लेना चाहे तो 1 मार्शमेलो ले सकते हैं ओर यदि 15 मिनट इंतजार करे तो 2 ले सकते हैं। सभी इंतजार करना चाहते थे लेकिन कर नहीं पाए ओर कुछ इंतजार कर पाए। शोध में पाया कि बड़े होने पर उनके स्कोर्स बेहतर थे और उनका खुद पर कंट्रोल था।

### **तीन प्रकार के लोग...**

एक बड़े शोधकर्ता डॉस्टोलज के अनुसार यदि हम जिंदगी को एक ऊँचे पहाड़ की चढ़ाई के समान समझे तो पाएंगे कि आमतौर पर व्यक्तियों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है...

**जिम्मेदारी से भागने वाले :** ऐसे व्यक्ति जो कि शुरू करने से पहले ही ड्रॉप आउट कर जाते हैं।

**बेस कैम्प तक पहुँचने वाले :** यह वह व्यक्ति होते हैं जो कि शुरूआत करते हैं और एक स्थान पर पहुँच कर रुक जाते हैं। यह व्यक्ति पहाड़ पर चढ़ने से

---

बचते रहते हैं, और वहीं के वहीं कैम्प में रह जाते हैं।

**हमेशा आगे बढ़ने वाले :** यह लोग जीवन पर्यन्त आगे बढ़ते रहते हैं तमाम मुश्किलों का सामना करने से नहीं घबराते और दृढ़ता और 'धैर्यता' के साथ आगे बढ़ते हैं।

## **हर तीसरा बच्चा स्कूल में महसूस करता है असुरक्षित**

- दुनिया भर के 6000 बच्चों पर किए गए एक सर्वे के मुताबिक भारत का हर तीसरा बच्चा स्कूल में खुद को असुरक्षित महसूस करता है
- छोटी आवाज, बड़े सपने नामक सर्वे
- 10-12 साल के बच्चों की राय का किया गया अध्ययन
- 28 प्रतिशत भारतीय बच्चे स्कूल में डर महसूस करते हैं

## **सुरक्षा यानी सफाई और सुविधाएँ**

- 21 प्रतिशत विकासशील देशों के छात्र साफ इमारत और सुविधाओं से आँकते हैं सुरक्षा को
- 58 प्रतिशत भारतीय छात्र इमारत और सुविधाओं से ही तय करते हैं सुरक्षा का स्तर
- 46 प्रतिशत छात्र बाहरी लोगों के स्कूल में प्रवेश को भी मानते हैं बड़ा सुरक्षा उपाय

## **कितनी जरूरी शिक्षा**

- 64 प्रतिशत छात्र विकसित देशों में मानते हैं शिक्षा है जरूरी
- 40 प्रतिशत छात्र ही विकासशील देशों के मानते हैं शिक्षा को अहम
- 45 प्रतिशत भारतीय छात्रों ने बताया कि शिक्षा है जरूरी

ये बड़ी विचित्र बात है कि किशोरों को भी तनाव होने लगा है। ज्यों ही उनकी समझ विकसित होती है, कुछ को तनाव घेरने लगता है। मासूमियत की दहलीज पार करते ही

---

उन्हें यह ग्रहण क्यों लग रहा है? इसकी पड़ताल करना जरूरी है...

## कच्चे मन क्यों उलझे हैं?

किस बात को कितना तवज्जो देने की जरूरत है बच्चों को इसकी समझ नहीं। किशोरवय में कदम रखते ही एक साथ कई घटनाएँ उनके जीवन में घटने लगती हैं। स्कूल से कॉलेज, कैरियर, दोस्त और नए रिश्ते से दो-चार होते ही जीवन में बहुत कुछ बदलता है। कब कौन सी बात तनाव के बीज बो दे, कहा नहीं जा सकता। यह दिमाग में घर कर जाए, उससे पहले उसे पहचान लेना जरूरी है। आर्थिक हालात, शक्तों सूरत के अलावा कब फेसबुक के लाइक भी तनाव का कारण बन जाए, कहा नहीं जा सकता।

इन दिनों मनोविशेषज्ञों के पास कई किशोर सलाह लेने के लिए आ रहे हैं। किसी को रिश्ते-नाते में दिक्कत है, तो कोई ब्रांडेड चीजे नहीं खरीद पाने के कारण खुद को तनावग्रस्त मान रहा है। माँ-बाप और शिक्षकों की रोज की डाँट, दोस्तों के कमेंट, परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाना भी तनाव का कारण बन रहा है।

### समस्या में छिपा समाधान

- 1 **जरूरत से ज्यादा उम्मीद** : जीवन की नई रफ्तार तनाव की जड़ साबित हो रही है। हमेशा, हर जगह अव्वल रहने की चाहत, दूसरों से तुलना करना, खुद पर सदा अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव, वक्त के साथ कदमताल न कर पाना भी इसी रफ्तार की उपज है। नंबर कम आने पर साथियों के ताने तनाव का कारण बन रहे हैं।
- 2 **कमियाँ परवरिश की भी** : माँ-बाप बच्चों की हर मांग को झट से पूरा कर देते हैं। कई बार तो मांगने से पहले चीजें दे दी जाती हैं। ऐसे में कुछ महंगी चीजों की जिद को भी वे सामान्य मानने लगते हैं। अगर आपने इसे देने में जरा भी देर कर दी, तो मानकर चलिए बच्चे इसे अपने दिल पर ले लेंगे। और फिर पड़ गया तनाव का बीज। इसलिए यहाँ फ्रस्ट्रेशन को पालने या झेलने की हिम्मत सिखाना जरूरी है यानी फ्रस्ट्रेशन टॉलरेंस होना जरूरी है। चीजें देने में समर्थ हों, तब भी थोड़ा रुककर दें।
- 3 **अनुशासन सिखाएँ** : खुद के छोटे-मोटे काम करने की आदत बचपन से ही डालनी होगी। पढाई-लिखाई के साथ खान-पान, स्वास्थ्य में

---

अनुशासन बरतने के लिए प्रेरित करना होगा। इसके लिए जरूरी है कि खुद भी अनुशासित रहे। खाने की टेबल पर एक साथ खाना खाना तथा खाना खाते हुए या परिवार के साथ समय बिताते हुए मोबाइल से दूरी बनाना सिखाएँ। खुद भी ऐसा करें।

- 4 **हर मांग पूरी न करें :** मांग पूरी करवाने के लिए कई बार बच्चे धमकियाँ तक देते हैं। घर से भाग जाऊंगा...वगैरह। इस स्थिति में उसे बताएँ कि कैसे भागना किसी चीज का समाधान नहीं है। बार-बार इस तरह की बात करता हो, तो ऐसी संस्था में उन बच्चों की स्थिति दिखा लाएँ, जो घर से भागे और मुश्किल स्थितियों में फंसे हुए हो। वास्तविक परिस्थितियाँ देखकर वह फिर ऐसी बात नहीं करेगा।
- 5 **जीने का तरीका सिखाएँ :** हर बच्चा अपने आप में बिल्कुल अलग है। जीवन के ढंग सिखाना अभिभावकों की जवाबदारी है। उसे सामाजिकता सिखाएँ। छोटी-छोटी चीजों पर खुश होना, मित्रों की, छोटे भाई-बहनों की प्रशंसा करना सिखाएँ। दूसरों को बेहतर मानने से वह छोटी-मोटी हार को असफलता की तरह नहीं लेगा। अभिभावकों का भी बच्चों से संवाद कायम रखना बहुत जरूरी है। अगर माँ-बाप से बच्चे दूरी बना लेंगे तो तनाव बढ़ता जाएगा। अगर बच्चे रिलेशनशिप आदि में परेशान हैं तो उन्हें मुश्किल से निकालना आपकी जवाबदारी है। इसके लिए बच्चों को थोड़ा समय देना पड़ेगा। बच्चों को कोई भी खेल खेलने की आदत जरूर डाले। बोर्डगेम जैसे साँप-सीढी भी खेल सकते हैं। खेल से जहाँ उनका विकास होगा, वहीं इसमें मिलने वाली हार-जीत सिखाएगी कि नतीजे नहीं, कोशिशें और अनुभव महत्वपूर्ण हैं।

### **शहरी बच्चों में ज्यादा है तनाव**

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और स्नायु विज्ञान संस्थान (बेंगलुरु) के 2015-16 में किए गए शोध में पता चला है कि 15-17 वर्ष की उम्र में मानसिक विकार की आंशका 7.3 प्रतिशत है। इसमें लड़के-लड़कियों का अनुपात एक सा है। इस उम्र के लगभग एक करोड़ बच्चों पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है।

शहरी क्षेत्रों में मानसिक विकार का ग्रामीण क्षेत्रों से लगभग दोगुना 13.5 प्रतिशत है। वहीं 15 से 24 वर्ष की उम्र के बीच के किशोर कई

---

तरह की मानसिक परेशानियों से जूझ रहे हैं। इसमें...

डिप्रेशन	6.9 प्रतिशत
चिंता	15.5 प्रतिशत
तंबाकू	7.6 प्रतिशत
एल्कोहल	7.2 प्रतिशत
आत्महत्या के विचार	5.5 प्रतिशत

मेडिकल साइंस... बचपन के दिनों में धूल में न खेलने वाले बच्चों को बड़े होने के बाद सांस के रोग होने की अधिक आशंका

## घरों की बजाय बाहर खेलने वाले बच्चे होते हैं ज्यादा मजबूत

क्या आप बहुत स्वच्छ हो सकते हैं? यह सवाल स्वच्छता के सिद्धांत ने खड़ा किया है जो बताता है कि कई बीमारियाँ अमीर देशों में दुर्लभ हैं और कुछ बहुत आम हैं। सफाई का सिद्धांत कहता है कि दमा, एक्जिमा और टाइप-1 डायबिटीज सहित कई बीमारियाँ स्वच्छता के स्तर में सुधार के कारण होती हैं। इन बीमारियों का संबंध शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र की मजबूती से जुड़ा है।

अमेरिकी एसोसियन फॉर एडवांसमेंट ऑफ साइंस (एएएएस) की बैठक में ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी वैकुवर के डॉ. ब्रेट पिनले ने दमा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। श्वास नली में स्थायी जलन या सूजन से दमा होता है और प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होने की प्रतिक्रिया सूजन है। स्वच्छता सिद्धांत के पीछे सोच है कि अप्राकृतिक रूप से स्वच्छ वातावरण के कारण बच्चे का इम्यून सिस्टम परजीवियों और रोगाणुओं से बचाव की व्यवस्था नहीं कर पाता है। उसका सामना रोगाणुओं से नहीं होता है। शहर के बच्चों की तुलना में गाँवों में खेतों के आसपास पलने और धूल में खेलने वाले बच्चों को दमा होने की कम आशंका रहती है और वे प्रतिरोध तंत्र की परीक्षा लेते हैं। सीजेरियन ऑपरेशन से जन्म लेने और एंटीबायोटिक्स के इलाज से गुजरे बच्चों को भी इसकी आशंका रहती है। सीजेरियन से होने वाले बच्चों को माँ के गर्भाशय में मौजूद बैक्टीरिया से सामना नहीं हो पाता है।

डॉ. पिनले ने सोचा कि क्या वे बच्चों की आंत में दमा से बचाव करने वाले बैक्टीरिया खोज पाएंगे। उन्होंने इस संबंध में एक स्टडी (सीएचआईएलडी) के आयोजकों से संपर्क किया। उन्होंने तीन माह, 12 माह और उससे अधिक आयु के बच्चों के मल में बैक्टीरिया का विश्लेषण किया। बच्चे के पाँच वर्ष की आयु का होने तक दमा सामने नहीं आता है लेकिन, सांस की घरघराहट और त्वचा की एक जांच से संकेत मिल सकते हैं कि संबंधित बच्चा दमा का शिकार हो सकता है। ये दोनों बिंदु रिकॉर्ड होते हैं। डॉ. पिनले ने इन संकेतों की उपस्थिति या अनुपस्थिति को बच्चे की आंत के स्वरूप से जोड़ा। उन्होंने पाया कि तीन माह के जिन बच्चों के चार दुर्लभ बैक्टीरिया- पीकेलीबैक्टीरिया, लेनोस्पाइरा, रोथिया और वीलानेल्ल-कम पाए गए, उनके उन बच्चों की तुलना में दमा से पीड़ित होने की आशंका बीस गुणा ज्यादा पाई गई जिनमें ऐसे बैक्टीरिया पाए गए।

डॉ. फिनले ने सेंट जॉर्ज अस्पताल लंदन के रिसर्चर के साथ इक्वेडोर में इसका परीक्षण किया। कनाडा और इक्वेडोर में 20 प्रतिशत लोग दमा पीड़ित हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि इक्वेडोर में भी आंत के बैक्टीरिया दमा से प्रभावित होने की स्थिति बता सकते हैं। वैसे, यह पता नहीं लग सका है कि किस किस का बैक्टीरिया या रोगाणु दमा से बचाता है।

## मुझे ऐसी सभ्यता नहीं चाहिए...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. इस देश में गांधी... 2. इस देश में तू ....3. छू लेने दो... )

मुझे ऐसी सभ्यता नहीं चाहिए, जिस में न हो आध्यात्मिकता।

केवल भौतिक विकास को ही, माना जाता हो सम्पूर्णता ॥ (धु.)

दयादान सेवा परोपकार बिना, नैतिक, आत्मिक विकास बिना-

केवल भोगोपभोग साधन द्वारा, होती जो सभ्यता शान्ति बिना।

इस हेतु होते शोषण-आक्रमण युद्ध, होत अन्याय से ले आतंकवाद ॥ (1)

इस हेतु लोप हुआ रोमन साम्राज्य, रावण कंस से ले मय साम्राज्य ।

हिटलर से लेकर सद्दाम हुसैन, इसके लिए प्रसिद्ध उदाहरण।

---

व्यक्ति से लेकर साम्राज्य तक, प्राचीन से ले आधुनिक तक ॥ (2)

भौतिकवादी सभ्यता के कारण, वर्तमान में हो रहा प्रकृति का हनन।  
जिससे बढ़ रहे विभिन्न प्रदूषण, तापमान से ले जीवों का विलोपन।  
विभिन्न रोग बढ़ रहे दिनोंदिन, तन-मन-अक्ष हो रहे हैं रुग्ण॥ (3)  
भौतिक विकास को ही सभ्यता मानने वाले, महान् लक्ष्य भावना से रहित होते।  
संकीर्ण स्वार्थी अनुदार दंभी होते, फैशनी-व्यसनी विलासी होते।  
अन्याय-अत्याचार-पापाचार करते, आत्मा परमात्मा को नहीं मानते॥ (4)

मैं नहीं हूँ केवल भौतिकमय, तन -मन-इन्द्रिय व दिमागमय।  
इससे परे हूँ मैं अमूर्तिक चेतन, अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यवान्।  
स्व-स्वरूप पाना मेरा परम लक्ष्य, भौतिक सभ्यता से न प्राप्त संभव॥ (5)

नैतिक व आध्यात्मिक लक्ष्य रहित, सत्ता-सम्पत्ति से भी न मिले सुख ।  
तनाव से ले आत्महत्या संभव, संस्कृति-सदाचार-शान्ति से न्यून ॥  
स्व-पर-विश्वहित भी नहीं संभव, 'कनक' चाहे स्व-पर-विश्वहित॥(6)

सीपुर - 15.02.2017 रात्रि - 8.55

## जानलेवा होती प्रदूषित हवा

दो अमरीकन हेल्थ रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के मुताबिक चीन और भारत की हवा दुनिया में सबसे ज्यादा दूषित हो चुकी हैं। यहाँ तक कि हवा की खराब क्वालिटी भारत में हर साल 11 लाख लोगों की जान ले रही है। हर मिनट 20 लोगों की मृत्यु भी हो रही है।

**वायु प्रदूषण से भारत और चीन में होती हैं**

**52 प्रतिशत मौतें : रिपोर्ट**

दुनिया भर में वायु प्रदूषण के कारण होने वाली असमय मौतों में 52 प्रतिशत मौतें चीन और भारत में होती हैं। इसका दावा स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2017 की रिपोर्ट में किया गया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि सूक्ष्म कणों के कारण होने वाली मौतों के मामले में भारत लगभग चीन के करीब पहुँच चुका है।

---

इसमें साथ ही कहा गया है कि भारत समेत दस सबसे अधिक जनसंख्या वाले देशों, यूरोपीय संघ और बांग्लादेश में पीएम 2.5 का स्तर सबसे अधिक है।

‘स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2017’ इस मुद्दे से जुड़ी इस साल की पहली वार्षिक रिपोर्ट है। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ मेटिक्स एंड इवैल्युएशन (आईएचएमई) और ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय के सहयोग से हेल्थ इफेक्ट इंस्टीट्यूट ने यह रिपोर्ट तैयार की है। इस रिपोर्ट में कहा गया कि दुनिया भर में ओजोन के कारण होने वाली मौतों में करीब 60 फीसदी का इजाफा हुआ है। लेकिन भारत में यह आंकड़ा 67 फीसदी तक चला गया है। 2015 में पीएम 2.5 के कारण 42 लाख लोगों की मौत हुई। इन मौतों में से करीब 52 प्रतिशत मौतें भारत और चीन में हुईं।

पिछले साल दीवाली के बाद दिल्ली में प्रदूषण का स्तर खतरनाक स्तर पर पहुँच गया था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने राजधानी में पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था।

## प्रदूषण से हर साल 17 लाख बच्चों की मौत

एजेंसी। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक नई रिपोर्ट के अनुसार एक महीने में पाँच साल के बच्चों को हर चौथी मौत में से एक का कारण प्रदूषण है। रिपोर्ट के मुताबिक छोटे बच्चों के लिए प्रदूषित वातावरण बेहद घातक होता है। इससे उनके विकसित होते अंग और प्रतिरोधक क्षमता के कारण गंदी हवा और पानी से ज्यादा जोखिम होता है। अप्रत्यक्ष धूम्रपान समेत घर के भीतर व बाहर के वायु प्रदूषण के संपर्क में आने वाले शिशु के बचपन में निमोनिया और अस्थमा जैसी सांस से जुड़ी बीमारियों की चपेट में आने का खतरा ज्यादा होता है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि वायु प्रदूषण के कारण बच्चों में हृदय रोग, हृदयाघात तथा कैंसर जैसी बिमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। रिपोर्ट में बच्चों की मौतों को रोकने के लिए कुछ अन्य उपाय भी सुझाए गए हैं, जिनमें स्वच्छता और पोषण सुनिश्चित करना और शहरों में हरित क्षेत्र को बढ़ाना शामिल है।

## पश्चिम से जीवनशैली नहीं, पर्यावरण रक्षा सीखें

संदर्भ... विश्व स्वास्थ्य संगठन और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी की रिपोर्टों में बढ़ते वायु प्रदूषण पर भारत को चेतावनी

---

पिछले हफ्ते लोकसभा में पर्यावरण मंत्री अनिल दवे ने बताया कि इस शीत ऋतु में राजधानी दिल्ली में धुआँ मिश्रित कोहरा यानी स्मॉग पिछले 17 वर्षों में सबसे ज्यादा रहा। उधर, पिछले पखवाड़े फेक्ट्रियों को बन्द रखने के बाद चीन में जब इस हफ्ते कारखाने शुरू हुए हैं तो बीजिंग सहित बीस शहरों में वायु प्रदूषण के गंभीर स्तर तक बढ़ने की चेतावनी दी गई है। जाहिर है देश-दुनिया का पर्यावरण पूरी तरह से खतरे में पड़ चुका है। पर्यावरण के घटकों में हवा का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। पानी, भोजन के बिना कई दिनों तक जीया जा सकता है, पर वायु नहीं मिली तो मिनटों में हमारी जान खतरे में पड़ जाएगी। हम यह अच्छी तरह जानते हैं फिर भी इस पर ध्यान नहीं देते। सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने भी सरकारों को फटकार लगाई और स्थिति सुधारने के निर्देश दिए। इस बार दिल्ली की हवा में सूक्ष्म कणों का स्तर 2000 तक के आंकड़े को छू चुका है, जो खतरे की सीमा से बहुत अधिक मानी जाती है। बात सिर्फ दिल्ली की नहीं, बल्कि देश के सभी बड़े शहर ऐसी ही परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। चिंताजनक तो यह है कि कहीं भी स्थिति सुधरती नहीं दिखती।

वायु प्रदूषण के दो बड़े कारक हैं, वाहनों की बेतहाशा बढ़ती संख्या व उद्योगों की भरमार। चूंकि मामला वायु प्रदूषण का है तो इसका कुप्रभाव कहीं भी जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 20 शहर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में ऊपरी पायदान पर है। सबसे प्रदूषित शहर ग्वालियर डब्ल्यूएचओ के अनुसार दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की फहरिस्त में हैं। इसी तरह धनबाद 38 वें और दिल्ली 11वें स्थान पर है, जबकि देश में यह 5वां स्थान है। गौरतलब है कि ज्यादातर प्रदूषित शहर उत्तर भारत में हैं। इसके कई कारणों में फसलों की कटाई के बाद घास-फूस जलना, वनाग्नि, वाहनों की बढ़ती संख्या, शीतकालीन धुंध आदि हैं, जो प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं। फिर उत्तर भारत दुनिया का सबसे ज्यादा घनी आबादी वाला क्षेत्र भी है। बढ़ती आबादी पर्यावरण के हर घटक के लिए प्रतिकूल होती है।

अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी की ताजा रिपोर्ट तो और गंभीर हालात की ओर इशारा करती है, इसके अनुसार 65 लाख बच्चे वायु प्रदूषण के कारण प्रतिवर्ष जीवन खो देते हैं और ये हालत भारत व चीन में सबसे ज्यादा हैं। भारत में 16 लाख व चीन में 22 लाख बच्चे प्रतिवर्ष इसका शिकार बनते हैं। अन्य देशों में

---

इंडोनेशिया, ब्राजील, दक्षिण अफ्रिका और मेक्सिको शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि वायु प्रदूषण मृत्यु का चौथा बड़ा कारण बन रहा है। इनसे पहले रक्तचोप, दूसरा कुपोषण व तीसरा तम्बाकू का सेवन। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अगर हालात ऐसे ही रहे तो 2040 तक यह संख्या 75 लाख तक पहुँच जायगी। विश्व ऊर्जा एजेन्सी के मुताबिक उर्जा का उत्पादन व खपत ही वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। इसके अनुसार डब्ल्यूएचओ के वायु प्रदूषण के तय पैमाने का विश्व के 80 प्रतिशत शहर पालन नहीं करते। देहरादून स्थित भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की रिपोर्ट भी चौकाने वाली है। इसके अनुसार भारत का कार्बन उत्सर्जन ग्राफ 213 करोड़ टन पहुँच गया है, जो सबसे ज्यादा ऊर्जा उपयोग व उत्पादन के कारण है। इस रिपोर्ट के अनुसार अकेले उर्जा के सेक्टर से 1.51 अरब टन कार्बन उत्सर्जन हो रहा है। इस उत्सर्जन को सोखने के लिए वनों का विस्तार जरूरी है, क्योंकि यह कार्बन वनों के लिए भोजन है। किंतु अभी कुल उत्सर्जन का करीब 12 प्रतिशत ही देश के वन सोख रहे हैं और शेष प्रदूषण का हिस्सा बन रहा है। 2004 तक यहाँ सोखने की यह दर 14 प्रतिशत थी, जो निश्चित रूप से और घटी होगी। फिर हिमालय और देश में वनाग्नि व वनपतन पिछले दस वर्षों में बढ़ा है।

वायुमण्डल के बढ़ते प्रदूषण के परिणाम बहुत पहले से सामने आने शुरू हो गए थे। सबसे पहली घटना लंदन प्रदूषण के नाम से 1952 में हुई थी। इससे वायु में कई गुना प्रदूषण बढ़ा, जिससे लगभग 4000 लोगों की मृत्यु हुई थी। बढ़ते प्रदूषण में सबसे ज्यादा प्रभावित महिला और बच्चे होते हैं। प्रदूषण आंतरिक व बाह्य दो रूप में देखा जा सकता है। प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियाँ भी विचित्र तरह की हैं। ये इस बात पर निर्भर हैं कि वायुमंडल में किस तत्व का ज्यादा प्रभाव है। मसलन बढ़ते सल्फरडाईऑक्साइड के स्तर से सांस से जुड़ी तमाम बीमारियाँ होती हैं। नाइट्रोजन खासतौर से बच्चों में सांस की बीमारी का कारक है। इनमें कार्बनडाईऑक्साइड दिमाग व हृदय में सीधा प्रभाव डालती है। इसी तरह से सस्पेंडेड पाटीकुलेट के तत्व सांस की बीमारी के अलावा त्वचा की बीमारियों का कारक है। दुनिया में इसी के कारण सबसे ज्यादा स्वास्थ्य हानि हुई है। हालात अगर ऐसी ही रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हवा के लाले पड़ जायेंगे। यह बदलती भोगवादी सभ्यता ही है। जिसका परिणाम खराब होती हवा है। तमाम सुविधा ने अपरोक्ष रूप से ऊर्जा की आवश्यकताओं को बढ़ाया है। सबसे बड़ी दिक्कत हमारी

जीवन शैली है। चूंकि प्रश्न जीवन का है इसलिए कुछ सामूहिक निर्णय आवश्यक हैं। पहली आवश्यकता समाज को जागरूक किए जाने के अलावा छोटी-छोटी शुरूआत किए जाने की भी है। उदाहरण के लिए साइकिल का उपयोग, परिवहन के सार्वजनिक साधनों पर निर्भरता, अनावश्यक ऊर्जा के उपयोग पर प्रतिबंध जैसी छोटी-छोटी पहल बिगड़ते हालात पर कुछ अंकुश लगा सकते हैं। साथ में बढ़ते उद्योगों के प्रति खासतौर से उनसे उत्सर्जित गैसों के प्रति उदासीनता बरतना अपने लिए मृत्यु का न्यौता देना है।

हम पश्चिमी जीवन शैली की तो नकल करते हैं, तो वायु संकट से बचने के लिए भी उनसे सीख ले। उदाहरण के लिए पेरिस व अन्य शहरों की भागीदारी में वाहनों का उपयोग, धुंआ उत्सर्जित करने वाले जनरेटरों पर रोक जैसे कई कदम उठाए गए हैं। ऐसी पहल के साथ प्रदूषण रोकथाम के नियमों का कड़ाई से पालन करने के लिए सरकार व समाज दोनों को जुड़ना होगा समय पर उठाए कदम शायद भविष्य में हवा का वर्तमान रूख बदल दें, लेकिन अगर वायु प्रदूषण ऐसे ही बढ़ता रहा और समय पर निर्णय नहीं लिया तो सांस लेना कब दूभर हो जाएगा पता भी नहीं चलेगा और वर्तमान विकास शैली की सारी हवा निकल जाएगी।

## ज्ञान का अंहकार एवं अज्ञानता का कारण

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने। (13) स्वतंत्रता के सूत्र, पृ. 571

प्रज्ञा Concept and; अज्ञान Lack of knowledge, sufferings are caused by the operation of ज्ञानावरणीय, knowledge-obscuring karmas.

ज्ञानावरण के सद्भाव में प्रज्ञा और अज्ञान परीषह होती हैं प्रज्ञा क्षयोपशमिकी है, अर्थात् ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होती है, अन्य ज्ञानावरण के उदय के सद्भाव में प्रज्ञा का सद्भाव है। अतः क्षायोपशमिकी प्रज्ञा ज्ञानावरण के उदय में मदद उत्पन्न करती हैं, सर्व ज्ञानावरण कर्म का क्षय हो जाने पर मद नहीं होता। अतः प्रज्ञा और अज्ञान परीषह ज्ञानावरण कर्म के उदय से उत्पन्न होता है अर्थात् इन दोनों परिषहों की उत्पत्ति में ज्ञानावरण कर्म का उदय ही कारण है।

केवल ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय होने पर केवल-ज्ञान होता है केवल-ज्ञान होने पर किसी भी प्रकार अंहकार नहीं होता है। जो अत्यंत अज्ञानी हैं, जैसे- एकेन्द्रिय आदि जीव, इनके विशिष्ट क्षयोपशम नहीं होने से तथा तीव्र ज्ञानावरणीय

---

का उदय होने पर विशेष ज्ञान न होने के कारण इनके भी प्रज्ञा और अज्ञान परिषह विशेष नहीं होता है। लोकोक्ति भी है। 'रिक्त चना बाजे घना'

भतृहरि ने कहा भी है-

**अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।**

**ज्ञानत्यवदूर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति। (13) नीति शतक**

ना समझ को सहज में प्रसन्न किया जा सकता है। समझदार को उससे भी सहज में प्रसन्न किया जा सकता परन्तु जो न समझदार है, न ना समझ है, ऐसी श्रेणी के मनुष्य को ब्रह्मा भी संतुष्ट नहीं कर सकते। इसीलिये इंग्लिस में कहावत है-

जो अल्पज्ञ होते हैं वे भयंकर होते हैं। A half mind is always dangerous.

The little mind is proud of own condition.

संकीर्ण मन एव कम बुद्धि वाले अधिक अहंकारी होते हैं। अल्पज्ञ लोग अहंकार से स्वयं को सर्वज्ञ मानकर सत्य को इंकार करते हैं।

**मूर्खों के निम्नलिखित पाँच चिन्ह हैं-**

**मूर्खस्य पंच चिन्हानि गर्वी दुर्वचनी तथा।**

**हटी चाप्रियवादी च परोक्तं नैव मन्यते।**

(1) अहंकारी होना (2) अपशब्द बोलना (3) हठग्राही (4) अप्रिय बोलना (5) दूसरों के द्वारा कहा हुआ हित सत्य नहीं मानना

**विद्यार्थी-परिषद् लक्षण**

(सा समासओ तिविहा पण्णत्ता तं जहा- 1 जाणिया, 2 अजाणिया 3. दुव्वियहा)

वह (परिषद्) संक्षेप से तीन प्रकार की कही गई है यथा- 1. ज्ञायिका परिषद् जिनमत, परमत और गुण-दोष की जानकार परिषद्। 2. अज्ञायिका परिषद्= जिनमत परमत और गुण दोष की अनजान परिषद्। 3. दुर्विदग्ध परिषद् = पण्डितमन्य परिषद्। जिस प्रकार कोई रोटी आधी कच्ची और आधी जली होती है तो अखाद्य होती है उसी प्रकार जिनमें कुछ तो ज्ञान की कमी होती है और कुछ विकृत ज्ञान होता है, तिस पर भी जो अपने आपको पूरा पण्डित माने फिरते हैं, उन्हें 'दुर्विदग्ध'-पण्डित कहते हैं।

---

अब क्रमशः इन तीनों परिषदों के लक्षण बतलाते हैं।

(1) ज्ञानी शिष्य समूह-

खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टति इह गुरुगुणसमद्धि।

दोसे य विवज्जंती, तं जाणसु जाणियं परिसं। (52) (नन्दीसूत्र)

पहली जानकार परिषद् के लक्षण इस प्रकार हैं- जिस प्रकार जातिवान् श्रेष्ठ हंस, जल मिश्रित दूध में से, मात्र दूध ग्रहण करता है और जल को त्याग देता है, उसी प्रकार आचार्य आदि के प्रवचन तथा जीवनगत सदगुणों को जीवन में ग्रहण कर, गुण समृद्ध बनती है और दोषों का त्याग करती है, उसे 'जानकार परिषद्' समझना चाहिए।

जो जैन धर्म मान्य षड् द्रव्य, नव तत्व आदि के तथा पर मत के जानकार हैं, जिनमत पर श्रद्धा रखते हैं, सदगुण और दुर्गुण के पारखी हैं, परन्तु दूसरों के मात्र सदगुणों की प्रशंसा करते हैं, और जीवन में उतारते हैं, किन्तु दुर्गुणों की आनवश्यक, निरर्थक निन्दा नहीं करते, न जीवन में दुर्गुणों को स्थान देते हैं, वे जानकार परिषद् में आते हैं। ऐसे लोगों को समझाना अत्यन्त सुगम होता है। इन्हें 'पात्र परिषद्' के अन्तर्गत समझना चाहिए।

(2) अज्ञानी शिष्य समूह-

जा होई पगइमहुरा, मियछावयसीहकुक्कुड्यभूआ।

रयणमिव असंठविया, अजाणिया सा भवे परिसा। (53)

दूसरी अनजान परिषद् के लक्षण इस प्रकार है- जो प्रकृति से मधुर हो= अन्यमति, नास्तिक या अनार्य होकर भी स्वभाव से सरल एवं नम्र हो, मृग के बच्चे, सिंह के बच्चे, या कुकड़े के बच्चे के समान हों= जैन कुल के होकर भी जैनधर्म से अनजान हो, असंस्थापित = असंस्कृत अघटित रत्न की भाँति जिसके गुण अब तक छुपे पड़े हो, वह 'अजानकार परिषद्' होती है।

1. चाहे व्यक्ति अन्यमत का या नास्तिक हो, पर यदि वह सरल अन्तःकरण वाला हो, नम्र हो, सत्य मत के सामने आने पर अपने मत का आग्रह करने वाला नहीं हो, सत्य का समादर करने वालो हो, तो उसे समझाना सरल है, इसी प्रकार यदि कोई शिकारी, कसाई आदि अनार्य, पापाचरण करने वाले हों, पर वे भी स्वभाव से सरल हो, तो उन्हें समझाना सरल है।

2. अथवा जो मृग के बच्चे के समान कभी बहक सकते हैं, परन्तु अब तक किसी के बहकावे में नहीं आये हैं, ऐसे जैनकुल के मन्दबुद्धि बच्चों को भी समझाना सरल है।
3. जो कुकडे के बच्चे या सिंह के बच्चे के समान युद्ध-धर्मी और क्रूर बन सकते हैं, पर तब तक पापमति और पापाचारी नहीं बने हैं ऐसे अन्यमति के या नास्तिकों के या नीच जाति के बालकों को, बाल्यावस्था के रहते हुए अच्छे संस्कार देना सरल है।
4. अथवा जैसे अघटित रत्न में गुण छुपे रहते हैं और ज्यों ही उन्हें घर्षण और संस्कार मिलता है, उनके गुण प्रकट हो जाते हैं, उसी प्रकार जिस बालक में बुद्धि आदि छुपी पड़ी है, जिसे केवल थोड़े से शिक्षण और मार्गदर्शन की आवश्यकता है, वह मिलते ही जो जानकार बन सकता हो, उसे समझाना सरल है।
5. अथवा प्रौढ़ होकर भी जिन्हें जिनधर्म श्रवण का योग नहीं मिलने से जिनकी बुद्धि अभी तक सत्य प्राप्त नहीं कर सकी है, उन्हें भी समझाना सरल है।

ऐसे सभी प्राणि 'अज्ञान परिषद्' के अन्तर्गत हैं। जानकार परिषद् की अपेक्षा इन्हें समझाने में विलम्ब और प्रयत्न लगता है, पर ये समझ जाते हैं। अतः ये भी पात्र परिषद् हैं।

### 3. पंडितमन्य-शिष्य-समूह

न य कत्थइ निम्माओ, न च गुच्छइ परिभवस्स दोसेणं।

वत्थिव्व वायुपुण्णो, फुट्टई गामिल्लय रियड्ढो ॥ (54)

तीसरी दुर्विदग्ध परिषद् के लक्षण इस प्रकार हैं-

जो न स्वयं किसी विषय या शास्त्र में विद्वता रखते हैं, न परिभव दोष से किसी से कुछ पूछते हैं (हार या लघुता के भय से किसी विद्वान से ज्ञान ग्रहण नहीं करते हैं) परन्तु जैसे वायु से भरी मसक, केवल वायु से फूली हुई होती है, उसमें प्रवाही या घन कोई पदार्थ नहीं होता, उसी प्रकार जो किसी ठोस ज्ञान के बिना ही, वायु के समान कुछ दो चार पद, गाथाएँ, युक्तियाँ, उदाहरण आदि को सुनकर अपने आपको महान-पण्डित मानकर फूले फिरते हैं, ऐसे ग्रामीण

दुर्विदग्धों (= लाल बुझकड़ों) के झुण्ड को 'दुर्विदग्ध परिषद्' समझना चाहिए। ऐसे लोगों को यदि समझाना प्रारम्भ किया जाये, तो ये लोग उपदेशक के ही आगे-आगे, शीघ्र-शीघ्र विषयपूर्ति करने का प्रयास करते हैं, और कहते हैं- 'बस । बस। यह विषय तो हम स्वयं भलीभाँति जानते हैं ऐसे लोगों को समझाना कठिन है। ये लोग अपात्र परिषद् हैं।

### अयोग्य विद्यार्थियों के 14 दृष्टान्त

1.सेल-घण 2. कुडग 3. चालणि 4. परिपूणग 5. हंस 6. महिस 7. मेसेय 8. मसग 9. जलूग, 10. बिराली, 11. जाहग 12. गो 13. भेरी 14. अभीरी

1. मुद्गशैल और घन-मेघ, 2. कुट-घडा, 3. चालनी, 4. परिपूणक सुधरी नामक पक्षी का घोंसला जिसमें घी छाना जाता था, 5. हंस 6. महिष -भैंसा, 7. मेष-मेढा, 8. मशक -मच्छर, 9. जलौका-विकृत रक्त चूसने वाला एक जलचर जन्तु 10 बिल्ली, 11. जाहक-सेल्हक, चूहे की जाति का तिर्यच विशेष 12. गाय, 13. भेर और 14. अहीर।

जो 1. मुद्गशैल के समान अपरिणामी हो या 2 दुर्गन्धित घट की भाँति दुष्परिणामी हो, 3 चालनी के समान अग्राही हो या 4 परिपूणक के समान दोष-ग्राही हो, 5 भैंसे के समान अन्तराय करने वाला हो या, 6 मच्छर के समान असमाधि करने वाला हो, 7 बिल्ली के समान विनय नहीं करने वाला होगा, 8 गाय-असेवक ब्राह्मणों के समान वैयावृत्य नहीं करने वालो हो, 9. भेरी नाशक के समान भक्ति न करने वाला हो, या ज्ञान का प्रत्यनीक-शत्रु हो, और 10. स्वदोष नहीं देखने वाले अहीर की भाँति आशातना करने वाला, या ज्ञान का विसंवादी हो, वह ज्ञान का अपात्र है। उसे ज्ञान देना अयोग्य है।

जो 1 काली मिट्टी की भाँति परिणामी हो, 2 सुगन्धित घट के समान सुपरिणामी हो, 3 कमण्डलू के समान ग्राही हो, 4 हंस के समान गुणग्राही हो, 5 मेष के समान अन्तराय नहीं करने वाला हो, 6 जलौका के समान समाधि उपजाने वाला हो, 7 जाहक के समान विनय करने वाला हो, 8 गाय -सेवक ब्राह्मणों के समान वैयावृत्य करने वाला हो, 9 भेरी रक्षक के समान भक्ति करने वाला हो, या ज्ञान का अप्रत्यनीक हो और 10 स्वदोष देखने वाले अहीर की भाँति आशातना नहीं करने वाला हो या विसंवाद नहीं करने वाला हो, वह ज्ञान का पात्र है। उसे ज्ञान दिया जाये।

---

**डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट : 2014 की रिपोर्ट में  
दिल्ली दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर था  
दिल्ली अब सबसे प्रदूषित नहीं रही, दुनिया के टॉप-  
सात प्रदूषित शहरों में चार हमारे**

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने दुनिया भर के सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों में बढ़ते प्रदूषण की रिपोर्ट चौंकाने वाली है। रिपोर्ट के मुताबिक 2014 में दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर रहे दिल्ली की आबो हवा में सुधार हुआ है और वह 11वें नंबर पर पहुंच गई है। हर साल कई महीनों तक धूल भरी आंधी झेलने वाले ईरानी शहर जबोल को सबसे प्रदूषित माना गया है।

### **डब्ल्यूएचओ ने की भारत की तारीफ**

डब्ल्यूएचओ की स्वास्थ्य पर्यावरण मामलों की निदेशक मारिया नीरा ने दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भारत में प्रदूषण से निपटने के लिए किए गए प्रयासों की तारीफ की है। इसमें स्मार्ट सिटी, ऑड-इवन, सीएनजी पर जोर जैसे कदम शामिल हैं।

### **दुनिया के सबसे प्रदूषित 7 शहरों में 4 हमारे**

शहर	पीएम 2.5 का स्तर	रैंकिंग
जबोल (ईरान)	217	1
ग्वालियर	176	2
इलाहाबाद	170	3
पटना	143	6
रायपुर	144	7

### **देश के ये शहर भी शामिल**

भारत के अन्य प्रदूषित शहरों में यूपी का कानपूर, लखनऊ और फिरोजाबाद, पंजाब में खन्ना, लुधियाना भी शामिल है

### **क्या है पीएम 2.5**

ये हवा में फैले सूक्ष्म खतरनाक कण हैं जो हमारे फेफड़ों में भी प्रवेश कर

---

जाते हैं उन्हें 2.5 माइक्रोग्राम से छोटे इन कणों को पार्टिकुलेट मेटर 2.5 या पीएम 2.5 कहा जाता है। प्रत्येक क्यूबिक मीटर हवा में पीएम 2.5 कणों का स्तर जानकर प्रदूषण का आकलन किया जाता है।

- दुनिया में हर साल 70 लाख लोगों की मृत्यु वायु प्रदूषण के कारण होती है
- इनमें से 30 लाख की मौत बाहर की जहरीली हवा के कारण होती है।

### गरीब देशों में प्रदूषण ज्यादा

रिपोर्ट के मुताबिक गरीब देशों के 98 फीसदी शहरों का वायु प्रदूषण के मामले में बुरा हाल है। वे पीएम 2.5 के मामले में डब्लूएचओ के मानक से काफी नीचे हैं। हालांकि विकसित और विकासशील देशों के 44 फीसदी शहर इस पैमाने पर खरे उतरते हैं।

### देश के 74 छोटे शहरों में से 41 प्रदूषित

लोकसभा के इसी सत्र में सरकार ने माना कि महानगर ही नहीं देश के अन्य छोटे शहर भी खतरनाक प्रदूषण की जद में हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक टियर-2 श्रेणी के 74 शहरों में से 41 बड़े पैमाने पर जल और वायु प्रदूषण का सामना कर रहे हैं। इनमें यूपी, उत्तराखंड, बिहार, हिमाचल और पंजाब शहर शामिल हैं।

### जैव विविधता में क्षरण

पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व बचाए रखने के लिए जैव विविधता के क्षरण को रोकना बेहद जरूरी है। अगर इस पर लगाम नहीं लगाया तो मानव का अस्तित्व खुद-ब-खुद खतरे में पड़ सकता है।

- 3,500 मानव हर 20 मिनट पर पैदा होते हैं
- 20 मिनट में एक या अधिक पशुधन नस्लों को नुकसान
- 27,000 पशुधन का एक साल में नुकसान
- 240 एकड़ प्राकृतिक आवास हर 60 मिनट में बर्बादी के कगार पर
- 3.5 प्रतिशत ग्लोबल टेम्प्रेचर में बढ़ौतरी से 70 जीव विलुप्त हो जाते हैं

- 
- 75 प्रतिशत कृषि फसलों की आनुवांशिक विविधताएं विलुप्त होने का खतरा
  - 80 प्रतिशत जैव विविधता में कमी आवासीय नुकसान से
  - 75 प्रतिशत मछलियों का दुनिया भर में हो रहा है दोहन

### **प्रदूषण खतरा है बच्चों के लिए**

प्रदूषण के कारण गर्भवती महिलाएं प्री-मेच्योर बच्चों को जन्म दे रही हैं। ऐसे बच्चों को कई शारीरिक और मानसिक दुर्बलताएं झेलनी पड़ती हैं कई बार तो इनकी मौत तक हो जाती है। एनवॉयरमेंट इंटरनेशनल जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि दुनिया में प्रदूषण के कारण 27 लाख (2010) बच्चे प्री-मेच्योर यानी समय से पहले पैदा हुए। इसमें 10 लाख बच्चों का जन्म तो अकेले भारत में हुआ। ऐसे बच्चों के जन्म और मौत के मामले में भारत नंबर एक पर है। यह आंकड़ा दुनिया में सर्वाधिक है। वायु में मौजूद बारीक कण पीएम 2.5 इसकी मुख्य वजह है। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव दक्षिण और पूर्व एशियाई देशों पर पड़ा। अध्ययन में कहा गया कि भारत और चीन जैसे देशों में जहां वायु प्रदूषण अधिक है, वहां गर्भवती महिलाएं इंग्लैण्ड या फ्रांस के मुकाबले 10 गुना ज्यादा प्रदूषित वायु ऑक्सीजन के रूप में ग्रहण करने के लिए मजबूर हैं। इन स्थितियों में 37 सप्ताह से कम समय में बच्चे पैदा होने पर उनके जीवन की संभावनाएं कम हो जाती हैं। इसमें शारीरिक अक्षमता के साथ मानसिक दुर्बलता की भी आंशका रहती है।

## **7 साल में 6 प्रतिशत घट गई बाहर निकलने की आजादी, अपराध दोगुना बढ़ गया**

**80 प्रतिशत महिलाओं को अस्पताल तक जाने के लिए पति से पूछना पड़ता है**

**10 सालों में 264 प्रतिशत बढ़े महिला अपहरण के केस 8वीं पास करते ही 25.4 प्रतिशत बच्चियों को पढ़ाने के बजाए शादी कर दी गई**

---

ये जानकर हैरानी होगी कि आज भी देश की करीब 80 फीसदी महिलाओं को अस्पताल जाने के लिए भी पति या परिवार के सदस्यों से पूछना पड़ता है। महिलाओं के खिलाफ अपराध पिछले 10 साल में दोगुने हो गए। अकेले सफर करने वाली महिलाओं के लिए मैट्रो शहरों में दिल्ली सबसे ज्यादा असुरक्षित है। देश की राजनीति में लोग काफी दिलचस्पी लेते हैं लेकिन क्या आप को पता है 70 सालों में अब तक देश में 7 फीसदी महिलाएं ही राजनीति में आ सकी हैं, जबकि देश में इनकी आबादी 48.17 प्रतिशत है। इसके अलावा अभी देश के पास शीर्ष कोर्ट में केवल एक महिला जज है। शिक्षा के मामले में हमसे कमजोर देश भी हमसे आगे हैं। मातृ मृत्यु दर मामले में भूटान, मालदीव, श्रीलंका भी हमसे बेहतर स्थिति में हैं। महिला साक्षरता दर 68.4 प्रतिशत होने के बाद भी केवल 2.7 प्रतिशत महिलाएं ही देश की शीर्ष कंपनियों में बॉस हैं।

दुःख की बात है कि जितनी महिलाएं कॉर्पोरेट सेक्टर में काम कर रही हैं, उनमें 2.9 प्रतिशत महिलाओं का यौन शोषण होता है। महिलाओं को पुरुषों से 35 घंटे ज्यादा घर में काम करना पड़ता है। सरकार दावा करती है कि महिलाओं की स्थिति घरों में मजबूत हो रही है लेकिन आज भी पति द्वारा पत्नी के उत्पीड़न की घटनाएं घट ही नहीं रहीं। 35 फीसदी महिलाओं को पति के उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। डायन बताकर महिलाओं को मार डालने की घटनाएं भी होती हैं। वर्कप्लेस तो दूर स्कूलों और कॉलेजों में 22.2 फीसदी महिलाओं के साथ यौन शोषण के बड़ी संख्या में मामले सामने आ रहे हैं। वर्कप्लेस पर महिलाकर्मियों को सुरक्षा देने के लिए सरकार नियम तक ले आई बावजूद इनके यौन शोषण की न तो घटनाएं कम हो रही और न ही शिकायतों पर कंपनियाँ कोई कार्रवाई ही कर रही हैं।

पुलिस सुरक्षा के लिए बनाई गई है लेकिन महिला अपराध के मामलों को देखकर वह खुद घबरा जाती है। एक साल में उसने ऐस 68 प्रतिशत मामलों में केस दर्ज करने के बजाए उन्हें अन्य तरीकों से खारिज कर दिया। वर्ष 2015 में मात्र 2.3 प्रतिशत मामलों पर सुनवाई की गई। महिलाओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के दावों के बाद भी उनकी लाइफ एक्सपेक्टेंसी पुरुषों के मुकाबले 16.8 प्रतिशत कम है। प्रसव से पहले केवल 21 प्रतिशत महिलाएं ही एड्स को लेकर जागरूक हैं। 12वीं पास करते ही 15.3 प्रतिशत लड़कियों की शादी हो जाती है।

---

यही वह रूकावटें हैं जो महिलाओं को आगे बढ़ने से रोक रही हैं।

**इन 14 चुनौतियों की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहीं महिलाएं**  
**5 रूकावटें जिन्हें दूर करना अभी बाकी**

### 1 अपराध :

10 साल में दोगुने से ज्यादा बढ़ गए महिलाओं के खिलाप अपराध

- पिछले दस सालों में महिलाओं के साथ होने वाले अपराध के 22.40 लाख केस दर्ज किए गए। हर घंटे 26 महिला अपराध केस दर्ज होते हैं
- प्रति दो मिनट में एक केस दर्ज किया जाता है।
- सबसे असुरक्षित राज्य आंध्रप्रदेश। यहां 2.63 लाख केस दर्ज किए गए।
- महिला अपहरण के केस 264 प्रतिशत बढ़े। सबसे ज्यादा अपहरण (58,953) उत्तरप्रदेश में हुए।
- देश में हर घंटे दुष्कर्म की 4 घटनाएँ होती है।

### 2. भेदभाव

पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को 35 घंटे ज्यादा काम करना पड़ता है

- ऑफिस के बाद महिलाएं घर का काम करने के लिए सात दिन में 35 घंटे ज्यादा काम करती हैं, जबकि पुरुष 3.6 घंटे देते हैं।
- कॉर्पोरेट ऑफिस में 28.9 प्रतिशत महिला का यौन शोषण को-वर्कर्स करते हैं
- 70 प्रतिशत महिलाएं शिकायत नहीं करती हैं, जो करती हैं उनमें 65.2 प्रतिशत केस में कंपनियाँ कोई कार्रवाई नहीं करतीं।
- 68 प्रतिशत महिलाओं को टैलेंट नहीं लुक से जज किया जाता है।

### 3. कम उम्र में शादी

आज भी 18 से कम उम्र में 26.8 प्रतिशत लड़कियां ब्याही जा रही हैं

- देश में 20-24 साल की औसतन 26.8 प्रतिशत लड़कियां ऐसी हैं, जिनकी 18 से कम उम्र में शादी कर दी गई। गांवों में यह आंकड़ा 31 प्रतिशत है जो औसत से भी ज्यादा है, शहरों में 17.5 प्रतिशत है।

---

#### 4. न्यायलायों में कमी

##### 8 राज्यों के हाईकोर्ट में नहीं है एक भी महिला जज

- 67 सालों में सुप्रीम कोर्ट को केवल छह महिला जज मिली। अभी शीर्षकोर्ट में एक महिला जज है। इसी तरह देश की 24 हाईकोर्ट में 64 महिला जज है। जबकि पुरुषों की संख्या 611 है। हैरानी की बात यह है कि आठ राज्यों में एक भी महिला जज नहीं है।

#### 5 कम अवसर

##### 59 प्रतिशत महिलाएं आज भी अकेले घर से बाहर नहीं निकलतीं

- 80 प्रतिशत महिलाओं को डॉक्टर के पास जाने के लिए घर में पूछना पड़ता है।
- 59 प्रतिशत अकेले घर से बाहर नहीं निकलतीं। सर्वे में 58 प्रतिशत महिलाओं ने कहा-उन्हें दुकान जाने के लिए भी पूछना पड़ता है।

### कलंक जो महिलाओं को आगे नहीं बढ़ने दे रहे

#### 1 मारपीट : महिलाओं के खिलाफ सबसे बड़ा अपराध यही

महिलाओं के खिलाफ सबसे ज्यादा पति या परिजनों द्वारा पिटाई करने के मामले सामने आते हैं। पिछले दस सालों में देखे तो देशभर में 9,09,713 इस तरह के केस दर्ज हुए। यानी हर घंटे दस मामले।

#### 2 अंधविश्वास : 200 महिलाओं की डायन बताकर हत्या

पिछले 14 सालों में देश में 2000 से ज्यादा महिलाओं की डायन बताकर लोगों ने हत्या कर दी। देश में ऐसे सबसे ज्यादा मामले झारखंड में देखे गए हैं।

#### 3 यौन शोषण : यौन शोषण की 22.2 घटनाएं स्कूलों में

78 प्रतिशत महिला कामगार का यौन शोषण होता है। सबसे ज्यादा शोषण 37.8 प्रतिशत वर्कप्लेस पर होता है लेकिन शर्म की बात है कि यौन शोषण के 22.2 फीसदी मामले स्कूल कॉलेज में हो रहे हैं।

#### 4 गर्भवती : कम उम्र में माँ बन गई 7.9 प्रतिशत बच्चियां

देश में 15-19 साल की 7.9 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं, जो माँ बन गई या

---

गर्भवती हैं। गांवों में स्थिति खराब है। यहां ऐसी 9.2 प्रतिशत महिलाएं हैं जबकि शहरों 5 प्रतिशत।

## वे क्षेत्र जहाँ अभी तरक्की अधूरी

### 1 मातृ मृत्युदर

मां को बचाने में हम भूटान, श्रीलंका जैसे देशों से भी पीछे

- हर साल देश में 1 लाख में 174 महिलाओं की मौत हो जाती है।
- 1990 में 556 की होती थी। हालांकि सार्क देशों में हमारी स्थिति श्रीलंका (30), मालदीव (68), भूटान (148) से भी खराब है।

### 2 वर्कफोर्स

देश की शीर्ष कंपनियों में काम कर रही हैं केवल 2.7 महिलाएँ

- 2.7 प्रतिशत महिलाएं ही हैं, जो किसी कंपनी की प्रमुख हैं। वहीं केवल
- 7.7 प्रतिशत महिलाएं ही बोर्ड में होती हैं।
- 85 प्रतिशत कंपनियाँ महिला कर्मचारियों का गर्भावस्था के समय उनके इलाज का खर्च नहीं उठाती हैं।
- 30 प्रतिशत कंपनियाँ आज भी गर्भावस्था में महिलाओं को पेड लीव नहीं देती हैं।

### 3 राजनीति में हिस्सा

63 साल में महिला सांसदों की हिस्सेदारी 11.69 प्रतिशत तक पहुंची

- 63 साल में 7.65 प्रतिशत ही बढ़ी संसद में महिलाओं की संख्या।
- आजादी के बाद से अब तक देश को केवल 16 महिला मुख्यमंत्री मिल पाई हैं। इस मामले में भारत अफ्रीकी देशों से भी बदतर है।
- 1951 में 22 सांसद थी यानी 4.50 प्रतिशत
- 2014 में 63 सांसद थी यानी 11.69 प्रतिशत
- केन्द्रीय कैबिनेट में सिर्फ 19 प्रतिशत महिला मंत्री।

## शिक्षा का अधिकार

12वीं की पढ़ाई करते ही 15.3 प्रतिशत लड़कियों की शादी कर दी गई

- 10 साल में 12वीं की पढ़ाई पूरी होते ही 15.3 प्रतिशत लड़कियों की शादी

---

कर दी गई।

- 25.4 प्रतिशत की मिडिल स्कूल के बाद कर दी गई।
- 36 प्रतिशत महिलाएं देश में ऐसी हैं, जो सिर्फ 10वीं पास हैं। देश की 48 प्रतिशत बच्चियां ऐसी हैं, जो सिर्फ 5वीं पास हैं।

## 5 वैश्विक स्थिति

500 बेस्ट सीईओ मे भारत सिर्फ एक

- वर्ष 2015 की फॉर्च्यून 500 की 24 सीईओ की सूची में भारत से एक मात्र महिला-इंदिरा न्यूनी हैं।

100 शक्तिशाली महिलाओं में 5 भारतीय

- वर्ष 2016 की विश्व की 100 शक्तिशाली महिलाओं में भारत से 5 महिलाएँ-इंदिरा न्यूनी, अरूंधति भट्टाचार्य, चंदा कोचर, किरण मजूमदार, शोभना भरतिया ही हैं।

उत्तराखंड हाईकोर्ट ने लिविंग एन्टिटी माना, देश मे पहला, दुनिया में दूसरा मामला

## कोर्ट ने कहा, गंगा-यमुना जिंदा इंसानों जैसी, इन्हें भी कानूनी हक

नदियों की तरफ से केस करने के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाई

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने सोमवार को गंगा व यमुना पर ऐतिहासिक फैसला दिया। कोर्ट ने इन्हें लिविंग एन्टिटी यानी जिंदा इकाई घोषित किया यानी गंगा-यमुना को देश के नागरिकों की तरह संवैधानिक हक मिलेंगे। इन्हें प्रदूषित करना या नुकसान पहुंचाना जीवित इंसानों को नुकसान पहुंचाने जैसा ही अपराध होगा। यह देश में पहला और दुनिया में दूसरा मामला है। हाल ही न्यूजीलैंड ने वांगनुई नदी को जीवित व्यक्ति का दर्जा दिया है। उत्तराखंड हाईकोर्ट के जस्टिस संजीव शर्मा और जस्टिस आलोक सिंह की बेंच ने 3 सदस्यीय कमेटी को नदियों का प्रतिनिधि बनाया है। इसमें नमामि गंगे के महानिदेशक, उत्तराखंड के मुख्य

---

सचिव व एडवोकेट जनरल शामिल हैं। नदियों की ओर से ये कोई भी केस दर्ज कर सकेंगे।

कोर्ट ने हरिद्वार के मो. सलीम की अर्जी पर यह आदेश दिया। सलीम ने अतिक्रमण हटवाने के लिए 2014 में अर्जी लगाई थी। सलीम के वकील एमसी पंत ने कोर्ट को बताया था कि हाल में न्यूजीलैंड ने वांगनुई नदी को जीवित व्यक्ति का दर्जा दिया है। गंगा को भी हम लोग माता मानते हैं। क्यों न यहाँ भी ऐसा कदम उठाया जाए।

**कोर्ट ने कहा था- लुप्त सरस्वती को ढूँढने पर तो बहुत जोर लगा रहे है, लेकिन गंगा के लिए कुछ नहीं कर रहे**

लुप्त सरस्वती नदी को ढूँढने पर तो आप (केन्द्र) बहुत जोर लगा रहे है, लेकिन गंगा को बचाने के लिए कुछ नहीं कर रहे। सफाई के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए। जबकि थोडा ध्यान दे तो पुराना गौरव लोट सकता है। आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे बचना जरूरी है।

**केन्द्र ने जताई मजबूरी- यूपी व उत्तराखंड सहयोग नहीं कर रहे**

हाईकोर्ट ने पिछले साल 5 दिसंबर को उप्र, उत्तराखंड व केन्द्र सरकार को निर्देश दिए थे कि 3 माह में गंगा की नहरो से जुडी परिसंपत्तियों का बंटवारा करें। बंटवारा न होने पर कोर्ट ने फटकार लगाई तो महानिदेशक ने कहा कि राज्य सरकारें सहयोग नहीं कर रही। इस पर जज ने कहा कि केन्द्र 8 हफ्ते में गंगा प्रबंधन बोर्ड गठित कर बंटवारा करे। राज्य सरकारें सहयोग न करें तो धारा-365 के तहत उन्हें बर्खास्त करें।

**कोर्ट ने कहा- राज्य नहीं मान रहे तो धारा 365 का इस्तेमाल करें, यानि सरकारों की बर्खास्तगी**

72 घंटे में अतिक्रमण नहीं हटा तो डीएम बर्खास्त: अदलत में देहरादून के डीएम को ढकरानी की शक्ति नहर से 72 घंटे में अतिक्रमण हटाने को कहा है। चेतावनी दी कि फ़ैसले पर अमल नहीं हुआ तो डीएम बर्खास्त होंगे।

---

## अजब देश है अपना, जितना बड़ा अपराधी, उसकी उतनी ऊंची पहुंच

### पीड़ितों की मदद करने का आह्वान

नई दिल्ली देश के मुख्य न्यायाधीश जेएस खेहर ने कहा कि अपना देश भी अजीब है। जितना बड़ा अपराधी होता है, उसकी उतनी ही ऊंची पहुंच होती है।

शनिवार को सीजेआई के जेएस खेहर दिल्ली में राज्य विधि सेवा प्राधिकरण के 15वें अखिल भारतीय सम्मेलन के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने दुष्कर्म पीड़ित, तेजाबी हमले के शिकार अथवा अपने घर के एकमात्र रोजी रोटी कमाने वाले को गंवाने वालों की परिस्थितियों पर हैरानी व्यक्त करते हुए कहा कि अपराधी तो आखिरी उपाय तक न्याय पाने के लिए पहुंच जाते हैं, लेकिन उस परिवार का क्या होता होगा जिसे चलाने वाला सदस्य चला गया हो। चीफ जस्टिस ने विधि कार्य कार्यताओं से ऐसे प्रभावित लोगों तक पहुंचने की अपील की ताकि उन्हें अपेक्षित मुआवजा मिल सके। चीफ जस्टिस ने कहा कि अभियुक्तों को कानूनी सहायता दी जाती है लेकिन पीड़ित इससे वंचित रहते हैं।

### आतंकी को भी दिया न्याय

याकूब मेनन को सुप्रीम कोर्ट में दो बार मौका देने पर चीफ जस्टिस ने कहा कि भारत अजीब देश है। यहां जितना बड़ा अपराधी होगा उतनी ही ज्यादा उसकी पहुंच होगी। उनके लिए वकील खड़े होते हैं, लेकिन पीड़ितों के लिए कोई खड़ा नहीं होता। उन्होंने दुष्कर्म पीड़ित और एसिड अटैक पीड़ितों को लेकर चिंता जताते हुए कहा कि वर्ष 2017 को पीड़ितों के वर्ष के रूप में मनाएं। इस मौके पर केन्द्रिय विधि और न्याय राज्यमंत्री पीपी चौधरी, सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस दीपक मिश्रा और दिल्ली हाईकोर्ट की चीफ जस्टिस जी रोहिणी भी उपस्थित थे।

## ऐसी प्रभावना मुझे नहीं चाहिए...!?

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. हर देश में तू... 2. छू लेने दो... 3. जिस देश में गांधी ... )

ऐसी प्रभावना मुझे नहीं चाहिए, जो स्व प्रसिद्धि हेतु होती है।

जिससे होते रागद्वेष मोह, संकल्प-विकल्प-संक्लेश भी ॥(ध्रुव)

---

प्रकृष्ट भावना होती प्रभावना, जो श्रद्धा-प्रज्ञा व चर्यायुक्त।  
सत्य-समता व शान्ति सहित, ध्यान-अध्ययन व विशुद्धि युक्त।  
इससे युक्त जो है ज्ञान दान, वह ही होती श्रमणों की प्रभावना॥

इस हेतु जो होते श्रावक द्वारा, पूजा विधान पंचकल्याणक/प्रतिष्ठा तीर्थयात्रा।  
मन्दिर मूर्ति धर्मशाला निर्माण, आहार औषधि ज्ञान अभयदान।  
इसमें भूमिका श्रावकों की प्रमुख, साधु के (होते) केवल आशीष प्रवचन॥

इससे भिन्न जो होती प्रभावना, ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि हेतु।  
धनार्जन वर्चस्व भीड इकट्ठा हेतु, ईर्ष्या द्वेष घृणा व दबाव युक्त।  
संकीर्ण पंथ-मत फूट-लूट हेतु, अन्य को नीचा दिखाने हेतु॥

यह नहीं है यथार्थ से प्रभावना, ऐसी प्रभावना से मैं माध्यस्थ रहूँ।  
अन्यथा संभव है संक्लेश-द्वन्द्व जिससे भावना हो जाती मन्द।  
ध्यान-अध्ययन-शोध-बोध न होते, समता-शान्ति-विशुद्धिमन्द॥

संकल्प-विकल्प-पक्षपात होते, धनी-गरीब में भेदभाव होता।  
दबाव प्रलोभन व चंदा-चिह्ना होते अहंकार-ममकार याचना  
ये सब हुई यथार्थ से अप्रभावनां, 'कनक' अतः न चाहे ऐसी प्रभावना

सीपुर दि. 14.02.2017 रात्रि 2.35 से 3.17

मेरा भी आह्वान है कि है नवयुवक-नवयुवतियों । उठो, जागो अपना कर्तव्य सम्भालो। गिरते हुए धर्मरूपी रथ को अपने सुदृढ़ कन्धे में धारण करके उसको सच्चे धर्म के मार्ग पर गतिशील बनाओ। प्राचीन रोग के समान कलह-फूट, वाद-विवाद को वात्सल्य रूपी अचूक औषधि से दूर करके निरोगी, स्वस्थ, सबल, सुदृढ़ गतिशील बनो। वंशजो की जलती हुई झोंपडी से निकलकर सुरम्य गगनचुम्बी शीतल सुखप्रद वात्सल्य रूपी प्रसाद का निर्माण करके सुख से निवास करो। आज देश-विदेश में, राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रेम की डोरी से बंधकर अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संस्था समिति, संघ बन रहे हैं। तो क्या मुष्ठीभर जैन धर्मावलम्बियों के मध्य में संगठन नहीं हो सकता है अवश्य हो सकता है। मनुष्यों के लिए असम्भव

नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। संगठन का बीज वात्सल्य में निहित है। इसलिये वात्सल्य को अपने हृदयरूपी उपजाऊ जमीन में डालकर गुणग्राही, उपगूहन, स्थितिकरण आदि जल खाद रश्मि से उसको अंकुरित पल्लवित, पुष्पित एवं फलित करो। आज जैन धर्मावलम्बियों में संगठन के नाम पर अनेक संस्था, समिति, सभा मिलन होते हुए भी वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये या अपने लक्ष्य से विपरीत गमन कर रहे हैं। इसलिये यह संगठन आदि रचनात्मक कार्य के साथ-साथ विध्वंसात्मक कार्य करके सुख्यात एवं कुख्यात हो रहे हैं। कुख्यात होने के कारण संकुचित मनोभाव, वात्सल्य भाव से रहित निहित स्वार्थनिष्ठ, मतवाद पंथवाद, जातिवाद कुर्सीवाद, अर्थवाद दलवाद (पार्टीबाजी) आदि है। संगठन के लिये ये सब विरोधात्मक कारण हैं इसीलिये इन विरोधी कारणों को हटाने से अत्यन्त सरल एवं सहज साध्य है।

#### प्रभवना अंग का लक्षण

आत्मा प्रभावनीयो, रत्नत्रय तेजसा सततमेव।

दान-तपो-जिनपूजा-विद्याऽतिशयैश्च जिनधर्मः ॥३०॥

व्यवहारनय से सम्यक्दृष्टि भव्यों के द्वारा दान, तप, जिनपूजा अतिशय विद्या के द्वारा स्याद्वाद से अंकित जिनधर्म की प्रभावना करनी चाहिए अर्थात् अतिशय से उसको बढ़ाना चाहिए। पुनः रत्नत्रय रूपी तेज से दर्शन, ज्ञान, चारित्रात्मक आत्मा को सतत उद्योतन करना चाहिए। प्रभावना का अर्थ है (प्र+भावना) अर्थात् प्रकृष्ट, निर्मल भावना, सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र तपों से जिनशासन का उद्योतन करना, आत्म प्रकाशन करना प्रभावना है।

अज्ञान तिमिर व्याप्तिमपाकृत्य यथायथम्।

जिन शासन माहात्म्य प्रकाशः स्यात्प्रभावना ॥१८॥ (रत्न. श्रा)

अज्ञान रूपी अन्धकार के विस्तार को दूर कर अपनी शक्ति के अनुसार जिन शासन के माहात्म्य को प्रकट करना प्रभावना गुण है।

जैसे अन्धकार को हटाने के लिये पहले स्वयं का दीपक जलाना अनिवार्य है। वैसे अज्ञान रूप अन्धकार में धर्म की प्रभावना करनी है तो पहले अपने अज्ञान रूप अन्धकार को हटाकर स्वयं को प्रकाशित करना चाहिए। कुन्द कुन्द स्वामी ने कहा भी है-

---

## “आद हिदं कादव्वं यदि चेत् परिहिदं कादव्वं”

पहले आत्म कल्याण करना चाहिये सम्भव हो तो पर का भी कल्याण करना चाहिये। महात्मा बुद्ध ने भी कहा था-

आत्म दीपो भव, पर दीपों भव।। पहले आत्मा रूपी दीपक को प्रकाशित करो फिर दूसरों को भी प्रकाश दो। इसीलिए धर्म कि प्रभावना करनी है तो सर्व प्रथम रत्नत्रयरूपि आध्यात्मिक ज्योति बांटो। धर्म की प्रभावना करने के लिये दान, तपश्चरण, जिनेन्द्र पूजन को भी धर्मात्मा बनाकर धर्म की प्रभावना की जाती है।

जिस प्रकार वृक्ष की अनेक शाखा-प्रशाखायें होती हैं उसी प्रकार सम्यग्दर्शन की भी अनेक शाखा-प्रशाखायें होती हैं। कुन्द कुन्द देव अष्टपाहुड़ में आठ गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं-

**णिंदा गरूहा संवेग य उबसम भक्ति ।**

**वत्सल पहावणा अट्ट होदि सम्मत्ते ॥**

(1) निन्दा (2) गर्हा (3) संवेग (4) वैराग्य (5) उपशम (6) भक्ति (7) वात्सल्य (8) प्रभावना ये अष्टगुण सम्यग्दृष्टि के होते हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव स्वयं से जो दोष होता है उनकी आलोचना स्व साक्षीपूर्वक या देव, गुरु आदि पर साक्षीपूर्वक आलोचना करता है, वह स्वयं की आलोचना करता है परन्तु दूसरों की आलोचना नहीं करता है क्योंकि वह सोचता है कि “स्वयं की आलोचना करने से कर्मों की निर्जरा होती है एवं आगे के लिये दोषों से निवृत्ति होती है। परन्तु दूसरों की निन्दा करने से पाप बन्ध होता है तथा परस्पर में वैरत्व भाव की सृष्टि होती है। इतना ही नहीं मैं स्वयं दोषी होकर दूसरों की समालोचना क्यों करूँ और कहा भी है-

**बुरा जो देखने मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।**

**जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा ने कोय ॥**

जब एक व्यक्ति दूसरों की ओर अंगुलि करके संकेत करता है तब तीन अंगुली संकेत करती है कि पापी तुम उससे भी तीन गुना अधिक पापी हो। सम्यग्दृष्टि संवेग, वैराग्य सम्पन्न होने के कारण संसार शरीर भोगों से विरक्त हेकर धर्म में अनुरक्त होता है। उसकी कषाये उपशमित होने के कारण वह थोड़ी-थोड़ी बात में क्षुब्ध होकर कलह-झगड़ा, वाद विवाद नहीं करता है। वह साक्षात्

---

वात्सल्य जीवन मूर्ति बनकर स्व-प्रभावना के साथ- साथ धर्म की भी प्रभावना करता है।

सम्यग्दर्शन के आठ अंग में विशेष करके - निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि अंग स्वात्मनिष्ठ हैं तथा उपगृहन, स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावना समाजनिष्ठ है। अर्थात् पहले के चार अंग व्यक्तिगत हैं अन्त के चार अंग समाजगत हैं। पहले के चार अंगों से स्वयं का निर्माण तथा स्वयं को आदर्श बनाता है तथा अन्त के चारों अंगों के माध्यम से समाज के साथ जुड़कर समाज का निर्माण एवं उसको आदर्श बनाता है।

जिन शासन में अहिंसा प्रधान होने के कारण एवं अहिंसा के अन्तर्भूत दया, प्रेम समता, करुणा साम्यभाव होने के कारण, जैन धर्म सबके साथ प्रेम, मैत्री, सहकार, संगठन के साथ जीना सिखाता है। यदि जैन धर्मावलम्बी होने पर भी उपरोक्त गुण नहीं है तो यथार्थ से जैन धर्मावलम्बी नहीं है। फूट डालना कलह करना झगड़ा करना यह दुर्जनों का कार्य है, सज्जनों का काम नहीं है। नीतिकारों ने कहा भी है-

**विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः पेरषां पर पीडनाय ।**

**खलस्य साधोर्विपरीतमेतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ।।**

दुर्जन लोग विद्या प्राप्त करके वाद विवाद कलह करते हैं, धन को प्राप्त कर घमण्डी हो जाते हैं तथा शक्ति प्राप्त कर दूसरों को पीड़ा पहुँचाते हैं, परन्तु सज्जन लोग विद्या प्राप्त करके ज्ञानी बनते हैं धन प्राप्त करके दानी होते हैं, शक्ति प्राप्त कर दूसरों की रक्षा करते हैं।

प्रकृष्ट/उत्कृष्ट/उदार/निर्मल/पवित्र साम्यभाव को प्रभावना कहते हैं। प्रभावना पहले स्वयं में होती है उसके अनन्तर उसका प्रचार-प्रसार विभिन्न माध्यम से किया जाता है। रत्नत्रयरूपी प्रकाश से पहले स्वयं को प्रकाशित करना चाहिए उसके बाद दूसरों को प्रकाशित करना चाहिए। उसके बाद जैसे जो दीपक स्वयं पहले प्रकाशित होता है वही दीपक दूसरों को प्रकाशित करता है। बुझा हुआ दीपक न स्वयं को प्रकाशित कर सकता है न दूसरों को प्रकाशित कर सकता है। प्रभावना के अनेक कारक कारण/उपाय होते हैं। जैसे दान पूजा, उपवास ज्ञान/उत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रम/रथ यात्रा/पंचकल्याण वेदी प्रतिष्ठा/तीर्थयात्रा/सत्साहित्य/धार्मिक पत्रिका

---

आदि। परन्तु पवित्र प्रकृष्ट भावना या महान उदार उद्देश्य के बिना उपरोक्त कारक/कारण भी वस्तुतः प्रभावना के अंग/उपाय नहीं बन सकते हैं। जैसे अंकुरोत्पत्ति शक्ति से रहित बीज को कितना भी पानी, खाद औषध देने पर भी उस बीज से अंकुरोत्पत्ति नहीं हो सकती है। अन्तरंग अच्छी भावना से रहित बाह्य प्रभावना की शोभा उसी प्रकार है जिस प्रकार शवयात्रा की शोभा है। नाम बढ़ाई काम के लिये जो दानादि बाह्य प्रभावना करते हैं, उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कुछ व्यक्ति माता-पिता भाई-बहन की सेवा/सुश्रुषा/व्यवस्था के लिए तो बेपरवाह हैं यहाँ तक कि अपने ग्राम नगर में आगत उत्तम पात्र स्वरूप मुनि, आर्यिका आदि को दान-मान-सम्मान नहीं देता है, ग्राम के मंदिर में पूजा दर्शनादि नहीं करता है वो भी पंचकल्याणकादि में भीड़ देखकर लाखों रूपयों की बोली लेता है।

देवदर्शन, तीर्थयात्रा, पूजा पंचकल्याणकादि का मुख्य उद्देश्य स्वदर्शन अन्तर्यात्रा स्वकल्याणक के लिये है। अभी अनेक व्यक्ति धर्मकार्य को धनकार्य/परमार्थ का अर्थोपार्जन उपाय रूप में प्रयोग कर रहे हैं। अभी पंचकल्याणक तो पंचो के कल्याणक (कमेटी बालों की स्वार्थ सिद्धि) रूप में हो रहा है। वहाँ विशेषता: धर्म के नाम पर धन की पूजा, धर्म के नाम पर धनी की पूजा, प्रभावना के नाम पर बाह्य आडम्बर, मनमंजन (भाव निर्मल के स्थान पर मनोरंजन बेण्ड पार्टी, संगीत-नायक कार्यक्रम के अतिरेक) पंच कल्याण मूल क्रिया के स्थान पर बोली, धनी व्यक्तियों की मान सम्मान की क्रिया होती है। धार्मिक कार्य के नाम पर पहले शोषण भी करते हैं और जो यात्री उस कार्यक्रम में आते हैं उनकी व्यवस्था नहीं करते हैं और व्यवस्था धनी लोगों की करेंगे तथा साधारण व्यक्ति की करेंगे तो शोषण करने के लिये। उसी ही प्रकार बड़े-बड़े तीर्थस्थान की भी महिमा है।

जो व्यक्ति बोली में लाखों रूपये खर्च करते हैं वे भी सत्साहित्य प्रकाशन प्रचार प्रसार के लिए, बच्चों के धार्मिक संस्कार के लिए, धार्मिक विद्यालय शिविर के लिए 10-20 रूपये भी दान में नहीं देंगे। मंदिर धर्मशाला, मूर्ति निर्माण, पंचकल्याण जरूर करना चाहिए परन्तु इससे भी अधिक आवश्यक है ज्ञान-प्रचार, बच्चों में संस्कार, स्वयं का निर्माण।

आज जैन लोग करोड़ों, अरबों रूपये निर्जीव मूर्ति को भगवान बनाने में खर्च करते हैं परन्तु हजारों रूपये भी सजीव बच्चों को संस्कार से महामानव या

---

भगवान बनाने में खर्च नहीं करते हैं। मैं मंदिर, मूर्ति, पंचकल्याण का विरोधी नहीं हूँ परन्तु व्यर्थ खर्च, ब्राह्म आडम्बर का अवश्य विरोधी हूँ। कुछ त्यागी व्रती, आचार्य, उपाध्याय साधु-साध्वी और पंडित प्रतिष्ठाचार्य भी आडम्बर बोली आदि आगम विरुद्ध कार्य को करते करवाते हैं। उनकी निन्दा जैन पत्रिकाओं तक में बार-बार आती है परन्तु वे जैसे कार्य समाज के लिए करके निन्दा के पात्र बनते हैं। कुछ निहित स्वार्थी व्यक्ति भी अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए साधु का इस्तेमाल करते हैं एवं स्वार्थसिद्धि के बाद वे भी उन साधु आदि की निन्दा करते हैं तथा साधु की सेवा व्यवस्था भी नहीं करते हैं।

धर्म की प्रभावना तथा संगठन/प्रेम के लिए संस्था/सभा/समिति मण्डल मिलनादि का जन्म हुआ है परन्तु इनके माध्यम से भी समाज में फूट, वैमनस्य, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या वैरत्व अधिक बढ़ रहा है। वे अंग्रेजों की नीति “फूट डालो-राज करो” को पूर्ण चारितार्थ करते हैं। संगठन की शक्ति ऐसी एक शक्ति है जिससे कष्टसाध्य कार्य भी सुख साध्य हो जाता है। इसलिए कहा है संघे शक्ति कलौ युगे अर्थात् कलियुग मे संघ/संगठन/एकता में शक्ति है इसलिए कहा है- By unifying we stand by dividing we fall अर्थात् संगठन से हम उन्नति कर सकते हैं, प्रभावना कर सकते।

कुछ लोग की पर्सनेलिटी ऐसी होती है कि हर कोई उन्हें पसंद करता है। क्या आप भी चाहते हैं कि दुनिया का हर आदमी आपको पसंद करे? इसके लिए आपको कुछ खास बातों को अपने जीवन में उतारना होगा- जानते हैं इनके बारे में-

## आप बन सकते हैं सबके पसंदीदा इंसान

हर आदमी चाहता है कि दुनिया उसे पसंद करे। इसके लिए आपको अपने व्यक्तित्व में कुछ खास गुणों को सामवेश करना होगा। जानते हैं कि किस तरह से आप सबका दिल जीत सकते हैं-

नेपोलियन हिल सबसे मशहूर सेल्फ-हेल्प लेखक रहे। वह ओरेकल के फाउंडर लैरी एलिसन, मीडिया मुगल ओपेरा विन्फ्रे और परफॉर्मंस कोच टोनी रोबिन्स की प्रेरणा रहे हैं। उनकी 1937 की पुस्तक ‘थिंक एंड ग्रो रिच’ सर्वकालिन

---

टॉप सेलिंग बुक्स में से एक हैं। अपनी किताब में वह बताते हैं कि किस तरह से आप लोगों का दिल जीत सकते हैं-

### **दिमाग खुला रखें**

कुछ लोग सिर्फ उन्हीं लोगों को पसंद करते हैं, जो उन्हीं की तरह से सोचते हैं। आगे बढ़ने के लिए हर तरह के विचारों का स्वागत करना चाहिए। दिमाग को खुला रखें।

### **धैर्य रखें**

आपको हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि अगर आप सही समय पर अपने शब्दों और कार्यों का इस्तेमाल करेंगे तो आपको इसका पूरा फायदा मिलेगा। जीवन में धैर्य जरूरी है।

### **लोगों का भला करें**

एक अच्छा नेटवर्कर बिना किसी स्वार्थ के लोगों की मदद करता है। अगर आप हर रोज एक काम बिना स्वार्थ के करने लग जाएं तो आप तेजी से सफल हो सकते हैं।

### **मुस्कुराते रहें**

अगर आप बातचीत में मुस्कुराते रहते हैं तो इससे सामने वाले के दिमाग में आपकी काफी पॉजिटिव तस्वीर बनती है। मुस्कुराहट आपको सफलता के करीब लेकर जाती है।

### **किसी को न डराएं**

आपको सिर्फ लोगों के भले की बातें करनी चाहिए। आपको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए, जो लोगों को आगे बढ़ने से रोके और बड़ा कदम उठाने से डराएं। आप प्रेरक बनें।

### **सकारात्मक मेंटल एटीट्यूड**

लोगों का पसंदीदा इंसान बनने के लिए आपको सकारात्मक मेंटल एटीट्यूड रखना जरूरी है। आपको लोगों को दुनिया की सकारात्मक बातें बतानी चाहिए। इसके अभाव में आप अपनी प्रतिष्ठा कायम नहीं रख पाते हैं।

---

## दोस्ताना टोन में बात करें

आपको लोगों के साथ दोस्ताना टोन में बात करनी चाहिए। अगर आप आत्मविश्वास के साथ बात करते हैं तो लोग आपके साथ जुड़ते हैं और आपको फायदा होता है।

## विफलता में सबक खोजें

लोग उन्हें पंसद करते हैं, जो विफलता के बीच में से सफलता का रास्ता खोज लेते हैं। अगर आप विफलताओं से सबक लेते हैं तो सफल होते हैं और सबके प्रिय बन जाते हैं।

## लोगों को सिखाएं

अगर लोगों को कोई नई चीज या काम सिखाते हैं तो उनका भला करते हैं और मददगार के रूप में खुद को स्थापित करते हैं। इससे आप अपने ज्ञान को परख पाते हैं।

## बुराई न करें

कुछ लोग मौका मिलते ही किसी भी व्यक्ति की बुराई करना शुरू कर देते हैं, अगर आप लोगों का दिल जीतना चाहते हैं तो किसी की भी बुराई करने से बचना चाहिए।

## सही राह बताएँ

अगर आप किसी व्यक्ति को गलत राह पर जाने से रोकते हैं और उसे सच्चाई बताने की कोशिश करते हैं तो वह व्यक्ति हमेशा के लिए आपका बनकर रह जाता है।

## खुलकर तारीफ करें

आपको लोगो की तारीफ करने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। लेकिन आपको तारीफ इस तरह से करनी चाहिए कि वह किसी को झूठी न लगे। सही व्यक्ति की सही समय पर तारीफ जरूर करे।

## ज्यादा प्रतिक्रिया न दें

आपको किसी भी सकारात्मक या नकारात्मक चीज पर जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया देने से बचना चाहिए। कठोर शब्दों के बजाय मौन ज्यादा प्रभावी होता है।

---

## बातचीत के दौरान ध्यान दें

अगर आप बातचीत को अपना ईगो संतुष्ट करने का मौका समझते हैं, तो इससे किसी को फायदा नहीं होता। इसके बजाय आपको लोगों की बात को ध्यान से सुनना चाहिए।

**अगर जीवन में सफल होना चाहते हैं तो अपने रवैये को सुधारना होगा। आपको हर चुनौती का खुलकर सामना करना होगा।**

## एटीट्यूड से मिलती है जीवन में सफलता

बाक्सिंग के खेल में आपकी हार आपके जमीन पर गिर जाने से नहीं होती, आपकी हार तब घोषित होती है जब आप वापस उठकर लड़ने से इनकार कर देते हैं। किसी भी व्यक्ति की असली क्षमता तब पता चलती है, जब वह किसी मुश्किल का सामना करता है। विपरीत परिस्थितियों में आपका रवैया ही तय करता है कि आप जीवन में असाधारण उपलब्धियां हासिल करेंगे या नहीं। प्रतिभा एक स्तर तक आपको ले जा सकती है, उसके बाद सिर्फ आपका रवैया आपका भविष्य तय करता है। आपको अपना एटीट्यूड पॉजिटिव रखना चाहिए, तभी सफलता मिल सकती है।

## संपूर्ण संकल्प से कठिनाई दूर

सार यह है कि अगर जीवन है तो मुश्किलें हैं, चुनौतियां हैं, विपत्तियां हैं, दुर्घटनाएं हैं। साथ ही जीवन में आपके पास विश्वास, धैर्य, मनोबल और साहस भी तो हैं। अगर जीवन है तो आपके साथ राजनीति होगी, पक्षपात होगा, भेदभाव होगा और ईर्ष्या रखी जाएगी। प्रतिकूल परिस्थितियों में आपका भावनात्मक संतुलन, जुझारू रवैया, मनोबल ही आपके व्यक्तित्व की सही पहचान है।

## हौसले ने परिस्थिति को हराया

वर्ष 1985 में कॉरपोरेट राजनीति के चलते स्टीव जॉब्स को एप्पल से निकाल दिया गया। कितना अपमानजनक होता है उस कंपनी से निकाल दिया जाना, जिसके अब आप सह संस्थापक हो। पर स्टीव जॉब्स की रचानात्मक यात्रा इससे अप्रभावित रही। वर्ष 1986 उन्होंने नेक्स्ट नाम की कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म

---

कंपनी बनाई। वे लगातार मेहनत करते गए। 1997 में एप्पल की हालत खराब हो गई और एप्पल और नेक्स्ट का मर्जर हुआ और स्टीव जॉब्स फिर से एप्पल के सीईओ बने।

### असल जिदंगी का नायक

इसी तरह से प्रसिद्ध सुपरमैन फिल्मों की श्रृंखला में पहली 6 फिल्मों में सुपरमैन का रोल क्रिस्टोफर रीव ने किया। वे बेहद खुबसूरत और लोकप्रिय थे। वर्ष 1995 में घुड़सवारी करते हुए एक दुर्घटना का शिकार हुए। परिणामस्वरूप वे व्हीलचेयर पर आ गए। गहरे अवसाद में जाने के लिए ये सब काफी था। लेकिन क्रिस्टोफर रीव ने हार नहीं मानी उन्होंने लेखन शुरू किया। एक किताब 'स्टिल मी' लिखी। यह बेहद लोकप्रिय हुई। उन्हें व्याख्यान के लिए सब जगह बुलाया जाने लगा।

## वह पुण्य मुझे नहीं चाहिए जिस पुण्य से हो...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. आत्मशक्ति... 2. छू लेने दो... 3. इस देश में गांधी ....)

वह पूण्य मुझे नहीं चाहिए, जिस पुण्य से मिले सत्ता-सम्पत्ति ।

किन्तु भाव में हो विकृति, पाकर भी प्रसिद्धि-बुद्धि ॥

वह पुण्य मुझे भी चाहिए, जिससे हो भाव विशुद्धि,  
समता शान्ति (से) हो संवृद्धि, जिससे मिले परम सिद्धि।  
पुनाति आत्मानं पुण्यमिती, कहते हैं तीर्थकर देव,  
जिससे आत्मा न होता पावन, वह है पापानुबन्धी पुण्य ॥(1)

महान् उद्देश्य व पावन भाव से, ख्याति पूजा लाभ रहित से,  
स्व-पर व विश्व हित हेतु से (में) जो होते हैं भाव-व्यवहार है।  
दानदयापरोपकार सेवा, पूजा प्रार्थना व तीर्थ वन्दना,  
ध्यान- अध्ययन व जप तप, त्याग आदि शुभपुण्य॥ (2)

इससे भिन्न (जो) भाव-व्यवहार से , जो करते (हैं) दान धर्म आदि,

---

उससे होता पापानुबन्धी पुण्य, उससे होते भावविकृत आदि।  
जिससे होते राग द्वेष मोह, ईर्ष्या तृष्णा व घृणा विद्रोह,  
ख्याति पूजा लाभ वर्चस्व दंभ, अन्याय अत्याचार शोषण युद्ध ॥ (3)

फैशन-व्यसन व भोगोपभोग, वैर-विरोध व आतंकवाद,  
परनिन्दा अपमान व भेदभाव, अहंकार ममकार क्षुद्रभाव।  
यथा रावण कंस जरासन्ध, साम्राज्यवादी रोमन (शासक) नीरो,  
चैंगेज खाँ हिटलर तानाशाह, अनेक कुख्यात क्रूर शासक ॥ (4)

ऐसा ही अनेक प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध, होते पापानुबन्धी पुण्यवन्त,  
भले वे करते शासन या धर्म, नहीं करते हैं यथार्थ से धर्म (पुण्य)।  
विश्व के अधिकांश पापकर्म, पापानुबन्धी पुण्यवन्त से सम्पन्न,  
ऐसे लोग ही पशु-पक्षी से ले, दुर्बल-गरीबों का करते दमन ॥ (5)

पशु-पक्षी मे वे न मानते आत्मा, दुर्बल-गरीब-नारी को तथा,  
(इन्हें) दास गुलाम बनाते (क्रय) व्यापार करते, अधिकार छिनते व हत्या करते।  
दास-दासों को वे लडाते थे, दास व शेरों को लडाते थे,  
पशु-पशु को वे लडाते थे, वर्चस्व व शौक हेतु करते थे ॥ (6)

क्रूर-शिकारी पशु से भी नीच थे, असभ्य-जंगली से भी निर्दयी थे,  
दया-दानव सेवा से रहित थे, तो भी स्वयं को सर्वोच्च मानते थे।  
रोमन साम्राज्य में ये अधिक हुए, रोमनवासी स्वयं को श्रेष्ठ मानते हुए,  
ईसा से थोडा परिवर्तन हुआ, विदेशों मे आत्मा का ज्ञान न था ॥ (7)

भारत पूर्व से ही विश्वगुरु रहा, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान रहा,  
(तो भी) जो हुए पापानुबन्धी पुण्यवन्त, उन्होंने भी किये उक्त कुकृत्य।  
इससे होता है घोर पाप कर्म, संसारचक्र में होता परिभ्रमण,  
अतएव ऐसा पुण्य नहीं चाहिए, 'कनक' को आत्मिक सुख चाहिए ॥ (8)

सीपुर- 12.02.2017 रात्रि- 8.48 व 9.158

---

(यह कविता विदेशी हिस्टोरी टी.वी चैनल बावेरियन रायजिंग ग्लेडियटर से भी प्रेरिता है)

**विशेषार्थ :** चतुर्थ गुणस्थान से आगे उत्तरोत्तर पापकर्म का संवर और निर्जरा की वृद्धि हो जाती है। और पुण्य कर्म का आस्रव और बन्ध उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है। इस प्रकार क्रिया सकषाय गुणस्थान तक ( 10 वें गुणस्थान तक ) चलती रहती है। क्षीणकषाय आदि गुणस्थान मे पुण्यास्रव होता है फिर भी बन्ध नहीं होता है परन्तु पुण्य कर्म तेरहवें गुणस्थान तक नष्ट नहीं होता है किन्तु बढ़ता ही रहता है। परन्तु परम योगी शैलेश अवस्था को प्राप्त अयोगी केवली गुणस्थान के चरम समय और द्विचरम समय में संपूर्ण पुण्य और पाप कर्मों का समूल विनाश हो जाता है। पाप प्रकृति की यथायोग्य द्वितीयादि गुणस्थान में संवर एवं निर्जरा होती है। परन्तु विशिष्ट पुण्य कर्मों का संवर निर्जरा 14वें गुणस्थान के नीचे होती नहीं है। परंतु उत्तरोत्तर गुणस्थान में अनुभाग शक्ति बढ़ती जाती है। परन्तु परिनिर्वाण के पूर्ववर्ती समय मे संपूर्ण कर्म नष्ट हो जाते हैं।

### किनके पुण्य हेय है?

पुण्येण होइ विहवो विहवेण होई मड़-मोहो ।

मड़ मोहेण य पाव ता पुण्यं अह मा होउ ॥60॥

**अर्थ :** पुण्य से घर में धन होता है और धन से अभिमान, मान से बुद्धि भ्रम होता है। बुद्धि में भ्रम होने से (अविवेक से) पाप होता है। इसलिये ऐसा पुण्य हमारा न हो।

“सत्यं वाचि मतौ श्रुतं हृदि दया शौर्यं भुजे विक्रमे ।

लक्ष्मीर्दानमनूनमर्थिनिचये मार्गे गतिनिर्वृते: ॥

प्राग्जनींह तेऽपि निरहंकाराः श्रुतेर्गोचराश्चित्रं संप्रति ।

लेशतोऽपि न गुणस्तेषां तथात्यद्भुताः ॥60॥

भेदाभेद रत्नत्रय की आराधना से रहित देखें, सुने, अनुभवे, भोगों की वांछारूप निदान बन्ध के परिणामों से सहित जो मिथ्यादृष्टि संसारी अज्ञानी जीव है। उससे पहले उपार्जन किये भोगों की वांछारूप पुण्य उसके फल से प्राप्त हुई घर के सम्पदा होने से अभिमान (घमंड) होता है, अभिमान से बुद्धिभ्रष्ट होती है, बुद्धि भ्रष्ट कर पाप कमाता है और पाप से भव-भव में अनंत दुःख पाता है। इसलिये मिथ्यादृष्टियों का पुण्य, पाप का ही कारण है। जो सम्यक्त्वादिगुणसहित भरत, राम,

पाण्डवादिक विवेकी जीव है उनको पुण्य बन्ध अभिमान उत्पन्न नहीं करता, परंपरा से मोक्ष का कारण है। जैसे-अज्ञानियों को पुण्य का फल विभूति गर्व कारण है, वैसे सम्यग्दृष्टियों के नहीं हैं। वे सम्यग्दृष्टि पुण्य के पात्र हुये चक्रवती आदि की विभूति पाकर मद अहंकार आदि विकल्पों को छोड़कर मोक्ष को गये अर्थात् सम्यग्दृष्टि जीव चक्रवती बलभद्र पद में भी निरहंकार रहे। ऐसा ही कथन आत्मानुशासन ग्रंथ में श्री गुणभद्राचार्य ने किया है कि पहले समय में ऐसे सत्यपुरुष हो गये हैं जिनके वचन में सत्य बुद्धि में शास्त्र मन में दया, पराक्रम रूप भुजाओं में शूरवीरता याचकों को पूर्ण लक्ष्मी का दान और मोक्षमार्ग में गमन है। वे निराभिमानी हुये जिनको किसी गुण का अहंकार नहीं हुआ। उनके नाम शास्त्रों में प्रसिद्ध है। परन्तु अब बड़ा अचम्भा है कि इस पंचमकाल में लेश मात्र भी गुण नहीं है तो भी उद्धतपना है, यानि गुण तो रंच मात्र भी नहीं और अभिमान में बुद्धि रहती है। (परमात्म प्रकाश)

### पाप भी उपादेय है।

दुःखदं जणिवि लहु सिवमई जाई कुणंती जीवानां दुःखानि जनित्वा लघु शीघ्रं शिवमति मुक्तियोग्यमर्ति यानि कुर्वन्ति। अयमत्राभिप्रायः यत्र भेदाभेदरत्नयात्माकं श्री धर्म लभते जीवस्तत्पापजनित दुःखमपि श्रेष्ठमिति कस्मादिति चेत। "आर्ता नरा धर्म परा भवन्ति" इति वचनात् ॥ 56 ॥

अर्थ: आगे जिस पाप के फल से यह जीव नरकादि में दुःख पाकर उस दुःख को दूर करने के लिये सन्मुख होता है, वह पाप का फल भी श्रेष्ठ (प्रशंसा योग्य) है। ऐसा दिखलाते हैं।

हे जीव! जो पाप के उदय से जीव को दुःख देकर शीघ्र ही मोक्ष के जाने योग्य उपायों में बुद्धि कर दे तो वे पाप भी बहुत अच्छे हैं, ज्ञानी ऐसा कहते हैं।

कोई जीव पाप करके नरक में गया वहाँ पर महान् दुःख भोग उससे कोई समय किसी भी जीव के सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है क्योंकि उस जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति के तीन कारण हैं। पहला तो यह है कि तीसरे नरक तक देवता उसे संबोधन को (चेतावने को) जाते हैं। कभी कोई जीव को धर्म सुनने से सम्यक्त्व उत्पन्न हो जावे, दूसरा कारण- पूर्व भव का स्मरण और तीसरा नरक की पीड़ाकारी दुःख से दुःखी होना, नरक को महान् दुःख का स्थान जानकर नरक के कारण जो हिंसा, झूठ चोरी, कुशील, परिग्रह और आरम्भादिक है उनको खराब

---

जान के पाप से उदास होना।

तीसरे नरक तक ये तीन कारण हैं। आगे के चौथे, पाँचवें, छठवें, सातवें नरक में देवों का गमन न होने से धर्मश्रवण तो है ही नहीं लेकिन जातिस्मरण है तथा वेदना कर दुःख हो के पाप से भयभीत होना वे दो ही कारण है। इन कारणों को पाकर किसी जीव के सम्यक्त्व उत्पन्न हो सकता है। इस नय से कोई भव्य जीव पाप के उदय से खोटी गति में गया वहाँ जाकर यदि सुलट जावे तथा सम्यक्त्व पावे तो वह कुगति भी श्रेष्ठ है। यही योगिन्द्राचार्य ने मूल में कहा है जो पाप जीवों को दुःख प्राप्त करा करके फिर शीघ्र ही मोक्षमार्ग में बुद्धि को लगावे, तो वे अशुभ भी अच्छे हैं तथा जो अज्ञानी जीव किसी समय अज्ञान तप से देव भी हुआ और देव से मरकर एकेन्द्रिय हुआ तो वह देवपना किस काम का ? अज्ञानी को देवपना भी वृथा है। जो कभी ज्ञान के प्रसाद से उत्कृष्ट देव होके बहुत काल तक सुख भोग के देव से मनुष्य होकर मुनिव्रत धारण करके मोक्ष को पावे तो वह भी अच्छा है।

ज्ञानी पुरुष उन पापियों को भी श्रेष्ठ कहते हैं, जो पाप के प्रभाव से दुःख भोगकर उस दुःख से डर के दुःख के मूल कारण पाप को जानके उस पाप से उदास होवे, वे प्रशंसा करके योग्य हैं और पापी जीव प्रशंसा के योग्य नहीं हैं। क्योंकि पाप क्रिया हमेशा निन्दनीय है। भेदाभेदरत्नत्रय स्वरूप श्री वीतराग देव के धर्म को जो धारण करते हैं वे श्रेष्ठ हैं। यदि सुखी धारण करे तो भी ठीक और दुःखी धारण करते हैं तब भी ठीक, क्योंकि शास्त्र का वचन है कि कोई महाभाग दुःख हुए ही धर्म में लवलीन होते हैं। (परमात्म प्रकाश)

**दुःख में सुमिरन सब करै, सुख में करे न कोय।**

**जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय ॥**

**अर्थ:** साधारण संसारी जीव दुःख के समय में धर्म का आचरण करता है। परन्तु धर्म के कारण किंचित् सुख प्राप्त होने से धर्म को ही भूल जाता है। पापादिक क्रियाओं में लग जाता है, जब पुनः दुःख प्राप्त होता है। यदि जीव सुख के समय में भी धर्म आचरण करने लगेगा तो कभी भी दुःख नहीं होगा।

**कृत्वा धर्मविघातं विषयासुखान्यनुभवन्ति ये मोहात्।**

**आच्छिद्य तरून् मूलात् फलानि गृह्णन्ति ते पापाः ॥24॥**

**अर्थ :** जो मोही कामांध, विषयासक्त, जीव अज्ञानता से धर्म को नष्ट

करके विषय सुखों को अनुभव करते हैं वे पापी वृक्ष को जड़ से उखाड़कर फल को ग्रहण करना चाहते हैं। अर्थात् पूर्व पुण्य कर्म के उदय से जो कुछ वैभव मिला है उस वैभव में लीन होकर जो केवल भोगासक्त होता है वह पूर्व उपार्जित पुण्य को पूर्णरूप से भोग करता है। परन्तु नवीन पुण्यार्जन नहीं करता जिससे पाप ही पाप उसके पल्ले में रहता है। उससे वह नरक निगोद में जाता है। इसलिये पूर्वार्जित पुण्य से वैभव मिला उसको बिना त्यागे भोग करने से उस पुण्य से उसकी दुर्गति हुई इस प्रकार से पुण्य हेय है। (आत्मानुशासन)

मिथ्यादृष्टि को पापानुबन्धी पुण्य से जो वैभव की प्राप्ति होती है उस वैभव में मिथ्यादृष्टि लीन होकर आसक्ति पूर्वक भोग करता है किन्तु त्याग नहीं करता उसका वैभव अर्थात् पुण्य फल संसार का कारण है। इसलिये उसका पुण्य कर्म परंपरा से मोक्ष का कारण नहीं है। किन्तु संसार का कारण होता है अर्थात् पुण्य फल रूप वैभव को प्राप्त कर जो आसक्ति पूर्वक भोगता है वह मिथ्यादृष्टि है। वही बहिरात्मा है। सम्यग्दृष्टि का पुण्य ही पुण्यानुबन्धी पुण्य है, सम्यग्दृष्टि पुण्यरूप वैभव को प्राप्त कर उसमें आसक्ति पूर्वक लीन नहीं होता है। वह सोचता है, जानता है, मानता है कि वैभव मेरे आत्म स्वरूप से पृथक् है पुण्य कर्म का फल है कुछ चारित्र कर्म के उदय से आत्मिक शक्ति अभाव से रोगी जैसे तिक्त औषध सेवन करता है। अनासक्तपूर्वक उसी प्रकार वह सम्यग्दृष्टि भोग को रोग मानकर निरूपाय होकर अनासक्तपूर्वक भोगता है। वह अनासक्तपूर्वक भोगते हुए कर्म को बाँधता ही है परन्तु जितने अंश अनासक्त भाव है उतने अंश में कर्म बंध नहीं होता है। परन्तु अंतरंग में सतत भोगों की निंदा गर्हा करते हुए उन भोगों से छूटने के लिए रास्ता ढूँढता रहता है।

जब तक जीव सम्पूर्ण भोग, आरंभ, परिग्रहों से विरक्त नहीं हो पाता है तब तक स्वशक्ति के अनुसार दान, पूजा, गुरु सेवादि करते हुए पूर्व पुण्य का सुदपयोग करता है और अंत में समस्त अंतरंग-बहिरंग परिग्रह को त्याग कर निर्ग्रथ होकर व्यवहार-निश्चय रत्नत्रय का साधन कर मोक्ष पदवी को प्राप्त करता है। इसलिये सम्यग्दृष्टि का पुण्य परंपरा से मोक्ष का कारण है तथा मिथ्यादृष्टि का पुण्य परंपरा से संसार का कारण है।

“आर्त नरा धर्मपरा भविन्त” पाप कर्म के उदय से जीव को जब कष्ट उठाना पड़ता है उस समय में वह पाप कर्मों का स्वरूप समझकर पाप से निवृत्त

---

होकर धर्म में लगता है। जैसे नरक में तीव्र वेदना का अनुभव कर नारकी पाप फलों का चिंतवन करके सम्यग्दृष्टि हो जाता है, इसी प्रकार जीव पापकर्म के फल से संतप्त होकर पाप से डरकर अधर्म छोड़कर धर्म करने लगता है। इसलिये संसार में विरक्त होने के लिये एवं धर्म में प्रवृत्ति होने के लिये पापकर्म भी निमित्त है अर्थात् जिस पाप फल से दुःखों से, संताप से, संकटों से जीव भयभीत होकर धर्म में लगते हैं वह पाप भी उपादेय है। इसलिये भव्य जीवों को संबोधन करते हुये आचार्यों ने प्रेरणा दी है।

“सुखितस्य दुःखितस्य च संसारे धर्म एव तव कार्य।

सुखितस्यतद्भिवृद्धयैदुः खभुजस्तदुपघाताय ॥ 18॥”

अर्थ : हे जीव! तू चाहे सुख का अनुभव कर रहा हो, चाहे दुःख का अनुभव कर रहा हो, किन्तु संसार में इन दोनों ही अवस्था में एक मात्र कार्य धर्म ही होना चाहिये। कारण यह है कि वह धर्म यदि तू सुख का अनुभव कर रहा है तो तेरे उस सुख का कारण होगा और यदि तू दुःख का अनुभव कर रहा है तो वह धर्म तेरे उस दुःख के विनाश का कारण होगा।

## आर्थिक रूप से कई कमजोर देशों से भी पीछे है भारत

नई दिल्ली। विश्व में उभरती आर्थिक शक्ति माना जाने वाला देश भारत देखा जाए तो आर्थिक रूप से कई कमजोर देशों से भी काफी पीछे है। मानव विकास सूचकांक में भारत 187 देशों की सूची में 134वें स्थान पर है। यह सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और आय संकेतकों में दीर्घकालिक प्रगति का आकलन करता है। भारत को मध्यम श्रेणी में रखा गया है। इस मामले में उसकी स्थिति युद्धग्रस्त इराक और फिलीपींस सहित आर्थिक रूप से कम विकसित देशों से पीछे है। इसके पहले 2010 में भारत 169 देशों की सूची में 119वें स्थान पर था। सूचकांक में श्रीलंका 97वें स्थान पर, चीन 101वें स्थान पर, और मालदीव 109वें स्थान पर है, जबकि भूटान भारत से भी पीछे 141वें स्थान पर है। पाकिस्तान और बांग्लादेश इस सूची में क्रमशः 145वें व 146 वें स्थान पर हैं। नार्वे पहले स्थान पर और कांगो सूची में बिल्कुल अंतिम पायदान पर चला गया है। द. एशिया के अन्य दो देश, नेपाल व अफगानिस्तान को क्रमशः 157वें और 172वें स्थान पर रखा गया है।

---

संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट 2011 : स्थिरता एवं विषमता के अनुसार, भारत का मानव विकास सूचकांक 2010 के 0.3 की बनिस्बत 2011 में 0.5 है। ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश ने कहा कि साल दर साल तुलना व्यावाहिरक नहीं है। विकास संकेतकों में किसी भी बदलाव को दीर्घकालिक रूप में मापा जाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र की अधिकारी सीता प्रभु ने कहा कि यदि 2010 की प्रक्रिया अपनाई गई होती और नमूने का आकार समान रहा होता तो 2011 का मानव विकास सूचकांक समान होता। इस बार सर्वेक्षण में 18 नए देश शामिल किए गए। प्रभु ने कहा कि भारत का लिंग विषमता सूचकांक दक्षिण एशिया में सबसे ऊँचा, 0.6 पर है।

**इस धन से प्रदेश के 30 हजार गाँव को बनाया जा सकता है शहरों  
जैसा, बन सकते हैं स्कूल, सड़क और अस्पताल  
शराबबंदी हो जाए तो पांच साल में बचेंगे  
प्रदेश के 75 हजार करोड़ रुपए**

राज्य सरकार पांच साल तक शराबबंदी कर दें तो प्रदेश के 75 हजार करोड़ की बचत हो जाएगी। दरअसल आबकारी विभाग की अधिकृत दुकानों से प्रदेश में हर साल देशी, विदेशी शराब और बियर के लिए लोग 15 हजार करोड़ अपनी जेब से खर्च रहे हैं। इन पैसों से प्रदेश के 30 हजार गांवों को स्मार्ट बनाया जा सकता है। यहाँ स्मार्ट स्कूल, हर घर में पानी नल, अस्पताल और पक्की सड़के बन सकती हैं। पांच साल तक प्रदेश में शराबबंदी होने पर प्रदेश के हर गांव को 2.50 करोड़ की राशि मिल सकती है जिससे हमारे गाँव सभी सुविधाओं से पूर्ण होंगे।

**कई पर्यटन केंद्रों पर शराबबंदी जैसे हाल**

कोर्ट के आदेश के बाद प्रदेश के कई पर्यटन केन्द्रों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। पाली जिले में कुल 12 बार इस आदेश से प्रभावित हो रहे हैं जो रणकपुर पर्यटन क्षेत्र में संचालित थे इसके साथ ही एक शराब ठेका भी प्रभावित हो रहा है। हालांकि ठेके को तो 500 मीटर से अंदर कर दिया गया लेकिन बार बंद हो गए। अब यहाँ पर्यटकों को भी शराब नहीं मिल पाएगी। वहीं सीकर जैसे छोटे जिले में

---

इस आदेश से 17 और जयपुर 39 बार प्रभावित हुए हैं।

### **यहाँ इतने बार प्रभावित**

अजमेर 13, अलवर 16, बांसवाड़ा 1, बरन 1, बाड़मेर 4, भरतपुर 4, भीलवाड़ा 3, बीकानेर 13, बूंदी 0, चित्तौड़ 2, चूरू 9, दोसा 4, धौलपुर 1, डूंगरपुर 9, हनुमानगढ़ 1, जयपुर सिटी 20, जयपुर रूरल 19, जैसलमेर 0, जालौर 4, झालावाड़ 0, झुंझुन 13, जोधपुर 7, करौली 3, कोटा 15, नागपुर 9, पाली 12, प्रतापगढ़ 2, राजसमंद 4, सर्वाई माधोपुर 2, सीकर 17, सिरोही 10, श्रीगंगानगर 7, टोंक 1, उदयपुर 5।

**सरकार की झोली में जा रहा इतना :** 2011-12 में 3287 करोड़, 2012-13 में 3988 करोड़, 2013-14 में 4981 करोड़, 2014-15 में 5585 करोड़, 2015-16 में 6712 करोड़।

### **बार बंद होने से 300 करोड़ का राजस्व प्रभावित**

कोर्ट के आदेश के दायरे में जो भी बार आ रहे थे उनको बंद करवा दिया है और ठेकों का 500 मीटर के अंदर करवा दिया है। इन बार से करीब 300 करोड़ का राजस्व प्रभावित हो रहा है। - ओ.पी. यादव, आबकारी विभाग

### **ऐसे समझें 15 हजार करोड़ का गणित**

आबकारी विभाग के आकड़ों के अनुसार प्रदेश में एक साल में औसतन 2400 लाख बल्क लीटर देशी शराब का उठाव होता है, इसकी औसत मूल्य 100 रुपये है तो 2400 करोड़ रुपए देशी पर खर्च होते हैं। इसी तरह एक हजार लाख लीटर विदेशी शराब जिसकी औसत मूल्य एक हजार रुपए है तो 10 हजार करोड़ रुपए विदेशी शराब पर खर्च और 2000 लाख लीटर बीयर का उठाव जिसकी औसत मूल्य 100 रुपए है जिस पर 2 हजार करोड़ रुपए की लोग शराब पी रहे हैं। इसमें कुछ शराब की 750 एमएल की कीमत 500 रुपए है तो किसी की 5 हजार से ज्यादा है।

### **हर गांव में 2.50 करोड़ से यह हो सकता है**

- 75 लाख की लागत से एक अस्पताल और 108 की सुविधा हो सकती है।
- 30 लाख की लागत से स्मार्ट स्कूल का निर्माण हो सकता है।

- 
- 50 लाख की लागत से 5 हजार की आबादी वाले गांव मे हर गली में सड़क बन सकती है।
  - 30 लाख की लागत से 500 से ज्यादा घरों में बिजली और पानी की व्यवस्था हो सकती है।
  - 30 लाख रुपए में उन्नत किस्म में कृषि यंत्र मिल सकते है जिनको कम किराए पर किसान काम में ले सके
- इसके बाद भी बचे हुए 35 लाख रुपए से ग्रामीण अन्य उपयोग में ले सकते हैं।

### **बियर पर 156 प्रतिशत ड्यूटी**

आबकारी विभाग से शराब के उत्पादन पर ड्यूटी लगाई जाती है जिसके लिए अलग-अलग स्लैब बने हुए हैं। साथ ही बियर पर 156 प्रतिशत की ड्यूटी निर्धारित है। अगर किसी इंडस्ट्री में 30 रुपए प्रति बोतल बियर का उत्पादन हो रहा है तो ड्यूटी के साथ उसकी 100 रुपए तक रेट हो जाता है।

### **सुप्रीम कोर्ट का झटका, 222 बार बंद**

सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के स्टेट और नेशनल हाइवे से शराब के ठेको और बार को हटाने के आदेश से प्रदेश भर में हाइवे पर करीब 2800 शराब के ठेके और 222 बार को बंद करवाया गया।

**वॉरेन बफे को नहीं मिल रही निवेश करने की जगह, हर माह बढ़ रहें 10 हजार करोड़ रु. नकद, अब तक 5 लाख करोड़ कैश जमा हो चुका है**

### **90 तरह के बिजनेस करती है वॉरेन बफे की कंपनी बर्कशायर हैथवे**

दुनिया के तीसरे सबसे अमीर व्यक्ति वॉरेन बफे इन दिनों ज्यादा पैसों की वजह से परेशान हैं। उनके पास हर महीने इतना पैसा आ रहा है कि निवेश करने की जगह ही कम पड़ गई। बुधवार को सामने आई एक रिपोर्ट में ये खुलासा किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक बफे की कंपनी बर्कशायर हैथवे के पास इस समय करीब 7300 करोड़ डॉलर यानि 4.85 लाख करोड़ रुपए कैश है, जो अब तक का

अधिकतम हैं। इतना ही नहीं, यह नकदी हर दिन तेजी से बढ़ रही है। बफे की कंपनी बर्कशायर 90 तरह का कारोबार करती है। इनसे हर महीने 1500 करोड़ डॉलर यानी 9980 करोड़ रुपए नकद मिल रहे हैं। ये मुनाफा उन्हें या तो किसी की पूरी की पूरी कंपनी खरीदने से हो रहा है या वे किसी कंपनी के अधिकांश शेयर खरीद लेते हैं। बफे के पास ये नकदी इसी जनवरी से लगातार बढ़ रही है। जनवरी में बफे ने विमानन से जुड़े निर्माण कार्य करने वाली कंपनी प्रक्सिशन कास्टपार्ट का 2.15 लाख करोड़ में अधिग्रहण किया था। बर्कशायर के इतिहास का यह सबसे बड़ा अधिग्रहण था। तब से उनके पास कैश रकम बढ़ती जा रही है। इन्वेस्टर एंडी किलपैट्रिक का कहना है कि वह सही कीमत चुकाते हुए किसी शानदार डील की तलाश में है ये वही एंडी हैं, जिन्होंने 'ऑप परमानेन्ट वैल्यू : द स्टोरी ऑफ वॉरेन बफेट' नामक किताब लिखी थी। वैसे साफ कर दें कि बर्कशायर के पास जितनी भी नकदी है, वह सब का सब 'अवेलेबल' नहीं है। दरअसल कंपनी को अपने पास कम से कम 1.33 लाख करोड़ रुपए की रकम रखनी ही है ताकि बर्कशायर की इश्योरेंस कंपनियां इस पैसे को किसी बड़े क्लेम या किसी और जरूरत के समय इस्तेमाल कर सकें। ओमाहा की यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर जॉर्ज मॉर्गिन का कहना है कि वॉरेन क्या खरीदने जा रही है, इसके बारे में ज्यादा बात नहीं करते। जिन कंपनियों के साथ डील की बातचीत रद्द करते हैं, उनके बारे में वह बात नहीं करते। बावजूद इसके निवेशक उनकी अगली खरीद को लेकर कयास लगाने में जुटे हुए हैं। मॉर्गिन को लगता है कि वह मार्स केंडी खरीद सकते हैं, यदि वे लोग इसे बेचना चाहें तो। कुछ निवेशकों लगता है कि वह अपनी यूटिलिटी यूनिट का विस्तार कर सकते हैं। हाल फिलहाल ब्याज दरों को लेकर जो महौल कायम है उसमें बर्कशायर अपने पास इकट्ठा नकदी से ज्यादा ब्याज नहीं कमा पा रहा है।

## बफे के पास दुनियाभर के 212 में से 141 देशों की जीडीपी से ज्यादा कैश

नेपाल की जीडीपी से 4 गुना ज्यादा कैश है बफेट के पास

212 में से 141 देशों की जीडीपी बफे के कैश से कम है। इनमें कोस्टारिका, मकाऊ जैसे छोटे देश शामिल हैं। श्रीलंका की जीडीपी 4.92 लाख करोड़ रुपये के बराबर और नेपाल की जीडीपी 1.27 लाख करोड़ रुपये से 4 गुना ज्यादा है।

---

## भारत के रक्षा बजट 2016 से दो गुना ज्यादा

भारत का 2016 के लिए रक्षा बजट 2.40 लाख करोड़ रुपए का है। बफेट के पास इससे दो गुना कैश है। 2017 के लिए भारत का रक्षा बजट 3.40 लाख करोड़ रुपए रखा गया है।

## गूगल से ज्यादा और माइक्रोसॉफ्ट से कम कैश

अमेरिका में सबसे ज्यादा कैश 14.37 लाख करोड़ एपल के पास है। माइक्रोसॉफ्ट के पास 5.99 लाख करोड़ रुपए जबकि गूगल के पास 4.29 लाख करोड़ रुपए कैश रिजर्व है।

**एपल के पास 16.43 लाख करोड़ रुपए कैश, इससे नई कंपनी बने तो वह दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी कंपनी होगी**

**50 लाख करोड़ रु. की कंपनी बनी एपल,  
कैश 5 साल में 133 प्रतिशत बढ़ा**

दुनिया की सबसे बड़ी, 50 लाख करोड़ रुपए की कंपनी एपल के पास 256.8 अरब डॉलर यानी 16.43 लाख करोड़ रुपए कैश है। मंगलवार को मार्च तिमाही के नतीजे जारी करते हुए सीईओ टिम कुक ने यह ऐलान किया। इस तिमाही कंपनी की नगदी 64000 करोड़ रुपये बढ़ी है। एक साल पहले इसके पास 14.91 लाख करोड़ और 5 साल पहले 7.05 लाख करोड़ कैश था। यानि 5 साल में कैश 133 प्रतिशत बढ़ा है। टैक्स से बचने के लिए एपल ने ज्यादातर कैश अमेरिका से बाहर रखा हुआ है। सीएफओ लूका मासेराती ने बताया कि 16.43 लाख करोड़ में से 15.29 लाख करोड़ यानि 93 प्रतिशत रकम दूसरे देशों में है।

## 16.43 लाख करोड़ रुपए कैश का मतलब

- एपल के कैश को अगर एक कंपनी मान लिया जाए तो वह दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी कंपनी होगी।
- कैशरिच दूसरी कंपनियों में माइक्रोसॉफ्ट के पास 8 लाख करोड़ गूगल के पास 5.8 लाख करोड़ और अमेजन के पास 1.4 लाख करोड़ रुपए कैश है।

- यह रकम दुनिया की सबसे बड़ी स्टार्टअप उबर की वैल्यूएशन का 3.5 गुना और ट्विटर का 20 गुना है।
- कभी ब्लैकबेरी को मोबाइल फोन का किंग कहा जाता था। अब एपल का कैश ब्लैकबेरी के मार्केट कैप का 50 गुना है।
- यह रकम भारत की चार सबसे बड़ी कंपनियों टीसीएस, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक और आईटीसी के मार्केट कैप से कुछ ज्यादा है।

### **रेवेन्यू 4.6 प्रतिशत मुनाफा 4.9 प्रतिशत बढ़ा, आईफोन की बिक्री 1 प्रतिशत घटी**

एपल अपना वित्त वर्ष अलग रखती है। 1 अप्रैल 2017 को खत्म तिमाही में इसका रेवेन्यू 52.9 अरब डॉलर रहा जो एक साल पहले 50.6 अरब डॉलर था। रेवेन्यू में 4.6 प्रतिशत वृद्धि हुई है। मुनाफा 10.5 अरब डॉलर की तुलना में 11 अरब डॉलर दर्ज हुआ। यह करीब 4.9 प्रतिशत बढ़ा है। आईफोन की बिक्री 1 प्रतिशत और आईपैड की 13 प्रतिशत घटी है। एपल ने एक साल पहले पहली बार आईफोन बिक्री में गिरावट दर्ज की थी। उसके बाद की दो तिमाही में भी गिरावट दर्ज की थी। लेकिन दिसंबर तिमाही में इसने अच्छी ग्रोथ दर्ज की थी। कंपनी ने इस तिमाही 507.6 लाख आईफोन बेचे। पिछले साल की समान तिमाही में 511.9 लाख फोन बचे थे। कुक ने इसकी वजह यह बताई कि ग्राहक नए फोन का इंतजार कर रहे हैं। एक दशक पुरानी एपल इस साल आईफोन-8 लांच करने चली है। वैसे भी तीन साल से आईफोन का बाहरी डिजाइन नहीं बदला है। रिपोर्ट्स के मुताबिक आईफोन-8 में डिजाइन से लेकर फीचर तक सबकुछ नए होंगे।

### **भारत में रिकॉर्ड बिक्री, रेवेन्यू में 20 फीसदी इजाफा**

आईफोन की बिक्री पिछली तिमाही में दुनियाभर में गिरी है, लेकिन भारत में रिकॉर्ड बिक्री हुई है। यहां कंपनी का रेवेन्यू 20 प्रतिशत बढ़ा है। नतीजे जारी करने के बाद सीईओ टिम कुक ने कहा कि भारत में एपल की पहुंच अब भी बहुत कम है। यहाँ इकोनॉमी की तेज रफ्तार, युवा और तकनीक को समझने वाली आबादी और बढ़ते 4जी नेटवर्क के कारण कंपनी के लिए काफी कुछ संभावनाएं

---

हैं। चीन और अमेरिका के बाद भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्मार्टफोन मार्केट है। कुक ने कहा कि 2016 की आखिरी तिमाही से भारत में 4जी पर काम शुरू हुआ। लेकिन यह काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। इतना तेज विस्तार किसी और देश में नहीं देखा गया। इसलिए एपल भारत में काफी निवेश कर रही है।

## हमारी जीडीपी से ज्यादा है अमरीकी कंपनियों का कैश

### 1672 खरब की नकदी पर नहीं लगता कोई टैक्स

नई दिल्ली एपल, गूगल, आईबीएम, फाइजर, पेप्सी, कोक, मैकडॉनल्ड्स जैसी अमरीकी कंपनियों के खातों में 2.6 ट्रिलियन डॉलर (करीब 1672 खरब रुपए) है जिन पर कोई टैक्स नहीं लगा है। यह बात वाशिंगटन स्थित इंस्टीट्यूट फॉर टैक्स एंड इकोनामिक पॉलिसी (आईटीईपी) की रिपोर्ट में कही गई है। यह अमरीकी कंपनियों की ओर से विदेशों में रखी गई, सबसे बड़ी रकम है। इससे अमरीकी सरकार को बतौर टैक्स 767 बिलियन डॉलर करीब 493 खरब रुपए का शुद्ध घाटा हुआ है। टैक्स से बची हुई यह 1672 खरब रुपए की रकम 153 देशों की कुल जीडीपी के बराबर अमरीकी रक्षा बजट का 4 गुना और साल 2015 में सामाजिक सुरक्षा खाद्य सुरक्षा, चिकित्सा सुविधा और बरोजगारों पर अमरीकी सरकार की ओर से खर्च की गई राशि 2.45 बिलियन डॉलर (करीब 1575 खरब रुपए) से भी ज्यादा है।

### टॉप 322 कंपनियाँ

अमरीकी कंपनियों का टैक्स से बचा यह खजाना भारत की जीडीपी से भी बड़ा है। आईटीईपी के रिचर्ड फिलिप्स के मुताबिक यह सूचना 10 हजार फाइलों की छानबीन से जुटाई गई है। ये फाइले यूएस सिक्वोरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन में कंपनियों की ओर से जमा की गई सलाना रिपोर्टों की है। टॉप 500 अमरीकी कंपनियों में 322 ने विदेशों में भारी मात्रा में संपत्ति इकट्ठा कर रखी है।

### कैसे बची कंपनियाँ?

अमरीकी टैक्स कोड में एक प्रावधान है जो कंपनियों को विदेशों में हुई कमाई पर तब तक टैक्स नहीं देने की अनुमति प्रदान करता है जब तक कि कमाई की वह रकम अमरीका नहीं आ जाती। फिलिप्स का कहना है कि जब

---

विदेशी कमाई को तकनीकी तौर पर अमरीका भेजा दिया जाता है तो कंपनियों पर पूरा अमरीकी टैक्स रेट देना पड़ता है।

## भारत सबसे बड़ा हथियार खरीददार, चीन- पाक से दोगुनी खरीद

शीतयुद्ध के बाद पिछले 5 साल में सबसे अधिक हथियार बिके

स्टॉकहोम। दुनिया में 2004 के बाद हथियारों की बिक्री में लगातार बढ़ रही है। पिछले पांच साल की बिक्री का आँकड़ा तो शीतयुद्ध की समाप्ति यानी 1990 के बाद सबसे अधिक पहुँच गया है। इसकी सबसे बड़ी वजह मिडिल-ईस्ट एशिया में सरकारों और बागियों के बीच जारी संघर्ष हैं। वैसे, इन पांच सालों में सबसे अधिक हथियार भारत (13 प्रतिशत) ने खरीदे। चीन (4.5 प्रतिशत) और पाकिस्तान (3.2 प्रतिशत) भी टॉप-10 हथियार खरीददारों में हैं। पर भारत ने इन दोनों देशों के कुल हथियारों से करीब दोगुना हथियार खरीदे। भारत ने कुल आयात का करीब 68 प्रतिशत केवल रूस से लिया।

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिपी) ने 2012-16 के बीच हुई हथियारों की बिक्री की यह रिपोर्ट जारी की है। इसके मुताबिक 2012 से 2016 के बीच एशिया और ओसीनिया के देशों ने दुनिया के 43 प्रतिशत हथियार खरीदे। यह 2007-11 के मुकाबले 7.7 प्रतिशत अधिक है। सिपी के सीनियर रिसर्चर पीटर वेजमैन ने कहा कि यह रिपोर्ट पांच साल के आंकड़ों के आधार पर जारी की जाती है। हथियारों की बिक्री का ताजा आंकड़ा, 1990 में शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद किन्हीं भी पांच साल के कुल हथियारों से अधिक है। भारत के बाद सऊदी अरब दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक देश है। उसने पिछले पांच साल में 212 प्रतिशत अधिक हथियार खरीदे हैं।

हथियार खरीदने वाले टॉप - 10 देश

देश	हथियार (प्रतिशत में)
भारत	13 प्रतिशत

---

सऊदी अरब	8.2 प्रतिशत
यूएई	4.6 प्रतिशत
चीन	4.5 प्रतिशत
अल्जीरिया	3.7 प्रतिशत
तुर्की	3.3 प्रतिशत
ऑस्ट्रेलिया	3.3 प्रतिशत
इराक	3.2 प्रतिशत
पाकिस्तान	3.2 प्रतिशत
वियतनाम	3.0 प्रतिशत

### **चीन हो रहा आत्मनिर्भर, पर भारत दूसरों के भरोसे**

रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन भले ही टॉप हथियार आयातकों में शामिल हो। लेकिन वह नए हथियार बनाकर इस मामले में लगातार आत्मनिर्भर भी हो रहा है। जबकि, भारत हथियार टेकनोलॉजी में अब भी रूस, अमेरिका, इजरायल, दक्षिण कोरिया और यूरोपीय देशों पर निर्भर है।

### **मिडिल-ईस्ट देशों की खरीदारी 12 प्रतिशत बढ़ी**

मिडिल -ईस्ट के देशों की हथियार खरीदी में 12 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। 2007-11 में यह 17 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 29 प्रतिशत हो चुकी है। एशिया-ओसीनिया के अन्य देशों ने भी पहले के मुकाबले अधिक हथियार खरीदे। पर यूरोप में 7 प्रतिशत, अमेरिका में 2.4 प्रतिशत और अफ्रीका 1.3 प्रतिशत में हथियारों की खरीददारी कम हो गई।

### **सिर्फ 5 देश बेचते हैं दुनिया के 74 प्रतिशत हथियार**

रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और जर्मनी दुनिया के 75 प्रतिशत हथियार बेचते हैं। पिछले पांच साल में अमेरिका 33 प्रतिशत हथियारों की बिक्री के साथ सबसे ऊपर रहा। 2007-11 के मुकाबले उसकी बिक्री में 3 प्रतिशत इजाफा हुआ। अमेरिका और चीन को छोड़ दे तो टॉप-5 के बाकी तीनों देशों का मार्केट शेयर कम हुआ- ब्रिटेन, स्पेन, यूक्रेन और इजरायल भी टॉप-10 हथियार निर्यातकों में शामिल है।

देश	हथियार प्रतिशत में
अमेरिका	33 प्रतिशत
रूस	23 प्रतिशत
चीन	6.2 प्रतिशत
फ्रांस	6.0 प्रतिशत
जर्मनी	5.6 प्रतिशत

202 प्रतिशत खरीददारी बढ़ाकर 29वें से 10वें नंबर पर पहुंचा वियतनाम।

184 प्रतिशत खरीददारी बढ़ गई मैक्सिको की पिछले पांच साल में

46 प्रतिशत खरीदी के साथ अफ्रीकी देशों में नंबर-1 रहा अल्जीरिया।

19 प्रतिशत कम हथियार खरीदे कोलंबिया ने पिछले पांच साल में।

39 कंपनियां अमेरिका की है टॉप-100 हथियार कंपनियों में।

#### सबसे ज्यादा हथियार बेचने वाली 5 कंपनियां

सिप्री के मुताबिक 2015 में 24.81 लाख करोड़ रु. के हथियार बेचे गए। इसमें टॉप 10 कंपनियों ने ही आधे से ज्यादा यानि 12.77 प्रतिशत लाख करोड़ रुपये के हथियार बेचें।

- लॉकहीड मार्टिन, अमेरिका (2.44 लाख करोड़ रुपए)
- बोइंग, अमेरिका (1.67 लाख करोड़ रु.)
- बीएई सिस्टम, ब्रिटेन (1.71 लाख करोड़ रुपए)
- रेथियोन, अमेरिका (1.40 लाख करोड़ रुपए)
- नॉर्थरोप ग्रूमन, अमेरिका (1.34 लाख करोड़ रुपए)

#### भारत ने सात साल में 2.27 लाख करोड़ रु. की खरीदारी

अमेरिका की कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस (सीआरएस) की रिपोर्ट के मुताबिक 2008 से 2015 के बीच भारत ने रक्षा हथियारों की खरीद पर करीब 2.27 लाख करोड़ रुपए खर्च किए।

2004 में इजरायल से फाल्कन अर्ली वार्निंग डिफेंस सिस्टम खरीदे।

2008 में अमेरिका से छह सी 130 जे कार्गो विमान भी खरीदे।

2010 में ब्रिटेन से 6992 करोड़ रुपए में 57 हॉक जेट ट्रेनर लिए।

---

## दुनिया में 6 साल बाद अकाल की दस्तक, द. सूडान में बिगड़े हालात

सबसे नए देश दक्षिण सूडान के यूनिटी प्रांत में एक लाख लोग भूखे

दुनिया में छह साल बाद कहीं अकाल घोषित किया गया है। वह भी दुनिया के सबसे नए देश दक्षिण सूडान के यूनिटी प्रांत में। सरकार ने सोमवार को अकाल की घोषणा करते हुए बताया कि तीन साल से ज्यादा समय से चल रहे युद्ध के कारण अकाल पड़ा है। देश की 50 लाख की आबादी भूखी है। एक लाख लोगों के पास खाने को कुछ नहीं है।

यमन, सोमालिया और उत्तर पूर्वी नाइजीरिया में सूखे और भूखमरी के हालात हैं। लेकिन छह साल में दक्षिण सूडान पहला देश है जिसने अपना कोई इलाका अकालग्रस्त घोषित नहीं किया है। मानवाधिकार संगठनों, संयुक्त राष्ट्र खाद्य कार्यक्रम और बाल सहायता कोष यूनिसेफ ने कहा है कि दक्षिण सूडान की करीब 82 लाख आबादी में से 49 लाख यानी 40 प्रतिशत से ज्यादा को तत्काल भोजन की जरूरत है। दक्षिण सूडान के नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स के प्रमुख इसाइया चोल अरूआई ने बताया कि उत्तरी ग्रेटर यूनिटी क्षेत्र के इलाकों को अकालग्रस्त घोषित किया गया है।

**कब घोषित होता है अकाल**

भोजन की कमी और कुपोषण आम तौर पर कई जगहों पर होता है। इलाकों को सूखाग्रस्त घोषित किया जाता रहा है। लेकिन अकालग्रस्त घोषित किया जाना आसान नहीं है। लंबे समय के सूखे या खाद्य सामग्री न पहुँचने पर भी अकाल घोषित नहीं किया जाता।

**इसके लिए कुछ नियम हैं**

- इलाके के न्यूनतम 20 प्रतिशत घरों में भोजन की कमी और उसे पूरा करने के आसार नजर न आना।
- 30 प्रतिशत से भी ज्यादा भीषण कुपोषण।
- 10000 की आबादी पर प्रतिदिन दो लोगों से ज्यादा की भूख से मौत।

---

## अब क्या होगा

अकाल घोषित होने का मतलब ये नहीं कि संयुक्त राष्ट्र की एजेंसिया या उसके सदस्य देश मदद करें ही। लेकिन ऐसा करने से ह्यूमैनिटैरियन मदद देने वाली संस्थाएं तेजी से आगे आती हैं। दक्षिण सूडान मानवीय आधार पर दुनियाभर से मदद मांग सकता है।

## पहली बार नहीं

दक्षिण सूडान लंबी लड़ाई के बाद 9 जुलाई 2011 को सूडान से अलग होकर आजाद हुआ था। आजादी की लड़ाई के दौरान 1998 में भी यहां अकाल पड़ा था। आजादी के बाद इस तेल समृद्ध देश में 2013 में युद्ध भड़क गया था। राष्ट्रपति साल्वा कीर और उनके उपराष्ट्रपति रिक माछर की वफादार सेनाएं आपस में लड़ी थीं। अगस्त 2015 में शांति समझौते के बाद यूनिटी सरकार बनी, लेकिन पिछले साल जुलाई में वह फिर टूट गई।

# बच्चों की तस्करी

## 10 हजार अरब का गैरकानूनी कारोबार

- 4.58 करोड़ के करीब लोग दुनियाभर में हैं मानव तस्करी के चंगुल में। ये अपनी इच्छा के खिलाफ गैरकानूनी कामों में लिप्त हैं
- 1.26 करोड़ बच्चे देश में खतरनाक व्यवसायों में हैं कार्यरत
- 40 हजार बच्चों की तस्करी होती है देश में हर साल
- 150 बिलियन डॉलर (रु. 10 हजार अरब) का है मानव तस्करी का सालाना वैश्विक कारोबार
- 10 प्रतिशत मानव तस्करी भारत से दुनिया के दूसरे देशों में होती है
- 90 प्रतिशत तस्करी के मामलों में लोगों को देश के ही किसी अन्य राज्य में भेजा जाता है
- 11 हजार गुमशुदा बच्चों का नहीं लगता कोई सुराग
- 03 लाख से ज्यादा बाल भिखारी हैं देश में

---

## बचपन को राहत ...

### बाल मजदूरी में आई कमी

शहरी भाग में बाल मजदूरों की संख्या में इजाफा हुआ है, लेकिन पूरे देश के स्तर पर बाल मजदूरी में कमी आई है। 9 साल से कम उम्र के बच्चों में बाल मजदूरी के हालात खराब हुए हैं। स्रोत : यूनिसेफ की भारत में बाल मजदूरों के हालात पर रिपोर्ट

- 10.2 बढ़ गई है 5-9 आयु समूह में मजदूरी की दर
- 24.8 है बाल मजदूरी इस आयु वर्ग में 2011 के जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक
- 14.6 थी 2001 में बाल मजदूरी की दर
- 5-9 आयुवर्ग में सबसे खराब हालात
- शहरों में 0.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी
- 2.9 प्रतिशत है शहरों में बाल मजदूरी की दर 2011 के आंकड़ों के मुताबिक

### पूरे देश में आई कमी

- 1.1 प्रतिशत की कमी आई है पूरे देश के स्तर पर
- 3.9 प्रतिशत तक पहुंच गई है देश में बाल मजदूरी की दर
- 05 प्रतिशत थी 2001 में यह दर

## मेरा परम रहस्य व प्राप्य मैं स्वयं हूँ...!?

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- पायो जी मैंने राम रतन धन... )

जाना है मैंने परम स्वरहस्य जाना (माना, पाया)  
जिस रहस्य को अनन्त काल से अज्ञान मोह से न पाया।।

---

यथा पलक से आवृत चक्षु न देख पाती पर्वत भी।  
बाह्य प्रवृत्ति के कारण न देख पाती स्वयं को भी॥

ज्ञानावरणीय व मोहनीय से आवृत न देख पाया स्वयं में,  
राग द्वेष मोह काम क्रोधादि (बाह्य) प्रवृत्ति से न जान पाया स्वयं को॥

घन बादल से आवृत सूर्य सम मैं रहा स्वयं अदृष्ट,  
मैं हूँ अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय तथापि / (तोभि) स्वयं से अदृष्ट॥

ऐसा ही सामान्य जीव से लेकर, भौतिकवादी वैज्ञानिक तक।  
स्वयं को न जान पाते हैं जब तक अज्ञान मोह आसक्त॥

मैं हूँ अमूर्तिक अनन्त गुण युक्त, अनन्त आयाम सहित,  
स्वयं में स्थित भी लोकालोक व्याप्त अतः मेरा विस्तार अनन्त॥

अतएव मेरा ज्ञान न होता मूर्तिक मन व इन्द्रियों यंत्रों से,  
सूक्ष्म दर्शक से लेकर दूरदर्शक तक मेरा ज्ञान होता यंत्रों से॥

यथा अमूर्तिक आकाश का ज्ञान न होता इन्द्रिय यंत्रों से,  
तथाहि मैं भी अमूर्तिक अनन्त आयाम वाला न ज्ञात यंत्रों से॥

स्व-श्रद्धान-ज्ञान से मेरा रहस्य जाना जो है परम रहस्य,  
सभी रहस्यों का ज्ञाता भी मैं स्वयं जाना ये महान् रहस्य ॥

मैं हूँ परम रहस्य व परमज्ञान मैं हूँ परम सत्य-पदार्थ,  
परम धर्म व परमसुख परमज्ञेय व परम तत्त्वार्थ ॥

स्व- उपलब्धि ही मेरी परम उपलब्धि अन्य सभी तुच्छ व हेय,  
स्व को जानता- मानना व पाना 'कनक' का परम ध्येय ॥

सीपुर- 22.02.2017 मध्याह्न -12.22

---

संदर्भ :-

मोहेन संवृतं ज्ञानं स्वभावं लभते नहि।

मत्तः पुमान् पदार्थानां यथा मदनकोद्रवैः ॥७१॥

*Deluded by infatuation the knowing being is unable to acquire adequate knowledge of the nature of things, in the same way as a person who has lost his wits in consequence of eating intoxicating is unable to know throw them properly!*

यदि ये संसार के सुख और दुःख वासना मात्र ही है तब उसका यथार्थ परिज्ञान क्यों नहीं होता है? शिष्य का प्रश्न ये है- यदि वस्तुतः संसार के सुख एवं दुःख अवास्तविक है तब उसका परिज्ञान संसार के लोगों को अवास्तविक रूप में क्यों नहीं होता? आचार्य शिष्य को प्रबोधन देते हैं-

धातुनाम् अनेक अर्थत्वात्” अर्थात् धातुओं के अनेक अर्थ होने के कारण यहाँ लभ धातु का अर्थ ज्ञान है। जब ज्ञान मोहनीय कर्म के विपाक से आविर्भूत हो जाता है तब वह ज्ञान वस्तु स्वरूप को यथार्थ प्रकाशन करने में असमर्थ हो जाता है। शुद्ध स्वरूप से ज्ञान कथंचित् आत्मा से अभिन्न है और वस्तु स्वरूप को यथार्थ से जानने के लिए पूर्ण समर्थ है परन्तु कर्म परवशता के कारण ज्ञान में/आत्मा में विकार उत्पन्न हो जाता है। कहा भी है- जिस प्रकार मल से आबद्ध मणि एक प्रकार का नहीं होता है, एक प्रकार का प्रकाश नहीं देता है उसी प्रकार कर्म से आबद्ध आत्मा भी एक प्रकार का नहीं होता है और एक प्रकार का नहीं जानता है।

प्रश्न :- अमूर्तिक आत्मा किस प्रकार मूर्तिक कर्म से आविर्भूत होता है, आबद्ध होता है?

उत्तर :- शुद्ध आत्मा अमूर्तिक होते हुए भी संसारी जीव अभी अमूर्तिक नहीं है कर्म से आबद्ध संसारी जीव व्यवहारनय की अपेक्षा मूर्तिक है।

नशे को पैदा करने वाले कोद्रव - कोदों धान्य को खाकर जिसे नशा पैदा हो गया है, ऐसा पुरुष घट, पट आदि पदार्थों के स्वभाव को नहीं जान सकता, उसी प्रकार कर्म बद्ध आत्मा पदार्थों के स्वभाव को नहीं जान पाता है। अर्थात् आत्मा व उसका ज्ञान गुण यद्यपि अमूर्त है, फिर भी मूर्तिमान कोद्रवादि धान्यों से मिलकर वह बिगड़ जाता है। उसी प्रकार अमूर्त आत्मा मूर्तिमान कर्मों के द्वारा अभिभूत हो जाता

---

है और उसके गुण भी दब सकते हैं।

**समीक्षा** - सत्य से विपरीत मान्यता श्रद्धा/प्रतीति विश्वास रूप परिणाम व भावों को मोह/मिथ्यात्व कहते हैं। सत्य का पूर्ण साक्षात्कार सर्वज्ञ वीतरागी देव करते हैं। सर्वज्ञ भगवान् ने दिव्यध्वनि मूलक उस परम सत्य का प्रमाण, नय निक्षेपों के द्वारा प्रतिपादन किया है, उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य अर्थात् जो उनके द्वारा कहे हुए द्रव्य, तत्त्व पदार्थों में विश्वास नहीं करता, श्रद्धा नहीं करता वह मिथ्यादृष्टि है क्योंकि उसकी श्रद्धारूप दृष्टि विपरीत होने के कारण वह पदार्थ को भी विपरीत रूप श्रद्धान करता है। सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमीचन्द्र आचार्य गोम्मटसार में कहते हैं-

**मिच्छादृष्टी जीवो उवइदुं पवयणं च ण सदहदि।**

**सदहदि असब्भावं उवइदुं वा अणुवईः ॥18॥**

मिथ्यादृष्टि जीव 'उपदिष्ट' अर्थात् अर्हन्त आदि के द्वारा कहे गये, 'प्रवचन' अर्थात् आप्त आगम और पदार्थ ये तीन, इनका श्रद्धान नहीं करता है। प्रवचन अर्थात् जिसका वचन प्रकृष्ट है ऐसा आप्त, प्रकृष्ट का वचन, प्रवचन अर्थात् परमागम। प्रकृष्ट रूप से जो कहा जाता है वह प्रवचन अर्थात् पदार्थ। इन निरूक्तियों से प्रवचन शब्द से आप्त, आगम ओर पदार्थ तीनों कहे जाते हैं। तथा वह मिथ्या दृष्टि असद्भाव अर्थात् मिथ्या रूप प्रवचन यानी आप्त आगम पदार्थ का 'उपादिष्ट' अर्थात् आप्ताभासों के द्वारा कथित अथवा अकथित का भी श्रद्धान करता है।

**मदि सुदणाण बलेण दु सच्छंदं बोल्लेदे जिणुवद्विदु।**

**जो सो होदि कुदिद्वी ण होदि जिण मग्न लगगरवो ॥2॥ (रयणसार)**

जो मतिज्ञान श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त हुए मतिज्ञान-श्रुतज्ञान के कारण उद्धत होकर स्वयं के मनमाने ज्ञान के द्वारा अपने मत अर्थात् पक्ष को लेकर स्वच्छन्द होकर कपोल कल्पित मत का प्रतिपादन करते हैं, जिनवाणी को नहीं मानते हैं वे मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जिनधर्म से बाह्य है। यदि जिनागम को दिखाने पर यथार्थ वस्तु का श्रद्धान करने लगता है और पूर्व कल्पित मत-पक्ष का त्याग करता है तब वह सम्यग्दृष्टि बन जाता है अन्यथा मिथ्यादृष्टि रहता है।

**मिच्छत्तं वेदंतो जीवो विवरीय दंसणा होदि।**

**ण य धम्मं रोचेदि हुमहुरं ख रसं जहा जरिदो ॥ 7॥**

---

उदय में आये मिथ्यात्व का वेदन अर्थात् अनुभवन करने वाला जीव विपरीत दर्शन अर्थात् अतत्व श्रद्धा से युक्त होता है। वह न केवल अतत्व की ही श्रद्धा करता है, अपितु अनेकान्तात्मक, धर्म, वस्तु स्वभाव मोक्ष के कारणभूत रत्नत्रयात्मक धर्म को भी पसन्द नहीं करता।

**दृष्टान्त** - पित्त ज्वर से ग्रस्त व्यक्ति मीठे-दूध रसादि को पसन्द नहीं करता, उसी तरह मिथ्यादृष्टि को धर्म नहीं रुचता।

**इंदिय विसय सुहादिसु मूढमदी रमदि न लहदि तत्त्वं ।**

**बहुदुःखमिदि ण चिंतदि सो चेव हवदि बहिरप्पा ॥ 129॥ (खणसार)**

जो मूढमति इन्द्रियजनित सुख में रमण करता हुआ उसको सुख मानता है, बहु दुःखप्रद नहीं मानता है, वह आत्म तत्व को प्राप्त नहीं कर सकता है, वह बहिरात्मा मिथ्यादृष्टि है।

पूर्व संचित मिथ्यात्व कर्म के उदय से जो स्वयमेव विपरीत भाव होता है उसे निसर्ग व अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं, जो कुगुरु के उपदेश से विपरीत भाव होते हैं उसे अधिगमज व गृहीत मिथ्यात्व कहते हैं। मिथ्यात्व के कारण जीव अवस्तु में वस्तुभाव, अधर्म में धर्मभाव, कुगुरु में गुरुभाव, कुशास्त्र में सुशास्त्र भाव को धारण करता है। बहिरात्मा केवल शरीर पोषण करता है, अतीन्द्रिय आत्मोत्थ सुख से बहिर्मुख होकर विषय सुख में ही तल्लीन रहता है बाह्य भौतिक हानि वृद्धि में अपनी हानि-वृद्धि मानकर सुखी दुःखी होता है। सामान्य से मिथ्यात्व एक प्रकार होते हुए भी विशेष अपेक्षा अर्थात् द्रव्य-भाव से दो प्रकार, एकान्त विपरीत, संशय, विनय, अज्ञान की अपेक्षा पाँच प्रकार भी होता है। इसके सांख्य चार्वाक मत मिलाने से 7 प्रकार का मिथ्यात्व होता है। विशेष रूप से क्रियावादियों के 180 अक्रियावादियों के 84, अज्ञानवादी के 67 और वैयनिकवादियों के 32 इस प्रकार मिथ्यावादियों के 363 भेद होते हैं।

## “आत्मा का शाश्वतिक ज्ञान”

**ज्ञान स्वभावः स्यादात्मा स्वभावाप्तिरयुतिः।**

**तस्मादच्युतिमांकांक्षन् भावयेज्ज्ञान भावनाम्॥ (174)**

ज्ञान आत्मा का असाधारण स्वभाव है और स्वभाव की प्राप्ति विनाश रहित है, इसलिए अविनाशी अवस्था को चाहने वाले विवेकियों को ज्ञान-भावना भाना चाहिए।

---

पूर्व सूत्रों में कहे गये नित्य-अनित्यादि धर्म सभी वस्तुओं में समान रूप से होते हैं, अर्थात् वे साधारण धर्म हैं, परन्तु ज्ञान अर्थात् जानना आत्मा में ही पाया जाता है, इसलिये यह आत्मा का असाधारण स्वभाव है। इसी लक्षण से परद्रव्यों से भिन्न आत्मा के अस्तित्व का निर्णय होता है। यह नियम है कि वस्तु का अस्तित्व रहते हुये उसके स्वभाव का कभी अभाव नहीं होता, क्योंकि लक्षण का नाश होने पर लक्ष्य का अस्तित्व कैसे रहेगा?

जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने ही धन का स्वामी होकर प्रवर्तेगा तो उसकी स्थिति एक सी रहेगी, उसी प्रकार आत्मा का स्वभाव ज्ञान-समयसार इसलिये उसे अपने ज्ञान का ही स्वामी होकर प्रवर्तना चाहिये। ये पदार्थ जैसे परिणमते हैं वैसे परिणमते, मैं तो इन्हे जानने वाला ही हूँ ऐसी भावना रखने वाले की अवस्था अविनाशी (स्वरूप) होती है, क्योंकि ज्ञान तो जीव का स्वभाव है, उसका कभी अभाव नहीं होता। तथा जीव, ज्ञान से भिन्न अन्य असारभूत भावों का स्वामी नहीं होता इसलिये उसकी अवस्था भी नहीं पलटती (एकरूप रहती है।)

जो जीव परद्रव्यों के स्वभाव का स्वामी होकर प्रवर्तता है, अपने स्वभावरूप परिणमने वाले शरीर, स्त्री, पुत्रादि को अपना जानता है, उसकी अविनाशी अवस्था नहीं रहती, क्योंकि शरीरादि की अवस्था ही एकरूप नहीं रहती, इसलिये यह उनकी अवस्था पलटने पर अपनी अवस्था पलटी ऐसा मानता है अतः अविनाशीपना नहीं रहता। इसलिये जो विवेकी अविनाशी अवस्था को चाहते हैं, उन्हें एक ज्ञान भावना ही भाना चाहिये।

## ज्ञान का फल अविनाशी सुख

ज्ञानमेव फलं ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनक्षरम्।

अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते ॥175॥

निश्चय से ज्ञान का फल ज्ञान ही है, वह सर्वथा प्रशंसनीय और अविनाशी है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उससे लोग अन्य कुछ और फल चाहते हैं-इसे मोह की ही महिमा जानना चाहिये।

श्रुतज्ञान द्वारा पदार्थों को यथार्थ जानने का तात्कालिक फल तो उन पदार्थों का जानपना ही है और परम्परा फल केवलज्ञान है, वहाँ सर्व पदार्थों का जानपना होता है। इस प्रकार ज्ञान का फल ज्ञान ही है, जो सर्व प्रकार से प्रशंसनीय है,

क्योंकि यथार्थ ज्ञान होने पर पदार्थ जैसे है, वैसे भासित होने से निराकुलता होती है। निराकुलता सुख का लक्षण है और सभी जीव सुख चाहते हैं। इस सुख में पराधीनता आदि कोई दोष नहीं है। अन्य लोग उससे विषय सामग्री रूप फल को चाहते हैं- यह मोह की महिमा है। जिस प्रकार खाज रोग होने पर रोगी को खुजाने की सामग्री अच्छी लगती है, उसी प्रकार मोह के कारण आत्मा में काम क्रोधादि भाव उत्पन्न होने पर इस जीव को स्त्री-पुत्रादि सामग्री अच्छी लगती है, यह उन्हें चाहता है। इस जीव को ज्ञान के सिवाय अन्य फल की चाह होती देखकर ज्ञानियों को बड़ा आश्चर्य होता है। जैसे -भूत लगे हुए व्यक्ति की चेष्टा देखकर आश्चर्य होता है वैसे मोही जीव की चेष्टा देखकर ज्ञानी को आश्चर्य होता है।

**“यह लोक -परलोक में कौन सुखी और कौन दुःखी ?”**

**सुखी सुरवामिहान्यत्र दुःखी दुःखं समश्नुते।**

**सुखं सकलसन्यासी दुःखं तस्य विर्ययः॥ (187)**

जो इस लोक में सुखी हैं वे परलोक में भी सुख पाते हैं और जो इस लोक में दुःखी हैं वे परलोक में भी दुःख पाते हैं। वस्तु का सर्व प्रकार से त्याग सुख है और इसके विपरीत परवस्तु का ग्रहण दुःख है।

जो जीव मोह घटने से वर्तमान में सुखी होते हैं, वही भविष्य में सुख पाते हैं और जो मोह बढ़ने से वर्तमान में दुःखी होते हैं, वे भविष्य में भी दुःख ही पाते हैं।

शास्त्रों में भी दुःख, शोक आदि से असाता का बन्ध होना कहा है और असाता का उदय आने पर दुःख, शोक आदि से असाता का बन्ध होना कहा है और असाता का उदय आने पर दुःख ही होता है। इसलिए दुःख का फल सुख है- ऐसे भ्रम से परलोक में सुख के उपाय से परोन्मुख मत हो।

यहाँ जो विषय-सुख छोड़ा जाता है, वह तो जैसे मिश्री मिलने पर गुड़ का स्वाद बुरा लगता है, वैसे शान्त रस का अनुभव होने पर जीव को विषय-सुख नीरस भासित होते हैं, इसलिए वह विषय सुख भोगता नहीं है, विषय सुख छोड़ने से उसे दुःख नहीं होता, अतः विषय सुख छोड़ने का भय मत कर। सच्चे धर्म - साधन से वर्तमान में भी सुख होता है और भविष्य में भी सुख होता है इसलिए ऐसा ही कार्य करना चाहिए।

---

## “अज्ञानियों द्वारा शरीर-पोषण का प्रयोजन”

शरीरमपि पुष्णन्ति सेवन्ते विषयानपि।

नास्त्यहो दुष्करं नृणां विषाद्वाञ्छन्ति जीवितुम् ॥ (196)

अहो मूर्ख जीव क्या-क्या नहीं करता? शरीर का पोषण करता है और विषयों को सेवन करता है। मूर्खों को कुछ विवेक नहीं है, वे विष से जीना चाहते हैं। अविवेकियों को पाप का भय नहीं है और विचार नहीं है, वे बिना विचारे न करने योग्य कार्य करते हैं।

जो पण्डित अर्थात् विवेकी है, वे शरीर से अधिक प्रेम नहीं करते, अनेक प्रकार की सामग्री से इसका पोषण नहीं करते। विषयों का सेवन नहीं करते और अकार्य से डरते हैं। मूढ़ लोग शरीर का अधिक पोषण करते हैं, विषयों का सेवन करते हैं और अयोग्य कार्य करने में शंका नहीं करते। जो विषयों का सेवन करते हैं, वे विष खाकर जीना चाहते हैं।

यस्तु नालम्बते श्रौतीं भावनां कल्पनाभयात् ।

सोऽवश्यं मुह्यति स्वस्मिन्बहिश्चिन्तां विभर्ति च ॥145॥

‘जो ध्याता कल्पना के भय से श्रौती (श्रुतात्मक) भावन का आलंबन नहीं लेता वह अवश्य अपने आत्म-विषय में मोह को प्राप्त होता है और बाह्य चिन्ता को धारण करता है।’

तस्मान्मोह-प्रहाणाय बहिश्चिन्ता-निवृत्तये।

स्वात्मानं भावयेत् पूर्वमेकाग्रस्य च सिद्धये ॥ 146॥

‘अतः मोह का विनाश करने, बाह्य चिन्ता से निवृत्त होने और एकाग्रता की सिद्धि के लिए ध्याता पहले स्वात्मा को श्रोती भावना से भावे संस्कारित करे।’

तथा हि चेतनोऽसंख्य-प्रदेशो मूर्तिवर्जित।

शुद्धात्मा सिद्धरूपोऽस्मि ज्ञान-दर्शन -लक्षणः ॥ 147॥

‘वह श्रोती भावना इस प्रकार है-

‘मैं चेतन हूँ, असंख्य प्रदेशी हूँ, मूर्तिरहित-अमूर्तिक हूँ, सिद्धसदृश शुद्धात्मा हूँ और ज्ञान-दर्शन लक्षण से युक्त हूँ।’

नान्योऽस्मि नाऽहमस्त्यन्यो नाऽन्यस्याऽहं न मे परः।

अन्यस्त्वन्योऽहमेवाऽहमन्योऽन्यस्याऽहमेव च ॥ 148॥

---

‘मैं अन्य नहीं हूँ, अन्य मैं (आत्मा) नहीं है। मैं अन्य का नहीं, न अन्य मेरा

है। वस्तुतः अन्य ही है, मैं ही हूँ, अन्य अन्य का है और मैं ही मेरा हूँ।’  
अन्यच्छरीरमन्योऽहं चिदहं तदचेतनम् ।

अनेकमेतदेकोऽहं क्षयीदमहमक्षयः ॥149॥

‘शरीर अन्य है, मैं अन्य हूँ (क्योंकि) मैं चेतन हूँ, शरीर अचेतन है, यह शरीर अनकरूप है, मैं एकरूप हूँ, यह क्षयी (नाशवान्) है, मैं अक्षय (अविनाशी) हूँ।’

अचेतनं भवेन्नाऽहं नाऽहमप्यस्म्यचेतनम्

ज्ञानात्माहऽहं न मे कश्चिन्नाऽहमन्यस्य कस्यचित् ॥150॥

‘अचेतन मैं (आत्मा) नहीं होता, न मैं अचेतन होता हूँ, मैं ज्ञानस्वरूप हूँ, मेरा कोई नहीं है, न मैं किसी दूसरे का हूँ।’

योऽत्र स्व-स्वामि-सम्बन्धे ममाऽभूद्वपुषा सह।

यस्त्वेकत्व-भ्रमः सोऽपि परस्मान् स्वरूपतः ॥151॥

‘इस संसार में मेरा शरीर के साथ जो स्व-स्वामि-संबंध हुआ है शरीर मेरा स्व और मैं उसका स्वामी बना हूँ- तथा दोनों में एकत्वका जो भ्रम है वह सब भी परके निमित्त है, स्वरूप से नहीं ।’

जीवादि-द्रव्य-याथत्य्य ज्ञानात्मकमिहाऽऽत्मना।

पश्यन्नात्मन्यथाऽऽत्मानमुदासीनोऽस्मि वस्तुषु ॥152॥

‘मैं इस संसार में जीवादि-द्रव्यों की यथार्थता के ज्ञानस्वरूप आत्मको आत्मा के द्वारा आत्मा में देखता हुआ (अन्य) वस्तुओं में उदासीन रहता हूँ - उनमें मेरा कोई प्रकार का रागादिक भाव नहीं है।’

सद्द्रव्यमस्मि चिदहं ज्ञान द्रष्टा सदाऽप्युदासीनः।

स्वोपात्त-देहमात्रस्ततः पर गगनवदमूर्तः ॥153॥

‘मैं सदा सत् द्रव्य हूँ, चिद्रूप हूँ, ज्ञाता-द्रष्टा हूँ, उदासीन हूँ, स्वगृहीत देहपरिमाण हूँ और शरीरत्याग के पश्चात् आकाश के समान अमूर्तिक हूँ ।’

सन्नेवाऽहं सदाऽप्यस्मि स्वरूपादि -चतुष्टयात्।

असन्नेवाऽस्मि चात्यन्तं पररूपाद्यपेक्षया ॥ 154॥

---

स्वरूपादि चतुष्टयकी दृष्टि से- स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव की अपेक्षा से - मैं सदा सत् रूप ही हूँ और पर-स्वरूपादि की दृष्टि से -परद्रव्य, परक्षेत्र परकाल और परभाव की अपेक्षा से - अत्यंत असतरूप ही हूँ।

यन्न चेतयते किञ्चिन्नाऽचेतयेत् किञ्चन ।

यच्चेतयिष्यते नैव तच्छरीरादि नाऽरम्यहम् ॥ 155॥

‘जो कुछ चेतता-जानता नहीं, जिसने कुछ चेता-जाना नहीं

यदचेतत्तथा पूर्वं चेतिष्यति यदन्यथा।

चेततीत्थं यदत्राऽद्य तच्चिद्द्रव्यं समस्यहम्॥ 156॥

‘जिसने पहले उस प्रकार से चेता-जाना है, जो ( भविष्य में) अन्य प्रकार से चेतनेगा-जानेगा और जो आज यहाँ इस प्रकार से चेतता -जानता है वह सम्यक् है वह सम्यक् चेतनात्मक द्रव्य मैं हूँ।’

स्व्यमिष्टं न च द्विष्टं किन्तूपेक्ष्यमिदं जगत्।

नाऽहमेष्टा न च द्वेष्टा किन्तु स्वयमुपेक्षिता॥ 157॥

‘यह दृश्य जगत् न तो स्वयं-स्वभाव से -इष्ट है- इच्छा तथा राग का विषय है - न द्विष्ट है- अनिष्ट अथवा द्वेष का विषय है- किन्तु उपेक्ष्य है- उपेक्षा का विषय है। मैं स्वयं- स्वभाव से एष्टा -इच्छा तथा राग करने वाला -नहीं हूँ न द्वेष्टा-द्वेष तथा अप्रीति करने वाला नहीं- हूँ, किन्तु उपेक्षिता हूँ- उपेक्षा करने वाला समवृत्ति हूँ।

मत्त कायादयो भिन्नास्तेभ्योऽहमपि तत्त्वतः ।

नाऽहमेष्टां किमप्यस्मि ममाऽप्येते न किञ्चन ॥158॥

वस्तुतः ये शरीरादिक मुझसे भिन्न हैं, मैं भी इनसे भिन्न हूँ। मैं इन शरीरादिक का कुछ भी (संबंधी) नहीं हूँ और न ये मेरे कुछ होते हैं।

**व्याख्या** - यहाँ कायादयः पद मे प्रयुक्त आदि शब्द शरीर से संबंधित तथा असंबंधित सभी बाह्य पदार्थों का वाचक है और इसलिए उसमें माता, पिता, स्त्री, पुत्र, मित्र, दूसरे सगे संबन्धी, जमीन, मकान, दुकान, घर-गृहस्थी आदि का सामान, बाग-बगीचे, धन-धान्य, वस्त्र-आभूषण बर्तन-भांडे, पालतू-अपालतू जंतु और जगत् के दूसरे सभी पदार्थ शामिल हैं। सभी पर पदार्थों से ममत्व को हटाने की इस भावना में यह कहकर व्यवस्था की गयी है कि यथार्थता अथवा वस्तु -

---

स्वरूप की दृष्टि से शरीर सहित ये सब पदार्थ मुझसे भिन्न हैं, मैं इनसे भिन्न हूँ, मैं इनका कुछ नहीं लगता और न ये मेरे कुछ लगते हैं।

**आध्यात्मिकता की सर्वोच्चता-महानता-मौलिकता-अलौकिकता**  
(आध्यात्मिक गुण रहित नेता-अभिनेता-खिलाड़ी-  
उद्योगपति-साधु आदि महान् नहीं)

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- आत्मशक्ति... )

सुनो! सुनो है! दुनियावालों आध्यात्मिकता की अतिमहानता।  
लौकिक-भौतिक महानता से भी, श्रेष्ठ-ज्येष्ठ व मौलिकता ॥  
आत्मा का शुद्ध स्वभाव होता आध्यात्मिक जो अनन्तगुण (शक्ति) सम्पन्न।  
अनन्त ज्ञान दर्शन सुखवीर्य अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व प्रभुत्व (विभुत्य) पूर्ण॥

अनादि अनन्त स्वयंभू स्वयंपूर्ण, स्वतंत्र मौलिक व पावन शान्त।  
हानिलाभ व जय पराजय से परे, शत्रु-मित्र आदि विभेद शान्त॥  
रागद्वेष काम क्रोध से रिक्त ईर्ष्या घृणा तृष्णा कामादि विकार मुक्त।  
सच्चिदानन्द पूर्ण समतामय हीनाधिक रहित अव्यय अनन्त॥

इसकी प्राप्ति हेतु ही राजा महाराजा कामदेव से ले चक्रवर्ती तक।  
राज्य वैभव त्यागकर निस्पृह निराडम्बर से करते आत्मा को शुद्ध ॥  
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि रहित शत्रु-मित्र भेदभाव से रिक्त।  
दबाव प्रलोभन वर्चस्व (कृतघ्नता)रहित आगामी भोगाकांक्षा से विरहित॥

ऐसे माहत्मा ही महान् होते अन्य सभी तो होते उनसे कनिष्ठ।  
ऐसे महात्मा को नमन करते राजामहाराजा चक्रवर्ती व इन्द्र तक॥  
ऐसे महात्मा से अतिरिक्त अन्य सभी जीव जो होते राग द्वेष मोह सहित।  
ईर्ष्या घृणा तृष्णा ख्याति पूजा युक्त वैर-विरोध से होते संयुक्त॥

आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मिक गुण अतिरिक्त अन्य सभी होते हैं तुच्छ।

---

सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि डिग्री सुन्दरता आदि होते हैं तुच्छ।<sup>7</sup>  
नेता अभिनेता खिलाड़ी ऑफिसर वैज्ञानिक से लेकर उद्योगपति या साधु।  
आध्यात्मिक गुणों से रहित वाले न होते हैं महान् व पूज्य।।

अतएव आध्यात्मिक गुण-गुणी ही पूजनीय महान् व आदर्शमय।  
ऐसे रहस्य को जानने वाले नहीं होते हैं जो होते हैं मोहान्ध।।  
जन्मान्ध यथा न देख पाते हैं महान् प्रकाशमान सूर्य तक।  
मोहान्ध तथा न जान पाते हैं, महान् पावन गुण आत्मिक।।

मोहान्ध के सभी भाव-व्यवहार आध्यात्मिकजन से होते विपरीत।  
आध्यात्मिक जन के सभी भाव-व्यवहार, मोहान्ध से होते विपरीत।।  
सांसारिक समस्त उपलब्धियाँ नहीं होती हैं अनन्त सुखप्रद।  
पापकारक व दुःख उत्पादक, आध्यात्मिक गुणा से विपरीत।।

आध्यात्मिक गुण ही अतः ग्रहणीय अनुमोदनीय व प्रशंसनीय।  
सांसारिक उपलब्धि न प्रशंसनीय इससे बन्धता है पापकर्म।।  
आध्यात्मिक गुणों की प्रशंसा होती है, शुभभाव व बन्धता पुण्य।  
आध्यात्मिक गुणों की प्राप्ति के लिए 'कनक' करे ध्यान-अध्ययन।।

सीपुर - 27.02.2017 रात्रि 11.30

सफल होने के लिए आपका मानसिक रूप से मजबूत होना बहुत जरूरी  
है, तभी आप सभी चुनौतियों का सामना आराम से कर सकते हैं।

### **मानसिक रूप से मजबूत बनाएंगी खास आदतें**

मानसिक रूप से मजबूत लोग कभी उन चीजों के बारे में परेशान और  
चिंतित नहीं होते जो उनके पास नहीं हैं।

ऐसे लोग अपनी विफलता को स्वीकार करते हैं और उससे उन्होंने जो  
सीखा, उसके लिए शुक्रगुजार होते हैं।

चाहे आप एक एंटरप्रेन्योर हो या एथलीट हो, कोच हो, कलाकार हो या  
राजनीतिज्ञ हो, आपको कभी न कभी जिदंगी में मुश्किलों का सामना करना ही

---

पड़ता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आप क्या करते हैं और आप कौन हैं, जिंदगी में आपको किसी न किसी मोड़ पर रूकावटों और कठिनाईयों से उबरना ही पड़ता है। यह चुनौतियाँ आपको भले ही दुर्गम लग सकती हैं, लेकिन ऐसा क्या हे जा सफल लोगो को या कम से कम जो सफलता की राह पर चल रहे हैं, उन्हें अलग करता है। वह चीज उनकी काबिलियत नहीं बल्कि उनका विश्वास और गिरकर फिर उठने की जिद है। कुछ लोग इसे उनका स्वभाव कहते हैं, लेकिन आमतौर पर इसे मानसिक मजबूती कहा जाता है। ऐसे लोग काबिल होने के साथ ही मानसिक तौर पर बहुत मजबूत भी होते हैं। देखा जाए तो काबिलियत को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाता है लेकिन असल में जिंदगी में सफल वही लोग होते हैं जो मानसिक तौर पर मजबूत होते हैं, जो गिरकर दोबारा उठने की हिम्मत करते हैं। अगर आप भी वाकई सफल होना चाहते हैं तो आपको भी दिमागी रूप से खुद को मजबूत बनाना होगा। आइए जानते हैं मानसिक रूप से मजबूत लोगों की कुछ आदतों के बारे में-

### **उनके पास होते हैं 4 सी**

अगर आप मानसिक रूप से मजबूत होना चाहते हैं तो आपमें 4 सी होने बहुत जरूरी है। पहला सी है कॉन्फिडेंस। अगर आपको खुद पर और अपनी क्षमताओं पर विश्वास है कि आप सफलता हासिल कर सकते हैं, तो आप मजबूत हैं। दूसरा सी है, चैलेंज यानि चुनौति। जब आप चुनौतियों के बजाय नए अवसरों और बदलावों को सहज स्वीकार कर लेते हैं, तो आप मजबूत बनते हैं। उनके बाद आता है कंट्रोल जहां आपको भरोसा होता है कि आपके पास आपका भविष्य बनाने की ताकत है। अंत में आती है कमिटमेंट जहाँ आप प्रतिबद्धता के साथ अपने लक्ष्यों को पान की कोशिश करते हैं।

### **बीते हुए कल से सीखते हैं**

कोई भी शख्स ऐसा नहीं होता जिससे कभी कोई गलती न हुई हो। कहते हैं कि गलतियाँ करके ही आप सीखते हैं और सीखकर ही आगे बढ़ते हैं। अगर आप मानसिक रूप से मजबूत होना चाहते हैं तो आपको भी अपनी गलतियों से सीखना चाहिए- आपको बीते हुए कल पर ही नहीं अड़े रहना चाहिए और न उसके बारे में सोच-सोचकर अपना आज और आने वाला कल खराब करना चाहिए। इसके इतर आपको बीते हुए कल में की गई अपनी गलती से सीख लेनी

---

चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि आपसे दोबारा ऐसी गलती न हो।

### **कभी शिकायत नहीं करते**

अधिकतर लोग आस-पास की चीजों या लोगों की आलोचनाओं में लगे रहते हैं। वह ऐसा इसलिए करते हैं, ताकि उन्हें अच्छा लगे लेकिन वास्तविकता में ऐसा करने से वह और ज्यादा निराश महसूस करते हैं। अगर आप मानसिक मजबूती चाहते हैं तो आपको चीजों को लेकर शिकायत नहीं करनी चाहिए। इसके बजाए चीजों को बेहतर बनाने की तरफ ध्यान देना चाहिए। शिकायत करने के बजाय समाधान खोजना चाहिए।

वे लोग जिंदगी को हमेशा सकारात्मक नजरिए से देखते हैं और नकारात्मक को खुद पर कभी हावी नहीं होने देते।

### **फ्लेक्सिबल होते हैं**

जो लोग मानसिक रूप से मजबूत होते हैं, वह अपनी समस्याओं के लिए अलग-अलग समाधान निकाल लेते हैं। साथ ही वह अपनी समस्याओं को अलग और नए तरीके से देखते हैं, जिससे वह उनके लिए हल ढूँढ पाते हैं। वह किसी एक तरह के समाधान पर अडते नहीं हैं। वह फ्लेक्सिबल तरीके से काम करने में यकीन रखते हैं और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालते हैं। इससे वह निश्चित रूप से सफल होते हैं।

### **इमोशनली इंटेलिजेंट होते हैं**

सफल लोग इमोशनली इंटेलिजेंट होते हैं। इसका मतलब यह है कि उनमें अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने और उन्हें संभालने की क्षमता होती है। उनकी यह प्रतिभा भी उन्हें मानसिक रूप से मजबूत बनाती है। अगर आप भी इमोशनली इंटेलिजेंट बनना चाहते हैं तो आपको अपने अंदर कुछ खास गुण लाने होंगे जैसे परफेक्शनिस्ट न बनाना, वर्क लाइफ बैलेंस बनाना, आसानी से ध्यान नहीं भटकने देना, अपनी कमियाँ और ताकत जानना, अपने लिए कठिन सीमाएं तय करना आदि। इन गुणों से आप खुद को इमोशनली इंटेलिजेंट बना सकते हैं या यह जान सकते हैं कि आप इमोशनली इंटेलिजेंट हैं या नहीं। मानसिक मजबूती के लिए यह गुण होना जरूरी है।

---

## वह कंसिसटेंट होते है

अगर आप मानसिक मजबूती चाहते है तो आपका कंसिसटेंट होना बहुत जरूरी है। अगर आप नियमित तौर पर इसके लिए काम नहीं करते तो आप सफलता नहीं पा सकते। मानसिक रूप से मजबूत एंटरप्रेन्यौर्स कंसिसटेंट होते है क्योंकि वह अपने लक्ष्य तय करते है, उन्हें हासिल करने के लिए लगातार प्रयास करते रहते है। वह हमेशा सफलता के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए खुद को प्रोत्साहित करते है।

### सन्दर्भ :

आशय यह है कि भावमन स्वयं ज्ञान विशिष्ट है अतः वह अमूर्त है इसलिए उसके द्वारा जो साक्षात्कार होता है वह अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष कैसे नहीं होगा अर्थात् उसे अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष मानने में कोई आपत्ति नहीं है।

आत्मा की सिद्धि के लिये मति और श्रुत ये दो ज्ञान ही निश्चित कारण माने है, कारण कि उपान्त्य दो ज्ञानों के बिना मोक्ष हो सकता है। किन्तु मतिज्ञान और श्रुतज्ञान के बिना कभी मोक्ष नहीं होता।

**जादं सयं समन्तं गाणमणंत्थवित्थदं विमलं।**

**रहिदं तु ओग्गहादिहिं सुहं त्ति एगंतियं भणियं॥ (59)**

(गाणं) यह केवलज्ञान (सयं जादं) स्वयमेव ही उत्पन्न हुआ है, (समन्तं) परिपूर्ण है (अणंत्थवित्थदं) अनन्त पर्दार्यों में व्यापक है, (विमलं) संशय आदि मलों से रहित है, (ओग्गहादिहिं तु रहियं) अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा आदि के क्रम से रहित है। इस तरह पांच विशेषणों से गर्भित जो केवलज्ञान है वही (एगंतियं) नियम करके (सुहंत्ति भणियं) सुख है, ऐसा कहा गया है। भाव यह है कि यह केवलज्ञान-पर पदार्यों की सहायता की अपेक्षा न करके चिदानन्दमयी एक स्वभाव रूप अपने ही शुद्धात्मा के एक उत्पादन कारण से उत्पन्न हुआ है। इसलिए स्वयं पैदा हुआ है, सर्व शुद्ध आत्मा प्रदेशों में प्रगटा है इसलिए सम्पूर्ण है, अथवा सर्वज्ञान के अविभाग -प्रतिच्छेद अर्थात् शक्ति के अंश उनसे परिपूर्ण हैं, सर्व आवरण के क्षय होने से पैदा होकर सर्व ज्ञेय पदार्यों को जानता है इससे अनन्त पदार्थ व्यापक है, संशय, विमोह, विभ्रम से रहित होकर व सूक्ष्म आदि पदार्यों के जानने में अत्यन्त विशद होने से निर्मल है तथा क्रमरूप इन्द्रियजनित ज्ञान के खेद के अभाव से अवग्रहादि-रहित अक्रम है। ऐसा यह पांच विशेषण सहित क्षायिकज्ञान

---

अनाकुलता लक्षण को रखने वाला परमानन्दमयी एक रूप पारमार्थिक सुख से संज्ञा, लक्षण, प्रयोजन आदि की अपेक्षा से भेदरूप होने पर भी निश्चयनय से अभिन्न होने से पारमार्थिक या सच्चा सुख कहा जाता है, यह अभिप्राय है।

**समीक्षा** - सुख आत्मा का स्वाभाविक शुद्ध आत्म स्वभाव है, और सुख का वेदन जीव ज्ञान के माध्यम से करता है, परन्तु जब जीव समस्त कर्मों से रहित होकर पूण ज्ञानानंद स्वरूप बन जाता है तब ज्ञान एवं आनन्द में अभेद विवक्षा से भेद नहीं रहता है तथा उसका वेदन भी अभेद हो जाता है। इसलिये अभेद विवक्षा से ज्ञान एवं सुख को एकरूप से स्वीकार किया गया है तथापि भेद विवक्षा से ज्ञान एवं सुख पृथक-पृथक हैं, क्योंकि ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से केवलज्ञान होता है, दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व होता है एवं चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय से क्षायिक चारित्र होता है और इसे ही सुख कहा गया है। इसलिये चार घातिकर्म के क्षय से अनंत चतुष्टय प्रगट होता है, परन्तु प्रवचनसार आध्यात्मिक ग्रन्थ है। इस आध्यात्मिक ग्रन्थ में ज्ञान को मुख्यता दी गई है।

**जादंसयं-** इस गाथा में 'जादंसयं' अर्थात् स्वयं से उत्पन्न हुआ विशेषज्ञान (सुख) के लिए दिया गया है, क्योंकि यह सुख जीव का स्वभाव होने से बाहर से प्राप्त नहीं होता है परन्तु स्वयं में ही अभेद रूप से निहित है। जैसे सूर्य में सूर्य किरण रहती है, परन्तु बादल के कारण सूर्य किरण छिप जाती है और बादल छटते ही सूर्य किरण प्रगट हो जाती है उसी प्रकार स्वयं में निहित सुख (ज्ञान) ही कर्म के कारण तिरोहित गुप्त/सुप्त हो गया था, परन्तु विरोध कारण रूप कर्म-क्षय के कारण स्वयं प्रगट हो गया।

**समत्तं (समस्त)-** सुख आत्मा का गुण होने के कारण पूर्ण आत्मा के समस्त प्रदेशों में सुख का वेदन होता है। जिस प्रकार अग्नि की उष्णता अग्नि के प्रत्येक कण में, स्वर्ण का पीतपना स्वर्ण के प्रत्येक प्रदेश में, शक्कर का मीठापन उसके प्रत्येक कण में होता है उसी प्रकार सुख का वेदन आत्मा के प्रत्येक प्रदेश में होता है।

**गाणमणंतत्थवित्थडं (अनन्त अर्थ में विस्तृत ज्ञान)-** ज्ञान ज्ञेय प्रमाण होने के कारण और केवलज्ञान में सबसे अधिक अनंतानंत अनुभाग प्रतिच्छेद शक्ति होने के कारण यह ज्ञान समस्त ज्ञेयों में विस्तृत है इसलिये इस ज्ञान में जानने

---

के लिए कुछ अवशेष नहीं रहता है। इस ज्ञान में जानने की इच्छा का अभाव होने के कारण यह ज्ञान सुख स्वरूप है।

**विमल (मल रहित, निर्मल)**- छद्मस्थ का ज्ञान एवं सुख कर्म सापेक्ष होने के कारण, मलयुक्त होने के कारण आकुलता उत्पन्न करने वाला है परन्तु केवलज्ञान कर्म निरपेक्ष एवं अव्याबाध होने के कारण यह सुख परम आल्हाद रूप सुख है।

**रहिदं तु ओग्गहादीहिं (अवग्रहादि से रहित)** - केवलज्ञान क्षायिक होने के कारण यह युगपत् प्रवृत्त होता है। इसलिये अवग्रहादि क्रम नहीं है और तज्जनित खेद व आकुलता नहीं है। इसलिये प्रत्यक्ष ज्ञान ही पारमार्थिक या एकान्तिक सुख है। समयसार की टीका में जयसेनाचार्य ने कहा भी है-

**यद्देवमनुजाः सर्वे सौख्यमक्षार्थसंभवम्।**

**निर्विशन्ति निराबाधं सर्वाक्षप्रीणनक्षमम्।।**

**सर्वेणातीत-कालेन यच्च मुक्तं महर्द्धिकम्।**

**भाविनो ये च भोक्ष्यन्ति स्वादिष्टं स्वान्तरञ्जकम्।**

**अनन्तगुणिनं तस्मादत्यक्षं स्वस्वभावजम्।**

**एकस्मिन् मये भुक्तं तत्सुखं परमेश्वरः।।**

यहां शिष्य प्रश्न करता है कि प्रभो! आपने अनेक बार अतीन्द्रिय सुख की बात कही है किन्तु वह अतीन्द्रिय सुख कैसा है ऐसा लोग नहीं जानते? आचार्य देव उसका उत्तर देते हैं-देखों, कोई व्यक्ति स्त्री प्रसंग आदि पंचेन्द्रिय के विषय-सुख व्यापार से रहित अवस्था में सभी प्रकार की आकुल-व्याकुलता से दूर होकर बैठा हुआ है उसको किसी ने आकर पूछा कि कहो भाई देवदत्त! सुख से तो हो? इस पर वह उत्तर देता है कि सुख से हूँ, तो यह सुख अतीन्द्रिय है क्योंकि सांसारिक सुख विषयों के सेवन से पैदा होता है और यहां पंचेन्द्रियों के विषय के व्यापार का अभाव होते हुये भी सुख दिख रहा है वह अतीन्द्रिय है, किन्तु यह जो सुख हो रहा है वह सामान्यात्मक साधारण-सा अतीन्द्रिय सुख है किन्तु जो पांचो इन्द्रियों से और मन से होने वाले सभी प्रकार के विकल्प जालों से रहित ऐसे जो समाधिस्थ परम योगीराज को स्वसंवेदनात्मक अतीन्द्रिय सुख होता है वह विशेष रूप से होता है अर्थात् इसमें भी और अपूर्व विशेषता लिये हुये होता है। जो मुक्तात्माओं को अतीन्द्रिय सुख है, वह हम तुम सरीखे लोगों के या तो अनुमानगम्य

है या आगम गम्य है। देखें, मुक्तात्माओं को इन्द्रिय विषयों के व्यापार के न होने पर भी अतीन्द्रिय सुख होता है यह पक्ष हुआ क्योंकि वर्तमान में होने वाला विषय व्यापार से रहित निर्विकल्प समाधि में रत होकर रहने वाले परम मुनिश्वरों को स्वसंवेद्यात्मक सुख की उपलब्धि होती है, यह हेतु हुआ। यह पक्ष और हेतु रूप दो अंगवाला अनुमान हुआ ऐसा जानना चाहिए। आगम में तो जैसा ऊपर 'आत्मोपादान सिद्ध' इत्यादि वचन से ऊपर कह आये हैं वह वचन अतीन्द्रिय सुख का वर्णन करने वाला प्रसिद्ध ही है। इसलिये अतीन्द्रिय सुख के विषय में सन्देह नहीं करना चाहिये-यही बात और स्थान पर भी कही है।

अर्थात् - वर्तमान् में जो पुण्याधिकारी देव और मनुष्य है वे सब निरर्गल रूप से अपनी सभी इन्द्रियों को प्रसन्न करने वाले इन्द्रियजन्य और ऋद्धि आदि से प्राप्त हुए सुख भोगा रहे है तथा आगे होने वाले पुण्याधिकारी देव और मनुष्य इन्द्रियजन्य स्वादिष्ट और मनोरंजक सुख को भोगेंगे उस समस्त सुख से भी अनन्तगुणा अतीन्द्रियजन्य अपने स्वभाव से उत्पन्न होने वाला सुख परमेश्वर सिद्ध भगवान् को एक समय में होता है। (समयसार, पृ. 376)

**जं सिव-दंसणि परम-सुहु पावहि झाणु करंतु।**

**तं सुहु भुवणि वि अत्थि णवि मेल्लिवि देउ अणंतु।। (116)**

आगे शिव शब्द से कहे गये निज शुद्ध आत्मा के ध्यान करने पर जो सुख होता है, उस सुख का तीन दोहा-सूत्रों में वर्णन करते हैं -जो ध्यान करता हुआ निज शुद्धात्मा के अवलोकन में अत्यन्त सुख हे प्रभाकर! तू पा सकता है, वह सुख तीन लोक में भी परमात्म द्रव्य के सिवाय नहीं है।

**जं मुणि लहइ अणंत-सुहु णिय-अप्पा झायंतु।**

**तं सुहु इंदु वि णवि लहइ देविहिं कोडिरमंतु।। (117) (प.प्र.अ.1)**

आगे कहते है कि जो सुख आत्मा को ध्यावने से महामुनि पाते है वह सुख इन्द्रादि देवों को दुर्लभ है- अपनी आत्मा को ध्यावता परम तपोधन मुनि जो अनन्तसुख पाता है, उस सुख को इन्द्र भी करोड़ देवियों के साथ रमता हुआ भी नहीं पाता।

**अप्पा-दंसणि जिणवरहं जं सुहु होइ अणंतु।**

**तं सुहु लहइ विराउ जिउ जाणंतउ सिउ संतु।। (118)**

---

आगे ऐसा कहते हैं कि वैरागी मुनि ही निज आत्मा को जानते हुए निर्विकल्प सुख को पाते हैं-जिन शुद्धात्मा के दर्शन में जो अनन्त अद्भुत सुख मुनि अवस्था में जिनेश्वर देवों के होता है, वह सुख वीतराग भावना को परिणत हुआ मुनिराज निज शुद्धात्मास्वभाव को तथा रागादि रहित शांत भाव को जानता हुआ पाता है।

परोपकारी वही होता है, जिसकी दृष्टि व्यापक होती है। व्यापक दृष्टि उसी की होती है जो सहिष्णु यानी कि सहनशील होता है।

## व्यक्तित्व में उदारता और सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए जरूरी है सहनशीलता

सहन करना आत्मा का प्रमुख धर्म है। सहन वही कर सकता है, जिसकी आत्मा का विकास हुआ है। भगवान महावीर ने वर्षों तक कठोर साधना की और सहनशीलता की शक्ति का इतना विकास कर लिया कि चंडक सर्प और संगमदेव के उपसर्ग भी उन्हें शान्ति का आस्वाद करा रहे थे। कहते हैं कि भगवान बुद्ध को आभास हो गया कि उन्हें पावा में जहर दिया गया है किन्तु रातों रात कुशीनारा (निर्वाण स्थल) इसलिए चले गए कि कहीं उनके शिष्य जहर देने वाले के प्राण की हानि न कर दें। ईसा मसीह को सूली पर लटकाया जा रहा था तो उनके मुख से शब्द निकल रहे थे-है भगवान। इन्हें माफ करना, ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं? गांधीजी को गोली लगी तो वे राम-राम के उच्चारण के साथ अपने हृदय की शांति की अभिव्यक्ति कर रहे थे। ये कुछ उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि इन महापुरुषों ने वर्षों तक साधना की तब कहीं सहनशीलता का श्रृंगार इन्होंने अपने जीवन में किया और दूसरों के प्रेरणा स्रोत बने।

### सकारात्मक सोच की सीढ़ी

आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं कि सहनशीलता के लिए सबसे पहला आवश्यक प्रयोग है सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण। नकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण से व्यक्ति स्वयं को नहीं औरों को देखता है। जब तक दूसरों को देखता है तब तक सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं बनता। खुद को देखना कठिन है। जो खुद को देखता है, वह अपनी कमियों बुराइयों, अज्ञानता एवं कठोरता को देखता है। ऐसा करने

---

वाला इन कमियों को दूर कर हर विषम परिस्थिति को सहन करने की शक्ति अर्जित करता है। अभाव में भाव तथा कमी में आधिक्य महसूस करता है। कठोपनिषद की कथा है कि पिता द्वारा गुस्से में पुत्र नचिकेता से यह कहने पर कि मैं तुझे यमराज को दूंगा तो पुत्र सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए यमराज के पास जाकर आत्मज्ञान प्राप्त कर लौटा।

### **परोपकारी सोच का विस्तार**

विवेकानन्द कहते हैं दूसरों का उपकार करना आसान नहीं है। जितना आत्मप्रेम का विकास होता है उतना ही स्वार्थवृत्ति वृद्धिगत होती है, किन्तु संवेदना का स्रोत जितना व्यापक होता है, उतना परोपकार के व्यवहार में विकास होता है, परोपकारी वही होता है जो सबको देखता है जिसकी दृष्टि व्यापक होती है। व्यापक दृष्टि उसी की होती है जो सहिष्णु है। असहिष्णु आत्मगत है, इसलिए उससे दूसरों का हित संभव नहीं है। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'-अर्थात् अपने प्रतिकूल कार्य एवं व्यवहार को दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए। आप चाहते हैं कि लोग आपका सम्मान करें तो आपको भी दूसरों का सम्मान करना चाहिए। प्रतिकूलता को सहन करना और दूसरों का उपकार करना एक सहिष्णु व्यक्ति ही कर सकता है।

### **संयम से सहिष्णुता संभव**

अनावश्यक का त्याग और आवश्यक का उपयोग व उपभोग ही संयम है। आचार्य तुलसी ने 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है का उद्घोष दिया था। अर्थात् जीवन की हर प्रवृत्ति को संयम से अलंकृत कर दें तो जीवन धन्य हो सकता है। अरविन्द घोष कहते हैं कि संयमी व्यक्ति कभी उद्विग्न नहीं होता है। संयम के पथ पर चलने वाला कभी आक्रान्त नहीं हो सकता। वह हर परिस्थिति में सम रहता है। सघर्ष की स्थिति में सम रहना एक सहिष्णु व्यक्ति का ही धर्म है। अतः सहिष्णु ही संयमी हो सकता है।

### **सहनशीलता से मन पवित्र**

सहनशीलता के न होने से प्रचंडता की वृद्धि होती है। कबीर का धार्मिक दृष्टिकोण संकीर्णता, कट्टरता मजहबी उन्माद और बाह्य आडम्बरों से परे सहिष्णुता उदारता ओर मानव प्रेम पर आधारित था। उन्होंने हृदय की पवित्रता और सहिष्णुता

---

पर विशेष बल दिया। सम्राट अशोक धर्म सहिष्णु शासक बने और जन कल्याण पर बल दिया। अकबर का दीन-ए-इलाही धर्म उनकी सहिष्णुता और उदारता का परिचायक है।

### शान्ति का आधार संयम

जीवन में शान्ति सभी चाहते हैं। विवेकानन्द का कहना था कि जीवन में शान्ति उसे मिलती है, जिसने सहनशीलता का विकास किया है। जो उग्र होता है संक्रीर्ण विचारों से आत्मसात होता है, आवेग में जीता है वह कभी सहनशील नहीं हो सकता और जहां सहनशीलता नहीं वहां शान्ति नहीं। जब भी कभी लक्ष्मण उग्र होते थे तो भगवान राम उन्हें सहनशीलता की शिक्षा देते थे। एक बार गौतम बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द ने पूछा-भगवन् शान्ति का आधार क्या है? भगवान बुद्ध ने कहा-आनन्द । जो धीर और गम्भीर हैं वही सहिष्णु हैं और जहां सहिष्णुता है वही शान्ति है।

जब हम कृतज्ञता ज्ञापित करें, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सर्वश्रेष्ठ प्रशंसा शब्दों के उच्चारण में नहीं, बल्कि उन्हें जीने में है।

## जीवन जीने की राह दिखाती है कृतज्ञता

कभी समुद्र के करीब बैठकर आपने अनुभव किया है कि मेरे भीतर भी समुद्र का एक हिस्सा है। उस हिस्से के लिए मुझे समुद्र का कृतज्ञ होना चाहिए। सूरज की रोशनी मेरे भीतर है, हवाएं मेरे प्राण को चलाती हैं, आकाश और पृथ्वी मुझे बनाते हैं, इन सभी के लिए मुझे कृतज्ञ होना चाहिए। जीवन में खुशियां लाने के लिए कृतज्ञता को ज्ञापित और विकसित करने का उपाय करें। उससे साधना में गति होगी। जीवन बदल जाएगा। आनंद की प्राप्ति होने लगेगी। आपको ऐसा महसूस होगा कि मानों आपने दुनिया को जीत लिया, दुनिया हमेशा के लिए आपकी अपनी हो गई है।

### अहंकार दूर करने का माध्यम

कृतज्ञता ऐसा धागा है, जो सिर से समाज को एक सूत्र में बांधे रखता है। इसके बिना कोई व्यक्ति मानव सम्बन्धों की कल्पना भी नहीं कर सकता है। समाज तभी तक फलता-फूलता है जब तक कृतज्ञता को इसकी नैतिक पूंजी के तौर पर मूलभूत घटक के तौर पर लिया जाता है। यह आपसी सम्बन्ध में पैदा होने वाली

---

खराब मानसिकता के विरुद्ध एक सुरक्षा दीवार है। मित्रता और शिष्टता में भी इसका सकारात्मक योगदान रहता है। कृतज्ञता, व्यक्ति के अहंकार को कम करने के साथ समान व्यवहार के लिए प्रेरित करती है। यह खुशी पाने का भी बेहतरीन माध्यम है। विद्वानों के अनुसार बचपन से लेकर बुढ़ापे तक मनोवैज्ञानिक शारीरिक और सम्बंधपरक लाभों की व्यापक श्रृंखला का सम्बन्ध कृतज्ञता से ही होता है, जो भी कृतज्ञता के भावों को जी लेता है वही अच्छी जिंदगी जी सकता है।

### **सबसे बड़ा उपहार**

यदि आप हर दिन कृतज्ञता को महसूस करते हैं तो आपका जीवन पूरी तरह बदल जाता है। यह न सिर्फ जीवन की हर अच्छी चीज को कई गुना कर देती है, बल्कि नकारात्मकता को कम करती है। आप कृतज्ञ होने के लिए कोई न कोई चीज हमेशा खोज सकते हैं और ऐसा करते हुए आप प्रेम की शक्ति का दोहन करते हैं, जो हर नकारात्मक चीज को खत्म कर देती है। यदि आपको जीवन में केवल एक ही प्रार्थना करनी हो तो केवल एक 'धन्यवाद' का शब्द ही काफी होगा।

### **ग्रहणशीलता की मिसाल**

अगर आप कृतज्ञ हैं, तो आप ग्रहणशील भी होंगे। अगर किसी के प्रति आभारी होते हैं तो आप उसकी ओर आदर भाव से देखते हैं। जब किसी चीज को आदर भाव से देखते हैं तो आप और अधिक ग्रहणशील हो जाते हैं। योग का मकसद भी यही है। आपको बहुत गहराई में ग्रहणशील बनना है, जिनके बारे में आप अब तक जानते भी नहीं। इसलिए कृतज्ञता से अभिभूत हो जाना ग्रहणशील होने का एक खूबसूरत तरीका है। आपकी सीमाओं का इससे कुछ हद तक विस्तार होता है।

### **स्वयं से करे शुरूआत**

जो कोई भी अपने शरीर के प्रति कृतज्ञ है, वही दूसरों की शरीर के प्रति कृतज्ञ हो सकता है शरीर पंचमहाभूतों से मिलकर बना है। शरीर के प्रति कृतज्ञता पंचमहाभूतों के प्रति कृतज्ञ होना है।

वैज्ञानिकों के अनुसार संवेदनशलीता और कृतज्ञता दोनों इंसान को निरोध और तनाव मुक्ति रखते हैं। जो कृतज्ञ नहीं, वह धर्म का अनुगामी नहीं को सकता

---

है। कृतघ्न व्यक्ति को न भगवान की अनुकम्पा प्राप्त होती है और नहीं धर्मराज का वरदान ही। तुलसीदास ने कृतज्ञता को धर्म रूपी रथ का एक पहिया कहा है, जो इस पर सवार हो जाता है वह भगवान राम की अनुकम्पा हासिल करने का अधिकारी बन जाता है। जिसने भी हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ पहुंचाया है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट किए बिना हम मानव धर्म से दूर हो सकते हैं। कृतज्ञता का गुण हमें अन्तःकरण से बढ़ाना चाहिए। इस अभिवृद्धि के साथ मनुष्यत्व बढ़ेगा और देवत्व निकट आएगा।

### **प्रसन्नता व करुणा के भाव समागम**

प्रेम और कृतज्ञता एक जोड़ी है। प्रसन्नता और सद्भाव उनकी संतान है। जब तक आप यह स्वीकार नहीं करते कि आप के लिए किसी ने कुछ दिया है तब तक कृतज्ञ होना असंभव है। यदि अहंकार या अज्ञान के कारण आपको लगता है कि वह तो आप का अधिकार था तो आप आभारी महसूस नहीं पाएंगे। कृतज्ञता ऐसा झरना है, जो उस समय फुटता है, जब कुछ प्राप्त होने पर आप अभिभूत हो उठते हैं। असीम कृतज्ञता से भरा एक क्षण पूरे जीवन को बदलने की क्षमता रखता है।

आपको न तो प्रसन्नता मिलेगी न आप को शांति मिलेगी न आप को शांति और आनंद का अनुभव होगा। जिस रिश्ते में भी कृतज्ञता हो वह अवश्य विकसित होगा। यदि आप कृतज्ञता को अपनाएं तो निश्चित रूप से आप एक परिवर्तन को उभरते हुए पाएंगे। यदि आप इसे लंबी अवधि तक करते रहे तो शीघ्र ही इसके परिणाम से आप विस्मित हो जायेंगे। यह एक हार्दिक धन्यवाद प्रकट करना या एक असाधारण दयालुता का काम भी हो सकता है।

### **ज्ञानवाणी**

सफल होने के लिए क्षमा को आपको अपने अंतर्मन में उतारना होगा। क्षमा मांगने से न केवल हमारा अभिमान मिटता है बल्कि बुरा करने की हमारी आदत भी दूर होती है।

### **संतोष**

संतोष जीवन में स्वाभिमान जागृत करता है और व्यक्ति को सुख की ओर ले जाता है। संतोष से जितना होता है या जितने की आवश्यकता होती उतने में

---

सुखी रहता है तथा अधिक भी आ जाएं तो दैवत्व शक्ति का आशीर्वाद समझ अहंकार के साथ तृष्णा को जीवन में नहीं बढ़ने देता है। व्यक्ति में स्वयं में इतना सुख है कि वह दुःख का अनुभव भी नहीं कर सकता, सुख को प्रगट करने के लिए जीवन में सतोष गुण को महत्व देना होगा।

### क्षमा

क्षमाशीलता से हम अपने मन से घृणा, द्वेष, नाराजगी इत्यादि जैसे भावों को दया, करुणा एवं सहिष्णुता में परिवर्तित कर सकते हैं। केवल दूसरों को ही क्षमा करना पर्याप्त नहीं है अपितु हमने यदि कुछ अनिष्ट, अयुक्त अमर्यादित या अभद्रतापूर्ण व्यवहार किसी से किया हो तो हमें भी दूसरों से उसके लिए क्षमा मांगनी चाहिए। अन्यथा न तो हमारा अभिमान मिटेगा और न ही बुरा करने की हमारी आदत जाएगी।

### मौन

यह वह साधना है, जो चित्तवृत्तियों को बिखरने से बचाती है। चुप रहने से वाणी के साथ व्यय होने वाली मस्तिष्कीय शक्तियों की क्षति होने से बचत होती है। यह बचत आत्मचिंतन में लगा दी जाए तो शान्ति के उस स्रोत तक पहुंच हो सकती है, जो हमारी अशान्तियों को हटाकर सुखद, शीतल और स्निग्ध शान्ति का आश्वासन देती है। इस प्रकार के विश्वास के बाद नवीन चैतन्यता और जीवन शक्ति प्राप्त होती है।

## तीर्थकर भगवान् V/s आधुनिक वैज्ञानिक से लेकर समाज सुधारक तक

- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- चाँदसी मेहबूबा..., आत्मशक्ति..., जय हनुमान... )

परम पावन परम उदार परमज्ञानी हे! तीर्थकर!

विश्व कल्याणक विश्व उद्धारक विश्व प्रबोधक हे! तीर्थकर।।

अन्त्योदयी हो! सर्वोदयी हो! निस्पक्षपाती करुणाकर ।

रागद्वेष माहकाम क्रोध रिक्त ईर्ष्यातृष्णा घृणा से आप विरक्त।

ख्यातिपूजा लाभ प्रसिद्धि रहित सत्ता-सम्पत्ति से आप विरक्त।

दबाव प्रलोभन वर्चस्व रहित, समता शान्ति से आप संयुक्त।।(1)

---

अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, समस्त बाधा से आप रहित।  
 अपना-पराया भेदभाव रिक्त, समस्त जीवों में समता युक्त।  
 सर्वजीव समान अधिकार कहा, 'सर्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' बताया।  
 (केवल) मानव अधिकार या 'पशुकूरता निवारण' से भी व्यापक बताया॥(2)  
 साम्यवाद-समाजवाद राजनीति से भी श्रेष्ठ तब समतावाद।  
 अपरिग्रह से ले अहिंसा तक आपका अधिक व्यापक सिद्धान्त।  
 मनोविज्ञान से ले क्रम विकास जीव वाद से भी कहा श्रेष्ठ सिद्धान्त।  
 तन-मन व इन्द्रिय परे भी जीव होते है चैतन्यमय अनादि अनन्त॥ (3)  
 अनेकान्त तो आप का महान् देन, हर द्रव्य गुण आदि अनेकान्तमय।  
 चेतन-अचेतन मूर्तिक-अमूर्तिक, हर वस्तु में व्याप्त है अनेकान्त।  
 आदि अनन्त विश्व को कहा, स्वयंभू अकृतिम शाश्वत कहा।  
 षट् द्रव्यमयी लोक को कहा लोक से परे भी अलोक कहा॥ (4)  
 अणु-स्कन्ध-व-वर्गणा रूप से, भौतिक द्रव्य को अनन्त कहा।  
 वर्तमान के भौतिक विज्ञान से भी, अति सूक्ष्म से ले स्थूल (व्यापक) कहा।  
 आत्म विकास को प्रधान कहा, इस हेतु ही धर्म का वर्णन किया।  
 पंचव्रत-पंच समिति दशधर्म द्वारा, आत्मा का विकास कहा॥  
 समता-शान्ति-आत्मविशुद्धि, रत्नत्रयमय धर्म बताया।  
 चौदह गुणस्थान के क्रम से आत्म विकास को पैमाना बताया।  
 श्रावक से परे श्रमण बनकर, आत्म विकास से मोक्ष बताया।  
 मोक्ष ही जीवों का शुद्ध स्वभाव (जो) अनन्त ज्ञानदर्शन सुखमय बताया॥(6)  
 अतः ही आप हो परमगुरु महावैज्ञानिक (दार्शनिक) समाज सुधारक।  
 आप के ही गुण प्राप्ति के हेतु, आपको आदर्श माने सूरि 'कनक' ॥

सीपुर- 02.03.2017 मध्याह्न -3.07

**प्रकृति: चिड़ियाघरों का भविष्य**  
**जानवरों की भावनाओं पर नई रिसर्च से प्राणियों को**  
**कैद में रखने पर सवाल उठे**

ऐसे समय जब वैज्ञानिक जानवरों के अंदरूनी जीवन के बारे में पहले से

---

बहुत अधिक जानते हैं और जब पशुओं के अधिकारों पर चिंता जताई जा रही है तब कई विशेषज्ञ सोचते हैं, चिड़ियाघरों (जू) का अस्तित्व बनाए रखने के लिए भारी परिवर्तन की जरूरत है। कई विशेषज्ञ अमेरिका के सबसे पुराने फिलाडेल्फिया जू को सर्वश्रेष्ठ मॉडल मानते हैं। वहां जू 360 नामक योजना के तहत मानवों द्वारा जानवरों को देखने का नया अनुभव सामने आया है। वहां शेर गोरिल्ला जैसे जानवर जालियों से घिरी पगडंडी में घूमते हैं। ऐसी पगडंडियां जमीन से कुछ फीट ऊपर भी है।

सीएटल में वुडलैंड पार्क जू में हाथियों को देखने के लिए बच्चों की भीड़ लगी रहती थी लेकिन अब यह खाली है। विश्व में कल्पनाशील डिजाइन के लिए मशहूर जू में 1980 में हाथियों को रखने की जगह 20 करोड़ रु. में बनाई गयी थी। लेकिन, हाल के वर्षों में पशु अधिकार एक्टिविस्ट ने जगह को बहुत छोटा और अमानवीय बताया। उनका कहना था, यह हाथियों के नैसर्गिक रहवास जैसी नहीं है। 2014 में एक हाथी की मौत के बाद इसे बन्द कर दिया गया। हाथी किसी अन्य स्थान पर रखे गए।

लंदन की रीजेंट पार्क में पहला आधुनिक जू खुलने के लगभग 200 वर्ष बाद जू के सिद्धान्त को ऐसी चुनौती पहले कभी नहीं दी गई थी जैसी अब मिली है। अमेरिका सहित दुनियाभर में जू प्रबंधकों को मनोरंजन, शिक्षा और संरक्षण के बीच संतुलन बनाना कठिन होता जा रहा है। मानवों और जानवरों की सुरक्षा के साथ नैतिकता के सवाल जुड़े हैं। पिछले वर्ष मई में अमेरिका के सिनसिनाटी जू में एक बच्चे को बचाने के लिए हराम्बे नामक 17 वर्षीय गुरिल्ला को गोली मार दी गई थी। जू के पर्यावरण परिणामों को लेकर भी संवेदनशीलता सामने आई है।

कई अध्ययनों ने दर्शाया है, जानवरों की अनेक प्रजातियां जैसी पहले समझी जाती थीं, उससे कहीं अधिक स्मार्ट और भावुक हैं। जब उन्हें प्रकृति से अलग रखा जाता है तब वे अवसाद और बेचैनी से पीड़ित हो सकते हैं। इससे अस्तित्व संबंधी मुश्किल सवाल उठा है: यदि हम जानते हैं कि कैद रखने पर प्राणियों को कष्ट होता है तो उन्हें कैद क्यों रखा जाए। फिलाडेल्फिया के लिए जू 300 सिद्धान्त के डिजायनर जोन को कहते हैं, आज सबसे अच्छे जू भी कैद और जबर्दस्ती पर आधारित हैं।

जानवरों के लिए पर्याप्त जगह छोड़ने और विशेषज्ञ स्टाफ जैसी जरूरतों

---

को पूरा करने के लिए सभी जू के पास स्थान या बजट नहीं है। ओमाहा, सैनडिएगो आर ह्यूस्टन के जू में हाथियों के लिए अच्छी सुविधाएं दी गई हैं। सैनफ्रांसिस्को सिएटल और शिकागो के जू में सुविधाओं की कमी के कारण हाथियों को रखना बंद कर दिया गया है। कई अन्य जू को भी सिएटल व अन्य शहरों का रास्ता अपनाना पड़ सकता है। मानव अधिकार एक्टिविस्ट जू के आइडिया को ही पसंद नहीं करते हैं। ध्रुवीय भालू जैसे जानवरों के लिए जू में रहने का अर्थ गर्म तापमान बर्दाश्त करना है और यह उनके क्रमिक विकास के विपरित है। सिंह जैसे शिकार करने वाले जानवर कभी शिकार नहीं करेंगे जबकि यह व्यवहार उनके डीएनए से जुड़ा है। दूसरी और प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर पीटर सिंगर का कहना है, कुछ प्रजातियों को बंधक रखने के पीछे जायज तर्क हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि लोग आएँ और उन्हें देखे।

वुडलैंड पार्क जू, सिएटल के डायरेक्टर डेविड हैनकॉक्स ने जू को पशुओं के लिए सुविधाजनक और अनुकूल बनाने के लिए कई अनूठे काम किए हैं। फिर भी वे कहते हैं, जू में कांक्रीट का पेड बिजली के खंभे के समान अनुपयोगी है। जानवर की दृष्टि से देखे तो वह बहुत अच्छा नहीं है। कई जू प्रबंधकों का कहना है, वे जानवरो का जीवन बेहतर बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रख रहे हैं। फिर भी, उन्हें पशु अधिकार समूहों के विरोध, मुकदमों और प्रचार के हथकंडों का सामना करना पड़ता है। उन्हें आशंका है, यह आंदोलन उन सब अच्छी बातों को खत्म कर देगा जो जू से जुड़ी है।

## मानवों जैसी मानसिक बीमारियाँ

पिछले कुछ दशको में चिड़ियाघरों में जानवरों पर हुई सभी रिसर्च ने जानवरों को कैद मे रखने को अनुचित बताया है। न्यूरोलॉजी रिसर्च ने दर्शाया है, स्तनधारी जीवों के दिमाग में वैसे ही केमिकल होते हैं जिनसे मानवों में आत्मचेतना आती है। जानवरों की कई प्रजातियां सामाजिक संबंधों का अनुभव करती हैं पहले यह जानकारी नहीं थी। पशु मनोवैज्ञानिक का निष्कर्ष है, जानवरों को मनुष्यों जैसी मानसिक बीमारियां होती है।

---

## माक्स की समाधि पर फ्रेडरिक एंगेल्स का भाषण

दस्तावेज

14 मार्च को तीसरे पहर, पौने तीन बजे संसार के सबसे महान विचारक की चिन्तन-क्रिया बंद हो गई। उन्हें मुश्किल से दो मिनट के लिए अकेला छोड़ा गया होगा, लेकिन जब हम लोग लौटकर आए, हमने देखा कि वह आरामकुर्सी पर शान्ति से सो गए हैं- परंतु सदा के लिए...। पढ़ें कार्ल माक्स की समाधि पर फ्रेडरिक एंगेल्स के भाषण का अंश...

इस मनुष्य की मृत्यु से यूरोप और अमरीका के जुझारू सर्वहारा वर्ग की और ऐतिहासिक विज्ञान की अपार क्षति हुई है। इस ओजस्वी आत्मा के महाप्रयाण से जो अभाव पैदा हो गया है, लोग शीघ्र ही उसे अनुभव करेंगे। जैसे कि जैव प्रकृति में डार्विन ने विकास के नियम का पता लगाया था, वैसे ही मानव इतिहास में माक्स ने विकास के नियम का पता लगाया था।

उन्होंने इस सीधी-सादी सच्चाई का पता लगाया जो अब तक विचारधारा की अतिवृद्धि से ढंकी हुई थी- कि राजनीति, विज्ञान, कला, धर्म आदि में लगने के पूर्व मनुष्य जाति को खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना और सिर के ऊपर साया चाहिए।

इसलिए जीविका के तात्कालिक भौतिक साधनों का उत्पादन और फलतः किसी युग में अथवा किसी जाति की ओर से उपलब्ध आर्थिक विकास की यात्रा ही वह आधार है जिस पर राजकीय संस्थाएं कानूनी धारणाएं कला और यहां तक कि धर्म संबंधी धारणाएं भी विकसित होती हैं। इसलिए इस आधार पर ही प्रकाश में इन सबकी व्याख्या की जा सकती है, न कि इससे उलटा जैसा कि अब तक होता रहा है।

### हर क्षेत्र में किया काम

जिस भी क्षेत्र में माक्स ने खोज की (उन्होंने बहुत से क्षेत्रों में खोज की) उनमें से एक में भी सतही छानबीन करके ही नहीं रह गए, उसमें यहां तक कि गणित में भी उन्होंने स्वतंत्र खोजें कीं। ऐसे वैज्ञानिक थे वह। परन्तु वैज्ञानिक का उनका रूप उनके समग्र व्यक्ति का अर्द्धांश भी न था। माक्स के लिए विज्ञान ऐतिहासिक रूप से एक गतिशील, क्रांतिकारी शक्ति था। ... माक्स सर्वोपरि

---

क्रांतिकारी थे जीवन में उनका असली उद्देश्य किसी न किसी तरह पूंजीवादी समाज और उससे पैदा होने वाली राजकीय संस्थाओं के ध्वंस में योगदान करना था, आधुनिक सर्वहारा वर्ग को आजाद करने में योगदान देना था...।

मार्क्स ने गति के उस विशेष नियम का पता लगाया जिससे उत्पादन की वर्तमान पूंजीवादी प्रणाली और इस प्रणाली से उत्पन्न पूंजीवादी समाज, दोनों ही नियंत्रित हैं। अतिरिक्त मूल के आविष्कार से एक बारगी उस समस्या पर प्रकाश पड़ा जिसे हल करने की कोशिश में किया गया अब तक का सारा अन्वेषण अन्ध अन्वेषण ही था।

स्व-पर अपकारी बनूँ किन्तु...!?

पर उपकार हेतु भी आत्मा को मलिन न करूँ

आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- 1. मन रे तू काहे... !, 2. सायोनारा... )

जियार रे! तू स्व-उपकार करोऽऽ

स्व-उपकार बिन न परोपकार होगाऽऽ यह निश्चय से समझोऽऽ (ध्रुव)

जो दीपक स्वयं होता प्रकाशितऽऽऽ अन्य भी होते प्रकाशवान्ऽऽ

जो दीप न स्वयं होता प्रकाशित ऽऽ अन्य को न करे प्रकाशवान्ऽऽ

स्वयं तू बनो प्रकाशवान्ऽऽ

अन्य को मिलेगा स्वयं प्रकाशन्ऽऽ...जिया... (1)

स्व-उपकार हेतु करना सदा ऽऽ सत्य-समता की उपासना।(आराधना) ऽऽ

आत्म -विशुद्धि व शान्ति की वृद्धि ऽऽ विश्व की मंगल कामनाऽ ऽ

आत्म विश्वासज्ञान की साधना ऽऽ...जिया .... (2)

---

इस हेतु त्याग करना है सर्वऽऽ राग द्वेष मोह मान माया ऽऽऽ  
ईर्ष्या घृणा तृष्णा वैर-विरोधऽ ऽ परनिन्दा-अपमान व शोषणऽ ऽ  
ख्याति पूजा लाभ विसर्जन ऽ ऽ ...जिया ... ऽ (3)  
अन्यथा तेरा ने होगा उपकार ऽ ऽ संभव न होगा परोपकारऽ ऽ (4)  
परोपकार हेतु भी न करो उक्त रागादि ऽ ऽ जिससे होगा स्वपरोपकार ऽ ऽ ( )

स्वपर प्रकाशी दीपक सम ऽ ऽ ....जिया.... 4( )  
बुझा हुआ दीपक न देता प्रकाशऽऽ (तथाहि) स्व-अपकारी से न पर उपकारऽऽ  
अज्ञानी न दे सके अन्य को ज्ञान ऽऽ रागी द्वेषी मोही से न पर उपकार ऽ ऽ  
संक्रामक रोगी से फैले बिमारी ऽ ऽ ( )

ज्वालामुखी/(लार्वा) से न बहें शीतल जल ऽ ऽ...जिया ... (5)  
रागादि से जब बनोगे ज्वालामुखी ऽऽ अन्य को न दे पाओंगे शीतल जल ऽ ऽ  
रावण कंस हिटलर आन्तकवादी ऽ ऽ न कर पाते हैं परोपकार ऽऽ  
बनो झरना का शीतल जल ऽ ऽ ... जिया ... (6)

तीर्थकर आदि महापुरुष समान ऽऽ पहले करो स्व-उपकारऽ ऽ  
पर उपकार तुझ से होगा भी प्रचुर ऽऽ सुर्य सम स्व-पर उपकार कर ऽ ऽ  
सूर्य से विपरीत ब्लेक होल न बन ऽ ऽ  
'कनक ' स्व-पर उपकारी तू बन ऽऽ ...जिया... (7)

सीपुर - 17.03.2017 रात्रि 11.45

---

## मेरा दीर्घ अनुभव

स्व परिणती (स्वभाव) में ही शान्ति-परपरिणती (विभाव) में अशान्ति  
- आचार्य कनकनन्दी

(चाल :- आत्मशक्ति... )

आगम में जो वर्णन हुआ है उसे मैं अनुभव कर रहा हूँ।  
निस्पृह-निराडम्बर - समता-शान्ति को आत्मानुभव से कर  
/(पा) रहा हूँ।।

आत्मा में ही है अनन्त गुण जो सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरित्रमय।  
अनन्त सुखवीर्य अस्तित्व वस्तुत्व समता-शान्ति-आनन्दमय।।  
अतएव स्व-आत्म स्वभाव में स्थिर होने से मिलते उपरोक्त गुण।  
आत्म स्वभाव से विपरीत होने से मिलते इनसे विपरीत कुगुण।।

आत्मस्वभाव में स्थिर होने हेतु अतः त्यागकर रहा हूँ विपरीत भाव।  
जितने अंश में स्व में स्थिर होता हूँ उतने अंश में पाता हूँ स्वभाव।।  
जितने अंश में स्वभाव में स्थिर न हो पाता उतने अंश में पाता हूँ कुगुण।  
जिससे मुझे न मिली समता-शान्ति जिससे न प्रगट होते सुगुण।।

स्व-स्वभाव में स्थिर होने हेतु त्यागकर रहा हूँ आत्म-विभाव।  
रागद्वेषमोह कामक्रोध आदि व उसके उत्पादक सभी बाह्य कारक।।  
इसलिए मैं श्रद्धा-प्रज्ञा से संकल्पपूर्वक त्याग रहा हूँ बाह्य-कारक।  
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि तथा संकल्प-विकल्प संक्लेश आदिक।।

संकीर्ण-कट्टर भाव-व्यवहार व पंथ-मत-जाति-भाषा व राष्ट्र।  
अपना-पराया शत्रु-मित्र भाव अन्धानुकरण व दबाव-वर्चस्व।।  
समय-शक्ति-बुद्धि-साधन का जिससे होता है दुरुपयोग।  
ऐसे भाव व्यवहार-कथन आदि का कर रहा हूँ नवकोटि  
(सर्वथा) से त्याग।।

अपेक्षा, उपेक्षा-प्रतीक्षा आदि का कर रहा हूँ यथायोग्य त्याग।  
आकर्षण-विकर्षण-द्वन्द्व-वैर-विरोध का कर रहा हूँ यथायोग्य त्याग।।

---

दुर्गुण नाश व सुगुण/(स्वगुण) प्राप्त करने हेतु ही कर रहा हूँ सर्व साधना,  
सुद्रव्य क्षेत्रकाल भाव प्राप्तकर, कर रहा हूँ यथा शक्ति साधना।।

इससे ही मेरी हो रही आत्मविशुद्धि जिससे मुझे मिलती शान्ति/(शक्ति)  
इससे भिन्न अन्य सभी से, मिलती मुझे अशान्ति/(क्षय होती शक्ति)  
यह सब मैंने आगम में जाना आधुनिक विज्ञान भी सिद्ध कर रहा।  
बाल्यकाल से ही (मैं) अनुभव कर रहा हूँ 'कनक'

अतः स्वभाव चाहा।।

चीतरि - 07.07.2017 (चतुर्दशी-चातुर्मास-स्थापना)

(स्व-आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान प्रायश्चित्त व ब्र. सोहन, ब्र. संध्या के कारण यह कविता बनी।)

## वर्षायोग स्थापन-गुरु पूर्णिमा आदि सानन्द सम्पन्न (बिना बोली के 9 कलश स्थापना मिनटों में)

बागड़ अञ्चल के सांस्कृतिक ग्राम चीतरी में निस्पृह योगी श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी गुरुवर ससंघ के मंगल प्रवेश के पश्चात् वर्ष 2017 के चातुर्मास का वर्षायोग स्थापन गुरु प्रतीक्षालय में बागड़-मेवाड़ आदि क्षेत्रों से पधारे जैन-अजैन भक्त-शिष्यों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ।

गुरु विनयाञ्जली की शुभ बेलामें आचार्य श्री के अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शिष्य डॉ. श्यामलाल गोदावत उदयपुर ने गुरुवर को निस्पृह निराडम्बर सरल ज्ञान ध्यान तपोरक्त आत्मलीन वैज्ञानिक सन्त बताते हुए कहा कि आचार्यश्री ने बहुत वर्ष (प्रायः 36-38 वर्ष) पहिले जो विषय स्व-साहित्य में वर्णित किए उसका बहुत कुछ शोध वर्तमान विज्ञान कर रहा है। ऐसे रहस्यपूर्ण विषयों के सन्देश हम सब देश-विदेशों में पहुँचा रहे हैं। गुरुदेव वैज्ञानिक युगानुकूल मीडिया का सम्यक् प्रयोग कर व्यापक दृष्टि से वैश्विक स्तर पर जैन/(भारतीय) सत्य तथ्य का प्रभावकारी प्रसारण करने वाले अलौकिक आध्यात्मिक सन्त हैं।

क्रान्तिकारी युवक रत्नश्री **मुकेश जैन** उदयपुर ने आचार्यश्री के व्यापक व्यक्तित्व व कृतित्व में शिक्षा गुरु स्वरूप का गुणगान करते हुए कहा आपने देश भर में प्रायः 300 साधु-साध्वियों को अध्यापन कराने व देश-विदेश के अनेकों शिक्षाविद्, चान्सलर, जज व वैज्ञानिक जैसे स्व-क्षेत्र के शीर्षस्थ जनों को धर्म-दर्शन-विज्ञान का अध्यापन कराने का महान् ऐतिहासिक स्तुत्य पुरुषार्थ किया है, जिसके फलस्वरूप आगम व आर्षमार्ग की सुरक्षा के साथ एकान्तवादियों के परिशोधन से अनेकान्तिक जैन धर्म को सूर्य की भाँति चमकाने का अद्वितीय कार्य किया है। **विजयलक्ष्मी गोदावत** ने कहा कि गुरुदेव आत्म द्रव्य का सर्वाधिक ज्ञान रखने वाले वर्तमान के शान्तिसागर हैं। नन्दौड़ से पधारे **प्रवीणचन्द्रशाह** ने गुरुदेव के समदर्शी भाव की प्रशंसा करते हुए आगामी वर्षों में पुनः नन्दौड़ ग्राम में श्रीसंघ का चातुर्मास कराने की भावना व्यक्त की। कोटा से पधारे **महावीरजी जैन** ने श्री गुरुदेव के सत्यग्राही गुणग्राही प्रभावी ओरा का बखान किया। **दिनेश शाह** ने आचार्यश्री को पृथ्वी पर सर्वोच्च अनुभवी विज्ञानी गुरु बताया। स्थानीय भक्त मणिभद्र, दीपेश, मयंक, ब्र.सन्ध्या, पं. आनन्दीलाल आदि ने अपनी भावभीनी विनयाञ्जली दी। मुख्य रूप से चातुर्मासकर्ता श्री **भूपेश जैन** ने गुरुदेव के आध्यात्मिक गुणों के प्रतिश्रद्धा समर्पण करते हुए स्वयं की लघुता का परिचय दिया। इस अवसर पर ग्रंथ त्रय 1. कनकनन्दी वचनामृत, 2. युक्त्यानुशासन, 3. रयणसार का विमोचन हुआ।

शुभभावना सह...  
श्रमण मुनि सुविज्ञसागर